श्री धर्म प्रवर्त्तन सारग्रंथ.

तथा

क्षायक भावतत्व विलास, श्रद्धाप्रकरण, नवपदजीनी पूजा
अध्यात्म चोवीशी, चैत्यवदनो, स्तुतियो, स्तवनो
सज्झायो, अने गुरुभक्तिना रास सहित.

कर्त्ता विजापुरनिवासी,

शा. सुरचंदभाइ स्वरूपचंद.

छपावी प्रसिद्ध कर्त्ता.

शा. रतनचंद लाधाजी

तथा

शा. झवेरभाइ भगवानदास

प्रगणे पेटलाद—मु० काविठा.

अमदावाद.

श्री "लक्ष्मि" प्रिन्टिंग प्रेसमा
शा. मणीलाल उगरचंदे छाप्यु.

संवत १९६६ वीर संवत २४३६ सने १९१०.

किमत रु ०—६—०

प्रस्तावना.

सर्व धर्मनो विचार करतां सर्वोत्तम जैन धर्म सत्य छे एम निश्चय थयो छे जैन धर्ममां श्वेतांबर दिगंबर ए बे शाखाउ छे असलथी श्वेतांबर आम्नायनां सूत्रो चाल्यां आवे छे माटे श्वेतांबर शास्त्रोनी प्रामाणिकता सिद्ध छे दिगंबरो पण पहेलां सूत्रो मानता हता पाछळथी तेउ मानता नथी एम जणाय छे श्वेतांबर मार्गमां व्यवहार अने निश्चय ए बे नयो कह्या छे दरेक नयनुं स्वरूप अत्यंत सूक्ष्म छे माटे शास्त्रकारोनी आज्ञा प्रमाणे बे नयने जाणवा खप करवो श्वेतांबर मार्गमां हरिभद्रसूरि-यशोविजय उपाध्याय विगेरे महान् पुरुषो थइ गया छे.

जैन धर्मनी प्रवृत्ति केवी रीते करवी ते संबंधी तेउए पुस्तकोमां सारुं अजवाळुं कर्युं छे पूर्वाचार्योए धर्मनी प्रवृत्तिनी शुद्धता थवा माटे नयो पूर्वक धर्म तत्त्वनु वर्णन कर्युं छे माटे अत्रे पण तेउनी वाणी अनुसार अशुद्ध मार्गने बतावी शुद्ध धर्म बताववा प्रयत्न कर्यो छे. प्रथम धर्म प्रवर्तनसार ग्रंथ दाखल कर्यो छे. तेमां व्यवहार नयना भेद बतावीने धर्मनी व्याख्या करी छे तेमां मोटा भागे श्री देवचंद्रजी अने श्रीमान् यशोविजय उपाध्यायजीना भाषा ग्रंथोनी साक्षी आपी विवेचन कर्युंछे, वळी अमारी मान्यता पूर्वाचार्योनी परंपरा सहित छे एम सिद्ध कर्युंछे पूर्वाचार्योनां वचन अनुसरीने चालवु अने तेमनां वचनने भगवान्नां वचन सरखां मानवां जोइए एवी मान्यताणी सिद्धिमां अमारो मत सर्वने अभिमत थाउ । साधुना व्यवहारमा सामर्थ्य रह्यु छे आवश्यक धर्म व्यवहार ते होवाथी

आ ज्ञान शीतळविलास जाग २ जो नामनु आ पुस्तक ठपावता पेहेला खरच माटे अगाउथी पैसा आपनार जाइर्ठ गुणना जाण गुणना रागी धर्मस्नेही गृहस्थोनां नाम नीचे प्रमाणे ठे

२००) जाइ मूळचदजाइ सरूपचदना वीलना टूस्टमाथी ट्रस्टीर्ठए आप्या

२००) कावीठाना झवेरजाइ जगवानदास तथा शा रतनचद लाधाजी जण वेना

उपरनी मददथी आ पुस्तकनी १००० नकल ठपावी ठे आ बीजा जागनी चोपमी तथा प्रथमनी ठपाएल जाग १ नी चोपमी नीचेना ठेकाणेथी मळी शकशे

१ विजापुर–शा सुरचदजाइ स्वरुपचद

२ अमदावाद–शा हीराचदजाइ ककलजाइ ठे फतासानी पोळ जैन कन्याशाळा

३ काविठा प्रगणे पेटलाद–शा रतनचदजाइ लाधाजी तथा झवेरजाइ जगवानदास

४ पालेज–शा माद्याजाइ पीतांबरदास तथा शा अमरचद कचराजाइ प्रगणे जरुच वदर

५ सुरत–शा ताराचद हीमचद ठे गोपीपुरा मध्ये

६ पादरा–वकील मोहनलाल हीमचद वमोदरा तावे पादरा

आ प्रथमा दृष्टिदोषथी अथवा लखित दोषथी अथवा ठापनारनी जुलथी न समजी शकायतो शुद्धिपत्रक प्रमाणे सुधारी तपासीने वाचशो

ज्ञाननी आशातना न थाय अने घणा माणसो लाभ लइ शके ए हेतथी आ कींमत मात्र ०–६–० छ आना राखी छे अने ए रीते जे रकम पशे ते ज्ञान खातामा वपराशे साधु साध्वीने तेमज जैन पुस्तकालयोने ... आपवामां आवशे.

अनुक्रमणिका.

प्रथम धर्मप्रवर्त्तन सार ग्रंथनी अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	पानु.
१	धर्मप्रवर्त्तन सारना ने भेद कर्या छे. एक मिथ्यात्व सहित धर्मप्रवर्त्तन तथा बीजो सम्यकत्व सहित धर्मप्रवर्त्तन	१
२	धर्मप्रवर्त्तन सारना बीजा बे भेद कर्या छे एक व्यवहार धर्मप्रवर्त्तन अने बीजो निश्चय धर्मप्रवर्त्तन	६
३	नयचक्रसार ग्रंथनी अपेक्षाये व्यवहार नयना भेदनी व्याख्या करी छे.	६
४	जीवना पांचसेंने त्रेसठ भेद चार गतिना मळीने वर्णव्या छे	८
५	अजीवना पाचसेंने साठ भेद गवेख्या छे	११
६	गुणठाणानी अपेक्षाये जीवना भेदनी विस्तारीने व्याख्या करी छे	१४
७	प्रथम अशुद्ध व्यवहारना भेदनी व्याख्या करी छे	१६
८	पछी शुद्ध व्यवहारना भेद आदे गवेखीने ए सूत्र पूर्ण कर्यु छे.	२६
९	द्रव्यगुण पर्यायना रासना अनुसारे व्यवहारनयनी व्याख्या करी छे	३१
१०	आगमसार ग्रंथनी अपेक्षाये व्यवहार नयना छ भेद गवेख्या छे	४०
११	कल्पव्यवहार तथा ज्ञानव्यवहार ए बे भेद गवेखीने व्यवहारनो अधिकार संपूर्ण कर्यो छे	४७
१२	भवाभिनदी जीवनां लक्षण विस्तारीने गवेख्या छे	५५
१३	आत्मानदी जीवना लक्षण विस्तारीने गवेख्या छे	७०
१४	निश्चय नयनी मुख्यताए धर्मप्रवर्त्तन विस्तारीने कथो छे	८७
१५	सिद्ध भगवाननी स्तुति विस्तारे करीने ग्रथनी पूर्णता करी छे	११३

बीजा क्षायक भाव तत्वविलास ग्रथनी अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	पानु.
१६	क्षायक भाव तत्वविलासग्रथनी अढार ढाळोना दुहा दरेक ढाळना मथाळे ढालना उपर छापवा छापनारनी भुलथी रहीगयेला तेथी बधा पहेला नांख्या छे. ते वाचनार भाइयोये ढाळ ढाळ प्रत्ये समजी लेवा.	
१७	पेहेली ढाळमां क्षायक समकित ने भेदे गवेख्यु छे	१२६
१८	बीजी ढाळमा क्षायक चारित्रनी साधनता पूर्ण करी छे	१२७
१९	त्रीजी ढाळमा केवळज्ञान केवळदर्शननी व्याख्या करी छे	१२८
२०	चोथी ढाळमा द्रव्यानुयोगनु स्याद्वाद स्वरुप आदि गवेख्यु छे	१३०

२१ पांचमी ढाळमा धर्मास्तिकाय द्रव्यनी व्याख्या करी छे १२२

२२ छट्ठी ढाळमा अधर्मास्तिकाय आदि त्रण द्रव्यनी व्याख्या करी छे. १३४

२३ सातमी ढाळमा पुद्गलास्तिकाय द्रव्य गवेर्ष्यो छे १३६

२४ आठमी ढाळमां पुद्गलनी आठ वर्गणानी एक एकथी अधिक सूक्ष्मता गवेखी छे १३८

२५ नवमी ढाळमा पुद्गल्ना गुणपर्याय गवेख्या छे १३९

२६ दशमी ढाळमा आश्रवना चार हेतु मिथ्यात्वादि गवेर्‍या छे १४०

२७ अगीआरमी ढाळमा मिथ्यात्वनी दुष्टता विस्तारीने कही छे १४२

२८ बारमी ढाळमा अव्रतना भेद तेने टाळवानु साधन दर्शाव्यु छे १४४

२९ तेरमी ढाळमा कषायनी तथा नोकषायनी दृष्टांत साथे गवेषणा करी छे १४५

३० चौदमी ढाळमां जोगना मूळ त्रण भेद अने उत्तर पंदर भेद दर्शाव्या छे १४६

३१ पंदरमी ढाळमां चार प्रकारना वचनो विचार गवेख्यो छे १४८

३२ सोळमी ढाळमा पुन्यना बेतालीस भेद सारी रीते वर्णव्या छे १५०

३३ सत्तरमी ढाळमां चउघाती पापकर्मनी प्रकृतिओना ४५ भेद वर्णव्या छे १५५

३४ अढारमीढाळमांचउअघातिकर्मनी अशुभ प्रकृतिओना ३७भेद वर्णव्याछे १५८

आ ग्रंथ अहींथी अधुरो छे

३५ त्रीजो ग्रंथ श्रद्धाप्रकरण तेमा देवतत्त्व तथा गुरुतत्त्व अने धर्मतत्त्व ते श्रुतधर्म तथा चारित्रधर्म देसविरती अने सरवविरती आदे वर्णव्या छे १६३



३६ नव पदजीनी पूजा १८७

३७ आरति मगळ्दीवो २०३

३८ अध्यात्म चोवीसी २०४

३९ चैत्यवदन अधिकार २२८

४० स्तुति अधिकार २३३

४१ स्तवन अधिकार २३६

४२ सज्झाय अधिकार २६८

४३ गुरुभक्तिनो रास २९१



॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

अथ श्री धर्मप्रवर्त्तन सार ग्रंथ.

॥ दुहा ॥

वंदु गुरु चरणे सदा, गुरुमुख अमिय झरंत ॥
धर्मलाभ दीए देशना, ज्युं जलधर वरसंत ॥ १ ॥
ते झीले चित पात्रमें, श्रोता मन थिर अंग ॥
ज्ञानामृत रस आतमा, पीवे निर्मल गंग ॥ २ ॥
धर्म वर्त्तना सार ए, जिहां निश्चय व्यवहार ॥
गुरुकृपाथी पामीए, स्याद्वाद निरधार ॥ ३ ॥

॥ अत्र भाषा लिख्यते ॥

हवे आ ग्रंथनु नाम धर्म प्रवर्त्तन सारछे, तेना बे भेदछे मिथ्यात्व सहित धर्मप्रवर्त्तन तथा सम्यक्त्वसहित धर्मप्रवर्त्तन, अहीं कोइ कहेशे के धर्मप्रवर्त्तनमा मिथ्यात्वनो भेद शा माटे करवो पड्यो ? तेनो उत्तर मिथ्यात्व छता पण देशविरतिपणुं तथा सर्वविरतिपणु जीव व्यवहारथी ग्रहेछे, वळी क्रियानो पात्र, ज्ञाननो रूपी, ध्याना-

वलवी होयछे, ते योगदृष्टि सज्झायोथी जोइ लेजो प्रथमनी चार सज्झायो मिथ्यात्वसहित प्रवर्तनमां छे, अने पाचमी थीरादृष्टिथी ते आठमी परा दृष्टि सुधी चार सज्झायो समकित धर्मप्रवर्तनमांछे, वळी मुक्तिना मार्गमां छे ते माटे अमारे भेद वेहेंचवो पड्यो पेहेली दृष्टिनी सज्झाये कह्युछे के,

दृष्टि थिरादिक चारमा, मुगति प्रयाण न भाजेरे॥
रयणि सयन जेम श्रम हरे, सुरनर सुख तेम
गाजेरे ॥ वी० ॥५॥

अर्थ —दृष्टि के० समकितनी आठ दृष्टि कही छे, तेमा प्रथमनी चार दृष्टि, तेना नाम मित्रा, तारा, वळा, अने दिसा ए चार दृष्टि समकितरूप नथी, परतु व्यवहारे कारण छे ते कारणने विषे कार्यपणानो उपचार करीने समकितमा गणीछे हवे पाछळनी चार दृष्टिना नाम, स्थिरा, कान्ता, प्रभा, अने परा ए चार दृष्टि समकित रूप छे वळी, इहा बोध एटले जाणपणु ते पण वस्तुगते वस्तुपणु सद्दहेछे श्रद्धा ज्ञान पूर्वक स्थिरछे, ए चार चार मळीने आठ दृष्टि कही, तेमा स्थिरादिक चारमा केहेला स्थिरा पाचमी अने आदि शब्दे छठ्ठी, सातमी, अने आठमी, ए पाछळनी चार दृष्टिए वर्त्ततो एवो जे प्राणी, ते एक वखते बे क्रियानो कर्त्ताछे एक उदयिक भावनी अने बीजी क्षयोपशम भावनी, तेमा प्रथम उदयिक भावनी एटले

उदयिक भाव ते पूर्वकृत कर्मबंधनो उदय, ते कहेछे. गति चार, कषाय चार, वेद त्रण, लेश्या छ, मिथ्यात्व, अज्ञान असिद्धत्व अने अविरति ए उदयिक भावना एकवीस भेद कह्या ते समुदाये परिपूर्ण पेहेले गुणठाणे लाधे अने उपरनां गुणठाणाए ओछा ओछा लाधे उदयिक भाव अयोगी चौदमा गुणठाणा पर्यंत सर्वे गुणठाणे लाधे अने जे जे प्रकृतिनो उदय थाय तेमां चेतन व्यापकपणु करे, सकल्प विकल्प करे तो समये समये सात आठ कर्म छट्ठा सातमा गुणठाणा सुधी बांधे, उपरांत सात बांधे दशमा गुणठाणे छ कर्म बांधे वळी जीवनी शक्ति मरोडी नांखे कह्युंछे के "शक्ति मरोडे जीवनी, उदय महा बळवान" हवे ए उदयिक भावनी क्रियामां भांगा कहे छे भविने अनादि सांत भागो लागे, अने अभविने अनादि अनत भांगो लागे ए उदयिक भावनी क्रिया कही हवे क्षयोपशमभावनी क्रिया कहेछे, ते पांचमी थिरा दृष्टि पाम्या त्यांथी अंतर्दृष्टिए प्राप्त छे अने थिरादृष्टिनी प्राप्ति ग्रंथिभेद कर्यो त्यांथी थइ हवे ते क्रिया क्षयोपशम भावनी क्षय उपशम पूर्वक चोथा गुणठाणाथी प्राप्त थइ तेना भेद कहे छे सामान्य उपयोग ते दर्शन गुणनो, अने विशेषोपयोग ते ज्ञान गुणनो, वळी क्षयोपशम भावनु समकित, तथा देशविरति अने सर्व विरति चारित्र, वळी क्षयोपशम भावनी दानादि पांच लब्धि ए क्षयोपशम भावना भेद छे, तेमांथी लब्धि गुणने किंचित् गवेखे छे

दान एटले जे समये समकितादि आत्मिक गुणनी प्रगटता आत्माथी थइ तेज समये ते दानरूप गुण आत्माए ग्रहण कर्यो ए दान लब्धि पेहेली कही हवे बीजी लाभ लब्धि कहे छे लाभ एटले जे समकितादि आत्मिक गुणनी प्रगटता आत्माथी थइ कह्यु, ते लाभ पर्वे न हतो ते इहा आत्मा पाम्यो ए बीजी लाभ लब्धि कही हवे वळी तेना प्रथम समयेज ते लब्धि गुणनो भोग पण आत्माज करे छे, वळी उपभोग पण बीजा समयथी आरंभीने यावत् केवळज्ञाननी प्राप्ति जे समये थाय तेना आगला समय सुधी आत्मा करे छे ए चार लब्धि कही हवे पांचमी वीर्य गुण लब्धि कहे छे ते उपर चार लब्धि गवेखी तेमा स्फुर्णा आपवानु सामर्थ्य सादि सांत भांगे अनुभव रीते अतर्गत स्वरूप रमण करवु, वळी स्वस्वरूप ग्रहण करवु तेमा व्यापकपणु करवु, ते शक्तिने वीर्य गुण लब्धि कहीए, ए पाच लब्धि क्षयोपशम भावनी ते क्रिया आत्मिक जाणवी ए कियानो कर्त्ता उपरना गुणठाणे चढे अने नीचेना गुणठाणाने छोडे यावत् मोहनीय कर्मना क्षयोपशमने दशमा णाने अते छेदी यथाख्यात चारित्र [illegible] बारमे [illegible] ठाणे प्रगट करे, अने ज्ञानावरणीय

मांज कह्यु ठे के "मुगतिप्रयाण न न्नाजेरे" एटले पांचमी थिरादृष्टि पाम्या त्यांथी क्षयोपशम न्नावनी अंतर्वृत्तिये क्रिया करतां मुक्तिना प्रयाणनो न्नग न थाय, एटले आत्म सत्ताये रहेलां घाति कर्मदळ तेथी मुक्त थवु, एटले निर्जरवुं फरीने कर्म वांधे नही त्या मुक्तिनु प्रयाण थयु एम कहीए "रयणि सयन जेम श्रमहरे," के० यथा दृष्टांते जेम कोइ पुरुषने इच्छित नगरे जवु ठे, परतु वळवीर्य शक्तिनी स्फुरता न थइ, अने थाकी गयो, तो इच्छित नगरे पहोची न शके, त्यारे रस्तामां रात रहेवु पमे, विसामा करवा पमे अने त्या शयन करे, एटले थाक उतरी जाय, अने प्रन्नात समये पाठी प्रयाण करवानी शक्ति आवे एटले सुखे सुखे प्रयाण थइ शके, तेम इहा इच्छित नगर ते मुक्तिपुरीए जवु ठे, परतु वीर्य शक्ति स्फुरतना अन्नावे श्रेणी न मांमी शके, तो पहोची न शके त्यारे वचमा विसामा रूप देवताना अने मनुष्यना अप्रतिपाति क्षयोपशम समकितनी अपेक्षाए उत्कृष्टा सात आठ न्नव करवा पमे वळी क्षायक समकितनी अपेक्षाए त्रण चार न्नव करवा पमे अने समकितीने वे गतिनोज सुखमय ससार ठे माटे "सुरनर सुख तेम ठाजेर" कह्यु अने दुःखमय नरक तिर्यचनी वे गतिथी मुक्त थया एटले छुटया तेमा ठेल्ला न्नवे तो मुक्ति नगरे पहोचवानी स्फुर्णा शक्ति मनुष्यना न्नवे जरुर पामे अने सिद्धि वरे ए पाचमी गाथानो अर्थ कह्यो

वळी धर्म प्रवर्त्तनना वीजा वे भेद छे, व्यवहार धर्म प्रवर्त्तन अने निश्चय धर्म प्रवर्त्तन तेमा प्रथम व्यवहार धर्म प्रवर्त्तननी ओळखाण करावे छे एटले व्यवहारनयना भेदनी व्हेंचण करीशु तेमा केटलाएक भेद मिथ्यात्व पक्षी छे अने केटलाएक भेद समकित पक्षी छे ते सर्वेनी ओळखाण थशे कह्यु छे नय चक्रसार ग्रंथे

सग्रह गृहीत वस्तु भेदातरेण विभजन व्यवहरणं प्रवर्त्तन वा व्यवहार सद्विविध शुद्धो शुद्धश्च शुद्धोद्विविध वस्तुगत व्यवहार धर्मास्तिकायादि द्रव्याणा स्वस्वचलन सहकारादि जीवस्य लोकालोकादि ज्ञानादिरूप स्वसपूर्ण परमात्मभावसाधनरूपो गुणसाधकावस्थारूप गुण श्रेण्या रोहादि साधन शुद्ध व्यवहार अशुद्धोपि द्विविध सद्भूता सद्भूत भेदात् सद्भूत व्यवहारो ज्ञानादिगुण. परस्पर भिन्न असद्भूत व्यवहार कषायात्मादि मनुष्योह देवोंह सोपिद्विविध सश्लेपिता शुद्धव्यवहार शरीर मम अहशरीरी असश्लेपिता सद्भूत व्यवहार पुत्र कलत्रादि तोंच उपचरिता नुपचरित व्यवहार भेदात् द्विविधो तथाच विशेषावश्यके व्यवहरण व्यवहार ए सतेण व्यवहार एव सामान्न व्यवहार परोव्वजउ विसेसर्उ तेणव्यवहार व्यवहरण व्यवहार व्यवहरतिसइतिवाव्यवहार विशेपतो व्यवह्रीयते निराक्रियते सामान्य तेनेतिव्यवहार लोकव्यवहार परोवा विशेपतो

प्रवर्त्ति तेनेक्षने [illegible] हार न व्यवहारा स्वस्वधर्म

स्यैव वस्तुत्व तमतरेण तद्भावात् सद्विविध विभजन १ प्रवृत्ति २ भेदात् प्रवृत्ति व्यवहार स्त्रिविध वस्तु प्रवृत्ति १ साधन प्रवृत्ति २ लौकिक प्रवृत्तिश्च ३ साधन प्रवृत्ति स्त्रेधा लोकोत्तर १ लोकिका २ कुप्रा वचनिक ३ भेदात् इति व्यवहारनयश्री विशेषावश्यके ॥

अर्थ.—सग्रह ग्रहित वस्तु के० सग्रहनये ग्रहित जे वस्तु भेदातरेण के० तेने भेद भेदांतरे, विभजन के० व्हेचवु तेने व्यवहार कहीए एटले सग्रहनये छे ते सामान्य विशेष सर्वेने सामान्यपणे ग्रहेछे एटले पिंडपणे ग्रहे पण व्यक्तव्यपणे न ग्रहे जेम द्रव्य एवु सामान्य नाम कह्यु, तेमां सर्वे द्रव्यनु ग्रहण थयु, ते सग्रह नय तेने भेदातरे व्हेचे ते व्यवहार नय एटले द्रव्यना वे भेद जीवद्रव्य अने अजीवद्रव्य. अजीवना वे भेद, रूपी अने अरूपी रूपी ते पुद्गल तेना वे भेद परमाणु अने स्वध. स्वंधना वे भेद जीव सहित अने जीव रहित तेमां जीव सहितना वे भेद, सूक्ष्म अने वादर इहा वर्गणानो विचार छे त्या वादरवर्गणाना चार भेद उदारीक (१), वेक्रिय (२), आहारक (३), अने तेजस (४), हवे सूक्ष्म वर्गणाना चार भेद कहे छे भाषा (१), श्वासोश्वास (२), मन (३), अने कार्मण (४), ते कार्मणना आठ भेद, ज्ञानावरणीय (१), दर्शनावरणीय (२), वेदनीय (३), मोहनीय (४) आयुष (५), नाम (६), गोत्र (७), अने अतराय (८), ए आठने कर्मवर्गणा कहीए तेना उत्तरभेद एकसोने अठ्ठावन छे, ते

कर्मग्रथथी जोइ लेजो हवे पर्यायना वे भेद एक कर्म-भावी अने वीजो स्वभावी.

हवे जीवना पाचसे त्रेसठ भेद कहे छे तेना मूळ चार भेद मनुष्यगति (१), तिर्यंचगति (२), नरकगति (३), अने देवगति (४), ए चारना प्रत्येक भेदनो विचार तेमा प्रथम मनुष्यना भेद वर्णवे छे तेना त्रण भेद कर्मभूमि (१), अकर्मभूमि (२), अने अतरद्वीप (३), तेमा कर्मभूमिना पंदर भेद छे, पांच भरत (५), पाच ऐरव्रत (५), अने पाच महाविदेह (५) ए रीते पंदर भेद थाय वळी अकर्मभूमिना त्रीस भेद छे पाच हेमवत (५), पांच ऐरण्यव्रत, (५), पाच रम्यक (५), पाच देवकुरु (५), पाच हरिवर्ष (५), पांच उत्तरकुरु (५), ए रीते त्रीस भेद अकर्म भूमिना कह्या हवे अतरद्वीपना छप्पन भेद कहे छे आ जंबुद्वीपने विषे लघु हिमवत अने शिखरि ए वे पर्वत आवेला छे तेमाथी वे पूर्व अने वे पश्चिमे एम लवण समुद्रमा अतराले एक एक पर्वतनी चार चार दाढाओ नीकळेली छे, ते वे पर्वतनी मलीने आठ दाढाओ थइ ते दरेक दाढा उपर सात सात क्षेत्र छे ए रीते आठ दाढाओना मलीने छप्पन्न अतरद्वीप छे ए सघळा भेगा करता एकसोने एक मनुष्य क्षेत्र थया तेना वे भेद एक समुर्छिम अने वीजा गर्भज तेमा गर्भजना वे भेद एक पर्याप्ता अने वीजा अपर्याप्ता अने समुर्छिमतो पर्याप्ति पूरी करे नहीं, अपर्याप्ता अवस्थायेज मरे माटे तेनो एकज भेद एटले एक

सो ने एक गर्भज पर्याप्ता, एकसोने एक गर्भज अपर्याप्ता अने एकसोने एक समूर्छीम अपर्याप्ता ए रीते मनुष्य गतिना त्रणसेने त्रण भेद थया हवे तिर्यंच गतिना भेद कहे छे तेना पांच भेद (१) एकेंद्रि, (२) बेइंद्रि, (३) तेइंद्रि, (४) चौरिंद्रि, (५) पचेंद्रि तेमां एकेंद्रिना पांच भेद (१) पृथ्वीकाय, (२) अपकाय, (३) तेउकाय, (४) वाउकाय, अने (५) वनस्पति काय तेमां प्रथमना चार भेदछे, तेना प्रत्येके बे बे भेद, एक सूक्ष्म अने बीजो बादर ए बेना गणतां आठ भेद थया हवे वनस्पतिकायना बे भेद, प्रत्येक अने साधारण, तेमां साधारणना बे भेद सूक्ष्म साधारण अने बादर साधारण, सूक्ष्म साधारण ते सूक्ष्म निगोद अने बादर साधारण ते कंदमूळादि बादर निगोद ए बे साधारण वनस्पतिकायना भेद अने एक प्रत्येक वनस्पतिकायनो भेद मळी त्रण भेद वनस्पतिकायना थया ते भेगा करता अगिआर भेद थया तेना प्रत्येके बे बे भेद, पर्याप्ता अने अपर्याप्ता एटले एकेंद्रिना बावीस भेद थया हवे बेइंद्रि, तेइंद्रि अने चौरिंद्र ए त्रणने विकलेंद्रि कहीए तेना प्रत्येके बे बे भेद एक पर्याप्ता अने बीजो अपर्याप्ता, एम छ भेद विकलेंद्रिना थया ते मेळवतां अठ्ठावीस भेद थया

हवे तिर्यंच पचेंद्रिना भेद कहे छे तेना बे भेद सन्नि तथा असन्नि सन्नि ते गर्भज तेने मन सज्ञा छे असन्नि ते मन सज्ञा रहित छे. वळी ते माटी पाणीना सयोगे

उपजे छे, ते वेना प्रत्येके पांच पाच भेद कहे छे थळचर, जळचर, खेचर, उरपरि अने भुजपरि ए पाच दु दश भेद थया, तेना प्रत्येके वे वे भेद, पर्याप्ता अने अपर्याप्ता गणता तिर्यच पचेंद्रिना वीश भेद थया तेमां चोरिंद्रि सुधीना अट्ठावीश भेद मेळवीए त्यारे तिर्यचनी जातिना अमता-लीस भेद थाय ते कह्या

हवे नारकीना सात भेद कहे छे [१] घमा, [२] वंशा, [३] सेला, [४] अजण, [५] रिट्ठा, [६] मघा, [७] माघवती ए सात भेदना प्रत्येके वबे भेद एक पर्याप्ता अने वीजा अपर्याप्ता एम चौद भेद नारकीना थया

हवे देवगतिना भेद कहे छे भुवनपति, व्यतर, ज्योतिषि अने वैमानिक, तेमा भुवनपतिना पचीस भेद छे, दश निकायना दश अने परमाधामी पदर मळी पचीश भेद थया हवे व्यतर निकायना भेद कहे छे तेमा व्यत्तर तथा वाण व्यतरना सोळ भेद अने तिर्यग् जृम्भकना दश भेद मळीने छवीस भेद थया हवे ज्योतिषीना भेद कहे छे तेना मूळ वे भेद एक स्थिर अने वीजा अथिर ए वेना प्रत्येके पाच पाच भेदछे, चद्र, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र, अने तारा, ए पाच दु दश ज्योतिषीना थया हवे वैमानिकना भेद कहे छे तेमा किल्विषियाना त्रण भेद लोकातिकना नव भेद, अने वार देवलोकना वार भेद, ए चोवीस भेद कल्पवासी देवना कह्या हवे अकल्पवासी देवना भेद कहे छे नवग्रैवेयकना नव भेद अने अनुत्तर विमानना पांच

नेद मळी चोद नेद थया तेमां कल्पवासी देवना चोवीस नेद मेळवतां अमत्रीस नेद वैमानिकना थया ए चार निकायना नेगा करीए त्यारे देवगतिना नवाणु नेद थाय तेना प्रत्येके बे बे नेद एक पर्याप्ता अने बीजा अपर्याप्ता गणतां देवगतिना एकसोने अट्ठाणु नेद थाय, ते कह्या ए चारे गतिना मळीने ससारी जीवना पांचसेने त्रेसठ ५६३ नेद वर्णवी देखाड्या

हवे अजीवना पांचसेंने साठ नेद कहे छे तेना मूळ पांच नेद छे (१) धर्मास्तिकाय, (२) अधर्मास्तिकाय, (३) आकाशास्तिकाय, (४) काळ (५) अने पुद्गलास्तिकाय तेमां धर्मास्तिकायना आठ नेद (१) खध, (२) देश, (३) प्रदेश, (४) द्रव्यथी, (५) क्षेत्रथी, (६) काळथी, (७) नावथी, अने (८) गुणथी ए आठ नेद धर्मास्तिकायना कह्या तेज रीते अधर्मास्तिकायना आठ नेद अने आकाशास्तिकायना आठ नेद ए त्रण द्रव्यना मळीने चोवीस नेद थाय हवे काळना छ नेद कहे छे वर्त्तमान समय (१), द्रव्यथी (२), क्षेत्रथी (३), काळथी (४), नावथी (५), अने गुणथी (६), ए काळ द्रव्यना छ नेद कह्या ते सर्व नेगा करीए त्यारे अरूपी अजीवना त्रीस नेद, चार द्रव्यना मळीने थाय ते कह्या

हवे पुद्गलास्तिकायना नेद कहे छे वर्णना (५) नेद (१) रातो, (२) धोळो, (३) लीलो, (४) पीळो, अने (५) श्याम हवे रसना पाच नेद (१) करुवो, (२) कषायलो

हवे ससारी जीवना भेद गुणठाणानी अपेक्षाये कहे छे तेना बे भेद अयोगी अने सयोगी अयोगी ते सैलेशि भावे थया वळी, मनादि त्रणे योगनो रोध थयो ते चौदमा गुणठाणाना, वाकीना सयोगी, तेना बे भेद, सयोगी केवळी अने सयोगी छद्मस्थ सयोगी केवळी ते तेरमा गुणठाणाना, तेमणे चार घाति कर्मनो क्षय कर्यो छे, वळी अनत चतुष्टय प्रगट करी छे, तेमने अरिहत भगवत कहीए वाकीना सयोगी छद्मस्थ तेना बे भेद अमोही अने समोही अमोही ते मोहनीय कर्मनो क्षय कर्यो छे जेमणे वळी, क्षायक भावनु यथाख्यात चारित्र पाम्या छे वीतराग भावे थया ते अमोही वारमा गुणठाणाना, वाकीना समोही तेना बे भेद उपशात मोही अने उदीत मोही उपशात मोही ते मोहनीय कर्मनी सर्व प्रकृतियो उपशमावी छे जेणे वळी उपशम भावनु यथाख्यात चारित्र पाम्या छे ते उपशात मोही अगिआरमा गुणठाणाना वाकीना उदीत मोही तेना बे भेद सूक्ष्म मोही अने वादर मोही सूक्ष्म मोही ते लोभाअणु उदयमा छे जेने, वळी सूक्ष्म सपराय चोथा चारित्र वत ते दशमा गुणठाणाना, वाकीना वादर मोही तेना बे भेद अवेदी अने सवेदी अवेदी ते वेद विकार क्षय पाम्यो छे जेनो ते *नवमा गुणठाणाना वाकीना* सवेदी तेना बे भेद श्रेणीवत अने श्रेणी रहित श्रेणीवत ते आठमा गुणठाणाना शुक्ल ध्यान ध्याता, वाकीना श्रेणीरहित, तेना बे भेद अप्रमत अने प्रमत्त अप्रमत्त ते आत्मोपयो-

गी सातमा गुणठाणाना. वाकीना प्रमत्त, तेना वे भेद विरति अने अविरति, तेमां विरतिना वे भेद सर्व विरति अने देश विरति ते सर्व थकी संसार त्याग कर्यो छे जेणे ते छट्ठा गुणठाणे साधु, अने देशविरति ते पांचमा गुणठाणे श्रावक, वाकीना अविरति तेना वे भेद समकिति अने मिथ्यात्वी, समकिति ते चोथा गुणठाणाना वाकीना मिथ्यात्वी, तेना वे भेद ग्रथिभेदी अने ग्रथि अभेदि ग्रंथि भेदी ते समकित पामी पाछा पड्या, मिथ्यात्वें गया तेमणे ग्रथि भेद करेलो छे हवे फरीथी करवो न पडे, चडते भावे समकित गुणठाणे आवे ते ग्रथि भेदी, वाकीना अभेदी तेना वे भेद भव्य अने अभव्य भव्य ते काळ लब्धि पामी यथाप्रवृत्ति आदि त्रण करण करी कर्म स्थिति घटाडी अपूर्व करणे अपुर्व वीर्य फोरवी ग्रंथि भेद करी समकित पामे वळी वीर्यनी, ज्ञानना, उपयोगनी ध्याननी अधिकता पामे तो कर्मनो नाश करी कर्म रहित थइ सिद्धि वरे योग्यतावाळो छे माटे वळी केटलाएक भव्य तो कारण सामग्रीना अभावे समकित पामे नही पण भव्य जीवमा योग्यता धर्मनी छती छे ते माटे भव्य कहीए ते जीवो अभव्यथी अनंत गणा अधिक छे अने जे अभव्य जीव छे तेनी सत्ता तो भव्य जीव सरखी छे गुण, पर्याय लक्षण सर्वे वरावर छे पण मिथ्यात्व गुणठाणाथी त्रण काळमां समकित गुणठाणे ए आववानो नथी अने मिथ्यात्व तजवानो नथी तेनु कारण के भव्य स्वभाव एनामां नथी ते

कारण सामग्री पामे तो पण पलटाय नहीं वळी श्रुत अ-
न्यास करे अने पच महाव्रत आदरे छे, पण आत्म धर्मनी
यथार्थ श्रद्धाना अन्नावे समकित पामे नहीं अने मिथ्यात्व
गमे नहीं माटे अन्नव्य जीवो छे ते सिद्धि पद पामवाने
अयोग्य छे ते अन्नव्य जीवोनी सख्या चोथे अनते छे ए
न्नेद व्हेंच्या तेने व्हेंचण रूप व्यवहार नय कहीए

हवे बीजो न्नेद "प्रवर्त्तन वा व्यवहार" के० प्रवर्त्तन व्य-
वहार सद्विविध के० तेना बे न्नेद शुद्धोशुद्धश्च के० शुद्ध
व्यवहार अने अशुद्ध व्यवहार ए बे न्नेद कह्या तेमा
ग्रथकारे प्रथम शुद्ध व्यवहारना न्नेद कह्या छे, पछी अशु-
द्ध व्यवहारना न्नेद कह्या छे पण इहांतो अमे पहेला अ-
शुद्ध व्यवहारना न्नेदनी विवक्षा करी पछी शुद्ध व्यवहा-
रना न्नेद कहीशु अशुद्ध व्यवहार ते अशुद्ध प्रवर्त्तन ते
कहे छे अशुद्धोपि द्विविध के० तेना बे न्नेद. सद्भूता
सद्भूतन्नेदात् के० सद्भूत व्यवहार अने असद्भूत व्य-
वहार तेमा सद्भूत व्यवहार ते, "ज्ञानादि गुण परस्परं
भिन्न ' के० ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वीर्य अने उपयोग
आदि अनता गुण आत्मामा अन्नेद न्नावे रह्या छे ते गुणने
आत्माथी निर्पेक्ष पणे भिन्न गवेखे तेने अशुद्ध सद्भूत
व्यवहार कह्यो, हवे बीजो न्नेद असद्भूत व्यवहार ते,
"कषायात्मादि मनुष्योहदेवोह ' के० हु क्रोधी हु मानी
हु कपटी, हु लोन्नी, अने हु विषयी इत्यादि वळी हु
मनुष्य हु देवता इत्यादि कहेवुं, मानवु एटले जे गतिमा

गयो ते गतिरूप पोते थयो वळी ते गति हेतुपणे परिणमतां प्रह्यां ते गति विपाकी जे कर्म ते उदयरूप परन्नाव ठे, वळी पचीसे कपायनारूपे पोते थाय ठे ते पण उदयिक न्नाव ठे तेने परन्नाव कहीए ते परन्नावने अने जीवने यथार्थ ज्ञान विना न्नेद ज्ञान शुन्य एक करी माने ठे तेने अशुद्ध असदन्नूत व्यवहार कहीए "सो पिद्विविधः" के० तेना पण वे न्नेद तेमां पेहेलो न्नेद ते "सश्लेपित" एटले शरीरं मम अह शरीरी के० शरीर ते जीव अने जीव ते शरीर एम शरीरनो अने जीवनो एकपणो माने ते सश्लेपित व्यवहार कहीए दृष्टांत —जेम नाकना मेलमां माखी लपटाय ठे वंधाय ठे, ते माखी नाकना मेलथी प्राये जूदी न थाय ते दृष्टाते ए व्यवहारी जीव कायाथी जूदो हु एम न समजे ए पेहेलो न्नेद कह्यो हवे वीजो न्नेद असश्लेपित ते पूत्र कलत्रादि के० पुत्र पुत्री, वळी कलत्र ते स्त्री अने आदि शब्दथी धनदोलत घरवार, मेहेलात, राजऋद्धि, स्वजन, कुटुंव ए सर्वेने मारु केहेवु पोतानु मानवु तेने असश्लेपित व्यवहार कहीए एटले शरीरने पोतानु कह्यु ते आयुष्यना अंत सुधी ठोमयु ठुटे नहीं माटे सश्लेपित कह्युं अने पुत्र कलत्र आदि धनदोलत सर्वेने पोतानु कह्यु, पण पोताथी जूदु ठे अळगुं ठे माटे असश्लेपित कह्यु हवे एनु रहस्य वतावे ठे जे ए अशुद्ध व्यवहारना न्नेद न्नेदांतर कर्या तेमा सदन्नूत व्यवहारे "ज्ञानादि गुण परस्पर न्निन्न' कृत्रिम रीते जरूताए गवर्वीने कह्यु ते जीवथी न्निन्न ज्ञा-

चाहे, चारित्र लेइ क्रिया करे, व्यवहार नये निर्दोष देखाय पण समकित पामे नहीं, अने तेनी मुक्ति पण थाय नही कह्यु छे के –

विरया सावजाओ ॥ कषाय हीणा महव्वय धराविं ॥
सम्मदिठ्ठि विहुणा ॥ कयावि मुख्ख न पावंति ॥ १ ॥

ए गाथानो भाव विचारता उत्कृष्टा थइने फरे पण अशुद्ध व्यवहारी छे ज्या सुधी कायाने जीव मानी रह्यो छे, जीव कायानी जुदाइ जाणी नथी, त्यां सुधी अशुद्ध व्यवहार टळे नही एम सान्नळी कोइ पूछे के ते शी रीते टळे? तेनो उत्तर–प्रथम सद्‌गुरुनी शोध करे तेने नुभोदय कारण सद्‌गुरु मले, पण, ते गुरु केवा छे? तो कह्यु छे–समयसार नाटक ग्रंथे –

सवैया एकतीसा

ज्ञानके उजागर सहज सुखसागर,
सुगुण रतनागर वैरागरस भर्यो हे ॥
सरणकी रीत हरे मरणको भैन करे,
करनसो पीठ दे चरण अनुसर्यो हे ॥
धरमको मंडन भरमको विहंडन,
ज्यु परम नरम व्हे के ॥
करमसो लर्यो हे एसो मुनिराज भुय लोकमें,
विराजमान नीरखी बनारसी नमस्कार कर्यो हे ५॥

अर्थ –ज्ञान के उजागर के० आत्मज्ञान ज्योति निर्मळ थइ छे जेने वळी अनुभव भुवनमा सूर्योदय सरखो

प्रकाश थयो ठे जेने, तेनु नाम ज्ञान उजागर कहीए, " सहज सुखसागर " के० स्वस्वरूपमां चेतन रमे त्यां कोइ जातनी वाधा पीमा वेदवा रूपे थती नथी वाधापीमा परस्वज्ञाव वृत्तिमां व्यापक पणे होय, अने अव्यापक पणे वर्त्ते त्यां अव्यावाध सुख सागर स्वस्वज्ञाव वृत्तिये प्रगटे. " सुगुण रत्नाकर " के० आत्माना अनता गुण ठे, ते गुणोनी खाण ते ए मुनिराज ठे वैरागरस ज्ञर्यो हे के० त्यागरूप रस तो एक ज्ञानमांज रह्यो ठे, ते रसें ज्ञरपुर ठे अंत.करण जेनुं एवा " सरणकी रीत हरे के० पार्श्वनाथजीने कमठे जळ वृष्टि आदि मोटा उपसर्ग कर्या, ते सरखा कदाच वैरज्ञावे उपसर्ग कोइ तिर्यंच अथवा देवता करे तो पण ज्ञगवतीजीनु वचन–असज्झाइया देवा ॥ इत्यादि सज्ञारी चार निकायना देवताने स्मरे पण नहीं अने उपद्रव टाळ एम कहे पण नहीं जे मुनिराज ठे, ते तो वाह्यमा देवगुरुनु शरण करे ठे अने अतरमां पोतीका आत्मानु शरण करे ठे, ते सिवाय अन्य शरण करवानी जे रीत तेनो तो परिहार कर्यो ठे " मरणको ज्ञे न करे " के० जे अज्ञानी मिथ्यात्वी ठे ते कायाने जीव मानी तेनी साथे पोतापणु राखे ठे वळी पुत्र कलत्र धन्यादि वस्तु साथे स्नेह वधन दृढ ठे जेने ते पुरुपो मरणथी मरे पण साधु मुनिराजे तो ए सर्वे वस्तुने रोग जाणी पर मानी ठोमी ठे वळी कायाथी विरक्त चित्त ठे अने जाणे ठे के आत्मा ज्ञानादिक

गुणे करी भावप्राणधारी छे. तेनो नाश त्रण कालमा थाय नहीं शाश्वतपणा माटे एम मरणादि भय छेदीने निर्भय थया छे "करनसो पीठ दे" के० पांच इंद्रि अने छट्ठी नोइंद्रि जे मन ए छनु नाम करण छे तेना विषय विकारने पूठ देइ विमुख थया छे एटले जे आत्मदर्शि थया, तेमने विमुख कहेवा "चरण अनुसर्योदे" के० चारित्र ते चपळता रहित, स्थिरताना परिणाम अने आत्मस्वरूपमां एकत्वपणे रमण, तन्मयता स्वरूप विश्रांति तत्वानुभव तद्रूप चारित्र ग्रह्यो छे जेणे "धरमको मरुण" के० ए मुनिराज छे ते धर्म स्थंभ छे, एमना आलंबन आधारे चतुर्विध संघ धर्म प्रवृत्ति करे छे वळी उपदेश सांभळी पूछीने नि संकित थाय छे वळी गुरु महाराजा केवा छे? के षटदर्शन शास्त्रना जाण छे न्यायतर्कमां कुशळ छे अध्यात्ममां प्रवीणछे, सत्य भाषाछे जेनी, पोते तरेछे, अने बीजाने तारेछे देहधारीछे पण अंतर्वृत्ति जोगे देहातित भावने पाम्याछे ज्ञानध्यान जोगे आत्मा पुष्ट कर्यो छे जेणे, बाह्य अंतर सर्व वस्तुना जाण छे, पंडितोनी पंक्तिमा अग्रेसर सर्वने पूजवा वांदवा योग्य, भव्य जीवने ए मोक्षनो सार्थवाह छे वळी अंतर्वृत्ति योगे अनुभव भुवनमा आत्मधर्मनी रचना मंडाणी छे जेने, तेमने धर्मको मरुन जाणवो "भरमको विहंडण ज्यु" के० भ्रमिकता जे विकलता अथवा शंका कांक्षा तेनो नाश कर्यो छे, जेम अंधकारनो नाश कर्त्ता सूर्योदय छे, तेम ए ज्ञानी जाणवा "परम नरम व्हे के करमसो

कर्यो हे ” के० बाह्यमां कायादि योगे पुद्गल प्रवृत्ति करवामां थाक्या माटे नरम कह्या, पण अनंत वीर्यना धणी छे कर्म परिणाम राजा साथे युद्ध करीने पोताना आत्माना असंख्याता प्रदेशरूप खेत्रथी मिथ्यात्वादि केटलीक कर्म प्रकृतिओने जेणे हणी छे, तेमनुं नाम साधु मुनिराज छे. “ एसो मुनिराज ” के० उपर कह्या इत्यादि गुणे गुणी, संसार समुद्र तरवाने नाव समान “ जूय लोकमे ” के० अढी द्वीपमां विराजमान के० सदा विद्यमान होय छे. “ नीरखी बनारसी ” के० तेमने जोड नीरखी एटले अंतर्दृष्टि करी साधु गुण गवेख्या ते साधु नीरख्या ते गुणमय चेतनमूर्त्तिने बनारसीदास समयसार नाटक ग्रंथना कर्त्ता एवा जे श्रावक तेमणे “ नमस्कार कर्यो हे ” के० हृदय कमळ उल्लासथी घणो प्रमोद छता गुण रागे पचांग प्रणाम ग्रंथ रचना मध्येमा मंगळाचरणरूपे कर्यो छे इत्यादि गुणे साधु मुनिराजनी ओळखाण करवी, भ्रममां भूला परवु नहीं रत्न साटे काच वोहोरवो नहीं आत्महेतु तो एजछे, तेमना पासा सेवीए तो दुःखनी परपराए चउगति संसारभ्रमण ते थकी छुटीए ए ज्ञानी गुरुराय आपणने उपदेश करे ते समयसार नाटक ग्रंथना मोक्ष द्वारे कह्यो छे.—

सवैया एकतीसा.

भेद ज्ञान आरासों दुफारा करे ज्ञानी जीव,
आतम करम धारा भिन्न भिन्न चरचे ॥

अनुभो अभ्यास लहे परम धरम गहे
करम भरमको खजानो खोलि खरचे ॥
योही मोख मुख ध्याव केवल निकट आवे
पूरन प्रकाश पावे पूरन के परचे ॥
भयो निरदोर याहि करनो न कछु और
एसो विश्वनाथ ताहि बनारसी अरचे ॥ १२८ ॥

अर्थ —भेदज्ञान आरासो के० भेदज्ञानरूप कसोटी-ए करीने एटले लीक करीने ज्ञानी जीव "दुफारा करे" के० यथा दृष्टांते—जेम चोकसी लोको सोनानी परीक्षा कसोटीना पथ्थर उपर लीक करीने करेछे के एक तोलामा एक वाल वा बे वाल त्राबुछे अथवा रुपुछे. बाकीनु शुद्ध कंचन छे एम बे भाग जूदा चितवे ए दृष्टाते सम्यकज्ञानी आत्मा परीक्षा करेछे के पोतानी कायामा अतर्व्यापकपणे रहेलो पोतीको आत्मा ते द्रव्यथी त्रिकाळ वृत्तिये अजर अविनाशी छे वळी क्षेत्रथी असंख्यात प्रदेशी छे काळथी अनादि अनत छे अने भावथी ज्ञान दर्शनादि अनत गुणमय उपयोगी छे साक्षात् सिद्ध परमात्मा ते पोतेज छे. कर्म सयोगे कायामा वश्योछे कायामा परिणम्योछे पण कायाथी जुदो छे शब्द, रूप, रस, गंध अने स्पर्श ए पुद्गलना पर्यायछे तेने इद्रियद्वारे सगागीपणाना रूपणे करीने पोते अनुभवेछे, ए सर्व पुद्गलनो अचेतन स्वभावछे अने अतर्व्यापकपणे अनुभववावाळो ते आत्मा छे एम जीवनी अने पुद्गलनी भिन्नता एटले जू

टाइ ज्ञानरूप कसोटीये थाय, तेने भेदज्ञान कहीए "आतम करमधारा भिन्न भिन्न चरचे ' के० हवे आत्म-धाराने आत्मा थकी प्रगट थयेली अनुभव ज्ञानधारा तेने उपादेय जाणी ग्रही स्व स्वरूपे परिणमावे अने कर्मधारा के० कर्म थकी प्रगट थयेली जे काया वचन अने मन तेने हेय जाणीने तजे " अनुभो अभ्यास लहे ' के० हवे त्या शुद्धात्म स्वरूपनो अनुभव अभ्यास परसग रहित पणा माटे उपयोगनी विशुद्धिये वृद्धिपणु पामे, " परम धरम गहे " कहेता इहा क्षपक श्रेणी माडे अने शुक्लध्यानना पेहेला पायाना ध्याता थाय त्यां परम नाम उत्कृष्ट धर्म ग्रहे " करम भरमको खजानो खोली खरचे ' के० इहां भ्रमि कतारूप मोहनीय कर्मनी प्रकृतिना परमाणु दळनो अनन्तो खजानो आत्म प्रदेशे रहेलो तेने खोली एटले उदयमां लावीने खरचे एटले शुद्ध परिणतिना लग्न कार्यमा दशमा गुणठाणा अते खरचे एटले विखेरी नांखे निर्जरे त्या मोहनी कर्मनी सत्ता आत्म प्रदेशथी छुटे वळी रागद्वेष अशुद्ध परिणतिनो पण छेद थाय, त्यां यथाख्यात चारित्र क्षीण मोह गुणठाणे पामे इहा शुद्ध परिणतिनु पाणीग्रहण पण थाय, ओही के० इहां मोक्ष के० मोक्षने एटले कर्मथी मूकाववाने " मुख ध्यावे ' के० मुख्य वृत्तिये शुक्ल ध्याननो बीजो पायो ध्यावे, त्या ज्ञानावरणीय तथा दर्शनावरणीय अने अतराय ए त्रण कर्मनो सत्ताथी उच्छेद थाय, त्यां " केवळ निकट आवे ' के० केवळज्ञान

केवळदर्शन तेरमा गुणठाणे पामे " पूरण प्रकाश पावे " के० इहा परिपूर्ण प्रकाश पामे एटले लोकने अने अलोकने जीवने अने अजीवने रूपीने अने अरूपीने वळी उत्पाद, व्यय, अने ध्रुव युक्त त्रणे काळनी वर्त्तनाने एक समये जाणे " पूरणके परचे " के० परिपूर्ण आत्मज्ञानना परिचय थकी " भयो निरदोर आहि " के० इहा चोगति भवभ्रमणनी दोरनो अंत आव्यो एटले तेथी मुक्त थया " करनो न कछु और " के० एक शुद्धात्म स्वरूपनो अनुसर पोतीका स्वभावे थाय छे ते सिवाय तेमने बीजु काइ पण कृत्य करवानु बाकी रहे नहीं " एसो " के० उपर गवेरया तेवा विश्वनाथ के० जगतना नाथ ए सर्वदेव आपणे वांदवा, पूजवा, ध्यान करवा योग्य " ताही " के० तेमने " बनारसी अरचे " के० बनारसी दास श्रावक पूजेछे

ए उपर कह्यो ते उपदेश पाम्या शुद्ध व्यवहार आवे शुद्धोद्विविध के० तेना बे भेद, तेमां पेहेलो भेद वस्तुगत व्यवहार धर्मास्ति कायादि द्रव्याणा स्वस्वचलण सहकारादि जीवस्य लोको लोकादि ज्ञानादिरूप " के० सर्व द्रव्यनी स्वरूप रूप शुद्ध प्रवृत्ति जेम धर्मास्तिकायनी चलण सहायता, अधर्मास्तिकायनी स्थिर सहायता, आकाशनी अवगाहकता काळनी वर्त्तना, पुद्गळनी मिलन, विखरण, समण पमणता, जीवनी लोका लोक आदि जाणवु, देखवु ते केवळज्ञान, केवळदर्शनता इत्यादिकले

वस्तुगत व्यवहार कहीए, वळी शुद्ध जीवादि द्रव्यमां अनता गुण अनता पर्याय छे ते सर्वे स्वस्वभावने भजेछे एटले गुण गुण प्रत्ये भिन्न व्यक्ति छे पर्याय पर्याय प्रत्ये भिन्न व्यक्ति छे एटले एक द्रव्यमा अनंत भेदे व्यक्ति पामीए ते सर्वने वस्तुगत व्यवहार कहीए ए पेहेलो भेद कह्यो

हवे "स्व सपूर्ण परमात्म भाव साधनरूप, गुण साधकावस्थारूप गुण श्रेण्यारोहादि साधन शुद्ध व्यवहार" के० पोतिकु मूळ रूप जोइए तो शुद्ध द्रव्यास्तिक नये पूर्ण परमात्म भाव तादृश देखाय छे अनादि सिद्ध छे. ते सग्रह नय थयो तेनो एवभूत नय करवो तेनु नाम साधन शुद्ध व्यवहार कहीए, ते धर्म क्यारे प्रगटे के प्रथम मन योगने स्थिर करे त्यां ऋजुसूत्र नय पामे ते नयमां यथाप्रवृत्तिकरणे आवे ते करणना प्रभावे सात कर्मनी घणी स्थिति घटाडे अने एक कोडाकोडी सागरोपममां एक पल्योपमनो असख्यातमो भाग न्यून एटली राखे त्यारे अपूर्व वीर्य शक्ति चेतन पामे तेनु नाम बीजु अपूर्व करण कहीए, ते वीर्य योगे ए करण अते ग्रथिभेद करे अने अनिवृत्ति करणे समकित पामे त्यां शब्द नय कहिये

जा गंठी ता पढमं गंठि समइच्छओ भवेवीअ ॥
अनिअट्टि करणं पुण, सम्मत्त पुरखडे जीवे ॥ १ ॥

हवे आत्मानो उत्सर्ग धर्म नीपजाववा माटे उपयोगनी विशुद्धिए स्वरूप रमण करतां स्वरुप अनुभवतां गुण-

ठाणे चढे अने आठमा गुणठाणेथी क्षपकश्रेणी मांडी शुक्लध्यान योगे घातिकर्म श्रेणिगत हणी तेरमा गुणठाणे अनंत चतुष्टय पामे, त्यां सुधी साधन शुद्ध व्यवहार कहीए वळी समभिरुढ नय पण त्यां कहीए हवे आयुष्यना छेडे योगरोध करी अयोगी चौदमा गुणठाणा अंते अघाति कर्म हणी कार्मण वर्गणा रहित थइ पोतानी कायामां त्रीजो भाग पोलाणनो छे ते घटाडी बे भाग प्रमाण आत्मप्रदेशनो निविडघन करी एक समये समश्रेणिए बीजा आकाश प्रदेशने नहीं फरसता लोकाग्र भागे सिद्ध क्षेत्रमां सादि अनंत भागे स्थिर रहे तेमने सिद्ध भगवान कहीए वळी त्यां एवंभूत नय पण कहीए इहां साधन शुद्ध व्यवहारनी पूर्णता थइ ए बीजो भेद कह्यो

हवे उपचरितानुपचरित व्यवहार भेदात द्विविधो के॰ उपचरित व्यवहार अने अनुपचरित व्यवहार ए बे भेद कहेछे एटले शरीर जे पोतानी काया तथा पुत्रादिक, धनादिक वस्तु आत्मानी नथी तेने उपचारे पोतानी कहीए वळी साधुने शिष्यादिक तथा श्रावक, श्राविका तथा उपकरण वळी पुस्तक पोथी, पोतानी काया, पोतीको गच्छ इत्यादि परवस्तुछे तेने पोतानी कहेवी ते सर्वेने उपचरित व्यवहार कहीए

हवे बीजो भेद ते जीवनु अने कायानु परिणामिक भावे एकपणु थयुछे पण वस्तु भिन्नछे कायाथी जीव जूदोछे अने जीवथी काया जूदीछे, जीवतो अरूपीछे का-

यादिक वस्तु रूपीछे जीवनो गुण ज्ञायकताछे अने पुद्गलनो गुण सरण, पड़ण, विध्वंसण छे जीव तो अविनाशीछे, अने पुद्गल विनाशीछे एम जीवनी अने पुद्गलनी भिन्नता छे, एम समजी जूदाइ करवी तेमा कशोए उपचार नथी तेने अनुपचरित व्यवहार कहीए तथा च विशेषावश्यके महाभाष्यमां कह्युंछे, जे व्यवहार नयना मूळ बे भेदछे एक व्हेंचणरूप व्यवहार ते द्रव्यादिक वस्तुने भेद भेदांतर करी व्हेचवु तेने व्हेंचणरूप व्यवहारनो पेहेलो भेद कहीए बीजो प्रवृत्ति व्यवहार, तेना त्रण भेद वस्तु प्रवृत्ति, साधन प्रवृत्ति, अने लौकिक प्रवृत्ति तेमा पेहेलो भेद वस्तु प्रवृत्ति एटले जीवनो स्वभाव तो ज्ञान दर्शन चारित्र आदि अनता गुण पर्यायरूपछे ते सर्व स्वभाव आवरण योग दूषित थयाछे ते आवरणनो क्षय साधन योगे बीजा भेदमा थशे, त्यारे चेतन निरावरण थयो कहीए ते पोताना स्वभावे प्रवृत्ति करे एक समय काळे अनती प्रवृत्ति थाय, तथा पाच द्रव्यतो अजीव छे धर्मास्तिकायादि ते सर्वे पोताना स्वभावे प्रवर्त्तेछे, तेने वस्तु प्रवृत्ति कहीए

हवे बीजो भेद साधन प्रवृत्ति, तेना त्रण भेद लोकोत्तर साधन, लौकिक साधन कुपरावचनीक साधन तेमा लोकोत्तरसाधन प्रवृत्ति ते अरिहंत भगवाननी आज्ञाए शुद्ध साधन मार्गे इहलोक ससार पुद्गल भोग आशसादि दूषण रहित जे रत्नत्रयीनी परिणति परभाव त्याग सहित तेने लोकोत्तर

मइनाणादिक तेहनु ए ॥ ३ ॥
गुण पर्याय स्वन्नाव ॥ कारकतन्मनो ॥
अरथ न्नेद छे एहनोए ॥ ४ ॥

अर्थ –जेम जगतमा आत्मद्रव्यनु केवळज्ञान सूद्दिए प्रयोग करीए ते शुद्ध सद्नूत व्यवहार थयो, वळी मति ज्ञानादि आत्माना गुण एम बोलीए ते अशुद्ध सद्नूत व्यवहार थयो ॥३॥ गुण गुणीनो पर्याय पर्यायवतनो स्वन्नाव स्वन्नाववतनो कारक, अने तन्मय के० कारकी तेनो जे एक द्रव्यानुं गत न्नेद बोलावीए ते सर्प उपनयनो अर्थ जाणवो घटस्वरूप घटस्यरक्तता, घटस्यस्वन्नाव, मृदाघटो निष्पादित इत्यादि न्नेदे अर्थ प्रयोग जाणवो ॥ ४ ॥

असद्नूत व्यवहार ॥ परपरिणति न्नलें ॥
द्रव्यादिक उपचारथोए ॥ ५ ॥
द्रव्यें द्रव्य उपचार ॥ पुद्गल जीवने ॥
जिम कहियें जिन आगम ए ॥ ६ ॥
काली लेस्या न्नाव ॥ श्याम गुणे न्नली ॥
गुण उपचार गुणे कह्योए ॥ ७ ॥
पर्याय पर्याय ॥ उपचारें वली ॥
हय गय खध यथा कह्याए ॥ ८ ॥
द्रव्ये गुण उपचार ॥ वली पर्यायनो ॥
गोर देह हु बोलताए ॥ ९ ॥

गुणे द्रव्य उपचार ॥ पर्याय द्रव्यनुं ॥
गौर देह जिम आतमाए ॥ १० ॥

गुण पज्जव उपचार ॥ गुणनो पज्जवे ॥
जिम मति तनु तनु मति गुणोए ॥ ११ ॥

अर्थ –परद्रव्यनी परिणति जळे थके द्रव्यादिकने नवविध उपचारथी कहीए ते असद्भूत व्यवहार जाणवो ॥ ५ ॥ हवे द्रव्ये द्रव्यनो उपचार ते जीन आगममा खीरनीरने दृष्टांते जीवने अनादि संबंधे पुद्गल मिश्रित कह्यो छे माटे जीवने पुद्गल कहीए ए जीव द्रव्यें पुद्गल द्रव्यनो उपचार थयो ए पेहेलो भेद ॥ ६ ॥ हवे गुणे गुणोपचार ते अरूपी उपयोगी अलेशी आत्माने कृष्णादि छ लेश्यावत कहीए छीए ते आतम गुणमां पुद्गल गुण जे लेश्या परिणाम तेनो आरोप थयो ए बीजो भेद ॥७॥

हवे पर्याये पर्यायनो उपचार ते अमूर्त्त, अरूपी आत्माने घोडा हाथी आदि जे पुद्गल स्कध तेने जीव पर्याय कहीए छीए ते पर्याय पुद्गल रूपछे तेने जीव पर्याय कहेवा ए उपचार समजवो ए त्रीजो भेद ॥ ८ ॥ हवे द्रव्यें गुणोपचार ते अरूपी आत्मा छे ते छता हुं गोरवर्णो छु एम बोलीए ते हु शब्दे आत्मा अने गोर ते पुद्गलनो गुण जे धोळो वर्ण तेनो उपचार जीव द्रव्यमां कर्यो, ए चोथो भेद थयो. हवे द्रव्यें पर्यायोपचार ते देहातित जीवने शरीरी कहेवो एटले शरीर छे ते पुद्गल द्रव्य पर्याय छे

तेनो उपचार जीव द्रव्यमां थयो ए पाचमो भेद ॥ ए ॥ हवे गुणे द्रव्योपचार ते देह गोर देखायछे ते आत्मा एम गोरपणो उद्देशीने आत्मविधान करीए एटले ए गोरतारूप पुद्गलनो गुण तेमा आत्मद्रव्यनो उपचार थयो ए छट्टो भेद हवे पर्याये द्रव्योपचार ते जेम देहने आत्मा कहीए एटले देह छे ते पुदगल पर्याय छे तेमा आत्मद्रव्यनो उपचार थयो ए सातमो भेद ॥ १० ॥ हवे गुणे पर्यायोपचार ते जेम मतिज्ञान गुण छे ते इंद्रिनो इंद्रि सयोग छे माटे शरीरज कहीए इहा मतिज्ञानरूप आत्मगुणने विषे शरीर रूप पुद्गलपर्यायनो उपचार कर्यो ए आठमो भेद हवे पर्यायें गुणोपचार ते जे शरीर छे तेज मतिज्ञान गुण छे तो इहा शरीररूप पुद्गलपर्यायने विषे मतिज्ञान आत्मगुणनो उपचार थयो ए नवमो भेद एम उपचारे असद्भूत व्यवहार नव भेदे कह्यो ॥ ११ ॥

असद्भूत व्यवहार ॥ एम उपचारथी ॥
एह त्रिविध हवे साभलोए ॥ १२ ॥
असद्भूत निजजाति ॥ जिम परमाणुउ ॥
बहु प्रदेशी भाषियेए ॥ १३ ॥
तेह विजाति जाणो ॥ जिम मूरत मति ॥
मूरत द्रव्य उपनीए ॥ १४ ॥
असद्भूत दोउ भात ॥ [illegible] भने ॥
विषय ज्ञान [illegible] ॥

उपचरितासद्भूत करियें उपचारो ॥
भेद एक उपचारथीए ॥ १६ ॥

अर्थ –असद्भूत व्यवहार उपर नव भेदे कह्यो ते प्रमाणे उपचारे समजवो हवे एना त्रण भेद कहे छे ते हे भव्य प्राणि तमे सांभळो ॥ १२ ॥ स्वजाति असद्भूत व्यवहारे जेम पुद्गल परमाणु छे, ते बहु प्रदेशी थवानी जाति छे माटे ते एक परमाणुने पण बहु प्रदेशी उपचारे कहीए ए पेहेलो भेद ॥ १३ ॥ हवे विजाति असद्भूत व्यवहारे जेम मतिज्ञानने मूर्त्तिवंत कहीए एटले ज्ञान छे ते आत्मगुण छे तेने विषे मूर्त्तिवंत जे पुद्गलनो गुण तेनो आरोप थयो ए बीजो भेद ॥ १४ ॥ स्वजाति विजाति असद्भूत व्यवहार, जेम जीवाजीव विषय ज्ञान कहीए. ज्हां जीव छे ते ज्ञाननी स्वजाति छे अने अजीव छे ते ज्ञाननी विजाति छे ए बेहुनो विषय विषयी भाव नामे उपचरित संबध छे ए त्रीजो भेद ॥ १५ ॥ एम उपचरित असद्भूत व्यवहारे जीवद्रव्य, जीवगुण, जीवपर्याय, पुद्गलद्रव्य, पुद्गलगुण, पुद्गलपर्याय एम ए बे वस्तुना छ भेद कह्या, ते जीवमा पुद्गलनो अथवा पुद्गलमां जीवनो जेम घटे तेम एकनो उपचार करीए ए रहस्य समजवो १६

तेह स्वजाति जाणोरे ॥ हुं पुत्रादिक ॥
पुत्रादिक छे मादराए ॥ १७ ॥
विजातिथी ते जाणोरे ॥ वस्त्रादिक मुझ ॥

अर्थ —केवळनाण केवळदर्शन आदि अनंता गुण पर्याय रूप यथायोग्य शुद्ध विषयवत उपाधि संयोगादि रूपण रहितपणे तेने शुद्ध निश्चयनय कहिए अने मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मन पर्यवज्ञान ए चार ज्ञान अने मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान अने विभंगज्ञान ए त्रण अज्ञान मळी सात भेदे ज्ञानवत आत्मा ते सर्वे सोपाधिक छे परसंयोग सगीछे सावरण भावछे तेने अशुद्ध निश्चय नय कहीए ए निश्चयनयना बे भेद कह्या ॥२॥

दोइ भेद व्यवहारनाजी ॥ सद्भूता सद्भूत ॥
एक विषय सद्भूतछेजी ॥ पर विषया सद्-
भूतरे ॥ प्रा० ॥ ३॥

अर्थ —हवे व्यवहारनयना बे भेद कहे छे सद्भूत अने असद्भूत तेमां एक निज द्रव्याश्रितवर्त्ति भेदज्ञानी परवस्तु विभाग व्हेंचण रूप ते सद्भूत व्यवहार नामे पेहेलो भेद कह्यो हवे बीजो भेद ते परवस्तुनो विषयी एटले मन वचन अने काया ए त्रणे जोगे प्रवर्त्ते पाच इंद्रि त्रण बळ श्वासोश्वास अने आयुष ए दश द्रव्य प्राणने जीव समजे पाच इंद्रिना त्रेविस विषय सेवे तेमा रागद्वेष भसे तेने असद्भूत व्यवहार कहीए ए बे भेद व्यवहार नयना कह्या ॥ ३ ॥

उपचरितानुपचरितथी [illegible] दोय [illegible] ॥
सोपाधिक [illegible] णी [illegible]

अर्थ-–हवे सद्भूत व्यवहारना वे भेद कहे छे एक उपचरित सद्भूत अने वीजो अनुपचरित सद्भूत तेमां प्रथम भेद ते सोपाधिक गुण गुणीनो भेद देखाडे. जेम जीवस्य मतिज्ञान ए उपाधि तेहीज इहा उपचरित सद्भूतनो प्रथम भेद ते कह्यो

निरुपाधिक गुण गुणी भेदेरे॥ अनुपचरित सद्भूत॥
केवळज्ञानादिक गुणारे ॥ आतमना अद्भूतरे ॥
प्रा० ॥ ५ ॥

अर्थ.–हवे वीजो भेद निरूपाधिक गुण गुणी भेदे जाणवो यथा जीवस्य केवल ज्ञानं, केवळ दर्शन एटले आत्मानो वस्तु गते अनतो धर्मछे, ते धर्मने अद्भूत कह्यो ते अलख, अगोचर, अगम, अनुपम, अव्यावाह, अविनाशी , अमल, विमल, ज्योतिवत इत्यादि जे अनंतु अद्भूत स्वरूपछे तेमां कशोए उपचार उपाधि नथी तेने अनुपचरित सद्भूतनो वीजो भेद कह्यो ॥ ५ ॥

असद्भूत व्यवहारनाजी ॥ एमज भेदछे दोय ॥
प्रथम असंश्लेषित योगेजी ॥ देवदत्त धन जोयरे॥
प्रा० ॥ ६ ॥

अर्थ.–हवे असद्भूत व्यवहारना उपर कह्या तेज रीते वे भेद कहेछे. एक उपचरित असद्भूत अने वीजो अनुपचरित असद्भूत तेमा प्रथम भेद ते असंश्लेषित योगे कल्पित संवधे होय जेम देवदत्तनु धन, इहां धन

ते देवदत्तने सवध स्वस्वामित्व भावरूप कल्पित छे, ते माटे उपचार थयो वळी देवदत्त अने धन ते बेहु एक द्रव्य जाति नथी ते माटे असद्भूत एम भावना करवी ते उपचरित असद्भूतनो पेहेलो भेद ते कह्यो ॥ ६ ॥

संश्लेषित योगें बीजारे ॥ जेम आतमनु देह ॥
नय उपनय नयचक्रमा रे ॥ कह्या मूल नय एहरे ॥
प्रा० ॥ ७ ॥

अर्थ –हवे बीजो भेद अनुपचरित असद्भूत व्यवहार ते सश्लेषित योगे कर्म सवधे जाणवो जेम आत्मानु शरीर एटले आत्मानो अने शरीरनो सवध कोइ धन सवधनी पेरे कल्पित नथी वीपरित भावनाए निवर्त्ते नहीं जाव जीव सवधीछे ते माटे ए अनुपचरित अने भिन्न विषय माटे असद्भूत जाणवो ए रीते नय तथा उपनय ए बेहु नयचक्रमा मूल नय सहित कह्याछे ॥ ७ ॥

ए व्यवहारनय द्रव्य गुण पर्यायना रासना अनुसारे कह्यो हवे आगमसारमा व्यवहार नयना छ भेद कह्या छे ते कहे छे तेमा पेहेलो भेद शुद्ध व्यवहार, ते उपयोगी पणे जाणीए वळी ज्ञान, दर्शन, चारित्र गुण ते निश्चय नय एकत्व रूपछे पण उपदेश योगे भव्य जीवने समजावता जूदा जूदा भेद कह्या वळी, आत्माने शुद्ध करवो आगला गुणठाणानो छोडवो अने उपरना गुणठाणानो ग्रहवो तेने शुद्ध व्यवहार कहीए

हवे बीजो अशुद्ध व्यवहार ते जीवमा मिथ्यात्व अ-

ज्ञान रागद्वेष मोहादि लाग्या छे तेथी अशुद्धपणु छे, तेनेज अशुद्ध व्यवहार कहीए

हवे त्रीजो भेद शुभ व्यवहार ते पुन्यनु कारण नवां शुभ कर्म लेवानो हेतु पुन्यना अर्थीने मोक्ष मार्गथी विमुख तप व्रत, नियम कष्ट आदे द्रव्य क्रियानो कर्त्ता विष, गरल, अन्यो अन्य ए त्रण अनुष्ठाननी मुख्यता इहां प्राये होय. इत्या दिकने शुभ व्यवहार कहीए कह्यु छे केः—

नत्थि मग्गो मुख्खो, वव्वहारो पुन्न कारणो वुत्तो ॥
पढमो संवर रुवो, आसवहे उतओ बीउ ॥ ७ ॥

अर्थ.–निश्चय नयनो मार्ग ज्ञानसत्तारूप ते मोक्षनुं कारण छे एटले मोक्ष छे अने व्यवहार क्रिया नय ते पुन्यनुं कारण कह्यो पेहेलो निश्चय नय सवर छे अने निश्चय संवर निश्चय नय ते एक ज छे जूदा नथी बीजो व्यवहार नय ते आश्रव नवां कर्म लेवानो हेतु छे एटले शुभ पुन्य कर्मनो आश्रव थाय छे अने अशुभ व्यवहारे अशुभ कर्मनो आश्रव थाय छे ॥ ७ ॥

हवे चोथो अशुभ व्यवहार ते यतना रहित थकां पर प्राण हणवा ते प्राणातिपात ॥ १ ॥ असत्य वचनीक ते मृषावाद ॥ २ ॥ माग्या विना पर वस्तु लेवी ते अदत्ता दान ॥ ३ ॥ स्त्री पुरुष संयोग वेद विषयनुं सेववुं ते मैथुन ॥ ४ ॥ परिग्रह रक्षण करवु तेमां मूर्च्छित थवु ते परिग्रह ॥ ५ ॥ क्रोध करवो ॥६॥ मान मद मोटाइ करवी ॥७॥ कपट केळववु ते माया ॥ ८ ॥ लोभमां लाग्या रहेवुं ॥९॥

अनुकुळनो स्नेह ते राग ॥१०॥ प्रतिकुळनो खेद ईर्ष्या ते द्वेप ॥ ११ ॥ लढवु वढवु युद्ध करवुं ते कलह ॥ १२ ॥ कोईने ठतु अठतु कलकनु देवुं ते अन्यारव्यान ॥१३॥ एकने बीजानी चामी करवी ते पैशुन्य ॥ १४ ॥ शाता वेदनीयमां रीझ राजीपो, अशाता वेदनीयमा कुराजीपो ते रति अरति ॥ १५ ॥ पारकी निंदा करवी ते परपरिवाद ॥ १६ ॥ कपट साथे जूतु बोलवु ते माया मृपावाद ॥ १७ ॥ अजाणपणे वीपरित श्रद्धा ते मिथ्यात्वशल्य ॥ १८ ॥ एम अढारे पापस्थानकने सेववा वळी इंगालादिक पाच कर्म, दतादिक पाच वाणिज्य, यत्रादिक पाच सामान्य ए पदर कर्मादान ते पण पापना दातार ठे, कह्यु ठे वदिता सूत्रे.—

इंगालि वणसाम्री, जाडी फोम्री सुवज्जए कम्म
वाणिजं चेवय दंत, लख्खरस केस विस विसयं ॥
एव खु जंत पिल्लण, कम्म निल्लंठण च दवदाण ॥
सरदह तलाय सोस, असइ पोसच वजिज्जा ॥२३॥

ए पदर कर्मादान वे गाथाथी जाणवां, वळी रात्रि जोजन करवु, अजक्ष्य अनत कायनु जक्षण करवु, तथा अन्यदर्शनीनो सस्तव–परिचय, प्रशसा करवी वळी वासी, घोळो, द्विदळ, अणगळ पाणी, इत्यादिकनु जक्षण आदि करवु ते सर्वने अशुज्ञ व्यवहार कह्यो

हवे पाचमो उपचरित व्यवहार ते जेटलो सयोगिक जावने वस्तु आत्माथी जूदी ठे पण जीवें मिथ्यात्व अज्ञा-

नपणे आपणी करी जाणी छे ते परवस्तुनो पोतापणे उपचार तेज उपचरित व्यवहार कह्यो. हवे छठ्ठो अनुपचरित व्यवहार ते शरीरादि पांच इन्द्रि मन वचन ते परवस्तु यद्यपि जीवथी जूदी छे तोपण परिणामिक भावे लोळीपणुं एकठा मळी रह्यु छे एम अपेक्षा सहित तेने आपणी करी जाणे, तेने अनुपचरित व्यवहार कह्यो ए व्यवहार नयना छ भेद आगमसारना अनुसारे कह्या इत्यादि व्यवहारनयनी ओळखाण जाणपणुं करवुं प्रवर्त्तवुं, तेथी धर्म पामीए तेनो परमार्थ भेद ज्ञान जोग छे, तेनी हवे विविक्षा करे छे.

व्हेंचणरूप व्यवहारे जीवद्रव्य, पुद्गलद्रव्य, जीव गुण, पुद्गलगुण, जीवपर्याय, पुद्गलपर्याय, एम भेद व्हेंची जूदा जूदा करे तेथी वस्तु ओळखाय, स्वपर समजाय त्यारे धर्म पोताना स्वरूपमां समजे पछी तेमां प्रवर्त्ते ते प्रवर्त्तन व्यवहार. तेथी मिथ्यात्व टळे तेनी साथे अशुद्ध व्यवहारने छेरूे तीहां शुद्ध व्यवहार आवे वळी विशुद्ध ज्ञान आवे ते वस्तुनी शुद्ध परिणति देखाने ते वस्तुगत शुद्ध व्यवहार पछी वस्तु धर्म शुद्ध करवापणे साधन पामे ते साधन शुद्ध व्यवहार तेमां पूर्वकृत कर्णनी उदयिकता आवे ते उपचरित व्यवहार तेमां व्यापकणुं न करे अने रूपातित ध्याननो ध्याता थाय ते अनुपचरित व्यवहार एम व्यवहारनी शेलिये रूपातित, योगातित जे सिद्ध ते रूपें पोते थाय, ते व्यवहार समकित धर्म प्रवर्तनमां अने लोकिक साधन तथा कुपरावचनीक साधन तथा लोकिक प्र-

बे भेद कहे छे एक सद्भूत अने बीजो असद्भूत, तेमां पर संग रहित उपयोगे तो निजद्रव्यगत विषयी भाव ते सद्भूत, परद्रव्य सयोगे पर विषयता ते असद्भूत व्यवहार, तेमां सद्भूतना बे भेद एक उपचरित अने बीजो अनुपचरित तेमा पहेलो भेद ते " जीवस्यमतिज्ञानं " एटले उपाधि योग जीवगुण कहीए ते उपचरित सद्भूतनो पेहेलो भेद हवे बीजो भेद ते "जीवस्य केवलज्ञानं " केवळ दर्शन एटले जेमा उपाधि नथी ते गुण आत्मानो छे एम कहेवु ते अनुपचरित सद्भूत ए बे भेद सद्भूतना कह्या तेज रीते असद्भूतना बे भेद कहे छे

एक उपचरित असद्भूत, बीजो अनुपचरित असद्भूत तेमा पेहेलो भेद ते असश्लेषित योगे कल्पित सबधे होय एटले धनादि वस्तु पोतानी कहेवी ते उपचरित अने भिन्न विषय माटे असद्भूत हवे बीजो भेद ते सश्लेषित योगे कहीए जेम आत्मानु शरीर ते कांइ आयुष्य गता छोड्यु छुटे नहीं माटे अनुपचरित, अने भिन्न विषय माटे असद्भूत ए बीजो भेद कह्यो एम दृष्टि पसारीने जुए तो जीवस्वरुप हाथमां आवे पण रूपी नथी ते देखाडीए ज्या ज्ञाननी मुख्यता छे त्यां व्यवहारनी गुणता छेज एटले उपाधिना टाळनार विशुद्धिनो कर्त्ता ज्ञान योग छे माटे जे ज्ञानी पुरुषो छे, तेतो एक ज्ञानमाज निश्चय अने व्यवहार बेउ नय समजे छे एटले भेद ज्ञान छे ते शुद्ध व्यवहार छे अने अभेद ज्ञान छे ते शुद्ध निश्-

यद्ये.अने ज्ञान रहित व्यवहार कहीए ते मिथ्यात्वधर्म प्रवर्त्त-नमां छे ए व्यवहार नय कह्यो तेमां भेदज्ञान योग छतां समकित धर्म प्रवर्त्तन कहीए अने अभेद ज्ञान योगे निश्चय धर्म प्रवर्त्तन कहीए तेनी मुक्ति कहीए अभेद ज्ञानछे ते कार्य रूप छे अने भेद ज्ञान छे ते कारणरूप छे भेदज्ञानना अभावे जे साधन करवुं तेने अकारण कहीए

हवे कल्प व्यवहार अने ज्ञान व्यवहार ए वे भेद कहेछे ए वे व्यवहार ग्राही तेज साधु एटले कल्प छे ते व्यवहारन यनो अपेक्षी छे अने ज्ञान छे ते निश्चयनयनो अपेक्षी छे ए वे भेद ते साधुना आचार कहीए तेमां कल्प छे ते वाह्य आचारी छे अने ज्ञान छे ते अतर आचारी छे तेमां कारण योगे कल्पने डुखवे तो साधुपणु जाय नहीं. अने ज्ञानने डुखवे ते वखते साधुपणुं रहे नहीं. नाश पामे. वळी कल्प छे ते याग प्रवृत्तिनो ग्राहक छे अने ज्ञान छे ते उपयोग प्रवृत्तिनो ग्राहक छे वळी कल्प छे ते निमित्तकारणमां छे अने ज्ञान छे ते उपादानकारणमां छे कल्पनी आदि नैगम नये छे. अने ज्ञाननी आदि शब्द नये छे ए वेहु भेदनो आराधक तेनेज साधु कहीए. तेमां प्रथम कल्प व्यवहारनी गवेषणा कल्पसूत्रथी दश भेदे-कहे छे

तेमा पेहेलो अचेलक कल्प ते पेहेला अने छेल्ला ती-र्थंकरना साधुने धवळ वस्त्र छे, नहीं रगेलु, नहीं धोएलु जेवु सेवके आपेलु होय तेवु तेमां साढा त्रण हाथ लांवो चोळपट्टो ढींचण प्रमाणे नीचो तेना उपर कंदोरो वळी

साडा चार हाथ लांबो कपडो, तेना उपर डावे खन्ने कावळी अने डावा हाथे दांडो तथा डावा हाथे ज़ोळी, वळी वत्रीश आगळनो ठेघो, तेमां चोवीस आंगळनी दांडी, दश आगळनी दशीउं अने अष्टमगळ आळेखेलो वनातनो पाटो, ते थकी गुथेली दशीउं ते प्रमाणे लुगडांनो ककडो तेना उपर कावळीउ तेना उपर दोरो त्रण आंटे बांधवो एवो वत्रीस आंगळनो ठेघो वळी पोतानी एक वेंत अने चार आंगळनी चोखूणे सरखी मुहपत्ति इत्यादि मानोपेत लिंग साधुनु कह्यु तेने अचेलक कहीए वळी बावीस तीर्थकरना साधु साध्वी ठे, ते तो मोटा मूलना पचरगनां मानोपेत नहीं एवा वस्त्र राखे माटे तेमने सचेलक कहीए ए अचेलक कल्प कह्यो

हवे बीजो उद्देशिक कल्प ते बावीस तीर्थकरना वखतमा कोइ साधु साधवी निमित्ते कोइ गृहस्थे ज्ञात पाणी, औषध, भैषज्य, वस्त्रपात्रादि नीपजाव्यां होय ते जेना निमित्ते नीपजाव्या ठे, ते साधु साध्वीने लेवां कल्पे नहीं पण बीजा साधु साध्वीने कल्पे, तेमने आधाकर्मी दोष न लागे, अने पेहेला ठेल्ला तीर्थे एक साधु साध्वी निमित्ते जे आधाकर्मी आहारादि नीपजाव्यु ठे ते साधु साध्वी समुदायने लेवो कल्पे नहीं ए उद्देशिक कल्प कह्यो

हवे त्रीजो सज्झयातर पिंडनो कल्प ते—जे उपाश्रयादि मकानमा साधु साध्वी उतरे, तेमां रहे तेनो जे मालिक होय तेने सज्झयातरी कहीए तेना घरनो वस्त्र पात्र

आहारादि चोवीसे तीर्थंकरना साधु साध्वीने लेवा कल्पे नही ए सज्झयातरीक कल्प कह्यो

हवे चोथो राज्यपिंड कल्प ते राजाना घरनो आहारादि लेवो बावीश तीर्थंकरना साधु साध्वीने कल्पे प्रथमना अने छेल्ला तीर्थे लेवो न कल्पे ए राजपिंड कल्प कह्यो हवे पांचमो कृतिकर्म कल्प ते वांदवु त्यां श्री जैन शासनने विषे पुरुष प्रधान धर्म प्रवर्त्ते छे ते कारणे साध्वी सो वर्षनी दीक्षित होय तोपण एक दिवसना दिक्षित साधुने वांदे ए पाचमो कल्प कह्यो हवे छठ्ठो व्रत कल्प ते बावीस तीर्थंकरना साधु साध्वी दीक्षा अवसरे चार महाव्रत उचरे एटले स्त्रीने परिग्रहमा गणीए त्यारे चोथुं पांचमु ए बेनु एकज थाय ते अपेक्षाए चार महाव्रतधारी कह्या अने पेहेला छेल्ला तीर्थे स्त्री जूदी अने परिग्रह जूदो एम चोथा व्रतमां स्त्रीनो त्याग अने पांचमा व्रतमा परिग्रहनो त्याग ए अपेक्षाए पाच महाव्रत उचरे. वळी पेहेला छेल्ला तीर्थे छठु रात्रीभोजनव्रत मूळगुणमा गणाय छे अने बावीश तीर्थंकरना साधु साध्वीने उत्तरगुणमां गणाय छे ए छठ्ठो कल्प कह्यो

हवे सातमो ज्येष्ट कल्प ते पेहेला छेल्ला तीर्थे वडी दिक्षाना दिवसथी नाना मोटापणुं गणायछे अने बावीस तीर्थंकरना साधु साध्वीने दिक्षाना दिवसथी नाना मोटा पणु गणाय छे तेमां पितापुत्र राजा प्रधान मा दीकरी मोटाभाइ नानाभाइ इत्यादि साथे दिक्षा लेवे तो लोक रीते पिता मोटा अने पुत्र नाना, राजा मोटा अने प्रधान

नाना, माता मोटां अने दीकरी नाना एम गणाय छे ए सातमो कल्प कह्यो

हवे आठमो प्रतिक्रमण कल्प ते बावीस तीर्थंकरना साधु साध्वी जे अवसरे पोताने पाप लाग्यु अतिचार लाग्या जाणे तेज वखते देवसि अने राइ ए बे प्रतिक्रमण करे, नहीं तो न करे, अने पेहेला छेल्ला तीर्थे साधु साध्वी निरतर प्रभाते राइ अने सध्याए देवसी अर्द्धमासे पाक्षिक चारमासे चउमासि अने बार मासे सवत्सरि एम पाच प्रतिक्रमण करे ए आठमो कल्प कह्यो

हवे नवमो मास कल्प ते बावीस तीर्थंकरना साधु साध्वीने मास मास प्रत्ये विहार करवानो नियम नथी ज्या लाभ देखे त्या घणा काळ पर्यंत एक क्षेत्रे रहे अने पेहेला छेल्ला तीर्थना साधु साध्वी तो वर्षाकाले चार मास रहे बाकी एक मास रहे एटले आठ मासना आठ अने चोमासानो एक एम एक सवत्सरमा नव कल्पी विहार करे ए नवमो कल्प कह्यो

हवे दशमो पर्युषण कल्प ते सवत्सरी सबधीना पाच बाना अवश्य करवा ते कहे छे सवत्सरी प्रतिक्रमण करवु ॥ १ ॥ केशनो लोच करवो ॥२॥ अष्टमनो तप करवो ॥३॥ तथा ज्या रह्या होय ते नगरमा चैत्य प्रवाडी करवी ॥४॥ सर्व सघमा माहो मांहे खमत खामणा करवा ॥५॥ इत्यादि भाव जाणवो ए दशमो कल्प कह्यो

हवे ज्ञान व्यवहार कहे छे ज्ञान कहेता आत्मज्ञान

योगे साधुपद छे कह्यु छे.– उत्तराध्ययन सूत्रे

नाणेणय मुणि ओदि न मुणि वन्न वासेण ॥

अर्थ –जे ज्ञानी तेज मुनि तेमने साधु कहीए पण ज्ञानना अन्नावे वनवासमां रहेता अने क्रिया करतां पण मुनिपद नथी एम कह्यु वळी कह्यु छे, आनदघनजी कृत चोवीसीमां बारमा वासुपुज्य स्वामीना स्तवनमा

आत्मज्ञानी श्रमण कहावे, बीजा तो द्रव्य लिंगीरे॥

जेणे आत्माने जाण्यो ओळख्यो तेज ज्ञानी अने तेज साधु ते विना जे बीजा तेमने द्रव्यलिंगी कहेता वेष धारी कहीए पण साधु न कहीए साधु तो ए छे के जेणे आत्माने कायाथी जूदो जाण्यो छे अनुन्नव्योछे जम सत्ता चेतन सत्ता जूदी जूदी जाणी छे ते छे अहीं कोइ कहेशे के तमे आत्माने जाणे तेने ज्ञानी कहो छो तो शु ? व्याकरण प्रमुख न्नणेला सूत्र सिद्धांत वांचे अर्थ करे श्रोताने समजावे ते ज्ञानी नही ? तेनो उत्तर श्री ठाणांग सूत्रे पेहेले ठाणे कह्यु छे,–

एगजाणे सव्वं जाणइ,एग न जाणे सव्वं न जाणइ॥

वळी आचाराग सूत्रे–

एगंजाणइसे सव्व जाणइ जे सव्वंजाणइसेएगंजाणइ

अर्थ –एक पोताना आत्माने जेणे जाण्यो छे ओळख्यो छे अनुन्नवे करी दृष्टि प्रत्यक्ष कर्यो छे. ते पुरुषने समस्त जाण कह्यो हवे कइ पण जाणवानु अधुरु नथी ए,

पहेला पदनो अर्थ–हवे बीजा पदनो अर्थ कहे ठे जीवना पांचसे ने त्रेसठ न्नेद, अजीवना पांचसेने साठ न्नेद इत्यादि जाणे ते गणितानुयोग, ज्ञाता सूत्र आदि धर्मकथानुयोग, व्यवहार चारित्र क्रिया ते चरणकरणानुयोग, धर्मास्तिकायादि पाच अजीव ते डव्यानुयोग द्वीप समुड नरक देवलोक क्षेत्र समास इत्यादि अनेक वातो जाणे ठे पन्नित नाम धरावे ठे पण सिद्धनो साधर्मी पोतीको आत्मा निरजन निराकार ठे तेने कायाथी जूदो अनुन्नव्यो नथी त्या सुधी " सव्वनजाणइ ' के० काइ जाणतो नथी एम कह्यु एटले अज्ञानी कही वोलाव्यो

ए ठाणागजीना पाठनो अर्थ कह्यो हवे आचारागजीना पाठनो अर्थ कहे ठे जे पुरुपे एक पोताना आत्माने जाण्यो ठे तेणे समस्त जाण्यु ए पेहेला पदनो अर्थ कह्यो हवे जे पुरुपे आत्मानु मूळ स्वरुप जाण्यु ठे, ज्ञान दर्शन चारित्र तप वीर्य उपयोग इत्यादि अनतागुण, अरूपी, अमूर्त्ति, अटल अवगाहना, अव्यावाध इत्यादि अनता पर्याय अस्ति नास्ति नित्यानित्य, एक अनेक, सत्यअसत्य, व्यक्त अव्यक्त न्नेद अन्नेद न्नव्य अन्नव्य इत्यादि अनता स्वन्नाव तेस्याद्वादपक्षमयी अनुन्नव्यो ठे आत्मा जेणे वळी निज द्रव्यार्थीक पर्यायार्थीकनु ज्ञान ठे जेने वळी न्याये करी, निक्षेपे करी, प्रमाणे करी सप्तन्नगी, पट्कारक, सामान्य विशेप इत्यादि पोताना आत्मानु विस्तार ज्ञान ठे जेने तेने सव्व जाणइ के० सर्व जाण कहीए वली तेनेज एक

पोताना आत्मानो जाण पण कहीए एम सूत्रमां परमात्मानु तथा गणधर महाराजानु वचन छे. तेने विचारी जुओ एटले ज्ञानीनी ओळखाण थशे ते ज्ञानीने साधु केहेवा. वळी कह्युं छे अध्यात्मसार ग्रंथे पदरमा योगाधिकारे,—

पाप करण मात्राद्धि न मौनं विचिकित्स्या ॥
अनन्य परमात्मास्यातूज्ञान योगी भवेन्मुनि.॥२६॥

अर्थ–हिंसा, मृपा, चोरी, मैथुन, परिग्रह, रात्रिभोजन ए छए पापरूप छे वळी आश्रव बंधनु कारण छे एम जाणी विरति करीए एटले तजीए पण पोताना आत्माने जाण्यो नथी त्या सुधी "न मौन विचिकित्स्या" केहेतां ए मुनि नथी मुनिपद तो एथी जुदुछे, "अनन्य परमात्मास्यात्" केहेतां कथचित् एटले कर्मोपाधिनी अपेक्षा न करीए तो पोतीको आत्मा तेज परमात्मा छे ज्ञानयोगी के० तेने जे जाणे अनुभवे ते ज्ञानी ज्ञानयोगी स्वस्वरूप खेल खेले स्वस्वरूपमां उपयोगे रमे तेने भावेन्मुनि केहेतां मुनि कहीए वळी कह्यु छे समाधि शतके,–

दुहो–केवल आतम बोधहै। परमारथ शिव पंथ॥
तामें जिनकुं मगनता। सोइ भाव निगरंथ१

अर्थ –केवळ कहेतां एक आत्म बोध जे आत्मज्ञान छे तेज परमार्थ कहेतां उत्कृष्ट अर्थ जे निज स्वरूप प्रत्यक्ष अनुभवज्ञान ते शिव कहेतां ज्यां उपद्रव नथी, विघ्नकर्त्ता

केम कह्यो छे ? तेनो उत्तर हे भाइ आत्मज्ञान आव्यां समकित पामीए चारित्र पामीए उपयोगे अनुभव पामीए संवर निर्जरा पामीए, अप्रमत्तादि गुणठाणे चढीए, श्रेणी मांडीए रागद्वेष मोह रहित थइए केवळज्ञान केवळदर्शन, आदे क्षायकलब्धि पामीओ योगातित जे सिद्ध तद्रूप थइए इत्यादि साधनदशा आत्मज्ञानमां छे त्या सुधी व्यवहार कहीए साधननी पूर्णताए निश्चय कहीए ए ज्ञान व्यवहार कह्यो अहींआ व्यवहारनो अधिकार संपूर्ण थयो

हवे भवाभिनंदी जीवनां लक्षण कहे छे.

कह्यो छे श्री हरिभद्रसूरी पूज्ये

॥ श्लोकः ॥

क्षुद्रो लोभरतिर्दीनो, ॥ मत्सरी भयवान शठः ॥
अज्ञो भवाभिनंदी च, ॥ निष्फलारंभ साधक ॥१॥

अर्थ.–प्रथम क्षुद्रो शब्द छे ते सामान्य वाची छे, तेना अर्थना घणा भेद थाय छे, ते कारणे इहां अमे क्षुद्रो शब्दना चार भेद करीए छीए, क्षुद्रो अंगभिर-(१) क्षुद्रो कृपण, (२) क्षुद्रो लुच्छ, (३) क्षुद्रोक्रूर, (४) लोभ, कहेता लोभ, (५) रति कहेता विषय ते रति, (६) दीनो कहेता दीन, (७) मत्सरी कहेता मत्सर, (८) भयवान कहेतां भय भ्रात, (९) शठ कहेतां कपट, (१०) अज्ञो कहेता अज्ञानी मिथ्यात्वी, (११) ए अगीयार लक्षणे सहित होय तेने भवाभिनदी कहीए, हवे ए बोलो कह्या तेनु विवेचन करे

छे, प्रथम लक्षण, अगम्भिर, एटले अंतर्गत गुणना अभावे पारका छिद्र खोळतो फरे कदाच सामामा किंचित् दूषण होय तो तेने मोटु करीने देखाडे, वळी दूषण न होय तो द्वेष बुद्धिए अछता दूषणनो आरोप मुके, वळी पोताना अवगुणने ढाके, अने पोतामा नही गुण छता गुणीपणानो मरोड राखे, गर्व करे, वडेरानो विनय न साचवे, अविनय करे, तेने भवाभिनदी कहीए (१)

हवे वीजु लक्षण, कृपण, एटले छती वस्तुए पोते वापरे नही, भोगवे नही, दीन दुखीयाने अनुकपा बुद्धिए अने सुपात्र जे अतिथी मुनि तेमने भक्तिए करीने दान आपे नही, एक धननोज सचय मूर्छीत थको करे भूमीमा दाटे, ए जीवो अते मरीने भवातरे, एज धननी मूर्च्छाए, सर्पनो, वा नोळीयानो, उदरनो, कुतरानो, गीरोळीनो इत्यादिनो भव पामी पूर्व भवनी सज्ञाए ए धन जीहा दाटेलु गुप्त होय, तेना उपर फर्या करे तीहाने तीहाज रहे, एटले जे कृपण होय ते वहुधा मूर्च्छीत होय, तेने भवातरे एम तिर्यंचनी गति प्राप्त थाय, तेनु कारण कृपणता तेने भवाभिनदी कहीए (२) हवे त्रीजु लक्षण तुच्छ एटले अल्पमती बुद्धि छे जेनी एवो, साराशनो अग्राहक, देशविरति [illegible] विरति यइने धर्मकरणी करे, तेनो [illegible] एम छे [illegible] आश्रीने भोज-

तेनी शांन्ति थशे, एवी बुद्धिए जे तप, जप, क्रिया करे. वली लोचादि कष्ट सहे तेनु नाम विषयानुष्टान छे,अने परभव आश्रीने देवेंद्र, नरेंद्रादि पद अने ते पदनी ऐश्वर्यादिक, पुद्गलिक, ऋद्धिनी ठकुराइ तेनु इंद्रिनोइंद्रिजनित जे विषय सुख पुन्यना उदयथी पामीए, तेनी आससाए जे तप, व्रत कष्ट क्रिया करे छे, दु ख सहे छे ते गरलानुष्टान छे अने प्रणिध्यानादिकने अभावे साध्य शून्य दृष्टिए सापेक्षता विना देखादेखीए शून्य मने समूर्छिमनीपरे क्रिया करे, ते अन्योन्यानुष्टान छे. ए करणी आश्रीने कह्यु हवे उपदेश आश्रीने कहे छे एटले प्ररुपणा करे के मुनीए अणसण आदे तप कर्यो, तेथी देवलोकादि ऋद्धि पाम्या, वळी अमुक श्रावके पडिमा प्रमुख वही तेथी पाम्या, माटे तमे पण करशो तो पामशो, एम लालच आपी आशा वळगाडी, अध परपराने धधे उपर कह्या त्रण अनुष्टान ते रीते प्रवृत्ति करावे पण पहेली ते विरति के पहेलु ते बोधिवीज? एटले तत्वना बोधनी प्राप्तिनो हेतु जे उपदेश ते वस्तुगते वस्तुपणानी प्ररुपणा ते न करे, वळी देवगुरुने धर्म ए त्रण तत्वनी यथास्थित ओलखाण करावी, व्यवहार समकितनी श्रद्धा पूर्वक प्राप्ति पण न करावे अने मिथ्यात्वी थका विरतिपणानी परपरामा घाले वली एम पण उपदेश न करे के जे पर आशसा दूषण टालीने निराशी भावे धर्म करशे, तेज समकितादि गुण प्रगट करवानो, वळी पून्यानुवधी पुन्य उपार्जवानो लाभ पामशे पूर्वे पण जेणे आ-

ञसा दूषणे वर्जीत थइने निरासी ञावे धर्म कर्यो छे ते पाम्या छे आशसाए करता तो पुन्य मागता पाप आवे अने देवलोक मागता नर्क तिर्यचनी गति मले, वली धर्मध्यान करता आर्त्तध्यान थाय वळी महोपाध्याय यशोविजयजी जसविलासमां कहे छे के जे क्रिया करे छे अने तेना फळनी ममता धरे छे, तेना गळामा फासी आइ कहेता आवी पडी, ते वचननो विचार, " जैन कहो क्यु होवे, " ए पदथी करी लेजो अने पुद्गलीक विनाशिक सुखनी आशाने छेदी, ज्ञानघटमा लावी निजपर ज्ञिन्नता करवी, निजगुण रागी थवु, वळी उपर त्रण अनुष्टान गवेरया तेने तजवा, अने तद्‌हेतु अने अमृत ए वे अनुष्टाननो आदर करवो, एज उचित छे एम दीर्घद्रष्टिए साराशने न चितवे, अने तुच्छ द्रष्टिए ससारीक सुखने इच्छतो वत्ते तेने ञवाज्ञिनदी कहीए (३) हवे चोथु लक्षण क्रूर एटले महा दुष्ट ञयकर, माठा अध्यवसायवाळो, अती सक्लिष्ट, निध्वस परिणामी आर्त्त, रौद्र, ध्याननो ध्याता, रुडा ञूडा सजोगीक ञावे सवध मिल्या तेमा रुडा मनोज्ञ (मनने गमता) एवा पदार्थनो सदा सजोगचितवे,वळी ञुडाअमनोज्ञ(अणगमता) पदार्थनो विजोग चितवे, मनोज्ञ सयोग सवधमां तल्लीन थइ आसक्त थको वर्ते अने ते मनोज्ञ सवधनी हाणी थवाथी आक्रद करे, उचे स्वरे रुदन करे, घणो उद्वेग पामे, नाम देइने रुवे, छाती कुटे, माथाना केस तोडे, वळी

आवता कालनी चिंता एटले हवे हुं शु करीश, मारो निर्वाह केम चालशे, हुं शुं खाइश, निर्धन थइ गयो, दारिद्र अवस्था आवी, अथवा हु निराश थइ गयो, मारे कोइनो आधार नथी, मारु रखोपू कोण करशे, मने शाता अशातानी खबर कोण पुछशे, अशातानी वखते रोगादि कारणे, मारी पासे, बेशीने पाणी कोण पाशे, खावा कोण आपशे, मारी आसनावासना कोण करशे, अथवा आ कुमाणसनो समागम मारे छे ते क्यारे टळशे, मारो ने एनो वुटकवारो क्यारे थशे, वळी आ मारी रोग व्याधि अथवा दारिद्र अवस्था क्यारे टळशे, इत्यादि विचार एकत्व परिणामरूप करवो ते आर्त्तध्यान छे, वळी संयतिपदे नियाणु करवुं ते पण आर्त्तध्यानमां छे हवे रौद्रध्यान ते जीवनी हिंसा एटले जीवना द्रव्यभाव, प्राणनो घात करे, विटवना करे अने खुशीपणु माने, राजी थाय, वली हिंसक जीवोनां वखाण करे, तेना वळनी प्रशसा, अनुमोदना करे, वळी जूठु वोले, कपट केळवे अने मनमां खुशी थाय, के मारा जूठपणानी कोइने खबर पडती नथी, हु केवो हुंशीयार छुं, वळी एकनी, चाडी वीजाने करे, खोटा वादविवाद, झगडा करतो करावतो फरे, पारकी निंदा करे, चोरी करे, ठगाइ करे गांठ वाळेली वस्तु छोडी ले अने मनमां खुशी थाय, वळी चिंतवे के हु केवो जोरावर छु ते पारको माल खाउं छु, मुज सरखो कोण छे, वली नव प्रकारनो परिग्रह धन, क्षेत्र खळुं, घर, दुकान, पुत्र, कलत्र, जानवर, गाय, भेंस,

त्तिआओने बोलावी पुछयुं के मारु मृत्यु कोनाथी थशे कारणके घणा साथे वेर करनाराओने परथी पोतानु मृत्यु थवानी शंका होय छे त्यारे तेओए कह्यु के जे माणस सिंहासनपर बेसीने दुधपाकरूप थएली आ दाढोने पी जशे ते माणसथी तारु मृत्यु थशे, ते सांभली परसुरामे एक दानशाळा मंडावी तथा त्यां अगाडीमां सिंहासन राखी तेपर ते दाढोनो थाल रखाव्यो, हवे ते सुभूम पण आगणामा रहेला वृक्षनी पेठे हमेशा ऋषियोथी लालनपालन करातो थको वृद्धि पामवा लाग्यो हवे एक दहाडो कुवाना देडकानी पेठे वीजी जगोए नही जनार एवा, ते सुभूमे पोतानी माताने पूछ्यु के शु आ आवडीज पृथ्वी छे ? के कइ अधिक छे त्यारे तेनी माताये कह्युं के हे वत्स ! पृथ्वी तो अनती छे आ आश्रम तो तेमा एक मांखीना पग जेटलो छे वली आ पृथ्वीमां हस्तिनापुर नामे एक प्रख्यात नगर छे त्यां कृतवीर्य नामे महा बलवान् तारे पिता राजा हतो ते तारा पिताने परसुरामे मारीने पोते राज्यपर बेठो छे वली तेणें तमाम पृथ्वी क्षत्रिय विनानी करी छे. हवे तेना भयथी आपणे अहीं रहीये छीये ते सांभली [illegible] क्रोधातुर थइने सुभूम हस्तिनापुर गयो कारण के [illegible] दुर्द्धर होय छे त्यां एकदम ते [illegible] रहेला सिंहासनपर बेसीने दुधपाकरूप थएली ते [illegible] गयो त्यारे ब्राह्म- [illegible] त्यां सुभूमने मेर

थया, ते पोतानी मातानी कुखने विषे गर्भपणे हता ते अवसरे परसुरामे पोताना बळे सुभूमना कृतवीर्य राजाने सग्राममां, जाज्वल्यमान, परसु लेइने हण्या अने तेमना राज्यपर पोते बेठो, कारण के राज्य तो पराक्रमने स्वाधीन छे एवी रीते परसुरामे, हस्तिनापुरनगरने दबाववाथी कृतवीर्य राजानी गर्भिणी स्त्री वाघवाला वनमांथी जेम हरणी नाशी जाय तेम नाशीने एकाकीपणे अरण्यमां भमतां भमतां तापसोना आश्रममां गइ त्यां तपस्वीउए निधाननी पेठे तेणीने क्रूर परसुरामथी बचाववा माटे भोयरामां राखी. तेणीने चौद महास्वप्नोथी सूचितपुत्र गर्भस्थितिनी पूर्णताये थयो अने भोंयरामां रहेतां मोटा पण थया मातामे भोंयरामां जन्मवाथी पुत्रनु सुभूम नाम पाड्यु, पछी ज्यां ज्यां क्षत्रिय पुत्र हतो त्यां त्यां देहधारी कोपाग्नि सरखो, परसुरामनो कुठार पहोंची वळ्यो अर्थात् सघला क्षत्रियोने तेणे मारी नाख्यापछी एक दहाडो ते परसुराम, आ तापसोना आश्रममां गयो त्यारे त्यां तेनो परसु(कुहाडो) जाज्वल्यमान थयो थको, धुवाडो जेम अग्निने सूचवे तेम क्षत्रियने सूचववा लाग्यो, त्यारे तेणे तपस्वियोने पछयु के शुं अहीं कोइ क्षत्रिय छे त्यारे तेउ कहेवा लाग्या के तापस थएला अमो क्षत्रिय छीये पछी दावानल जेम पर्वतना तटने तृण रहित करे तेम ते परसुरामे सातवार पृथ्वीने क्षत्रिय रहित करी एवी रीते मारी नाखेला क्षत्रियोनी दाढोथी परसुरामे एक आखो थाल भर्यो पछी ते परसुरामे एक दहाडो निमी-

त्तिश्चाउने घोलावी पूठयु के मारु मृत्यु कोनाथी थशे कारणके घणा साथे वेर करनाराउने परथी पोतानु मृत्यु थवानी शका होय ठे त्यारे तेउए कह्यु के जे माणस सिंहासनपर वेसीने दुधपाकरुप थएली श्रा दाढोने पी जशे ते माणसथी तारु मृत्यु थशे, ते सांजली परसुरामे एक दानशाळा मन्नावी तथा त्या श्रगाकीमां सिंहासन राखी तेपर ते दाढोनो थाल रखाव्यो, हवे ते सुजूम पण श्रागणामा रहेला वृक्षनी पेठे हमेशा ऋपियोथी लालनपालन करातो थको वृद्धि पामवा लाग्यो हवे एक दहाको कुवाना देरुकानी पेठे घीजी जगोए नही जनार एवा, ते सुजूमे पोतानी माताने पूठयु के शु श्रा श्रावमीज पृथ्वी ठे? के कइ अधिक ठे त्यारे तेनी माताये कह्यु के हे वत्स! पृथ्वी तो श्रनती ठे श्रा श्राश्रम तो तेमा एक मांखीना पग जेटलो ठे वली श्रा पृथ्वीमा हस्तिनापुर नामे एक प्रख्यात नगर ठे त्या कृतवीर्य नामे महा वलवान् तारो पिता राजा हतो ते तारा पिताने परसुरामे मारीने पोते राज्यपर वेठो ठे वली तेणें तमाम पृथ्वी क्षत्रिय विनानी करी ठे, श्रने तेना नयथी श्रापणे श्रहीं रहीये ठीये ते सान्नली तत्काल क्रोधातुर थइने सुजूम हस्तिनापुर गयो कारण के क्षत्रिय तेज दुर्द्धर होय ठे त्यां एकदम ते दानशाळामा गयो श्रने त्या रहेला सिंहासनपर चमीने दूधपाकरुप थएली ते दाढोने ते खाइ गयो, त्यारे ब्राह्मणीश्रा रक्षको युद्ध करवा माटे ऊव्या त्या सुजूमे मेघ

सरखा नादवालो वाघ जेम हरिणने मारे तेम तेउने मार्या ते सान्नली परसुराम पण गुस्से थइने जाणे कालना पासथी खेंचायो होय नही तेम त्या आवी लाग्यो अने तेणे सुज्रूम उपर पोतानी परसु मुकी, पण अग्निनो तणखो जेम पाणीमां नष्ट थाय तेम ते परसु नष्ट थयो ते वखते सुजूमे पण पोता पासे हथियार न होवाथी ते दाढोवालो थाल उपाड्यो अने ते थाल तुर्तज चक्ररुपे थयो कारण के पुण्य संपदाथी शु नथी थतुं? एवी रीते ते आठमा चक्रीये ते चक्रथी परसुरामनु मस्तक, कमलनी पेठे छेदी नाख्यु जेम परसुरामे सातवार पृथ्वी क्षत्रिय रहित करी हती, तेम आ सुन्नूमे एकवीसवार पृथ्वी ब्राह्मण विनानी करी तथा पाछलथी तेणे छ खन्म पृथ्वी साधी वली वैताढ्यनी गुफाओ खोली अने न्नरतना उत्तर खम्मा दाखल थइ म्लेछोने तेणे जीत्या एवी रीते चारे दिशामां न्नमीने घटी जेम चणाने पीसे तेम तेणे सुन्नटो मारीने पृथ्विने जीती छ खंन्नु राज्य मेलव्यु चौद रत्न नव निधान पचवीस हजार देवो सेवामां इत्यादि चक्रवर्तीपणानी ऋद्धिये पूर्ण थतां, पण लोन्ननी दसा तेनी अटकी नहीं, अपूर्णताज नजरे आवी ते चिंतवे छे के मारा जेवा तो न्नरत आदे चक्रवर्तिउ पूर्वे घणा थया तेमा हु पण एक वधारे. एमनाथी मारी कइ अधिकता कहेवाय नही पछी लोको मोटाइ न बोले, मारी मोटाइ तो क्यारे थाय के बीजा धातकिना छ खम्म साधु त्यारे जगतमां मारो यश विस्तरे, एटले मारा जेवो कोइ पूर्वे थयो नथी अने वली

ज्ञूम मरीने सातमी नरके गयो, एम लोन्नी नरनो लोन्नरूप खाडो सदा अपूर्ण ठे, एम जाणी लोन्नदशाने धिक्कारी निर्लोन्नी थइ जेम कपील ब्राह्मण केवळी थया, एम निर्लोन्नताने न ग्रहे, अने लोन्न सागरमां मुवी सागर जळ पीतां पण तृषा न न्नाजे, तेने न्नवान्निनंदी कहीए (५)

हवे ठठ्ठ लक्षण रति एटले शातावेदनीना हेतु ते पाच इंद्रीना अनुकुळ विषय, शब्द, रूप, गध, रस अने स्पर्श, शब्द ते श्रोत इंद्रि, जे कान तेनो विषय एटले रागरागणी, सुस्वरनो न्नोगी, वळी नरघा, शरणाइ, ताल, तंबुरा इत्यादि वार्जीत्रना शब्दनो न्नोगी, रूप (वर्ण) ते रातो, धोळो, लीलो, पीळो अने श्याम, ए पांच वर्ण वळी सस्थानादि लिंग आकार चेष्टा ए चक्षुनो विषय जाणवो.वळी गंध ते, सुरन्नी आदि नाकनो विषय, तेल फुलेल चपो, केवडो, मोगरो, गुलाव, इत्यादि तेनो न्नोगी रस ते कडवो कपायलो, तीखो, खाटो, अने मधुरो ए पांच रस तेनो न्नोगी रसना एटले जीव्हा जाणवी. वळी स्पर्श ते, शीत, उष्ण, सूंवाळो, वरसट, स्निग्ध, रुक्ष, हळवो अने न्नारे ए आठ स्पर्श न्नोगी ते स्पर्श इंद्रि एटले काया. वळी वेदचीनृह, स्त्री, पुरुष अने नपुषक, ए वेदना न्नोग विषयनो सकामी तेमांज आशक्त एम पांच इंद्रिना विषय न्नोगमां जे, रति विश्रामनो कर्त्ता वळी हु ने मारु एटले हु ते कायाएज जीव ढुं एम जाणे पण जीव कायानी जूदाइ न जाणे, वळी धन दोलत, राजऋद्धि सज्जन कुटुंब ए मारु

थशे पण नहि, अने दुनिया महा चक्री कहीने बोले, त्यारे मारी मोटप कहेवाय, वळी मारी आज्ञा कोण न माने, जीहा जाउ तीहा हु एकखोज पृथ्वीने ऊधी करी नाखु, वळी मोटा पहाड पर्वतने एक हाथे उपाडीने फेकी देउ भुजा बळे समुद्र तरी पेली पार (सामा काठे) नीकलु एटलु तो मारी भुजामा बळ छे, एम अठ्ठावीस धनुष्यनी कायावाळो पोताना बळ पराक्रमनी अधिकता जोइने मदोन्मत थयो थको लोभरूपीआ सागरमा तणातो थको ऋद्धिनी अपूर्णता भावतो थको जगतने तरणा प्राय गणतो थको बीजा छ खडमा, जइ चक्र प्रवर्त्तावी आज्ञा मनावु एम निश्चे पोताना मन साथे ठराव कर्यो, चौरासी लाख हाथी, चौरासी लाख घोडा, चौरासी लाख रथ, छन्नु क्रोड पायदळ, एक लाखने वाणु हजार अंतेउरी, सेनापति, प्रधान, आदे चउद रत्न, नव निधान, इत्यादि ऋद्धिए युक्त थको पोत प्रयाण करे छे ऋद्धि गवेखी ते सर्वे चरमरत्न वहाणमा भरीने पोते बेठो वहाण लवण समुद्रना मार्गे अनुकुळ पवनयोगे वेगे चाल्यु जाय छे, ए वहाणना रखोपामा पचीस हजार तो देवो वहाणना उपाडनार छे, पुन्य खवाइ गयु, ए चक्रीनु सात हजार वरसनु आयुष्य हतु, तेनो अत (छेडो) आव्यो, देवो चितवे छे के हु एक नहीं उपाडु तो बीजा घणाए छे, एम सोनो साथे मनोरथ थयो, सर्व देवोए मेली दीधु वहाण समुद्रमा डुब्यु अने सर्व ऋद्धिनो नाश थइ गयो, शु-

मानी ठे जेणे तेनो सदाय काळ ज्ञयमा जाय, कारण के पर-वस्तुनो स्वज्ञाव विनाशी ठे अने ते पुन्यजोगे मळी प्राप्त थइ ते ठतां पुन्ये स्थिर थइने रहे पण पापोदय जोगे तेनी हानी थाय, रखोपु करतां पण न रहे त्यारे पोतानी मान-वावाळा प्राणी उद्वेग पामे संताप करे, दिलगीरी करे, पण एम न समजे के सजोगनी पाठळ विजोगनो ज्ञय रह्यो ठे, सुखनी पाठळ डुःखनो ज्ञय रह्यो ठे, श्रा संसार एज ज्ञयनु कारण डुःखनुं कारण ठे माटे संसारी वस्तुथी विरक्तता ज्ञावीए, ए उपाधि सजोगने पर मानीए एम न समजे अने रखोपु करतां थकां श्राखो ज्ञव ज्ञयमांने ज्ञयमां कहाडे, तेहने ज्ञवाज्ञिनंदी कहीए (ए)

हवे दशमुं लक्षण कपट एटले मुखशु मीठा अने हृदये दुष्ट, मुखथी बोले ते जुदु अने मनथी चितवे ते जुदु, कायानी चेष्टा जुदी, एम कपट, फंद, माया एटले मच्छी लोको जळमां जाळ नाखे, तेथी पण श्रा कपटजाळ श्रती बुरी ठे कारण के एतो तिर्यंच, जळचर जीवो जळमां विनोद, क्रिमा करता एवा तेम पशुने जाळमां फसावी दे ठे, अने श्रा कपटी तो वगर जाळे, माह्या चतुर मनुष्यने वातनी वातमा फसावे ठे, माटे श्रति बुरो, श्रविश्वासनु स्थानक एवो कपटी तेने ज्ञवाज्ञिनदी कहीए (१०)

हवे श्रगीयारमु लक्षण श्रज्ञानी मिथ्यात्वी एटले निजपर बुद्धि जीहां सुधी थइ नथी अने निजपरनो ज्ञेद ज्ञास्यो नथी, जमसत्ता, चेतनसत्ता, जुदी जुदी जाणी नथी

एम मानतो थको, तेना सगे कलह करतो थको ऋद्धिनी मोटपमा गर्वीत थको, जे क्लेशानदी, विषयानदी तेने न्नवाभिनदी कहीए (६)

हवे सातमु लक्षण दीन एटले कगाल, ते कगाल शा माटे थाय तो मोहनी प्रवळताए, विकल्प घणा उठे, परतु पापोदय जोगे पुरा न थाय, वळी किंचित् प्राप्ति होय तेनी हानि थाय ते कारणे दीनपणु न्नावे, वळी रोगादि कारणे, पोताने अशाता प्रगटे तेथी दीनताने न्नावे, पण एम न चिंतवे के ए वस्तुनी प्राप्ति तो पुन्य जोगे होय वळी नि-रोगतापणु ते शातावेदनीना उदयथी होय, ते पुन्य खवाइ गयु अने पापनो उदय वर्ते छे, तेमा तु दिलगीरी शा माटे करे छे, पूर्वे उपार्जेलु ते उदयिक न्नावे प्राप्त थयु छे तेने समता न्नावे सहन करवुं एज ज्ञानीनु लक्षण छे, एम सा-हसीक थइने न चिंतवे अने दीनता करे तेने न्नवाभिनदी कहीए (७)

हवे आठमु लक्षण मत्सर एटले अपलक्षणनु स्था-नक, मस्ताइये करीने मस्तान थयेलो उन्मादे न्नरेलो, गु-णवत उपर द्वेषनो, इर्ष्यानो कर्त्ता, निर्गुणीनो पक्षी, वली अदेखाइए निर्गुणी थको अह (हु) गुणी छु एम माने, वली परने दु खी देखीने राजी थाय अने सुखी देखीने दाझे, अतरमा वळे, एम मत्सर न्नावे वर्ते तेने न्नवाभिनदी कहीए, (८)

हवे नवमु लक्षण न्नयन्नात एटले परवस्तुने पोतानी

मानी ठे जेणे तेनो सदाय काळ ज्ञयमा जाय, कारण के पर-वस्तुनो स्वंज्ञाव विनाशी ठे अने ते पुन्यजोगे मळी प्राप्त थइ ते ठतां पुन्ये स्थिर थइने रहे पण पापोदय जोगे तेनी हानी थाय, रखोपु करतां पण न रहे त्यारे पोतानी मान-वावाळा प्राणी उद्वेग पामे संताप करे, दिलगीरी करे, पण एम न समजे के सजोगनी पाठळ विजोगनो ज्ञय रह्यो ठे, सुखनी पाठळ डुःखनो ज्ञय रह्यो ठे, आ संसार एज ज्ञयनुं कारण डुःखनु कारण ठे माटे संसारी वस्तुथी विर-क्तता ज्ञावीए, ए उपाधि संजोगने 'पर मानीए' एम न समजे अने रखोपु करतां थकां आखो ज्ञव ज्ञयमांने ज्ञ-यमां कहाके, तेहने ज्ञवाज्ञिनंदी कहीए. (९)

हवे दशमु लक्षण कपट एटले मुखशु मीठा अने हृदये दुष्ट, मुखथी बोले ते जुदु अने मनथी चितवे ते जुदु, कायानी चेष्टा जुदी, एम कपट, फद, माया एटले मच्छी लोको जळमां जाळ नाखे, तेथी पण आ कपटजाळ अती बुरी ठे कारण के एतो तिर्यंच, जळचर जीवो ज-ळमां विनोद, क्रिमा करता एवा तेम पशुने जाळमां फ-सावी दे ठे, अने आ कपटी तो वगर जाळे, माह्या चतुर मनुष्यने वातनी वातमां फसावे ठे, माटे अति बुरो, अवि-श्वासनु स्थानक एवो कपटी तेने ज्ञवाज्ञिनदी कहीए (१०)

हवे अगीयारसु लक्षण अज्ञानी मिथ्यात्वी एटले निजपर बुद्धि जीहां सुधी थइ नथी अने निजपरनो ज्ञेद ज्ञास्यो नथी, जमसत्ता, चेतनसत्ता, जुदी जुदी जाणी नथी

तीहां सुधी अज्ञानी कहेवो, हवे मिथ्यात्वपणु गवेखे छे हठ कदाग्रह अजाणपणे पकड्यो तेने मेले नही. खरा-खोटानी परीक्षा नही, खोटु जाणीने खरु करवानो हठ ममत्व, जीन वचनमां शका अने अजाणपणे विपरीत श्रद्धा, तेनुं नाम मिथ्यात्व छे

सवैया तेवीसा.

मिथ्यात असत्य भेद पंच दाखु,
खर पुठ पकडयुं नवी छोडे,
सत्य असत्यनो भेद न समजे,
सोनुं रुपुं एक भावमा जोडे,
खोटु जाणीने खरु करवा चाहे,
हठ ममत्वना पंथमां दोडे,
जीन वचने शंकाने अजाण ते,
आस्ता ज्ञान ए बेउ गुण तोडे ॥१॥

सवैया एकतीसा.

विपरित एही श्रद्धा, दश समुदाय वधा,
एज छे मिथ्यात वेरी, रोळे भव चक्र मै;
अनंत परावर्तनो, मालीक ए मोह पुत्र,
घात करे सर्वथी ने, घाले काया हेरु मै;
मोह मदीराने पावे, चेतन जमता ध्यावे,
नाचे संसार गतीये, पडे पाप पंक मै;

आशा तो अधुरी सदा तृष्णा गीरे न कदा,
आ नव परजवनी न छूटे नंत कालमें. ॥२॥

कुदेव तेही देव माने कुगुरुने गुरु माने,
कुधर्म धर्म माने लोकिक मिथ्या नाव है.
देवने आशाए माने आशाए सेवे गुरुने,
धर्मनुं फळ मागे लोकोत्तर मिथ्यात्व है;
शुनाशुन करणीनो अहंकृता निर्पेक्ष,
ईश्वरने कर्त्ता कहे डव्य मिथ्यात नाव है.
रागने द्वेष बेहु, परिणति अशुद्ध कहुं,
अनादि विकार एही, नावथी मिथ्यात्व है. ॥३॥

मिथ्यात्व गाणामां बांधे, मिथ्यात्व दूजे न बांधे,
कोमा कोमी सीत्तेर, सागर स्थिती कही है,
मिथ्यात्व उदेमां आवे, गाण सातमु कहावे,
उपर उदे न होवे, समकित सही है,
मिथ्यात्व सत्ताए रेवे, एकादश गाणे केवे,
सत्ता खुटे बारमें अमर पद सही है,
जनम मरण टळे अरिहंत गाणे-चले,
अनंत चतुषची मळे सिद्ध दूर नाहि है. ॥४॥

इहां कहेवानुं एटलुं छे के आत्म प्रदेशे मिथ्यात्व मोहनीनी त्रण कर्म प्रकृतिनो अन्नाव थतां क्षायक सम-

कितनी प्राप्तिए सिद्ध गति दूर नथी, ससार गति भ्रमण चक्रनो मुख्य हेतु एक मिथ्यात्व ठे एम उपर कह्या प्रमाणे अगीयार बोले करीने सहित होय तेने ज्ववाज्निनदी कहीए, वळी पुद्गलानदी पण कहीए, ते पुरुष विधिपूर्वक शुज्न क्रियानो प्रारम्न करे, ते पण निष्फल जाणवो, कार्यनो साधक थाय नहि ११ इहा ज्ववाज्निनदीनो अधिकार समाप्त थयो

हवे निश्चय नयनी मुख्यताए, धर्मप्रवर्तन कहे ठे एटले निश्चयनयमा डष्टि करवा योग्य (प्रवेश करवाने योग्य) कोण ठे तो जे आत्मानदी पुरुषोत्तम ठे, तेज निश्चयनयमा दृष्टि करवा योग्य ठे हवे तेमना लक्षण कहे ठे, तेमा प्रथम लक्षण गज्निर होय, एटले हु अल्प गुणवाळो ठु एम घणा गुणे युक्त ठे, तोपण पोतानी, ओठासने जोवावाला होय एटले जीहां सुधी क्षायक लब्धिनी पूर्णता निष्पन्न न थाय, तीहा सुधी पोतानी ओठास देखे एटले उपशम ज्ञाव, क्षय उपशम ज्ञावनी प्रगटताने न जुवे प्रगटताने जोता, महा पुरुषने पण मोह अग आपे एटले खलना पामे ठे अने ओठासने जोता, वृद्धि पामे तेनु कारण ए ठे के ओठासने जोवु ए चारित्ररायने पोतानु अग ठे, ते कारणे ओठासने जोता निर्मोह वृत्ति थाय अने निर्मोह वृत्तिये गुण सपदा वृद्धि पामे एम गुण रागी, गुणना लोज्नी घणा गुणवता पण मोटपनी कालके छलकाय नहीं तेमने आत्मानदी कहीए १

हवे बीजु लक्षण अकृपण एटले छती वस्तुए कृपणता न करे. पोते भोगवे. वापरे दीन दु खीआने, अनुकंपा बुद्धिए अने सुपात्र एवा अतिथि मुनिने भक्तिए करी दान आपे, वली अधिक शक्ति होय तो स्वामी वत्सल, प्रभावना आदे करे, पूजा भणावे, आंगी रचावे, जीन मंदिर करावे, जीन बिंब भरावे, उजमणुं करे, ज्ञान, पुस्तको लखावे, भणताने सहाय आपे, संघ कहाडे, जीर्णोद्धार ते जीर्ण जीनमदिर समरावे, साधु, साध्वी, श्रावक, श्रावीका, ए चतुर्विध सघने धर्मकरणी करवा हेते उपासरा करावे, इत्यादि शुभ मार्गे मोकळा मने चित्त उत्साहे पैसानो व्यय करे, पण छते पैसे मूर्छित थको कृपणता न करे, तेम छती शक्तिए अभिमानी थको व्यय पण न करे, पापे पेदा करवुं अभिमाने व्यय करवो तेने प्रश्न व्याकरण दशमा अंगमा मद मतिआ कह्या छे माटे विवेक पोतानी शक्ति जोइने वापरे. ए गृहस्थीपणामां अकृपणता लक्षण कह्यु, हवे सयतिपदे जे क्षय उपशम भावनी लब्धिए धनाढय थयेला बहुश्रुत भावने पामेला तेमने पण भव्य जीव प्रत्ये उपदेश करवाना अवसरे अथवा समागम थये वस्तुगते वस्तुपणानो उपदेश, द्रव्यगुण पर्यायनी वली स्वभावनी ओळखाण पूर्वक जड चेतननी विभाग व्हेचण पूर्वक, हेय, ज्ञेय, उपादेय बुद्धिने पमाडवा हेते नय निक्षेप, पक्षप्रमाण इत्यादि विस्तार बुद्धिए हेतु द्रष्टांत युक्तिए करीने, वचन भालो अने युक्ति कटार मारी अनादि मिथ्यात्वने छेदी

बोधिबीजनी प्राप्ति तद्रुप समकित ते अमुल्य रत्ननु दान देवु ते सयतिपदे उचित छे एम छती शक्तिए कृपणता न करे तेमने आत्मानदी कहीए (२)

हवे त्रीजु लक्षण दीर्घ दृष्टिवत एटले घणीज मोटी विस्तार बुद्धि छे जेमनी एवा परम साराश जैन आज्ञा ग्राहक तद् हेतु एटले जे एक पोतीको आत्मा तेहीज साचो ज्ञानादि अनता गुण अने अव्याबाधादि अनता पर्याय मय साक्षात् परमात्मा सरखो शक्ति भावे अनादि सिद्ध छे तेने व्यक्ति भावे प्रगट करवा अर्थे मोक्ष नीपजाववा माटे जे सहज समाधिए ध्यान करवु रमण करवुं तेने तद्हेतु अनुष्ठान कहीए हवे अमृत ते मन वचन अने काया ए त्रिकरण योगनी ऐक्यता,हर्ष,उत्साह,प्रमोद सहित, निरामय साधन ए रीते स्थिर शकादि चपळता रहित सिद्ध भगवानना स्वजाति स्वभाविक गुणे करी उपयोग प्रभु गुणे जोडीने एटले गुण गुणगत स्वभावे गुण गुण प्रत्ये भिन्न भिन्न उपयोग जोडी तन्मयपणे अनुभविने अभेद स्वरूपे परिणमावे त्या कार्यनी पूर्णता पामे एटले कोइ देशथी पामे अने कोइ सर्वथी पामे, देशथी पामे ते चोथे गुणठाणे समकित पामे अने सर्वथी पामे ते तेरमे गुणठाणे अरिहत पदे अनत चतुष्टयी पामे एम कार्यनी साधकता नीपजे तेने अमृत अनुष्ठान कहीए एम तद्हेतु अने अमृत ए बे अनुष्ठाने वर्त्तता एवा दीर्घदृष्टिवतने आत्मानदी कहीए (३)

हवे चोथुं लक्षण उपशम, क्षय उपशम भावे, शान्त एटले उपशम ते मोहनी कर्मनी प्रकृतिउंनो सत्ताए आत्मप्रदेशे उपशम होवाथी उदयिकताना अभावे प्रदेशे अथवा विपाके विघ्न, पराभव नहीं होवाथी आत्माने उपशम भावे शान्त कहीए वली वीतराग कहीए, ए तेना बे भेद. एक देशथी अने बीजो सर्वथी, देशथी तो एक मिथ्यात्व एटले सिद्धांतना मते, त्रण पूज्य न करे. माटे एक अने चार अनतानुबधी कषायनी चोकडी, मळी पांच प्रकृतिनो उपशम चोथा गुणठाणे थाय, तीहां उपशमभावनु समकित पामे, अने सर्वथी तो चार चोकडीना सोळ कषाय अने हास्यादी षट, त्रण वेद, ए नव नोकषाय, एटले कषाय तो नही, पण कषायने प्रगट करवानुं कारण माटे नोकषाय कहीए, एम बेहु मळी पचीस कषाय अने एक मिथ्यात्वमोहनी, बीजी मिश्रमोहनी, त्रीजी समकितिमोहनी, ए त्रण मळी अठावीस प्रकृतिनो उपशम, अगीयारमा उपशान्तमोह गुणठाणे थाय, तीहां उपशमभावनु, यथाख्यात चारित्र पामे, ए बे भेदनी स्थिति अंतर अतर मुहूर्त्तनी छे, ए उपशमभावे शान्तना बे भेद कह्या, हवे क्षयउपशमभावे शान्त गवेखे छे ते चारे घातिकर्मनी प्रकृतियोनो क्षय उपशम होवाथी सपजे, तेना विचीत्र भेद छे, परतु समुदाये बे भेद, एक अज्ञानयोग अने अज्ञानयोगनिश्रा, बीजो ज्ञानयोग अने ज्ञानयोगनिश्रा, अज्ञानयोग ते, समकितना अभावे प्रथम गुणठाणे क्षयउ-

पशमभावनी वृद्धिए जाणपणु वृद्धि पामे, वळी निश्रा ते दीपक समकितनी द्रव्य चारित्रनी तपनी निश्रा पामे, यावत् स्वर्गसुखनो विभागी थाय, पण यथार्थ श्रद्धाना अभावे, ग्रंथिभेद करे नही अने समकित पण पामे नही एटले स्वअपेक्षाए हित न थयो, परतु योग्य जीवने बोधि बीज पमाडवाना वळी मोक्ष पोचाडवाना हेतु छे, माटे शान्त ए पहेलो भेद कह्यो, हवे बीजो भेद ज्ञानयोग ते, ग्रथिभेद कीधा, चोथा गुणठाणाथी ज्ञानयोग कहीए अने निश्रा ते समकितनी, चारित्रनी, तपनी, वीर्यनी, एटले क्षयउपशमभावनी पाच लब्धिनी निश्रा कहीए, तेनो विवरो एम छे के समकित आश्रीने चोथु, पाचमु अने छठु सातमु ए चार गुणठाणे क्षयउपशमभाव लाधे छे, वळी चारित्र आश्रीने पाचमु, छठु, सातमु, आठमु अने नवमु दशमु, ए छ गुणठाणे क्षयउपशमभाव लाधे अने ज्ञान आश्री वळी दानादि पाच लब्धि आश्रीने, चोथु, पाचमु, छठु, सातमु, आठमु, नवमु, दशमु, अगीयारमु अने बारमु ए नव गुणठाणे क्षयउपशमभाव लाधे, ए क्षयउपशमभावे शान्तना भेद गुणठाणे गवेखीने कह्या, हवे तेनी स्थिति चोथा गुणठाणानी अपेक्षाए, काळ आश्रीने, छासठ सागरोपम जाझेरी अने भव आश्रीने सात आठ भवनी जाणवी, अने पाचमा वळी छट्ठा सातमा गुणठाणानी भेगी, देशे ऊणी, पूर्व क्रोडनी जाणवी, ए उत्कृष्टि स्थिति कही अने जघन्यथी वळी सातमा ठाण उपरात अतर अतर मूहुर्त्तनीछे

ए ज्ञानयोग चोथा गुणठाणाथी बारमा गुणठाणाना अंत सुधी क्षय उपशम भावे कह्यो तेना ग्राहको चोथा गुणठाणाथी सातमा गुणठाणा सुधी धर्म ध्यान ध्यावावाळा छे उपरांत शुक्लध्याननो पहेलो पायो आठमाथी दशमा सुधी ध्यानगत छे, उपरांत बीजो पायो ध्यानगत छे. पहेला पायामां भेद ज्ञान अने भेदाभेद ज्ञान छे, बीजा पायामां अभेद ज्ञान छे, क्षपक श्रेणीना ग्राहको पहेला पायाना ज्ञान ध्याने मोहनो वळी अशुद्ध परिणतिनो दशमा गुणठाणा अते क्षय करी वीतराग परिणतिए बारमा गुणठाणे यथाख्यात चारित्र पामे अने बीजा पायाना ज्ञान ध्याने ज्ञानावर्णी, दर्शनावर्णी अने अतराय, ए त्रण कर्मनो नाश करी, तेरमे गुणठाणे अरिहंत पदे केवळज्ञान, केवळदर्शन, अने क्षायक भावनी पाच लब्धि पामी क्षायक लब्धिए पूर्ण थाय माटे क्षायक लब्धिनी, प्राप्तिनु कारण यथास्थित क्षयउपशम भाव चोथा गुणठाणाथी छे, अने चोथु गुणठाणु पामवानु कारण मतिअज्ञान, श्रुत अज्ञान, ए बेहु अज्ञानना क्षय उपशमनी वृद्धिनु सबळापणे परिणमवु ते छे, परतु विभग नथी वळी श्रेणी आरोहण करवु तेनु कारण मतिश्रुत ज्ञान छे, परतु अवधि मन.पर्यव नथी एम उपशम, क्षय उपशम, भावे, शांत थया, एवा ज्ञानी तेमने आत्मानदी कहीए (४)

हवे पाचमु लक्षण सतोप, एटले सतोप क्यारे जाणीए के जीहां इच्छा वांच्छानो सभव नथी निर इच्छाए तृप्त

थया ठे तेमने सतोषी कहीए अने इच्छा वाच्छा ठे जेने तेने असतोषी कहीए कह्यु ठे,–

गाथा

॥ जहा लाहो तहा लोहो ॥ लाहा लोहो विवढ्ढइ॥
दो मास कणय कज्ज ॥ कोमीएविननठई ॥१॥

अर्थ —जहा कहेता जीहा, लाहो कहेता लाभ एटले धन्य, धान्यादि वस्तुनी प्राप्ति थती जाय वृधि पामती जाय, तहा कहेता तीहा, लोहो कहेता लोभ प्रगट थाय अने ऊंचाश नजरे आवे वली घणी तृष्णा थाय लाहा कहेता जेम जेम लाभ थतो जाय तेम तेम लोहो कहेता लोभ, विवढ्ढइ कहेता विशेषे करीने वृद्धि पामे एटले दिप्त थाय, यथा द्रष्टाते, जेम अग्नि वळे ठे तेमा काष्टनी पुरती करीए तेथी अग्नि शान्त न थाय, परतु वृद्धि पामे ए द्रष्टाते, वस्तुना मळवाथी लोभ न उपशमे दोमास कणय, कहेता कपिल ब्राह्मण बेमासा सुवर्णनु, कज्ज, कहेता दान लेवा अर्थे राजा पासे गयो तेने राजए साचा बोलो जाणी प्रसन्न थइने कह्यु के, माग, मागे ते आपु अने तारु दारिद्रपणु आजथी दूर करु, तारे जन्म पर्यंत फरीथी याचना करवी न रहे, त्यारे कपिल ब्राह्मण विचारवा लाग्यो के, केटलु मागु तो, यावत् कोमी एवी, कहेता एक क्रोम सोनैया मागु, एम विचार करता पण, ननिठ्ठइ कहेता निष्टार्थ एटलुंज, एम तृप्त न थयो, एटले इच्छा वाच्छानी

पूर्णता'न थइ अने ठंगारा नजरे आवी, ते अवसरे लोभ-दशाने बुरी जाणी, स्नेह लत्तावेली मूळने उपाडवाथी ए, कपिलनामा ब्राह्मण महा पुरुषोत्तमने, पोतीको सहज स्वभाव प्रगट थयो अने ज्ञानभानु घटतर वृत्तिए उदय पाम्यो, लाभ होवाना कारणे पोते पोताथी बोध पामी स्वयंबुद्ध थइ कर्मने हणी सिद्धि वर्या, ए कथा उत्तरा-ध्ययनजीना आठमा अध्ययने सविस्तारे ठे एम धन कचनादि वस्तुने अलच्छी माने ठे, तृष्णा त्रुटी ठे पोता-पणानो 'ममत्व गयो ठे, कदाच संसारमां रह्या ठे अने ए लक्ष्मीनु रखोपुं करे ठे, तेने निर्वाह प्रयोजन जाणे ठे, बाधकता समजे ठे, विरक्त चित्त ठे, ठोडवानी भावना भावे ठे, ठोडवानो अवसर इच्छे ठे, वळी नीजात्म सत्ताए ज्ञानादि गुण अव्यावाधादि पर्याय, पोतीका असंख्यात प्रदेशे, प्रदेश प्रदेश प्रत्ये, अनता अनता, तद्रुप क्षायक लब्धि, निर्मळ, निरजन, अचळ, अविनाशी भावनी वस्तु-गते रही ठे, तेने लक्ष्मी माने ठे, वळी तेना अर्थी ठे, खपी ठे, व्यक्तिभावे प्रगट करवाना उद्यमी ठे, बाह्य-ऋद्धिनी वृद्धि अथवा हानि होवाथी, राग द्वेप न करे, अने समभावे वर्ते कदाच उद्वेग करे तो उत्कृष्ट पदर दिवसना अनुमाने करे, नहितो तरतज ए वस्तु अस्थिर ठे, कोइने त्या स्थिर थइने रही नथी सजोगे आवीने प्राप्त थइ अने विजोगे नाश थयो, एम हानि वृद्धि थाय तेनी साथे पोतापणो मानवो ते ज्ञानीने उपचार मात्र ठे

एम जाणी उद्वेगने उपशमावी, समभावे वर्ते, तेवा सतो-पीने आत्मानंदी कहीए (५)

हवे छहु लक्षण आत्मरति एटले आत्मगुणमांज प्रीतिरंग लाग्यो छे जेने,एटले रंग केवो लाग्यो छे के कंचननो पित वर्ण छे, चांदीनो धोळो वर्ण छे, परवाळानो रक्तवर्णछे, ए रंगने उतारीए, पलटावीए, तो पलटाय नहि कारण के स्वभाविक रंग छे, तेम आत्मानो जेवो स्वभाव तेवो रंग, चोथु गुणठाणु प्राप्त थता अंशे अंशे चढतो गयो अने जेटलो स्वभाविक गुण प्रगट थयो एटलो उपाधि रंग उतरतो गयो एम करता करता अनुक्रमे परिपूर्ण रंगतो राग द्वेष अने मोहना अभावे, क्षिण मोह बारमु वीतराग गुणठाणु पाम्या कहीए, एटला सुधी न पहोंचे तेने तद्भवे मुक्ति न मले, पण क्षायक समकितनी अपेक्षाए त्रीजे भवे अने छेवटे चोथे भवे ए जीवो मोक्षगामी छे, वळी क्षय, उपशम समकित, अप्रतिपातिनी अपेक्षाए सातमा आठमा भवे ए जीवो मोक्षगामी छे. वळी प्रतिपाति क्षयउपशम, अने उपशम समकितनी अपेक्षाए अर्ध पुद्गल परावर्त्तनी माहेली कोर ए जीवो मोक्षगामी छे एथी अधिक काळ तो ग्रथिभेदी जीवो ससारमा न रहे, वळी रंग न उतरवानु कह्यु ते, जेणे ग्रथि भेद करेलो छे, ते ग्रथि त्रण काळमा सज्जड थाय नहि अने मिथ्यात्वगुणठाणे जता पण ए जीवो, द्रव्य समकिती छे, उपर मिथ्यात्वनु दळ फरी वळ्यु छे, ते विशुद्ध भावे उतरी जवाथी चोथे गुण-

ठाणे जाव समकितीपणे, जलदीथी आवशे, ए जीवने फरीथी करण करवां नथी, माटे चोथा गुणठाणानी प्राप्ति थइ तेने ए अपेक्षाए अपलटण रग कह्यो छे, वळी आत्मरति पुरुषोत्तम ससारमा रह्या छे कायामां वस्या छे, परतु अळगा छे यथा दृष्टांते, जेम सरोवरना जलमां कमळ रह्यु छे, श्रीफळना काचलामां गोळो रह्यो छे, ए दृष्टांते अलिप्त थका न्यारा छे, मोहीत थका पांच इंद्रीना जोग सुखमां रमे नहीं, ज्ञान दृष्टिए स्वरूप रमणिपणे वर्ते, ते आत्मरतिने आत्मानदी कहीए (६)

हवे सातमु लक्षण साहसिक एटले धैर्यवान, वीर्यवान, सत्ववान, ए लक्षणे ज्ञानी आत्मा कायामां रह्यो थको, सुखसपदा अने दुःख आपदा, सयोगिकभावे पूर्व कर्मनी उदयीकताए, प्राप्त थये अदिनवृत्तिए वर्ते, दीनता न भावे, कारण के सुखसपदा ते तनधन राजऋद्धि तेने तेमणे अनित्य, अशाश्वति जाणी छे वळी सज्जन कुटुंब बाहिर मेळावडो छे, तेनुं सगपण स्वार्थ सरे त्यां लगे छे जुवो के, ब्रह्मदत्तनी माता चुलणीए पोतानो स्वार्थ नहि सरवाथी पुत्रने लाखना मेहेलमा सुवा मोकलीने सळगावी दीधो, एतो एनु आयुष्य हतु तो जीवतो रह्यो, पण माएतो मारवानोज उपाय कर्यो वळी श्रेणिकराजाने पोतानो पुत्र कोणिक तेनो स्वार्थ नही सरवाथी राजना लोभे पिताने पांजरामा घाली रोज पाचसो कोरडा मारे अने अंते ए वेदुने कमोते मरवानो वखत आव्यो, वळी परदेशी राजानी

सूरिकांता नामे स्त्री तेनो स्वार्थ नही सरवाथी फेर खवरावी पतिने मार्यो वली ऋषभदेवस्वामीना वे पुत्रो भरत अने वाहुवल तेमा वडा भरतनो स्वार्थ नहि सरवाथी, वाहुवल छोटाभाइ उपर चक्र मेल्यु, एतो गोत्रमा न लागवानो आमन्याए वाधा नहि करता पाछु आव्यु. नही तो चक्रनो धर्म मस्तक छेदवानो छे, माटे एणे तो मारवानोज उपाय कर्यो, वळी सोमिल ससरे पोतानो स्वार्थ नहि सरवाथी गजसुकुमार जमाइना मस्तक उपर माटीनी पाळ वाधी अग्नि भरीने वाल्यो, इत्यादि ससार सगपणना अनेक दृष्टातो छे, ते विचारतां वाहिर मेळावडानो, वळी तन, धनादि ऋद्धिनो स्नेह राग ततु वधननो वधपास तोडी, छोडीने पोते साहसिक थका अदीनपणे वर्ते, वळी दु ख आपदा जे रोगादि व्याधि प्रगट थया सनतकुमार महा मुनिश्वरनो दृष्टात विचारी अनुभवीने, वळी तन ममता टाळीने पूर्वकृत कर्मना फळ जाणीने भेद ज्ञान घटमा लावीने कायाथी आत्माने अलगो करीने तन्मय परिणाम पामीने तद्गत भावने गवेखीने, परमशमताना उपयोगे सेहेता थका वर्ते, वळी मनुष्यना तिर्यंचना, देवना करेला उपसर्ग उपजे तीहा दृढप्रहारीनो अथवा मेतारय मुनिनो दृष्टात गवेखीने भावे पोतपोताना ज्ञानध्यानमा वर्ते, वळी एम चिंतवे के छेदनभेदन ताडन, वधवधनादि करे छे, ते पुद्गल [illegible] गलने करे छे तेमने लागे नही वळी पुद्गल द्रव्य [illegible], तेनो नाश थशे ते तारु पोतानु नथी, एतो

तारे न्नामानुं घर ठे, तु ए पुद्गलनु परिणमन वीर्य फोरवीने तजी दे एटले इन्द्रियद्वारे आत्मानी चेतना परिणाम पामी ठे, तेने पलटावीने स्वरूपे सहजन्नावे परिणमावे तो, कायाना सुख दुःखनो विन्नागी पण चेतन पोत न थाय अने ध्यानगत सिद्धना अव्यावाध सुखनो, अशे न्नोगी थाय, वळी विशेषे वीर्य स्फुरणा पामे तो क्षपकश्रेणी मांमी, कर्मने हणी, अकर्मी थइने सिद्धि वरे. एवा साहसिक पुरुषोत्तमने आत्मानदी कहीए. (७)

हवे आठमुं लक्षण गिरुईते घणा गुणवंतो एटले गंन्नि‌र पर उपकारनो कर्त्ता अपूर्व दर्शन ठे जेनु परमकान्ननु कारण एटले जे उपद्रव करतो आवे तेना तननो ताप दूर करे तो जे विनय पूर्वक दर्शन पामे तेनो तो ताप रहेज शेनो, वली वचनने श्रवण करे तेना मननी व्याधि जे कलुषता ते नाश पामे वली मनन चितवन करे, तेने सतोष सुख प्रगटे तद्गत न्नावे परिणाम पामे क्षय पामे, तेने चतुरगति ससार न्नमणनो अत ठेमो आवे अने निर्वाणपद पामे एम अनतो उपकार करता मनोवांछित पुरवाने न्नावकलपवृक्ष समान याचकनी नूख न्नागे तेमने गिरुई कहीए एटले इष्ट फळदाता ठे ते इष्टना वे न्नेद. एक व्यवहारइष्ट अने वीजु निश्चयइष्ट जे व्यवहार इष्ट मागे तेने वैराग्यनो उपदेश करी ससारनु अनित्यपणु वली असारपणु देखामी ससार त्याग करावी दिक्षा आपी पच महाव्रत आदे चरणसित्तरि अने पमिलेहण आदि करण

सित्तरि मली एकसोने चालीश भेदे चरणकरणानुयोगनु जाणपणुं करावी समजावी विधिपूर्वक प्रवर्त्तावी स्वर्गे मोकले तेने व्यवहारे इष्ट फलदाता कहीए अने निश्चयइष्ट मागे तेने द्रव्यानुयोगनु जाणपणु करावे एटले धर्मास्तिकाय अधर्मास्तिकाय आकाशास्तिकाय काळ पुद्गलास्तिकाय अने जीवास्तिकाय ए षट्द्रव्यनी वारया करी गुणपर्याय, स्वभाव लक्षण उंळखावी पाच अजीव अचेतन द्रव्यथी एक पोतीको चेतन द्रव्यभिन्न (नोखो) पामी, हेय, ज्ञेय, उपादेय ए त्रिभगी समजावी, पांच अजीव, अचेतन द्रव्यनो हेय कहेतां त्याग करावी एक पोतीको आत्मा, सिद्धनो साधर्मि मोक्षमयी मोक्षमा रहेवावालो एज उपादेय कहेता आदरवा योग्य छे एम दढता करावे, श्रद्धा प्रतित करावे तीहा गुणने उंळखतो गुणनो राग प्रगटे ते रागनो प्रेर्यो थको अत करणे उंडो उतरी खोज करे अतर्गत स्मरण चिंतवन करे रमण करे अनुभव करे पोतीका सहज भावे वीर्य फोरवे श्रेणी मामी घनघातिकर्मनो नाश करी अनत चतुष्टयी पामी योग रोध करी अघातिकर्म हणी सिद्धि वरे तेने निश्चयथी इष्ट फलदाता कहीए ए महा उपगारी, करुणासागर, स्पृहा रहित, तत्वचिंतक, तत्वगवेषि, तत्वरमणी पोते तरे अने गिरुउं बीजाने तारे तेमने आत्मानदी कहीए (७)

हवे नवमु लक्षण निर्भय एटले परवस्तुने विषे पोतापणो एकाते मानवानी बुद्धि, सम्यक्ज्ञान सम्यक्

दर्शननी प्राप्ति थतां टळी छे तीहांथी निर्ग्रंथ, वली तत्व-दृष्टिए विचारीए तो जीहां, अप्रतिपाति क्षय उपसम-भाव थाय एटले हानि न पामे त्यारे निर्ग्रंथ दशा मानीए एटले अप्रतिपाति उपशम आत्मा क्यारे पामे? तो कोइक जीवो छासठ सागरोपम जाझेरी ससार काळ-स्थिति वाकी रहे त्यारे पामे अने कोइक जीवो, तेत्रीस सागरोपम जाझेरी ससारस्थिति काळ वाकी रहे त्यारे पण पामे वली कोइक जीवो छेल्ले भवे तो पामेज पण आठ भवथी अधिक संसारस्थिति छे जेने, तेतो अप्रतिपाति क्षय उपशम न पामे अने अप्रतिपाति क्षय उपशम भाव न आवे तीहां समकितनी सावीती न रहे अने मि-थ्यात्व प्राप्त थाय तीहा हानि कहीए माटे अप्रतिपाति क्षय उपशमने पामेला चोथा गुणठाणाना भावने अचळ थयेला उपरना गुणठाणे चढे अने पडे पण चोथा गुणठा-णाने न छोडे ते निर्ग्रंथवत पुरुषोत्तमने मुख्यताए आत्मा-नदी कहीए. (९)

हवे दसमु लक्षण निष्कपटी एटले कपट करवानु कारण शु छे तो एक मान अने वीजो लोभ ए वे छे ए वे प्रकृतिनी उदास करीए, तीहां कपटनो संभव न आवे. ए मानना वे भेद एक अप्रशस्तमान, वीजुं प्रशस्तमान? लोभना वे भेद एक अप्रशस्त लोभ, वीजो प्रशस्त लोभ एम वे प्रकृतिना चार भेद थया तेमां अप्रशस्त, मान अने लोभ छे, तें ससारमां कपट करवानो हेतु छे

ज्ञाननो जाणवापणे, दर्शननो देखवापणे, चारित्रनो
पणे, वीर्यनो स्फुरणाशक्तिए एम अनतागुण पोत
स्वनाव धर्मे वर्ते पण एक बीजामां प्रवर्ते नही ते
ज्ञाती स्थिर कहेवे मग्न कहेठ वली ए पुरुषोने अ
सुखनो अश प्रगट थयो ठे । ध्यानगत परमानदनी
मग्न ठे ए सुखनु वर्णन सर्वज्ञ प्रत्यक्ष हजारो जी
कहेवाने पोताना आयुष्यनी पूर्णताए पण अशक्त ठे
महोपाध्याय यशोविजयजी ज्ञानसार ग्रथे बीजा मग्न
कहे ठे माटे चतुर्गति भ्रमण टाली जन्म, जरा
मरणना दु खथी रहित थइ अजरामर मोक्षपदे अ
बाध सुख पामवाने एक अद्वितीय अनुभवज्ञान ए ज
रण ठे तेने पाम्या आत्मानदी कहीए (११) क
अनुभवाष्टके

श्लोक

संध्येव दिनरात्रीभ्या केवलश्रुतयो पृथक्
बुधैरनुभवो दृष्ट केवलार्कारुणोदय ॥ १ ॥
व्यापार सर्वशास्त्राणाम् दिक् प्रदर्शनमेव हि
पार तु प्रापयत्ये कोऽनुभवो भव वारिधे ॥
अतींद्रिय परब्रह्म विशुद्धानुभवं विना ॥
शास्त्रयुक्ति शतेनापि न गम्य यद्बुधाजगु ॥

ममताष्टके.

प्रत्याहृत्ये न्द्रियव्यूह समाधाय मनोनिजम् ॥

दर्धच्चिन्मात्र विश्रांति मग्न इत्यन्निधीयते ॥ १ ॥
यस्य ज्ञान सुधासिंधौ परब्रह्मणि मग्नता ॥
विषयांतर संचारस्तस्य हाला हलोपमः ॥ २ ॥
स्वभाव सुख मग्नस्य जगत्तत्वावलोकिनः
कर्त्तत्वं नान्यन्नावानां साक्षित्व मवशिष्यते ॥ ३ ॥
ज्ञान मग्नस्य यच्छर्म तद्वक्तुं नैवशक्यते ॥
नोपमेयं प्रियाश्लेषैर्नापि तच्चंदनद्रवैः ॥ ६ ॥
शमशैत्य पुषोयस्य विप्रुषोऽपि महाकथा ॥
किंस्तु मोज्ञान पीयूषे तत्र सर्वांग मग्नता ॥ ७ ॥
यस्यदृष्टि कृपावृष्टिर्गिर शमसुधाकिरः ॥
तस्मैनमः शुन्न ज्ञान ध्यान मग्नाय योगिने ॥ ८ ॥

इहां आत्मानंदीनो अधिकार समाप्त

हवे वली निश्चयनयनी मुख्यताए धर्मप्रवर्तन कहे छे,

श्लोक.

अविरोध मनुद्वेगं ॥ शमन्नावं चलाचल॥
अहंममत्व परित्यक्तं ॥ अकर्मकर्म उच्यते ॥ १ ॥

अर्थः—निश्चयनयमां दृष्टि करवावाला पुरुषोत्तमनी क्रिया केवी होय ते प्रत्ये गवेषे छे अविरोध कहेतां कोइ जीव साथे विरोध चितवे नही वली करे नही एटले विरोध करवानुं मुख्य कारण जोइए तो एक मान अने बीजुं लोन्न ए बे छे. एटले जीहा पोतानु मान खन्दित

थाय, वा लोभमा ठगाश थाय, तीहा विरोधनो संभव आवे, ए बे प्रकृतिने जेणे पूठ दीधी ठे एटले पूठ दीधी एम क्यारे जाणीए के जे पुरुषो पोताना तटगत आत्मस्वरुपना चितक ठे सत्ताए रहेली ज्ञानादि अनता गुण अने अव्याबाधादि अनता पर्याय तद्रूप ऋद्धिना जाण ठे परतु क्षायक भावे ए ऋद्धिनी प्रगटताना अभावे पोताना आत्मानी लघुता भावे हानि चितवे तीहा माननो असम्भवठे वली देवेन्द्र नरेन्द्रादि पदनी इन्द्रि नोइन्द्रिजनित जे विषय सुखनी हेतुभूत एवी तेमना ऐश्वर्यपणानी पुद्गलीक विनाशिक ऋद्धिनी ठकुराइ तेने जे पुरुषो अलच्छी माने तीहा लोभनो असम्भव ठे वली सर्व जीवराशीने सत्ताए सरखा सिद्धना बरोबरीआ स्वजाति जाणीने स्वामीत्व सबधे मैत्री भावना भावे ठे तेमनु भलु चितवे ठे ते पुरुषोत्तम विरोधि भावथी विमुख ठे तेमने अविरोधी कहीए वली ए पुरुषोत्तम केवा ठे तो मनुद्वेग कहेता उद्वेग पामे नही एटले उद्वेग पामवानु कारण ए ठे के जेणे पोतानी कायाने पोतापणे जीव मान्यो ठे वळी सज्जन कुटुबादिने पोतानु मान्यु ठे, वळी धन,दोलत, राजमहेल, राजऋद्धिने मारी मानीठे ते जीवने ए ऋद्धिनी हानि थाय, विनाश थाय, तेथी उद्वेगता आवे, सताप करे, हु निर्धन थइ गयो दारिद्र अवस्थाने पाम्यो, भिक्षुकवत कगाल थइ गयो, आशु थइ गयु, एम आर्त्तध्याननो ध्याता थाय, तेने उद्वेग कहीए, परतु जेणे एक पोतानो आत्मा,

ज्ञान, दर्शनादि गुणे युक्त शाश्वतो, एज मारो एम जाण्युं ठे, सद्द्ह्यु ठे, वळी ए शिवाय जे बीजु अन्य प्राप्त थयुं ते पूर्वकृत कर्मयोगे अने उदय सयोगे मल्यु, ते बाह्यनाव ठे, मारी ने एनी वस्तुगते जुदाइ ठे, ए सयोग संबंधने पोतानो मानीने में आ ससार चतुर्गतिन्रमणचक्रमां नमतां थकां, अनंतां पुद्गल परावर्त्त पूर्वे कीधां, नर्कनिगोदना अनतां दु:ख, असख्यातो, अनंतो काळ पर्यत सह्यां, वळी फरी फरी दुःखनी परपरा पाम्यो, तेनु मुळ कारण ए ठे के में परने पोतानु अज्ञानपणे, वळी अणानोग मिथ्यात्वे अनादि सवधे मान्यु, बीजु नथी, वळी शु जाणीए के हे चेतन मिथ्यात्ववशे तुं तारा ज्ञानदर्शन तद्रूप बोधने गमावीश, अने फरीथी पाछु परने पोतानु मानीश, तो चतुर्गति नवचक्रमां न्रमण करतां थकां अनतां दु:खनी परंपरा पुनरपी नर्क नीगोदआदि गतिने विषे पामीश अने नर्कना दुःखनो विपाक तो अति कटुक, ते इहा वर्णववा बेसीये तो ग्रथ गौरव थइ जाय, माटे हे नवनीरु नाइयो तमे सिद्धांतथी वा, सद्गुरुना उपदेशथी जाणी लेजो अने निगोदनु दु:ख तो सातमी नरके एक पाथको ठे अने तेमा पांच नर्कावासा ठे. तेमां वचलो, अपेठाण नामा नर्कावासमां सर्वोपरी अनतगुणी अधिक वेदना ठे ते दु:खना वर्ग करीए, तेने वळी अनतगुणो करीए, एम अनती रासीए निगोदीयो जीव अव्यक्तरूपपणे, अनादि सवधे दु:ख नोगवे ते दु खनो विरहकाल एक समय मात्र पण निगोदमां

थाय, वा लोजमा ठगारा थाय, तीहा विरोधनो सम्नव आवे, ए वे प्रकृतिने जेणे पूठ दीधी ठे एटले पूठ दीधी एम क्यारे जाणीए के जे पुरुषो पोताना तटगत आत्म-स्वरुपना चितक ठे सत्ताए रहेली ज्ञानादि अनता गुण अने अव्याबाधादि अनता पर्याय तद्रूप ऋद्धिना जाण ठे परतु क्षायक नावे ए ऋद्धिनी प्रगटताना अनावे पोताना आत्मानी लघुता नात्रे हानि चितवे तीहा माननो असम्नवठे वली देवेंद्र नरेन्द्रादि पदनी इद्धि नोइद्धिजनित जे विषय सुखनी हेतुनूत एवी तेमना ऐश्वर्यपणानी पुद्-गलीक विनाशिक ऋद्धिनी ठकुराइ तेने जे पुरुषो अल-च्छी माने तीहा लोजनो असम्नव ठे वली सर्व जीवरा-शीने सत्ताए सरखा सिद्धना वरोवरीआ स्वजाति जाणीने स्वामीत्व सवधे मैत्री नावना नावे ठे. तेमनु नलु चिंतवे ठे ते पुरुषोत्तम विरोधि नावथी विमुख ठे तेमने अवि-रोधी कहीए वली ए पुरुषोत्तम केवा ठे तो मनुद्वेग कहेता उद्वेग पामे नही एटले उद्वेग पामवानु कारण ए ठे के जेणे पोतानी कायाने पोतापणे जीव मान्यो ठे वळी सज्जन कुटुंबादिने पोतानु मान्यु ठे, वळी धन,दोलत, राजम-हेल, राजऋद्धिने मारी मानीठे ते जीवने ए ऋद्धिनी हानि थाय, विनाश थाय, तेथी उद्वेगता आवे, सताप करे, हु निर्धन थइ गयो दारिद्र अवस्थाने पाम्यो, निक्षुकवत क-गाल थइ गयो, आशु थइ गयु, एम आर्त्तध्याननो ध्याता थाय, तेने उद्वेग कहीए, परतु जेणे एक पोतानो आत्मा,

ज्ञान, दर्शनादि गुणे युक्त शाश्वतो, एज मारो एम जाएयु ठे, सद्दह्यु ठे, वळी ए शिवाय जे बीजु अन्य प्राप्त थयुं ते पूर्वकृत कर्मयोगे अने उदय सयोगे मळ्यु, ते बाह्यन्नाव ठे, मारी ने एनी वस्तुगते जुदाइ ठे, ए संयोग सवधने पोतानो मानीने मे आ संसार चतुर्गतिन्नमणचक्रमां न्न-मतां थकां, अनंतां पुद्गल परावर्त्त पूर्वे कीधां, नर्कनिगो-दनां अनंतां छु:ख, असंख्यातो, अनतो काळ पर्यंत सह्यां, वळी फरी फरी दु:खनी परंपरा पास्यो, तेनु मुळ कारण ए ठे के मे परने पोतानुं अज्ञानपणे, वळी अणान्नोग मिथ्यात्वे अनादि सवधे मान्यु, बीजुं नथी, वळी शुं जा-णीए के हे चेतन मिथ्यात्ववशे तु तारा ज्ञानदर्शन तद्रूप बोधने गमावीश, अने फरीथी पातु परने पोतानु मानीश, तो चतुर्गति न्नवचक्रमां न्नमण करता थकां अनंतां छु:खनी परंपरा पुनरपी नर्क नीगोदआदि गतिने विषे पामीश अने नर्कना छु:खनो विपाक तो अति कटुक, ते इहां वर्णववा बेसीये तो ग्रथ गौरव थइ जाय, माटे हे न्नवन्नीरु न्नाइयो तमे सिद्धांतथी वा, सद्गुरुना उपदेशथी जाणी लेजो अने निगोदनु दु:ख तो सातमी नरके एक पाथडो ठे अने तेमां पांच नर्कावासा ठे. तेमां वचलो, अपेठाण नामा नर्कावा-समां सर्वोपरी अनतगुणी अधिक वेदना ठे ते दु खना वर्ग करीए, तेने वळी अनतगुणो करीए, एम अनती रासीए निगोदीयो जीव अव्यक्तव्यपणे, अनादि सवधे छु:ख न्नो-गवे ते दु खनो विरहकाल एक समय मात्र पण निगोदमां

नथी अने नर्कमां तो, तीर्थंकर ज्ञगवानना कल्याणक अवसरे जीवअंतरमुहूर्त्त सातावेदे एटलो दुखना निरहकाळनोसन्नव नर्कमां ठे, वळी नर्कमां तो कोइक जीव समकित पण पामे माटे निगोदनी अपेक्षाए तो नर्क सारी ठे, पण चेहु गतियो दुःखमयी ठे तेनु मूळ कारण ए ठे के पोतानो तत्व न जाण्यो अने परने पोतानु मान्यु, माटे हे चेतन! हवे समज अने तु तारा तत्व उपर दृष्टि कर, ने पर उपरथी पोतापणानी दृष्टि टाळ अने हवे पोताना तत्वने जुलीश नहि ने परने विषे पोतापणानी बुद्धि करीश नहि, एम अनुज्ञव युक्त परिपक्व ज्ञानयोगने घटतर वृत्तिए क्षय उपशम ज्ञावनी सहाय मलवाथी योतिरूप प्रकाश (ज्योत) कर्त्ता, सहजज्ञावे थयो ठे जेने, ते पुरुषोत्तम उद्वेग केम पामे. अर्थात् नहि पामे, समज्ञाव कहेता एक पोताना स्वज्ञावे थया, एटले स्वज्ञावे थया एम क्यारे जाणीए के, शुज्ञाशुज्ञ बन्ने वस्तुने विषे समदृष्टिए जोनारा एटले शुज्ञाशुज्ञमा दृष्टि नहीं करवावाळा तेनो रहस्य एम ठे के जे पुरुषो मोहित ठे ते मनोज्ञ रुडा पूद्‌गल तेनी अज्ञिलाषा करे ठे तेनु नाम विज्ञाव ठे ए विज्ञावनो नाश थयो ठे इच्छानो रोध थयो ठे जेने एटले निर्मोह वृत्ति थइ ठे, उपयोग दृष्टि पोताना सहज ज्ञावमा स्थापी ठे तेने समज्ञाव कहीए

चळाचळ कहेता जे मननी चपळता ते नाश पामी ठे जे पुरुषोत्तमनी, एटले मन जोग ने अंतरगत, मनन जुवन ठे, तीहां ज्ञानरूप खीले अने समाधीरूप दोरडे

बांध्यो छे तेथी निश्चल थया छे, अहं ममत्व कहेतां जे हुने मारुं, आ संसारमां लागी रह्युं छे, ए मोहनी छाक छे, एटले हुं शब्दे पोतानी काया अने कायाथी बीजो जेटलो संबंध, कंचन कामनी आदे राजरिद्धि, जे प्राप्त थइ ते मारी वळी ते वस्तुने विषे, पोतापणानो ममत्व छे, परित्यक्त कहेतां ते अहंपणाना ममत्वनो त्याग कर्यो छे जेणे, एटले त्याग तो कर्यो पण केवी रीते कर्यो के, अज्ञान-दृष्टिए नहि ज्ञानदृष्टिए कर्यो छे अज्ञानदृष्टिए तो सिद्धांतमां कहे छे के, मेरु पर्वत जेटला, ओघा मुहपत्ति, कंचन कामिनीनो त्याग करीने ग्रहण कर्या पण समकितनी स्पर्शना थइ नही अने ससार छुटयो नही. तेनु कारण ए छे के, त्याग करी छोडी तो खरी, निर्ग्रंथ थया, पण परवस्तुथी मारापणो अनादि संबंधे संज्ञाए चाल्यो आवे छे तेहने छेद्यो नथी, एटले तद्गत आत्माने उपयोगगोचर दृष्टि प्रत्यक्ष कर्यो नथी तीहां सुधी, परवस्तु मारी नथी परवस्तुनो हु स्वामी नथी एम निर्णय न थयो अने छोडे ते कांतो दुःखगर्भित त्याग छे अने कांतो मोहगर्भित त्याग छे पण ज्ञान गर्भित त्याग नथी, ज्ञानगर्भित त्याग तो एम छे के, स्वपर विभाग वहेंची परवस्तु परपणे जाणी पोताना आत्माना विषे नास्तिभावे रही छे तेनो हुं स्वामी नथी जे मारु छे ते मारी पासे छे मारा स्वरुपमां तो कोइ वस्तु त्यागवा योग्य नथी. तेम मारा आत्माथी जे अन्य वस्तु छे तेमाथी मारे कोइ वस्तु ग्रहवा योग्य पण नथी. कह्यु छे समाधिशतके—

नथी अने नर्कमा तो, तीर्थकर भगवानना कल्याणक अवसरे
जीवअतरमुहूर्त सातावेदे एटलो दु खना विरहकाळनोसम्भव
नर्कमा छे, वळी नर्कमा तो कोइक जीव समकित पण पामे
माटे निगोदनी अपेक्षाए तो नर्क सारी छे, पण चेहु ग-
तियो दु खमयी छे तेनु मूळ कारण ए छे के पोतानो
तत्व न जाण्यो अने परने पोतानु मान्युं, माटे हे चेतन!
हवे समज अने तुं तारा तत्व उपर दृष्टि कर, ने पर उप-
रथी पोतापणानी दृष्टि टाळ अने हवे पोताना तत्वने भु-
लीश नहि ने परने विषे पोतापणानी बुद्धि करीश नहि,
एम अनुभव युक्त परिपक्व ज्ञानयोगने घटतर वृत्तिए क्षय
उपशम भावनी सहाय मलवाथी योतिरूप प्रकाश (उद्योत)
कर्त्ता, सहजभावे थयो छे जेने, ते पुरुषोत्तम उद्वेग केम पामे.
अर्थात् नहि पामे, समभाव कहेता एक पोताना स्वभावे
थया, एटले स्वभावे थया एम ज्यारे जाणीए के, शुभा-
शुभ बन्ने वस्तुने विषे समदृष्टिए जोनारा एटले शुभाशुभमा
दृष्टि नहीं करवावाळा तेनो रहस्य एम छे के जे पुरुष
मोहित छे ते मनोज्ञ रुपा पूद्गल तेनी अभिलाषा करे छे
तेनु नाम विभाव छे ए विभावनो नाश थयो छे इच्छानि-
रोध थयो छे जेने एटले निर्मोह वृत्ति थइ छे, उपयोग दृष्टि
पोताना सहज भावमा स्थापी छे तेने समभाव कहीए
चळाचळ कहेता जे मननी चपळता ते नाश पामी
छे जे पुरुषोत्तमनी, एटले मन जोग ने अंतरगत, मन
भुवन छे, तीहा ज्ञानरूप सीले अने समाधीरूप ०

दुहा

ग्रहण अयोग्य ग्रहे नही ॥ ग्रह्यो न छोमे जेह ॥
जाने सर्व स्वज्ञावने ॥ स्वपर प्रकाशक तेह ॥१८॥
त्याग ग्रहण बाहिर करे ॥ मूढ कुशळ अंतरंग ॥
बाहिर अंतर सिद्धकू ॥ नहीं त्याग औरसंग ॥४६॥

एम जाणीने पोतानी वस्तुए सतोपी थया तेमने त्याग कहीए वळी तेमनेज निर्ग्रंथ कहीए अ-कर्म कहेतां कर्मशब्दनो अर्थ क्रिया छे ते अकार शब्दे बाह्य ज्ञावे नहीं करवी तेने अकर्म कहीए एटले विरोध नही करवो उद्वेग नही करवो इच्छा वाच्छा मोहवशे थाय ते नही करवी मननी चपळ वृत्तिए दूर्ध्याननो ध्याता थाय ते नही करवु अहं ममत्व नही करवो एम नही करवानु कह्यु तेज कर्म उच्यते कहेतां तेने निर्ग्रंथ पदनी वळी सवरज्ञावनी अने मोक्ष पथनी अनुकुळ हेतु शुद्ध प्रवृत्तिरूप क्रिया कहीए एटले निर्ग्रंथ पदनी बाह्य ज्ञावमा अकरवापणे करणी छे एम उच्यते कहेतां आत्मज्ञानी महात्मा पुरुषो कहे छे (१) वळी कह्यु छे

बाह्यवृत्तिये गुणठाणे चढवुं, ततो जम्ना ज्ञामा ॥
संयम श्रेणिं शिखर चढावे, अतरंग परिणामा रे ॥
लोगा ज्ञोळविया मत ज्ञुलो०

वळी परमानद पच्चीसीए,—

श्लोक.

उत्तम आत्म चिंता च, मोह चिंता च [illegible] ॥
अधम काम चिंताय; परचिंताऽधमाधमा ॥ [illegible] ॥

अर्थ—उत्तम आत्म चिंताच कहेतां जे [illegible] पनी चिंता एटले चिंतवणा करवी. गवेषणा करवी, ते चिंतवणा बाह्यवृत्तिमां नथी त्यारे क्यां छे. तो अंतर्वृत्तिए छे तिहां पण मनयोगस्थिरता पामे त्यारे [illegible] आवे, एम करतां करतां अभ्यासे करीने, [illegible] अने क्षय उपशम भावनी सहाय [illegible] ज्ञानज्योति उद्योत प्रकाश अनुभव [illegible] भुवन केवुं छे. तो, सामो [illegible] घणो मोटो सपाट वगीचो [illegible] सूर्यना तेजे करी प्रकाशित [illegible] भुवनमां ज्ञान [illegible] प्रकाशित [illegible] एवुं अनुभव भुवन [illegible] प्रगटे एटले ध्यान [illegible] चाररूप अनुभव [illegible] चाले तेमां पृच्छा [illegible] अशंकित [illegible] एक अनुभव भुवन [illegible] जेम [illegible] वचनो [illegible] एक एई। [illegible]

वाना अर्थे ऽहा त्रण सवैया लखीए छीए तेथी हे तत्ववो-
धना अर्थि न्नाऽओ तमे अनुन्नवनो खप करजो

सवैया एकतीसा

मनसो अचळ रहे ज्ञान ध्यान तदे तदे.
रहे स्थिर थइने अनुन्नव सो रंग है
पाचु इंद्रीथी चळे चेतना इहां न मळे
मळे अनुन्नव स्थळे सही सहज न्नाव है
अनुन्नवे अति घणुं धारणा सो एक अणुं
अनुन्नव गये गणुं अंतह करण है
लाञ्यो पाछो आवे नहीं आवे मनस्थिर तही
रहे न उपाधि महीं शिव खुलो खेत है (१)
अनत गुणोमा आगु ज्ञानने दर्शन जागुं
अनुनव थाय लागु स्वरूप रमण है
तिहाण धारा न टूटे मोहनो खजानो खुटे
शुन्नाशुन्न बध छूटे सो अशुद्धवान है
शुद्धको स्थापन सही देखे परत्यक्ष अहीं
मन जोग स्थिर तही खुल्लो खेल तान है
असंकित वात एही गति रेखवेल तेही
थोभाञ्यो सो थोन्ने सही अत सो स्थिर है(२)
सहज स्वन्नावे आवे जडतासें खसी जावे
अनेक चक्र मिटावे एसो घटतर है

आतम ग्यान ध्यान सो आतम धर्मवान सो
परम पद सांन सो देख्यो अनुभव है
सित गया आणे छे अमृत भक्त भाणे ठे
अनुभवी सो जाणे ठे एन आवे वचन है
वंदना हमारी सदा रीझसु आवसो जदा
ज्ञान शीतळ तदा मित्र प्रमोदित है (३)

एम आत्म चिंता एटले आत्मस्वरुपनी चितवणा करवी, वस्तुगते वस्तुपणानो निरधार करवो ते अनुभवगम्य ठे अने अनुभवनी जेने प्राप्ती थइ ते उत्तम कहेतां पुरुषोत्तम ठे; मोहचिताच, कहेतां जे पुरुषे, सप्रविभाग वहेची आत्मस्वरूप चितवी, अनुभवीने ग्रथिभेदपूर्वक समकित प्रगट कर्यु ठे, यथार्थ श्रद्धा करी ठे, वस्तुने विषे वस्तुपणानो निरधार थयो ठे, वळी ससारने असार जाणी, गणीने, अणगार थया ठे ते ठतां पोतानु वीर्य तद्गत सहज भावमां वृद्धिए स्फूर्णा न पामे, अने परभवे देवलोकादि ऋद्धिनु पामवुं इत्यादि मनोज्ञ भोगनी इच्छा मोहीत थका करे, तेवा पुरुषने मध्यम कहीए; अधम काम चिताच, कहेतां उपर कह्यु ए प्रमाणे समकित मूळ सर्व विरति थया ठे, ते ठता कर्मनी विचित्र गति ठे, अने उदय महा वळवान ठे, तेथी करीने, कन्दर्पने एटल काम चिन्हने उपशम करवानी बुद्धिए, आकरी तपस्या करता ठता पण न शम्यो अने व्याकुळतानो पराभव —गो

छे हा! हा! इति खेदे चेतन थइने अचेतननी बुद्धि राखे छे, माटे आ श्लोकमा परचिंताना कर्त्ताने अधममा अधम कह्या, ते यथास्थित छे

अध्यात्म सार ग्रंथे,–

श्लोक

या निश्चे कलीनाना, क्रियानाति प्रयोजना ॥
व्यवहार दृशा स्थानाना, ता एवाति गुणावहा॥१९॥

अर्थ –जे मुनीश्वरनु मन निश्चय पोताना स्वरूपमां लिन थयु अने स्वरूप ओळखाण करी तेमाज रमेछे तेवा मुनीश्वरने बाह्य व्यवहार प्रमुख क्रिया करवानु कइ प्रयोजन नथी जेने मोक्षनी अभिलाषा छे तेने क्रियानी काइ जरुर नथी अने जे ज्ञानदशा पाम्या नथी तेने व्यवहार क्रियानो खप छे केमके ते थकी शुभ कर्म उपार्जे पण मुक्ति हेतु न थाय (१९)

आवश्यकादि रागेण, वात्सल्याद्भगवद्गिरा ॥
प्राप्नोति स्वर्ग सौख्यानि न याति परम पदं ॥४॥

अर्थ–आवश्यकादि रागेण कहेता प्रतिक्रमण प्रमुख क्रियाने विषे अथवा उपवासादि तपने विषे राग छे वली जिनवाणी सांभलवानो राग छे एटले परमात्मा भाषित अथवा परमात्माना मार्ग अनुसारी एटले सूत्रसिद्धांत ग्रंथ प्रकरणादि सांभळवानो
कहीए ते थकी स्वर्गना सुख

कहेतां परमनाम उत्कृष्ट पद जे आत्माने कर्मथी मुकावुं तेने मुक्ति पद कहीए ते न याति कहेतां न पामे. इहां कहेवानो सार एटलो ठे जे बाह्य क्रिया जोगे संसार अने अंतर क्रिया जोग मोक्ष ए वात नि संदेह ठे, हवे जेथी मोक्ष सुख मले ते कहे ठे (४)

ज्ञान योगस्तपः शुद्धमात्मरत्येक लक्षण
इंडियार्थोन्मनीन्नावात्स मोक्ष सुख साधक ॥५॥

अर्थ.—ज्ञान आत्मा ज्ञान योग धारण करे ठे, ते ज्ञान योगना वे न्नेद एक न्नेदज्ञानयोग अने वीजो अन्नेद ज्ञानयोग तेमां पहेलो न्नेद ज्ञानयोग ठे. तेना वे न्नेद एक कृत्रिम अने वीजो अकृत्रिम तेमां कृत्रिम न्नेद-ज्ञान ठे ते चोथा गुणठाणाथी सातमा गुणठाणा सुधी अतरमां अनुन्नव ठे ते कृत्रिम जाणवो परंतु क्षयोपशम न्नावनो ठे. ते उठाळा खातो रहे ठे एटले परसंगथी ठुटी शकतो नथी परतु तत्वातत्वनो विचार करे, वळी द्रव्य गुण पर्यायनो विचार करे, आत्माना त्रण न्नेद चितवे, वहिरात्मा, अंतर आत्मा अने परमात्मा अथवा नय-निक्षेपपक्ष प्रमाण विचारे इत्यादि स्वरूपे कृत्रिम अनुन्नव ए पहेलो न्नेद, ते कह्यो हवे वीजो न्नेद अकृत्रिम न्नेदज्ञाननो ते आठमा गुणठाणाथी श्रेणिगते आवे इहा उठाळानो सन्नव नथी वळी प्रसग वृत्ति नथी, ज्ञान तो क्षयउपशम न्नावनुं ठे, परतु अतिविशुद्धि न्नावने पामेलु घणुं निर्मळ

छे, उपयोग तिक्ष्ण छे, इहां एक पोताना द्रव्यनो विचार भेद अपेक्षाए छे, परपक्षनो ग्राहक नथी, पोतानु सुख-स्वरूप प्रत्यक्ष रीते, स्याद्वादपक्षनी ऐक्यतापणे स्वभाव-वृत्तिए अनुभवे छे, ते अकृत्रिम भेद ज्ञान योग साधननो बीजो भेद ते कह्यो, इहां समजुनो तर्क थशे जे, केवळ ज्ञाननो अनुभव ते अकृत्रिम छे, बाकीनो अनुभव ते कृतिम कहेवाय कारण के अनुक्रमे अनुभव थाय तेनो उत्तर जे केवळज्ञान छे ते क्षायक भावनु निरावरण, आव रण रहित छे ते सर्वथी अकृत्रिम अनुभव करे, अने श्रेणिगते भेदज्ञान छे ते कृत्रिम कहु, परतु देशथी अकृत्रिम छे, कारण के चेतन पोताना स्वभावे थयो त्या ज्ञाननो अरूपी विषय छे, वळी सहजभावे पर्याय धर्मनी शुद्ध प्रवृत्ति छे, ते पुरूषने अशुभोदय जोगे कदाच कोइ घाणीमा घालीने पीले, अ-थवा खाल उतारे, अथवा माथे अग्नि सींचे, इत्यादि घणु कष्ट करे, यावत् प्राण रहित करे तोपण पोताना स्व-रूपथी चूके नहि अने जे दु ख वेदे नहि तेनो अनुभव ते अकृत्रिम जाणवो ए भेदज्ञान साधनयोगनो बीजो भेद ते कह्यो हवे अभेद ज्ञानयोग ते दशमा गुणठाणाना अते एटले छेकना बारमा गुणठाणे आवे, तेमां अभेदे पक्ष चिंतवे, ते गुणपर्यायमय आत्मा, एटले ज्ञानादि गुण आत्मा थकी जुदा नथी, एकत्व छे, इहा भेदनो छेद थयो, असत्य कल्पना टळी ज्ञान, दर्शन, चारित्र तेहीज आत्मा, एटले कचननु भारेपणु, पिळाशपणु, चिकाशपणु ते कोइ कच-

नथी जुदुं नथी जुदु कहीए ते कल्पना कहेवाय, तेम आत्मा अने आत्माना गुणपर्याय ते कंइ जुदा नथी, एटले भिन्न नथी, अभिन्न छे; इहां मोहनुं तथा अशुद्ध परिणति, जे रागद्वेष तेनु उन्मूलन दशमा गुणठाणा अंते थयु, अने वितरागभावे बारमा गुणस्थाने यथाख्यात चारित्र, शुद्ध परिणति प्रगट्युं, वली ज्ञानावर्णि, दर्शनावर्णि, अने अंतराय ए त्रण कर्मनो वीतरागभावे बारमा गुणठाणा अंते क्षय थयो त्यां केवळज्ञान, केवळदर्शन प्रगट्यु, ए अभेदज्ञान योग साधन ते कह्यो, ए रीते भेदज्ञान, तथा अभेदज्ञानयोगे आत्दाने स्वरूप रमण करवु, गुणवृतिए कर्त्ता भोक्ता पोतानो आत्मा छे अने परभावनु त्यागपणुछे तेने आत्मयोग कहीए एटले इहां बाह्यथी लोचवुं, मुन्डवु, वेष धारण करवु इत्यादिकने योग कहेवाय नहि, ए तो बाह्ययोगछे पण मुक्तिमार्ग साधवानो तो आ एक अंतर्गत ज्ञानयोग छे, ते ज्ञानयोगने शुद्ध तप कहिए, एटले सर्व कर्मनो नाशकर्त्ता एक ज्ञान छे कह्यु छे योगशास्त्रे,–

श्लोक

प्रणिहंति क्षणार्धेन, साम्यमालंब्य कर्मतत् ॥
यन्नहन्यान्नरस्तीव्र, तपसा जन्मकोटिभिः ॥५१॥

तथा ज्ञानार्णवे–

यज्जन्म कोटिभि· पापं जयत्यज्ञस्तपोबलात् ।
तद्विज्ञानी क्षणार्द्धेन दहत्यतुल विक्रम ॥ १८ ॥

वळी श्रीपाळना रासमां चोथा खंके –

॥ देशनानी ढाळे. ॥

क्षण अर्धे जे अघ टले, ते न टळे जवनी कोमीरे॥
तपस्या करता अति घणी, नहीं ज्ञानतणीठे जोमीरे॥
नहीं ज्ञानतणीठे जोमी सवेग गुण पालियें पुण्य-
वंतरे ॥ ३० ॥

अर्थ –क्षण अर्धे जे अघ टले, कहेतां आत्मज्ञानयोगे अर्धा क्षणमा एटले आख मीचीने उघामीए तेने क्षण कहीए, तेना अर्धा जागमा अघ टले एटले पाप कर्म टले, तेटला पाप कोमि जवो सुधी अति घणी एटले उत्कृष्टि तपस्या करता पण न टले, ते उत्कृष्टि तपस्या कोने कहीए, के प्रथम तीर्थंकरना वारे वार मासि तप ते उत्कृष्टो कहेवाय ने वाविस जिनना वारे आठमासि तप ते उत्कृष्टो कहेवाय अने वीर स्वामीना ठेल्ला तीर्थे ठ मासि तप ते उत्कृष्टो कहेवाय, ए प्रमाणे तपस्या करतां जव पुरो करे एटले जे काळे जेटलु आयुष्य होय, तेटलु उपर कह्यु ते प्रमाणे, बाल वय टालीने तपस्या जोगे पुरु करे एम कोम जवो सुधी जवोजव तप करे, तोपण ज्ञानी पुरुषने ज्ञानयोगे अर्धा क्षणमा पाप कर्म टले, तेटला पाप कोम जवो सुधी उत्कृष्टि तपस्या करता पण न टले ते पापना वे जेद, एक घाती पाप अने वीजु अघाति पाप, तेमा घाती चउकर्मनी (४५) प्रकृति ठे अने अघाती चउक-

मनी अशुन्न (३७) प्रकृति ठे ए घाती कर्म अघाती वेहुनी मलीने (८२) पाप प्रकृति थइ तेमां जे घाती कर्मनी(४५)प्रकृति कही ते तो एक आत्मज्ञान अने बीजु आत्मध्यानयोगे निश्चय खपे ए कर्म प्रकृति आत्मप्रदेशथी आत्म ज्ञाने ठेदाय वळी अघाती कर्मनी(३७)प्रकृति कही ते आत्मज्ञान अने आत्मध्यानयोगे खपती नथी कारण के अघाती कर्मप्रकृति उत्कृष्ट रस जे वांधेली होय ते वहुधा न्नोगववी पमे ठे तेमां जे व्यापकपणे न्नोगवे तेने पाठी पुनरपि बधाय अने ज्ञानध्यानगत व्यापक थइ उदय अव्यापकपणे न्नोगवे तेने निर्जरा थाय पण वंधाय नहि माटे कर्मनो नाश करवो अने मुक्तिनां सुख लेवां ते तो एक ज्ञानयोगे मळे ते माटे कह्युं के, नहि ज्ञानतणी ठे जोमीरे, एटले ज्ञान गुणनो वरोवरीयो, तप प्रमुख कोइ गुण निर्जरा हेतु नथी, एम सर्व पमितोनी वोली ठे, माटे ज्ञानयोगने शुद्ध तप जाणवो

वळी मात्मरत्येक लक्षण, कहेतां आत्माने रति एटले परमानद पामवानु एक ज्ञान एहिज लक्षण ठे. एटले आत्माने ज्ञानयोगे आनद प्रवर्ते ठे इंद्रियार्थोन्मनीन्नावा, कहेतां ए ज्ञानयोगी मुनीश्वर ठे ते केवा ठे तो, आ न्नव आश्री, वळी परन्नव आश्री कोइ प्रकारे इंद्रियजनित विषय सुखना तो अर्थी नथी, वळी आ न्नवमा यशकीर्तिना वळी वहु मान पामवाना, पुजावाना, मनावाना, तो अर्थी नथी. वळी वहुश्रुतपणानो, तपनो, व्रतनो मद नथी, पांच

रूप, दर्शननो देखवा रूप, चारित्रनो स्थिरता रूप, वीर्य-
नो स्फुरणा शक्तिए एम अनता गुण भिन्न व्यक्तिरूप भिन्न
पणे आत्माने विषे अनादि सबधे, शक्ति भावे- अव्यक्ति-
रूप निर्लेप रह्या छे एटले शक्ति भावने आवरण लागे
नहि तेम शक्ति भावथी आत्मानु कार्य पण सरे नहि,
यथा दृष्टांते, जेम काष्टमा शक्ति भावे अग्नि रही छे,
, ते अग्नि केवी छे के जाज्वल्यमान, दाहक स्वभावमा
छे, परतु ते काष्टने आपणे बाथ भीडीए तेथी ते का-
ष्टमा रहेली अग्नि आपणी टाढने टाळवा शक्तिमान
थाय ? अर्थात् न थाय, तेम आत्माने विषे शक्ति-
भावे धर्म रहेलो चतुर्गति भ्रमण टाळवा अर्थे
न थाय, परतु काष्टमा रहेली अग्नि प्रगट व्यक्तिभावे क-
रीए तो टाढनो उपद्रव तरतज टळे, तेम शक्तिभावे आ-
त्माने विषे ज्ञानादि गुण अव्याबाधादि पर्याय रहेला ते
ज्ञाने जाणी वीर्य फोरवीने, प्रगट करीए तो चतुर्गतिनु
भ्रमण, जन्म, जरा मरणना दुःख ते सर्वे टळी जाय, एम
जाणवु ते आत्माना गुण पर्यायनी व्यक्तिनु थवु तेने स्व-
भाव लाभ कहीए अने सस्कार एटले निज स्वभावे धर्म
रहेलो तेने साध्यमा, एटले स्मरण चिंतवन करवामा अ-
नुभववामा, लय पामवामा जे कारण एटले हेतु तेज,
ध्यय ते कहेता ज्ञान कहेवाय छे, यत कहेता ए ज्ञान
सिवाय बीजु जाणवु, जणाववु, करवु, कराववु, ते सर्वे नि-
मित्त कारणमा छे, उपादान कारणनी प्राप्तिवाळाने एटले

जे पुरुषे यथा प्रवृत्ति आदे त्रण करण करी, कर्म स्थिति घटामी, ग्रथि जेद करी समकित प्रगट कर्युं ठे, वळी वम्युं नथी, एटले चोथा समकित गुणठाणानी सांवितो ठे, तेने उपादान कारणनी योग्यता होय ए उपादान कारणने कार्य-पणे प्रवर्त्तावतां एटले उपयोगे जाणवु, अथवा आवश्यकादि क्रिया आदे करवुं ते सर्वे व्यवहारना न्याये, देश विरति पांचमा अने सर्व विरति ठट्टा ए बे गुणठाणे आवस्यकादि क्रिया, साध्य, साधन सापेक्षपणे परपर कारणमां ठे माटे अमे तीहांज कल्पने निमित्त कारणमां गवेष्यो ठे. ते उपादान कारणवालाने व्यवहारना न्याये, साध्य सापेक्ष योग्यताए परपर कारणमां समजवो अने उपादान कारणनी प्राप्तिना अन्नावे करवुं, करावयुं सर्वे अकारणमां मात्र बुद्धिने अध करनारुं ठे एम केवळ शब्द रणकार मात्र निष्फळ ठे अने जाणवुं, जणाववु करवुं, करावयुं तेनी सीमा सातमा गुणठाणेथी अटकी उपरांत नथी एटले सातमा गुणठाणा सुधी सालवन वृत्ति ठे तेमां पण ग्रंथि जेद अवसरे तो निरालंबन ठे अने सातमा गुणठाणा उपर तो आठमा गुणठाणाथी केवळ निरालवनपणु ठे तीहांथी दसमा गुणठाणा सुधी जेदज्ञान अने जेदाजेद ज्ञान ध्यानगत ठे. उपरांत अन्नेदज्ञाननु साधन ठे अने तेरमे गुणठाणे अन्नेदज्ञान जे केवळज्ञान, केवळदर्शन आदे क्षायक लब्धिनी पूर्ण प्राप्ति ठे. एम महात्मा पुरुषो कहे ठे. (३)

सवैया एकतीसा.

ज्ञान अनुभव भयों, सहज स्वरूप वयों
चिदानद गुणागरो राग रस तज्यो है
निरालबसाऊ नांही. मरणादि भय नाही
देहातित रूपातित यथाख्यात ग्रह्यो है
एही शुद्ध धर्मधारी मोहादि विनाशकारी
महामुनी वीतराग तेरमामा गयो है
अनत चतुष्टिमा क्षायक दान लाभने
भोगोपभोग वीरीअ, अनंत स्फुरि रह्यो है (१)

अर्थ –ज्ञान कहेता साकार उपयोगे जीव अजीवादि वस्तुनु विभाग व्हेंचण करवारूप जाणपणु तेने ज्ञान कहीए अनुभव भयों कहेता विभाग व्हेंचणतो ज्ञानथी प्रथम थइ गइ छे-कही एटले पोतानो आत्मा मन वचन अने काया ए त्रण योगथी जुदो छे एम सद्दहणा करवा पूर्वक ज्ञानयोगे श्रद्धा करी छे वली केवो छे सिद्धनो साधर्मि, सिद्धनो बरोबरीउ छे एम गुणने ओळखी चेतनने विषे चेतनपणानी बुद्धि थइ छे अने अचेतनने विषे चेतनपणानी बुद्धि हेती ते टळी छे तीहां गुणरागीपणे प्रशस्त राग कहीए ते रागनो प्रेर्यो थको, अत करणे उभो उतरे तिहा मनन् भुवने पोताना आत्माने विषे परमात्मपदनु आरोपण करीने स्मरण चिंतवन करे एम करता करतां अभ्यासे करीने मनयोगे चेतन गुणमा रमण करे त्यारे

बाह्यरमण मनयोगने अवलम्ब लागे अने निजस्वरूप रमण वलम्ब लागे. तिहां मनयोग स्थम्भी जाय त्यारे स्वरूप अनुभव ज्ञान प्रगटे हवे मनयोग ज्ञानरूप खीले बंधाणो एटले अनुभव वृद्धि पामतां, पोतीकुं मूळ स्वरूप उपयोग-गोचर प्रत्यक्ष प्रमाणे करतळवत करे त्यां सहज स्वरूप कहेतां पोतानु सहजभावे स्वरूप छे तेने वर्यो कहेतां पोते पाम्यो. ए सहज स्वरूप कवु छे तो चिद् कहेतां ज्ञान ते आनंद कहेतां आनदोपत छे तेम आत्माना अनता गुण छे ते सर्वे गुणो आनदोपेत छे एटले गुण गुण प्रत्ये भिन्न व्यक्ति छे अने व्यक्तिने विषे गुण गुणनो आनद जुदा जुदो छे एम जाणवु एटले पोतीका आत्माने विषे अनत-भेदे आनदनी प्रगटतानु एटले क्षय उपशम भावनी लब्धिनु सुख अनुभव अवसरे आत्मा अनुभवे एटले श्रेणिगते आस्वादे छे एवु पोताना आत्मानु सहज स्वरूप तेने पोते पाम्यो गुणागरो कहेता पाम्यो ते आत्मानु सहज स्वरूप ज्ञानादि अनता गुणनी खाण छे राग कहेतां राग अने तेनो प्रतिपक्षी जे द्वेष तेने अशुद्ध परिणति कहीए ते आत्माने विषे अनादि सवधे छे रस कहेतां ते रागद्वेषरूप रस आत्माने विषे परिणतिए परिणमी जाय ते अशुद्ध परिणतिने तज्यो है कहेता अनुभव बळे पोतीकुं सहज स्वरूप पामतां ज्ञाननी, वीर्यनी ऐश्यताये भेद छेद रूपे तज्यो वली तेनी साथे मोहप-क्षीनुं उनमूलन कर्यु ए ससारमां उत्पन्न थवानु एटले

जन्म मरण करवानु बीज बल्यु, तद्भवे मुक्ति पामवी एम निर्भय थयु निराश्रव कहेतां इहां श्रेणि गते मन वचन अने काया आदे कोइ अचेतन पदनु अवलंबन आतमा गुण ठाणाथी नथी साज नांही कहेता श्रेणि गते कदाच मरणांत उपसर्ग उदयिकता योगे आवे तोपण अव्यापकपणे दु ख विपाक नही वेदतां कायायोगे सहन करवा सामर्थ्य छे वली कायाना दु ख सुखनो विभागी श्रेणि गते चेतन नथी मरणादि भय नांही कहेतां मरण आदे ससारमां भव भमता सदा सर्वदा अनेक भयनी जीवने भिती एटले बीक छे ते कायामा चेतना इंद्रिय-द्वारे परिणाम पामी छे तीहां सुधी जाणवी परतु श्रेणि गते चेतन अनत वीर्यनो धणी छे ते वीर्यनी स्फुरणायोगे पोतीकी चेतनाने कायाथी पलटावी पोतीका स्वरूपे अत करणे अनुभव भूवने परिणमावी छे तींहां भयनो अभभव जाणवो देहातित रूपातित कहेतां देह एटले काया अने रूप एटले वर्ण अथवा मूर्तिपणु इत्यादि-जड जाति तेने अचेतन कहीए तेथी अतित एटले रहित एवु आत्म जनित यथाख्यात कहेता क्षायक भावनु पाचमु चारित्र अरूपी,अमूर्त्ति,अचळ, अविनाशी एवु सादि,अनत भागो लागे छे जेने ते, चारित्र वली बीजु नाम वीतराग सयम छे जेनु, ते मह्यो रे कहेता दशमा गुणठाणाना अते एटले वारमे गुणठाणे मह्यु छे जेणे, सोही कहेता तेही पुरुष शुद्ध कहेता शुद्ध परिणतिए एटले वीतराग परिण-

तिए, धर्मधारी कहेतां क्षायक भावे गुणने धारण करवावाला जाणवा मोहादि विनाशकारी कहेतां मोहनो तो दशमा गुणठाणाना अंते पूर्वे ध्वंस कर्यो कह्यो छे अने आदि शब्दथी इहां क्षिण मोह बारमा गुणठाणाना अंते ज्ञानावरणी दर्शनावरणी अने अतराय ए त्रण कर्मने संलग्न एके काळे विनाश एटले क्षय कर्यो तीहां गुण घाति चारे कर्मनी सत्ता आत्मप्रदेशथी खुटी, ए चार कर्मनी अपेक्षाए आत्मप्रदेश नीरावरण थया महामुनि कहेतां उत्कृष्टामा उत्कृष्टा वीतराग कहेतां रागद्वेष रहित थका तेरमामां कहेतां तेरमा सयोगी केवळी गुणठाणामां गया हे कहेतां अरिहत पदमां प्रयाण कर्यु, अनत चतुष्टयी कहेतां केवळज्ञान, केवळदर्शन अने अनतु वीर्य वली पुर्वे यथाख्यात चारित्र गवेष्यु ते मली अनत चतुष्टय व्यक्तिभावे प्रगट थइ ते. मां कहेता ते अनत चतुष्टयीमा प्राप्तिरूप तेरमु गुणठाणु पाम्या तेज समये अनंता गुणनु दान देवारूप दान लब्धि अतराय कर्मनो क्षय होवाथी अभेद स्वरूपे प्रगट थइ एटले देता लेता पोते जाणवा तेनो खुलासो एम छे के आत्माने विषे शक्तिभावे तीरोभावीपणे निर्लेप अनती क्षायकलब्धि अनादि सबधे रही हती ते लब्धि वीर्य फोरवीने आविर्भावे प्रगट करी एटले प्रगटभावे न हती ते छतापणे थइ अने शक्तिभावे सामान्य स्वभावे गुणरूप लब्धि हती ते विशेष स्वभावे परिणमावी

अविनासी कहेता जेनो विनास त्रण काळमा न थाय शास्वतपणा माटे अविनाशी छे वली सिद्ध भगवान केवा छे तो निरजन कहेता कर्मरूप लेपे करीने रहित ज्यू आकाशी कहेता यथा दृष्टांते जेम आकाश निर्लेप छे तद्वत, अनत गुणनी राशी कहेता सिद्धभगवानने विषे ज्ञान दर्शणादि गुणराशी अनती अनती रही छे अकेक प्रदेशे हे कहेता एक एक प्रदेसने विषे, असरय प्रदेशे एम कहेता जेम एक प्रदेशे अनती गुणरासी कही, एम पोतीका आत्माना असरयाता प्रदेशे पृथक् प्रदेश प्रदेश प्रत्ये अनती अनती गुणराशी रही छे उपयोगे व्यक्ति तेम कहेता सिद्धात्माना आत्म प्रदेशे गुणरासीनो अनतो समुदाय कह्यो ते समुदायमा भिन्न भिन्न पोते पोतीका गुणगत स्वभाव उपयोगे कहेता प्रगट भावे तेम कहेतां तेमज छे पण कोइ गुण अप्रगटपणे एम नथी स्वभाव कहेता ए स्वभाव सिद्धात्मानो कह्यो, तेना भोगी कहेता अनती गुणरासी गवेषी तेना भोगी सिद्धभगवान सदा सर्वदा चीरकाल लगे सादी अनत भागे छे समय समय भोग करे उपभोग करे पण एक समय मात्र अभोगववापणे एम नथी वली खेम कहेता पोतानी ऋद्धि पोते भोगवे एज कल्याणकारी छे उत्तमनुतो एज लक्षण छे सदापरमानदहे कहेता निरतर अनती गुणराशीनी अनती व्यक्तिनो भोग करता छता सिद्ध भगवान कह्या ते अनती व्यक्ति आनदोपेत सुखदाइ छे अने व्यक्ति व्यक्ति प्रत्ये

आनंद भिन्न-एटले नोखो नोखो छे, तेथी अनंतो आनद प्राप्त थाय तेने परमनाम उत्कृष्टो आनद कहीए एम अनती गुण राशीनो अनतो आनद गवेग्यो ते शिवाय सिद्धात्माने विषे अव्यावाध सुख प्राप्त थाय ते जुदु छे. एम आगममां व्याख्या छे एवु देवचंद्रजी कृत चोवीसीना वाळावोधने विषे सातमा सुपार्श्वजिनना स्तवनमां प्रथम गाथाना उपरना अधिकारे कह्यु छे एम अनती गुण रासीथी परमानद प्रगटयो तेनु सुख वली अनतु अव्यावाध सुख तेनी लेहेरमे कहेतां सदा मग्नतामां चेतनत्व धर्मे सिद्ध सिद्धा उपर एक जोजनना तेवीस भाग निचे मेलीने चोवीसमा भाग उपर अलोकने अमीने सिद्ध परमात्मा स्थिर रह्या छे, अचळ कहेतां जिहां रह्या छे तीहांथी एक आकाश प्रदेश पण आघा पाछा चळायमान थाय नही माटे अचळ,अलख कहेतां सिद्ध परमात्मानुं स्वरूप छद्मस्थथी जाणवु न जाय केवलज्ञानी पूर्ण जाणे वळी अनुभवी पुरुषो देशथी जाणे, वीजा न जाणे अगम कहेतां सिद्ध परमात्मानु स्वरूप निहाळवाने छद्मस्थनी दृष्टि थाके छे, गम न पहोंचे विमळ कहेतां सिद्ध परमात्मा आवरणना अभावे सदा निर्मळ छे, बुद्ध कहेता ज्ञायक भावे ज्ञानी छे निराकार कहेतां परिमंडळ प्रमुख सस्थान छे नहि, ते सिद्ध भगवानने आकार कहीए, निराकार छे नविकार कहेतां विकार तो जिहां पांच इन्द्रि होय तीहा विषयनो सभव आवे अने छट्ठो नोइन्द्रि जे मन होय,

तीहा विकल्पनो सन्नव थाय, तेने विकार कहीए तेथी रहित सिद्ध न्नगवान ठे, माटे नविकार गुण गुणमा रहे कहेता सिद्ध परमात्माना ज्ञानादि अनता गुण ठे, ते गुणोमाज पोते रहे, पण बीजा जीव अजीवादि द्रव्यना गुणोमां न रहे, न रमे, परगुणे नहि कदा कहेता, पोतानो गुण ठोमीने बीजा परद्रव्यना गुणे कोइ काळे न प्रवर्त्ते एवो वस्तु स्वन्नावनो धर्म ठे, ते कारणे निज गुणमांज रहे अने वली रमे सदा कहेता आंतरा रहित पोताना गुणमाज रमण करे, एटले सिद्ध न्नगवानने विषे गुण गुण गत, गुण गुण स्वन्नावे, न्निन्न न्निन्न रमणनी एक समयमा अनती प्रवृत्ति थाय, ए गुण चारित्र धर्मनो ठे एटले चारित्र धर्म ते पोताना गुणमाज पोते रमे, परमां न रमे, ए चारित्रना पर्याय ठे, वली स्वन्नाव रमण परन्नावनी वृत्तिए चारित्रनी परिणति ठे, पर्याय फीरे तदा, कहेता सिद्ध न्नगवानना स्वन्नाव रमणने विषे, समये समये उत्पाद, व्यय, प्रवर्ते ठे, तेथी गुण गुण गत गुण गुण स्वन्नावमा पर्यायनु परावर्त्तन धर्म ठे तेथी पूर्व पर्यायनो नाश अने अन्निनव पर्यायनी उत्पत्ति, एम समय समय अन्निनवपणे गुण गुण गत प्रवर्त्ते ठे, ए द्रव्यनु मूळ लक्षण ठे, तेथी सदा उत्पाद व्यय परिपाटी प्रवर्त्ते, जो एम न होय तो जिनेन्द्रनी देशना असत्य थाय माटे नहि असत्य यथार्थ सत्य ठे वळी अन्निनवपणे पर्यायनु

पुनरपि पुनरपि न्नोग उपन्नोग परमानंदप

जगवानने विषे उपर गवेख्यो, ए वचन असत्य थाय पण नही नही यथार्थ सत्य छे द्रव्येस्थिर सिद्धहै कहेतां जे समये उत्पाद व्यय छे, तेज समये ध्रुवता एटले स्थिरता द्रव्यने विषे जाणवी ह्यां कोइ कहेशे के तमे उत्पाद व्यय पर्यायमां वोलोछो अने गुणमां गवेखोछो, तेनु शुं कारण छे तेनो उत्तर हे जाइ सिद्धांतमां द्रव्यपर्यायनी व्याख्या छे, गुण कोइ वस्तु नथी, अमेतो अनता पर्यायनो समुदाय मळीने जे कार्य करे तेने गुण कहीने वोलावीए छीए. परतु पर्याय जे छे ते गुणथी मूळधर्मे जिन्न नथी, वस्तुमां पर्याय परिपाटी छे, तेथी पर्यायनीज प्रवृत्ति छे अने द्रव्य ते आधार छे, तेनी साक्षी जोवी होय तो देवचद्रजी कृत चोवीसीमां दशमा शीतळ जीनपतिना स्तवननी त्रीजी गाथानो अर्थ जरेलो छे त्यांथी जोइ लेजो (२)

सवैया एकतीसा

उतकृष्ट पद सिद्ध, महा मंगळीक बुद्ध;
ज्ञानभानु विसुद्ध, परम योतीवंत है.
परम पवित्र प्यारो, ज्ञानानंद जोगी न्यारो,
अव्या बाध सुख सारो, अनादि अनंत है.
व्यापे निज द्रव्य मांही, गुणने पर्याय मांही;
असख्य प्रदेश त्यांही, सदी निज खेत है.
एहि अवगाहनाउ, एकमां अनेकताउ;
जेगी मळी जिन्न सदा, मानजो प्रणाम है. ॥३॥

पर्याय पर्यायगत, एम व्यापकपणु परिणमनपणु सिध्ध न-
गवानने विषे ठे, एटले एक गुण बीजा गुणमां न व्यापे,
एक पर्याय बीजा पर्यायमां न व्यापे, ने परिणमे, वळी
अन्य द्रव्यना गुणपर्यायमां पण न व्यापे न परिणमे त्यारे
कीहां गुणपर्याय परिणमे ते कहे ठे, असरय प्रदेश त्याही
कहेता सिध्धात्माना असख्याता प्रदेश ठे त्यांही कहेतां ते
प्रदेशोने विषे एक एक प्रदेश प्रदेश प्रत्ये, अनता गुण
अने अनता पर्यायनु व्यापकपणु परिणमनपणु ठे, अन्य
बीजा जीव अजीवादि द्रव्यना प्रदेशमा न व्यापे न
परिणमे, सही कहेता निश्चय निज कहेतां पोताना
गुणपर्यायने रहेवानु, वसवानु, प्रदेशने विषे व्या-
कपणु परिणमनपणु कह्यु, तेज खेत हे के० सिद्ध
नगवानने स्वक्षेत्र जाणवु एही अवगाहनाउ कहेतां
जे सिद्धात्माना असख्याता प्रदेशनो निविरुघन अयोगी
चौदमा गुणठाणाना अत समय बनेलो, एज सिद्धात्मानी
अवगाहना कहीए, ए प्रमाणे एटले जेम एक सिद्धनु
कह्यु तेम अनतासिद्धनु स्वक्षेत्र तेहीज अनती अवगाह-
नाउ कहीए एटले अवगाहना कहीए ते सिद्ध अने सिद्ध
कहीए ते अवगाहना जाणवी, एकमा अनेकताउ कहेता
जीहा एक सिद्धनी अवगाहना ठे तीहा अनेक सिद्धनी
अवगाहनाउ रही ठे तेमा कोइनी ऊन्नी ठे कोइनी बेठी
ठे कोइनी चित्ती ठे कोइनी पासान्नर ठे कोइनी पद्मा-
सने ठे कोइनी निकटासने ठे वळी कोइनी लघु ठे को-

ऽनी गुरु ठे लघु ठे ते बत्रीस आंगलनी ठे अने गुरु ठे, ते त्रणसोनेतेत्रीस धनुष्यने बत्रीस आंगळनी ठे अने मध्यस्थ अवगाहनाउं असख्यात ज्ञेदे न्यूनाधिकपणे सिद्धमां रही ठे एटले चौदमा अयोगी गुणठाणे सेलेसीकरण अवसरे जेवी रीते पोतानी कायानी स्थिति हती तेवी रीते सिध्धमां अवगाहनाउं उपर अलोकने अमीने रही ठे. जे पाचसो धनुष्यनी कायावाला सिध्ध थया अने उन्ना थका मोक्षे गया तेमनी गुरु अवगाहना जाणवी अने बे हाथनी कायावाला उन्ना थका मोक्षे गया, तेमनी बत्रीस आंगळनी सिध्धमां ठे ते लघु जाणवी अने पांचसो धनुषथी मोटी काया अने बे हाथथी नानी कायावालानी सिध्धी प्राये थती नथी, ज्ञेगी मली कहेतां जेम उपर कही तेम सिद्ध ज्ञगवाननी अवगाहनाओ ज्ञेगी एटले एकमां अनेक ज्ञेगी मळेली कही ज्ञिन्न सदा कहेतां, तोपण सदा सर्वदा ज्ञिन्न ठे यथा द्रष्टांते जेम दीवानी मांहेली कोरे अनेक दीवेटनी वाटो करीने ज्ञेगी मुकीये तेनी ज्योति सर्व वाटनी एक देखाय, पण वाट वाटनी ज्योति ज्ञिन्न ठे. जे ज्योति ठे ते पोत पोतानी वाटना सबंधे ठे. अन्य वाटना सबंधे नथी एक वाट उपाडीए त वखते ते वाटनी ज्योति नोखी ज्ञिन्न पडे परतु ज्ञेगी हती तोपण ज्ञिन्न हती ए दृष्टांते सिध्ध ज्ञगवाननी अनेक अवगाहनाओ ज्ञेगी मली ठे, तोपण सदा नीज द्रव्यना सबंधी पणे ज्ञिन्न ठे. ए सिध्ध ज्ञगवाननी अवगाहनाओनी

सच्या जिन वचने सिध्धात साक्षीये पाचमा अनते कह्या छे ते सर्व अवगाहना मय अनंता सिध्ध भगवान प्रत्ये आ ग्रथनी पूर्णता अवसरे ग्रथकर्त्ता कहे छे के मानजो प्रणाम हुँ, कहेता पच अग एटले बे हाथ बे पग अने मस्तक ए पच अगने नम्रता पूर्वक विनयपूर्वक बहुमान पूर्वक, भक्तिपूर्वक, प्रमोदपूर्वक, उत्साहपूर्वक, गुणरागीपणे पर आकक्षा दूपणे वर्जित थइने अतरदृष्टि योगे, त्रिकरण जोगे प्रणाम हुँ कहेतां मारो नमस्कार छे ते हे सिध्ध परमात्मा मानजो कहेतां स्वीकारजो, मारी विनति अवधारजो (३)

ग्रथनी पूर्णताना दुहा

भेद ज्ञानविण भविकने, नहीं वस्तु ओळखाण ॥
वीपरित श्रध्धा त्या लगे, समजो चतुरसुजाण ॥ १ ॥
भेदज्ञानथी भावीए जड चेतन दुफार ॥
समकित शुद्ध समाचरे, निज वस्तु निरधार ॥ २ ॥
तेहीज सिद्ध स्वरुप छे, तेहीज शीव सुख कद ॥
ध्यावो गाओ भविजना, एथी टळे भवफद ॥ ३ ॥
निज सबळे सुख सपत्ति, अवळे दु ख अनत ॥
रागद्वेष अवळी दशा, तजतां सिद्ध महत ॥ ४ ॥
शिवपद सोही ज्ञानमा, ध्यान ज्ञाननी माही, ॥
ध्याता ध्येयनी एक्यता, पूरण साधन त्याही ॥ ५ ॥
धर्म प्रवर्त्तन सार ए, ग्रथ रच्यो गुणखाण, ॥
ज्ञानी वचना लवने, पूरण कीयो परमाण ॥ ६ ॥

व्यवहार विशेषे कह्यो, शुद्धाशुद्ध विचार ॥
समकित शुद्ध व्यवहार छे, मिथ्या अशुद्ध आचार ॥७॥
निश्चय नय वस्तु रूपे, सूक्ष्मज्ञान स्वभाव ॥
अनुभव जोगे वर्णव्यो, दाख्यो निज सद्भाव ॥ ८ ॥
गुरु गुणगातां ज्ञाननी भावी भावना शुद्ध ॥
टाळी अज्ञान भावना, कृत्रिम अनुभवी बुद्ध ॥ ९ ॥
ग्रंथज्ञान गंगाजळे, टाळो मळ मिथ्यात ॥
लहो समकित मूल धर्मनु, शीव साधन सुखशात ॥१०॥
बाधक भाव विछेदीने, ग्रहो ए रुप अबाध ॥
ते साधन शीव पदतणु, साधे सोही साध्य ॥ ११ ॥
ग्रंथ सुगुण मणि हार छे, अमुलख वस्तु अनुप ॥
संयम श्री शणगार छे, तस कंठ मुनिवर भूप ॥ १२ ॥
ग्रंथ ज्ञान अमृत रसे, जलभर सागर जेम ॥
गंभीर भर्यो अर्थ छे, निज गत उपयोगे खेम ॥ १३ ॥
टाळो परगत चेतना, स्वगत अनुभव नाव ॥
तारे भव दु:ख सागरूं, सिध्ध निरंजन राव ॥ १४ ॥
ग्रंथ सुगुण सुरतरू, वंछीत दाता सार ॥
आपे शाश्वत सुखने, तजो नहि क्षण वार ॥ १५ ॥
ग्रंथ सोही निमित्त छे, सापेक्ष सिध्धि लहंत ॥
भावग्रंथ सो आतमा, शोधो चतुर महंत ॥ १६ ॥
भावग्रंथ ए ज्ञान निधि, मेरु अकंप समकित ॥
चरण रमण थीर सैलज्युं, तप रवि तमहर नीत ॥ १७ ॥
सोही ग्रंथ शीव रूप हे, ध्रू ज्यु अविचळ रूप ॥

प्यारो पमिल लोकने, न पड़े सो नव कूप ॥ १८ ॥
स्वपर विन्नागे सपजे, खेले अनुन्नव योग ॥
ते धर्म वर्त्तना सद्दही, पामे शीवबधु न्नोग ॥ १९ ॥
सिध्ध वधु एम पामीए, सादि अनंतो काळ ॥
नीरविघ्न सुख शाश्वतां, सो मुज काज अचाल ॥ २० ॥
आज मनोरथ सवी फळया, न्नाव अध्यातम पाप ॥
ज्ञान शीतल करी सो रच्यां, ग्रथ गुरु आज्ञाय ॥ २१ ॥

सपूर्ण

श्री गुरुभ्यो नम'

अथ क्षायक न्नावतत्व विलास ग्रथ लीख्यते

॥ दुहा ॥

॥ ढाळ ॥ द्वेष न धरीये लालन द्वेष न धरीए ए देशी ॥

क्षायक समकित न्नाव वखाणु ॥ एहथी पामीयें मुक्तिनु टाणु न्नविका ॥ मुक्तिनु ॥ सात प्रकृति क्षय इहा थावे ॥ त फरी कदीय न सन्मुख आवे न्नविका ॥सन्मुख०॥ ॥ १ ॥ प्राप्ति चोथे वा सातमे ठाणे ॥ वेदक क्षायक वचन प्रमाणे न्नविका ॥ वचन० ॥ क्षायक समकित दू न्नेदे न्नाग्यु ॥ सदगुरु वचन मे घटमा राख्यु न्नविका ॥ घटमां० ॥ २ ॥ आवता न्नवनु पहेलु आयुष्य वाध्यु ॥ लहे समकित पछे श्रेणि न साध्यु न्नविका ॥ श्रेणीन० ॥ खक श्रेणी क्षायक न्नेद ए पहेलो ॥ उत्कृष्ट चार न्नवे सीव लहे वहेलो न्नविका ॥सीव०॥३॥ ससार स्थिति काळ शास्त्रे न्ना-

च्यो ॥ तेत्रीस सागर झाझेरो दाख्यो ज्नविका ॥झाझेरो०॥ उत्कृष्टो ससार एटलो रहेवे ॥ जघन्य त्रीजे ज्नवे शीवसुख लेवे ज्नविका ॥ शीव० ॥ ४ ॥ अखंम श्रेणी क्षायक ज्नेद हवे बीजे ॥ क्षपक श्रेणी मांझी तदज्नवे सीजे ज्नविका ॥ तदज्नवे० ॥ एम समकित डुज्नेद क्षायक ॥ नरनारी जे लहे ते शीवलायक ज्नविका ॥ ते सीव० ॥ ५ ॥ क्षय उपसमज्नावे ध्रुवता पामे ॥ ज्ञान दर्शणने लब्धि दानादि नामे ज्नविका ॥ दानादि० ॥ आत्म असंख्य प्रदेश समाधि ॥ सात प्रकृति टळी मोहनी उपाधि ज्नविका ॥ मोहनी० ॥ ६ ॥ अखम श्रेणी क्षायक चारित्र पामे ॥ ते बीजी ढाळे यथाख्यात सोनामे ज्नविका ॥ ख्यातसो० ते ज्नाव शुद्ध उपयोग ज्नावुं ॥ ज्ञान शीतल करी मोह खपावु ज्नविका ॥ मोह० ॥ ७ ॥ इति प्रथम ढाळ कही

॥ ढाळ बीजी ॥

राज पधारो मेरे मंदिर ॥ ए देशी ॥

क्षायक चारित्रपद वरवाने ॥ उपयोगी अप्रमत्तेजी ॥ अखंम श्रेणी क्षायक समकिती ॥ आवे नही प्रमत्ते ॥ क्षपक श्रेणी मांमे जी ॥ अतर अपूरव ठांण ॥ उपाधि मळ ठांमेजी ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ अपूर्व ठांण अपुर्वज्ञानी ॥ अपुरव खेल खेलेजी ॥ अपुर्व अद्भुत मूलरूपे ॥ अकल अनुज्नवरेले ॥ क्षपक० ॥ २ ॥ प्रथकत्व प्रथकत्व दुज्नेदे ॥ व्हेची स्वपर ज्निन्नजी ॥ जीवने पुद्गल बेहु अलगा ॥ तिहां चेतन निज गुण लिन्न ॥ क्षपक० ॥ ३ ॥ अनंतगुण

निज द्रव्ये गवेपे ॥ गवेपे पज्जव अनताजी ॥ जेदज्ञाने प्रथक् स्वरूपे ॥ क्षय उपशम शुजसता ॥ क्षपक० ॥ ४ ॥ शुक्लध्यान तप पहेलो पायो ॥ ध्यातां अग्नि अति ज्वाळाजी ॥ मोहपल्ली इहा जस्मी थावे ॥ जेद ठेद अजेदी लाला ॥ क्षपक० ॥ ५ ॥ क्षय उपशम ठेद इहां मोहनीनो ॥ अशुद्ध परिणति ठेदीजी ॥ रागद्वेप ए विजाव चेतना ॥ हुइ शुद्ध चेतना समवेदी ॥ क्षपक श्रेणी० ॥ ६ ॥ मिश्र जाव इहा नही लाधे ॥ लाधे शुध्ध परिणतिजि ॥ गुण पर्याय अजिन्न निज द्रव्ये ॥ ऐक्यता उपयोग वृत्ति ॥ क्षपक० ॥ ७ ॥ यथाख्यात इहां चारित्र पामे ॥ दशमा गणना अतेजी ॥ शुक्ल ध्यान वीजो पायो ध्याता ॥ वितराग बारमे एकते ॥ क्षपक० ॥ ८ ॥ पर अनुजव इहा नही लाधे ॥ समजीरुढ नय साधेजी ॥ घाती कर्म त्रण क्षय इहा पामे ॥ केवळ नाण दर्शण लाधे ॥ क्षपक० ॥ ए ॥ क्षपक श्रेणी उत्तरोत्तर वृद्धि ॥ ज्ञान अनुजवयोगजी ॥ कृत्रीम पद इहां नही लाधे ॥ ज्ञान शीतल समाधि सयोग ॥ क्षपक० ॥ १० ॥ ढाल वीजी सपुर्ण ॥

॥ दुहा ॥

ढाळ त्रीजी ॥ राग सारग हो धन्ना ए देशी ॥ केवळ लहो गण तेरमेरे मीता ॥ ज्ञान दर्शण अनत ॥ घाती कर्म अजावथीरे मिता ॥ निर्मळ उपयोगवतरे रगीला मिता ॥ ए गुणो सेवोने ॥ ए गुणो प्रगटे घटमांरे मिता ॥ उपयोग विशेप सामान्यरे रगीला मिता ॥ ए

गुणो० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ विशेप उपयोग ज्ञाननोरे मिता ॥ पहेले समय लहत ॥ बीजे समय दर्शणनोरे मिता ॥ उपयोग सामान्य कहत रे रगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ २ ॥ विशेप ते साकार भेदतारे मिता ॥ सामान्य सो निराकार ॥ अभेद ग्राहक भापीयोरे मिता ॥ ए सिद्धांतीक पक्ष साररे रगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ ३ ॥ नय वादे भिन्न न मानीयोर मिता॥ एक विशेपोपयोग ॥ सामान्य विशेपमां भल्योरे मिता ॥ न समय अतर जोगरे रगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ ४ ॥ एम भिन्न मत ए वेहुनोरे मिता ॥ जिन भद्र गणी सिद्धसेन ॥केवळी गम्य सो तत्व एरे मिता ॥ सिद्धसेन विसारद नय ज्ञानरे रगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ ५ ॥ हवे ज्ञान अनतु दाखवुरे मिता ॥ सवे एक समय प्रत्यक्ष ॥ आच्छादन नही एहने रे मिता ॥ जाणे जिव अजिव समक्षरे रगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ ६ ॥ तेमां रूपी अरूपी जाणतारे मिता ॥ जाणे गति हेतु द्रव्य॥ स्थिति हेतु द्रव्य जाणतारे मिता॥ जाणे अवकाश हेतु द्रव्यरे रंगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ ७ ॥ नवी वस्तुने जुनी करेरे मिता॥ तेहना हेतुनो जाण॥ एम खट द्रव्यने जाणतारे मिता ॥ उपजे विणसे ध्रुव जाणरे रगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ ८ ॥ नीज नीज वृत्ति सवे करेरे मिता ॥ ए अगुरू लघु पर्याय ॥ समे समे हाणी वृद्धि लहेरे मिता ॥ पट् पट् वार कहायरे रंगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ ९ ॥ अतित काळ अनंतो गयोरे

मिता ॥ अनागत काळ अनत ॥ एक समय वर्त्तमाननोर मिता ॥ हुइ होसे सवि जाणतरे रंगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ १० ॥ मति यादि ज्ञान तणी प्रभारे मिता ॥ एहमां सर्व समाय ॥ रवि प्रभाथी अधिक नहीरे मिता ॥ तारा नक्षत्र समुदायरे रंगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ ११ ॥ केवळज्ञान गुण मोटकोर मिता ॥ केवळ दर्शण साथ ॥ जाणे देखे एम कीजियेरे मिता ॥ ए गुण लाधे तो हु न अनाथरे रंगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ १२ ॥ क्षायक लब्धि भेद चउ कह्यारे मिता ॥ आ ढाळमा कह्या दोय ॥ पण लब्धि बाकी रहीरे मिता ॥ ते आगे वर्णवीशु सोयरे रंगीला मिता ॥ ए गुणो सेवो० ॥ १३ ॥ अरूपी वस्तुने जाणवीरे मिता ॥ ते न लहे द्रव्य अजाण ॥ तिणे द्रव्य षट् दाखशुरे मिता ॥ गुण पर्याय युक्त वखाणरे रंगीला मिता॥ ए गुणो० ॥ १४ ॥ धर्म अधर्म आकाशनेर मिता ॥ कालने पुद्गल जिव ॥ अनुक्रमे विस्तारशुरे मिता ॥ ज्ञान शीतल लही थाओ सीररे रंगीला मिता ॥ ए गुणो० ॥ १५ ॥ ढाल त्रीजी सपुर्ण ॥

॥ ढाळ चोथी ॥

॥ भवी तुमे वदोरे सुरीश्वर गच्छराया ए देशी ॥

भवी तुमे करजोरे द्रव्याणु योगज्ञान मोटु ॥ निजात्म जाण्यावीण चरण आराधे ॥ ते सर्वी जाणो खोटु ॥ भवी० ॥ १ ॥ ए आकणी ॥ द्रव्यस्वरूप तेहने कहीए ॥

अखरू अविनाशी त्रण काळ ॥ वस्तुता जेहमां रहीरे ॥ ते द्रव्य नित्य निहाळ ॥ नवी तुमे० ॥ २ ॥ गुण पर्याय नाजन ते द्रव्य ॥ गुण स्वनावे धर्म ॥ निन्न अनिन्न त्रिविध सदाए ॥ एक पदारथ मर्म ॥ नवी० ॥ ३ ॥ उपजे विणसे थिर रहे ए ॥ एसो वस्तु वखाण ॥ उपजे विणसे पर्याय धर्मे ॥ थिर द्रव्य प्रमाण ॥ नवी० ॥ ४ ॥ अवगाहना सवे द्रव्यनी ए ॥ गुणपर्याय प्रदेश ॥ तेहीज सत्ता द्रव्यनी दाखी ॥ अविनासी रुपी वेस ॥ नवी० ॥ ५ ॥ द्रव्येद्रव्य ते न मीले कहीये ॥ अनादि असहाड ॥ निज सत्तामय द्रव्य रहेवे ॥ पर सत्ताये नही कदाइ ॥ नवी० ॥ ६ ॥ द्रव्यरूप ठती कार्यनी ए ॥ तिरोनाव शक्ति सदाय ॥ आविरनावे प्रगट लहीये ॥ व्यक्ति गुणपर्याय ॥ नवी० ॥ ७ ॥ कार्यकारण निज द्रव्य एही ॥ पर अकारण अकार्य ॥ परनेकारण एकान्ते माने ॥ ते जीव सो अनार्य ॥ नवी० ॥ ८ ॥ ठतीपणे स्व द्रव्य कहीये ॥ अठतीपणे पर द्रव्य ॥ एम अस्ति सो निजपर वेहुनी ॥ रही ठे सर्वे द्रव्य ॥ नवी० ॥ ए ॥ द्रव्यत्रिकाळे नित्य कहीये ॥ पर्याये अनित्य ॥ नित्य अनित्य एक वस्तुमां ॥ नाषे ज्ञानी विनित ॥ नवी० ॥ १० ॥ स्व द्रव्य स्व खेत्र स्व काळ ॥ स्वनाव सहित चउ सत्य ॥ परद्रव्य परखेत्र परकाल ॥ पर नाव चउ ए असत्य ॥ नवी० ॥ ११ ॥ द्रव्य पदारथ एक कहीये ॥ गुणपर्याय अनेक ॥ अनेक गुणपर्यायमा एक द्रव्य ॥ समजो ज्ञान विवेक ॥ नवी० ॥१२ ॥ शक्तिनावने

कारण मानो ॥ व्यक्ति ते कार्य जाणो ॥ शक्तिनी व्यक्ति जेहथी लहीये ॥ ते साधन परमाणो ॥ भवी० ॥ १३ ॥ पर्यायास्तिक नयभेद स्वभावे ॥ द्रव्यास्तिक अभेद ॥ उभयधर्मी द्रव्य दाख्यो ॥ अविरोधी अच्छेद ॥ भवी० ॥ १४ ॥ एम स्याद्वाद लक्षणमयी ए द्रव्यसत्ता गुणखाण ॥ इत्यादि भेद घणा विस्तारे ॥ वस्तु सत्ता ठेलखाण ॥ भवी० ॥ १५ ॥ द्रव्य षटभेदे जाणी लहीए ॥ हेय उपादेय बुद्धि ॥ हेय जाणी पच अजीवने वमी ॥ ग्रहीए एक निज जीव शुद्धि ॥ भवी० ॥ १६ ॥ हेय उपादेय बुद्धि घटमां ॥ तेही ज आतमज्ञानी ॥ ज्ञानशीतल उपयोगे प्रकाशे ॥ द्रव्यस्वरूप थिर ध्यानी ॥ भवी० ॥ १७ ॥ ढाल चोथी सपुर्ण ॥

॥ ढाळ पांचमी ॥

नदी जुमना के तीर उडे दोय पखीया—ए देशी,

भाखु धर्मास्तिकाय भवी तुमे सांभलो ॥ समजो द्रव्य वखाण मिथ्या टले आंवळो ॥ चेतन बुद्धि कायामा राखीने व्रत धरो ॥ न लहो सो समकित कर्म बांधो खरो ॥ १ ॥ ते कारण द्रव्य जाणी नीज जीव जाणजो ॥ पामशो सम्यक् ज्ञान शीव लही माणजो ॥ धर्मास्तिकाय ग्रथे गीतार्थे वर्णव्यो ॥ चउगुण वीस्तारमा जोइ अनुभव्यो ॥ २ ॥ अरूपी गुण पहेलो वर्ण अभावथी ॥ रसगधने फरसे सस्थान को नथी ॥ सस्थानने अभावे अमुर्त्ती लीजीए ॥ वर्ण विना नही रूप अरूपी कीजीए ॥३॥ प्रथम

गुण थयो सिद्ध बीजो अचेतनए ॥ जाण गुण अन्नावे नही ते चेतनए अक्रिय गुण त्रीजो करणी करे नही ॥ इहां कोइ करे तर्क साज जीवादि तही ॥ ४ ॥ तेहने उत्तर दाखुं ए स्वन्नाव करणी ॥ जलतारे बुरू तेले वेहेवारे नवरणी ॥ स्वन्नाव करणी एक चउ द्रव्ये जाणीए ॥ सिद्ध परमातममांही स्वन्नावे वखाणीए ॥ ५ ॥ पुद्गल संसारी जीव बे द्रव्यमां दाखवु ॥ स्वन्नावने विन्नाव बे करणी न्नाखवुं ॥ विन्नाव करणी एक मीथ्यात्वी जीवमां ॥ मन तन वचन प्रवृत्ति न्नव्यने अन्नव्यमां ॥ ६ ॥ चोथा ठाणथी उपयोगी चौदमा अत ज्यु ॥ स्वन्नावने विन्नाव बे करणी सत ज्युं ॥ स्वन्नावे शुद्धातम अनुन्नव करणी ॥ विन्नावे उदयिक न्नाव सवे नीरजरणी ॥ ७ ॥ पुद्गलमां दोय न्नेद करणीना दाखसु ॥ एक परमाणुं मांही स्वन्नावे न्नाखसुं ॥ खध मीले ने विखरे ए विन्नाव करणी ॥ योग्यतावंत ए द्रव्य ग्रंथे एम वरणी ॥ ८ ॥ स्वन्नावे जे करणी ते निश्चय जाणीये ॥ विन्नाव करणी बाह्य व्यवहारे पीठाणीये ॥ व्यवहारे नहि करणी धर्मास्तिकायमां ॥ तेथी अक्रिय कह्यु हेतु त्रीजा गुणमां ॥ ए ॥ गुण त्रीजो थयो सिद्ध चोथाने पीठाणीए ॥ जीव तथा पुद्गल बेहुने गति हेतु जाणीए ॥ मीन चाले जळ मांही चाले नही अन्य कां ॥ जीवने पुद्गल चाले धर्मास्ति थका ॥ १० ॥ धर्मास्तिने अन्नावे गति नहि सन्नवे ॥ जीवने पुद्गल नाहि जइ अलोके ठवे ॥ गति करवा शक्ति ठे जीव पुद्गले ॥ आकास आपे मार्ग

वीण हेतु न चले ॥ ११ ॥ कारणने अन्नावे सो कार्य न सन्नवे ॥ चक्षु ठते काळी राते देखे अनुन्नवे ॥ एम समजी तुमे न्नवी कारणने मानजो ॥ निमित्तने उपादान संन्नवे सो जाणजो ॥ १२ ॥ गुण चोथो थयो सिद्ध धर्मास्तिकायनो ॥ हवे करु विस्तार चार पर्यायनो ॥ खध एक द्रव्य पर्याय रह्यो लोकाकासमा ॥ उर्ध्व अधो तिर्गदी ते कल्पी ए देशमा ॥ १३ ॥ ए वीजो त्रीजो प्रदेश कहीया असरयए ॥ लोकाकास प्रमाणे प्ररुप्या जीनदए ॥ अगुरु लघु पर्याय चोथो परिणतिए ॥ हानी वृद्धि थार गुण नीवृत्तिए ॥१४॥ ए चार पर्याय गुण चार दाखीया ॥ उपगारी गुरु मुखे सुएया एम न्नाषीया ॥ ज्ञान शीतल करी न्नविजन द्रव्यने जाणजो ॥ थीर मने करजो विचार हठ नहि ताणजो ॥ १५ ॥ ढाल पाचमी सपूर्ण ॥

॥ ढाल छट्ठी ॥

देखो गति दैवनीरे—ए देशी

अजीव अरूपी हवे वर्णवुंरे ॥ त्रण द्रव्य व्यारव्या आ ढाळ॥ अधर्मास्ति आकाशास्तिरे॥ कहु वली त्रीजो काल ॥ सोन्नागीजन सान्नळोरे ॥ द्रव्याणु जोग निश्चय ज्ञान अनुन्नवसु मीळ्योरे ॥ ए आकणी ॥ १ ॥ प्रत्येके त्रण द्रव्यनारे ॥ गुणपर्याय चार चार ॥ त्रण गुण पूरवपरेरे ॥ धर्मास्ति ए विचार ॥ सोन्नागी० ॥ २ ॥ अरूपी अचेतन वीजोरे ॥ अक्रीय त्रीजो एम ॥ विस्तारे वर्णव कर्योरे ॥

तेम ज्ञावो करी प्रेम ॥ सोज्ञागी० ॥ ३ ॥ एक गुणे जिन्न ज्ञालशुरे ॥ अनुक्रमे त्रण ड्रव्य ॥ अधर्म स्थिती हेतु ठेरे॥ ते जाणीये टाली गर्व ॥ सोज्ञागी० ॥ ४ ॥ जीव पुद्गलने ते दीयेर ॥ वीसामो मनोहार ॥ वाटे पंथी चालतारे ॥ ग्रीष्मकाळे विचार ॥ सोज्ञागी० ॥ ५ ॥ देखी व्रक्ष वीसामो लीयेर ॥ तेम जीव पुद्गलने तेह ॥ कह्यो स्थिति हेतु अधर्मास्तिरे ॥ एम समजो गुणगेह ॥ सोज्ञागी० ॥ ६ ॥ आकाश ते अवकाशनोरे ॥ हेतु सवे ड्रव्ये थाय ॥ जीवअजीव रूपी अरूपीरे ॥ आकाश खेत्रे समाय ॥ सोज्ञागी० ॥७॥ काळ हेतु अस्ति ड्रव्यनोरे ॥ पर्याय धर्मनी माही ॥ पूर्व पर्याय ठेदीनेरे ॥ अजिनव उपजे त्यांही ॥ सोज्ञागी० ॥८॥ चोथो गुण त्रणे ड्रव्यनोरे ॥ कह्यो कहु तु पर्याय ॥ अधर्म चौदराजमांरे ॥ एक खध ड्रव्यपर्याय ॥ सोज्ञागी० ॥ ए ॥ उर्ध्व अधो तिर्छादिकेरे ॥ कल्पी कहीए देश ॥ प्रदेश असख्याता कह्यारे ॥ लोकाकाश प्रदेशे प्रदेश ॥ सोज्ञागी० ॥१०॥ अगुरु लघु परिणतियेरे ॥ गुण वृत्तिनी माही ॥ हानि वृद्धि ग्रथे कहीरे ॥ षट् षट् ज्ञेदे त्यांही ॥ सोज्ञागी ॥११॥ ए पर्याय चार दाखीयारे ॥ अधर्म ड्रव्यना सार ॥ हवे कहीशु आकाशनारे ॥ पर्याय ज्ञेद ए चार ॥ सोज्ञागी० ॥ १२ ॥ एक खध ड्रव्य पज्जवारे ॥ लोकालोक प्रमाण ॥ लोकाकाश देश कीजीयेरे ॥ प्रदेश अनता वखाण ॥ सोज्ञागी० ॥ १३ ॥ प्रदेश लोकाकाशे कह्यारे ॥ असख्याता ग्रथे साख ॥ अगुरु लघु परिणतीयेरे ॥ गुण वृत्तिए राख ॥

सोजागी० ॥ १४ ॥ हवे कहुं काळ द्रव्यनारे ॥ चार न्नेद पर्याय ॥ अतित जे अनतो गयोरे ॥ तेनो नेम न वधाय ॥ सोजागी० ॥ १५ ॥ अनागत अनतो रह्योरे ॥ एक समय वर्त्तमान ॥ वर्त्तमान अतितमांरे ॥ अनागत वर्त्तमान ॥ सोजागी० ॥ १६ ॥ चोथो अगुरू लघु कह्योर ॥ एम न्नेद पर्याय ॥ काळ द्रव्य अवतो कह्योरे ॥ आरोप नैगम थाय ॥ सोजागी० ॥ १७ ॥ अजिव अरूपी दाखीयारे ॥ आ ढाळमा त्रण द्रव्य ॥ धर्मास्ति पूर्वे कह्योरे ॥ अजिव अरूपी ए सर्व ॥ सोजागी० ॥ १८ ॥ हवे रूपी पूद्गलनेरे ॥ नाखुं वचन रसाळ ॥ ज्ञान शीतल तेने जाणता रे ॥ बोध पामे केइ बाल ॥ सोजागी० ॥ १९ ॥ ढाल छट्ठी सपुर्ण ॥

॥ ढाळ सातमी ॥

॥ देशी चद्रावळानी ॥ पुद्गल द्रव्यने वर्णवुरे ॥ जेह रूपी कहेवाय ॥ न्नेद घणा तस दाखीयारे ॥ उपयोगे महाय ॥त्रुटक॥ उपयोगे महायने दाखु॥ परमाणु बीजो खध ते नाखु ॥ खध दोय न्नेद ते कहीये ॥ जीव सहित रहित जिव लहीये ॥ सुणो नवी जन एह ॥ ए आकणी ॥१॥ जिव रहित जे खधछेर ॥ तेहना न्नेद अनेक ॥ द्विप्रदेशीथी मासीनेरे ॥ अनत प्रदेशी छेक ॥ त्रुटक ॥ अनत प्रदेशी छेक अनता ॥ मीले वीखरे न्नग सादी सता विन्नाव पर्याय ते कहीए ॥ परमाणु स्वन्नावे लहीए ॥ सुणो० ॥ २ ॥ जीव सहित जे खधछेरे ॥ तेहना कह्या न्नेद दोय ॥ सुक्षम बादर जाणीएरे ॥ वर्गणा चौ चो सोय

त्रुटक ॥ वर्गणा चो चो सोय ते आठ ॥ उदारीक पहेली सो गाठ ॥ बीजी वैक्रीय ते कहीये ॥ त्रीजी अहारक ते लहीए ॥ सुणो० ॥ ३ ॥ काय जोग बंध एहथीरे ॥ जिवकरे सही दाखुं ॥ मनुष्य तिर्यच गति प्रतेरे ॥ काया उदारीक भाखु ॥ त्रु० ॥ काया उदारीक भाखुं एह ॥ देव नर्क वैक्रीय तेह ॥ चोद पूर्वी आहारक करे ॥ तिहां प्रमाद गुणठाणु ठरे ॥ सुणो० ॥ ४ ॥ तेजस वर्गणा चोथी कही रे ॥ पाचन अग्नि ते एह ॥ भाषा वर्गणा पांचमीरे ॥ वचन जोग सो तेह ॥ त्रु० ॥ वचन जोगसो तेहज कहीए ॥ स्वासो सास ते छट्ठी लहीए ॥ मनोवर्गणा सातमी दाखी ॥ ते मन जोग घटमां राखी ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ वर्गणा कार्मण आठमीरे ॥ कर्म आठ मुल एह ॥ ज्ञानावर्णादी वध एरे ॥ सत्ता उदीयादी तेह ॥ त्रु० ॥ सत्ता उदी यादी तेह उत्तरमां ॥ एक सत ने वीस छे वधमां ॥ उदय उदीरणामां एक सत बावी ॥ सत्ता अट्ठावन एक सत भावी ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ प्रथमनी चउ वर्गणारे ॥ बादर कही जिनराय ॥ बादरमां गुण वीस छे रे ॥ वर्ण पच रस पच गाय ॥ त्रु० ॥ वर्ण पच रस पंच गाय ग्रंथे ॥ दोय गध कह्या ग्रथ पथे ॥ फर्स आठ सुण्या गुरु मुखे ॥ ए वीस गुण जाण्या सुखे सुखे ॥ सुणो० ॥ ७ ॥ पाछळनी चउ वर्गणारे ॥ सुक्ष्म तेह कहाय ॥ सोळ गुण छे एहमां रे ॥ हीण फर्स चउ थाय ॥ त्रु० ॥ हीण फर्स चउ थाय यथारथ ॥ वर्गणा सवध कह्यो गीतारथ ॥ ८ वर्गणानो

सादी सत भंगे ॥ तेजस कार्मण कहु हवे रंगे ॥ सुणो० ॥ ८ ॥ अनादी अनत अनवीनेरे ॥ नवीने अनादी सत ॥ शुभाशुभ ते जाणीयेरे ॥ पुन्य पापसो कहत ॥ शु० ॥ पुन्य पापसो कहत ते आश्रव ॥ जीव गुण वाळे सही ए दव ॥ ज्ञान शीतल पुद्गलने जाणो ॥ कह्यो कहुवु आगे चित आणो ॥ सुणो० ॥ ९ ॥ ढाल सातमी संपुर्ण ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ श्री अरीहंत पद ध्याइए–ए देशी ॥

समजो भवीजन एहने ॥ कहु वर्गणानो विचाररे ॥ जीव ग्रहे सही दाखवु ॥ करो श्रद्धा निरधाररे ॥ समजो० ॥ ए आकणी ॥ १ ॥ जीव अभवी जगतमा ॥ तेथी अनत गुणा करीयेर ॥ सिद्धना भाग अनतमा ॥ एटला परमाणु दळ कहीयेर ॥ समजो ॥ २ ॥ ते वर्गणा वादर भावमा ॥ ग्रही बांधे उदारीक कायारे ॥ तेथी उंठी ते ग्रहे नहि ॥ एम बोले गीतारथ रायारे ॥ समजो० ॥ ३ ॥ तेथी अनंत गुणा दळ भरी ॥ वर्गणा बीजी वेक्रीयरे ॥ जीव ग्रहे सही एहने ॥ गुरु वचने एम कहीयेरे ॥ समजो० ॥ ४ ॥ तेथी आहारक अनत गुणी ॥ जीवना ग्रासमा आवेरे ॥ एम कीजे प्रत्येके अनत गुणी ॥ अधिक सवे चमती कहावेरे ॥ समजो० ॥५॥ तेजस भाषा स्वासो सासजे ॥ तेथी अनत गुणी मन थायरे ॥ मनथी कार्मण अनत गुणी ॥ नीज जाती परमाणु कहायरे ॥ समजो० ॥ ६ ॥ तेथी उंठी अ ग्रहण कही ॥ आगम सार ग्रंथ साखीरे ॥ नय व्यवहार

गवेखतां ॥ देवचंद्रजीए न्नार्पीरे ॥ समजो० ॥ ७ ॥ एकथी वीजी अनंत गुणी कही ॥ तेहनुं कारण कहीएरे ॥ सुक्ष्म ते पहेलीथी वीजी॥ वीजीथी सुक्ष्म त्रीजीएरे ॥समजो०॥८॥ एम सुक्ष्म चकती सवे ॥ वर्गणा खंध जाती आठरे ॥ सर्वे सरखी कीजीए ॥ पुद्गलपणे एक ठाठरे ॥ समजो० ॥ ए ॥ जीव ग्रहण वर्गणा कही ॥ हवे कहुं गुण पर्यायरे ॥ आगळ नवमी ढाळमां ॥ ज्ञान शीतल वर्णव थायरे ॥ समजो० ॥ १० ॥ ढाल आठमी सपूर्ण

॥ ढाल नवमी ॥

॥ राग वगाली ॥

पुद्गल द्रव्यना गुणपर्याय ॥ न्नाख्य। अनता जीनेंद्रराय ॥ न्नवी सांन्नलो ॥ तेमां चौ चौ मुख्य कहाय ॥ ग्रथे वर्णव्या गीतारयराय ॥ न्नवी सांन्नलो ॥ १ ॥ पहेलो कह्यो गुणरूपी जेह ॥ दृष्टीगोचर आवे तेह ॥ न्नवी सांन्नलो ॥ वीजो अचेतन जकता जेह ॥ जाण गुणनो अन्नाव तेह ॥ न्नवी० ॥२॥ त्रीजो क्रिया गुण कहेवाय ॥ शुन्नाशुन्न क्रिया जेह थाय ॥ न्नवी० ॥ चोथो मिलण वीखरण जेह ॥ सकण पकण वीध्वसण तेह ॥ न्नवी० ॥३॥ ए गुण चउ कह्या कहुं पर्याय ॥ वर्ण पच ए पहेलो कहाय ॥ न्नवी० ॥ रातो धोळो लीलो पीळो स्याम ॥ वीजो रस पच न्नेदे नाम ॥ न्नवी० ॥ ४ ॥ तीखो कडवो कषायलो जेह ॥ खाटो मधुरो ए पचे तेह० ॥ न्नवी० ॥ त्रीजो गध दोय न्नेद पर्याय ॥ सुरन्नी दूरन्नी वास लहाय ॥ न्नवी० ॥ ५ ॥ चोथो फर्स

आठ भेद नाम॥ सीत उष्ण भारे हलवो ताम ॥ भवी० ॥ स्निग्ध रुक्ष कोमळ वरसट ॥ फरस सवेए कह्या अष्ट ॥ ॥ भवी० ॥ ६ ॥ ए चौ पर्याय भाख्या सार ॥ वळी गुण गावानो छे विचार ॥ भवी० ॥ इंद्री नोइंद्री मन वचकाय ॥ पर्याप्ति प्राण पुद्गल ताय ॥ भवी० ॥ ७ ॥ संघयणने वळी संस्थान ॥ लेस्या सञ्ज्ञा ए पुद्गल स्थान॥ भवी० ॥ ज्योनी वेद जनमने मरण ॥ जरा जवरा दोय पुद्गलरण ॥ भवी० ॥ ८ ॥ आहार नीहार गता गती जेह ॥ अवगाहना ए पुद्गल तेह ॥ भवी० ॥ पुद्गल सुक्ष्मने वादर ॥ आधि व्याधि ए पुद्गल सर ॥ भवी० ॥ ९ ॥ आठे कर्म कह्यां पुद्गल ॥ वध उदय ए पुद्गल दल ॥ भवी०॥ सत्ता उदीरणा कर्म कहाय ॥ पून्य पाप ए पुद्गल ताय ॥ भवी० ॥ १० ॥ इत्यादि पुद्गल गुण अनत ॥ ते जोगे ससार भाखे सत ॥ भवी० ॥ ज्ञान शीतल कहे टालो तेह ॥ नीज वृत्तिए लहो शीवगेह ॥ भवी० ११ ढाल नवमी ॥

॥ ढाळ दशमी ॥

धन्य धन्य ते जग प्राणीया मन मोहन मेरे–ए देशी ॥

आश्रव हेतु भाखीए सही चेतनमेरे ॥ तेमा पहेलो हेतु मिथ्यात ॥ सही० ॥ अव्रत वीजो कषाय त्रीजो ॥ सही० ॥ जोग चोथानी कहु वात ॥ सही० ॥ १ ॥ मुळ हेतु चउए कह्या ॥ सही० ॥ उत्तर सत्तावन भेद ॥ सही० ॥ तेमा मिथ्यात्व पच भेदे कह्या ॥ सही० ॥ अव्रतना कह्या वार भेद ॥ सही० ॥ २ ॥ कषाय नोकषाय

पचवीस कह्या ॥ सही० ॥ जोग जेद पच दश सार ॥ सही० ॥ सर्वे सत्तावन थया ॥ सही० ॥ अनुक्रमे करुं विस्तार ॥ सही० ॥ ३ ॥ मीथ्यात्व पहेलुं अनिग्रही ॥ सही० ॥ ग्रह्युं न ठोमे खर पूठवत ॥ सही० ॥ हठ मत ग्रह्यो कुबुद्धियी ॥ सही० ॥ तीहां लोह वाणीयानुं दृष्टांत ॥ सही० ॥ ४ ॥ अण अनिग्रही वीजु मिथ्या ॥ सही० ॥ नहि परीक्षा पीतळ के हीम ॥ सही० ॥ दूध ठास जेद जाणे नहि ॥ सही० ॥ इहां सत्य असत्य एकतीम ॥ सही० ॥ ५ ॥ अनीनीवेसी मिथ्या त्रीजु ॥ सही० ॥ खोटु जाणी खरुं करवानो हठ ॥ सही० ॥ युक्ति कुयुक्ति घणी करे ॥ सही० ॥ माया जापाथी न मरे ए शठ ॥ सही० ॥ ६ ॥ मिथ्यात्व संशय ते चोथु ॥ सही० ॥ जीन वचनमां सका दोष ॥ सही० ॥ अपेक्षा नय समजे नहि ॥ सही० ॥ तीहां वोले वोले सकानो जोष ॥ सही० ॥ ७ ॥ मिथ्यात्व अणा जोग पांचमुं ॥ सही० ॥ नहि जाणे ए धर्म के कर्म ॥ सही० ॥ अजाण नवळो सर्वथी ॥ सही० ॥ रच्यो पच्यो ससारमां पर्म ॥ सही० ॥ ८ ॥ मिथ्यात्व वसे ससारे कर्या ॥ सही० ॥ पुद्गल परावर्त अनत ॥ सही० ॥ हवे मिथ्यात्व न ठोमशो ॥ सही० ॥ तो करसो पुनरपी अनत ॥ सही० ॥ ए ॥ अनत पुद्गल परावर्तनो ॥ सही० ॥ अनादि मिथ्यात्व मालीक ॥ सही० ॥ समकित पामीने पमे ॥ सही० ॥ तोपण अर्ध पुद्गल ठीक ॥ सही० ॥ १० ॥ अनादि मिथ्यात्व समको नहि ॥ सही० निर्दय शत्रुए दुष्ट

॥ सही० ॥ अनत दु ख दातार ए ॥ सही० ॥ करे कर्मथी जीवने ए पुष्ट ॥ सही० ॥ ११ ॥ कर्म पुष्ट शुभाशुभ ए ॥ सही० ॥ शुभाशुभ आश्रव पुन्य पाप ॥ सही० ॥ मिथ्यात्व पाच भेद कह्यु ॥ सही० ॥ अव्रतनो आगे कहुं ताप ॥ सही० ॥ १२ ॥ ताप कहेता शीतळ वळे ॥ सही० ॥ ए अद्भुत अचरीज वात ॥ सही० ॥ ज्ञान शीतलज्ञान भावमा ॥ सही० ॥ उपयोगी तीहां सुख ॥ सही० ॥ १३ ॥ ढाळ दशमी सपूर्ण ॥

॥ ढाल अगीयारमी ॥

॥ तोरण आइ क्यु चलेरे—ए देशी ॥

मिथ्यात्व दुष्ट इस्यु कह्युरे ॥ वळी कह्यु गुणगाण सलुणा ॥ प्रश्न कर्यु रुडु भलुरे ॥ उत्तर कहु परमाण सलुणा ॥ शका पडे तो फरी पुछीनेर ॥ नि सक थाउं गुणगेह सलुणा ॥ ए आकणी ॥ १ ॥ प्रथम मिथ्यात्व दुष्टनोरे ॥ अर्थ कहु थिर चित्त ॥ स० ॥ त्यार पछी गुणठाणनोरे ॥ कहेशु उपयोग रीत ॥ स० ॥ सका ॥ २ ॥ मिथ्यात्व छता नव पूरवीरे ॥ कह्या अज्ञानी ग्रथे साख ॥ स० ॥ व्यवहारे यथारथ सयतीरे ॥ कह्या असयती भगवेए दाख ॥ स० ॥ सका० ॥ ३ ॥ नर्क तिर्यच गति आउखुरे मिथ्यात्व विण न बधाय ॥ स० ॥ स्त्री नपुसक दोय वेदनोरे ॥ मिथ्यात्वगाणे बध थाय ॥ स० ॥ सका० ॥ ४ ॥ अनतु दु'ख नरके कह्युरे ॥ खेत्रवेदना परमाधामी आपे ॥ स०,॥ वली लढी मरवानु तीहांरे ॥ पूर्वभव वेरनीए ग़पे ॥ स० ॥

सका० ॥५॥ नर्कथी अनंतु निगोदमांरे ॥ दुःख आपे जीने-द्रदेव ॥ स० ॥ पुद्गल परावर्त तीहां कर्यारे ॥ अनंता ए मिथ्यात्व टेव ॥ स० ॥ सका० ॥ ६ ॥ धर्म करयां धर्म होवे नहिरे ॥ धर्म करयां वधाय कर्म ॥ स० ॥ ससार वृद्धि हेतु एरे ॥ मिथ्यात्व अज्ञान भर्म ॥ स० ॥ सका० ॥ ७ ॥ मिथ्यात्वी जीव अजीव समोर ॥ न जाणे वस्तु धर्म इम ॥ स० ॥ अती पाप मीथ्यात्व एरे ॥ वळीयामां वळीयो ए सीम ॥ स० ॥ सका० ॥ ८ ॥ व्यासी प्रकृति पापनीरे ॥ तेमां एक पल्ले धरीए मिथ्यात ॥ स० ॥ वीजा पल्ले एकासी सवेरे ॥ तोल्यां मिथ्यात भारे नमी जात ॥ स० ॥ सका० ॥ ए ॥ अनत पुद्गल परावर्तनोरे ॥ मालीक एक मिथ्यात्व दुष्ट स० ॥ अव्रत कषाय जोग त्रण एरे ॥ मालीक भव सात के अष्ट ॥ स० ॥ सका० ॥ १० ॥ बहुल संसारी मिथ्यात्व एरे ॥ सर्व धर्म घाती एह ॥ स० ॥ अप मंगलीकमां मूख्य एरे ॥ शत्रु चारित्र रायनो तेह ॥ स० ॥ सका० ॥ ११ सागर सीत्तेर कोका कोमीनीरे ॥ स्थिती मोटी ए शत्रु कठोर ॥ स० जगवासी सवे जीवनेरे ॥ राखे आणमां सेवक ज्युं नठोर ॥ स० सका० ॥ १२ ॥ आपे स-हाय सवे कर्मनेरे ॥ मोह पल्लीनो पुत्र ए मोटो ॥ स० ॥ एने जोड अघातीने वळ वधेर ॥ ऊेरी सवसे ए मिथ्यात्व खोटो ॥ स० ॥ संका० ॥ १३ ॥ उदय साता असाता वेदनी रे कही गुण रोधक ते देखो ॥ स० ॥ वाला वोध चोवीसीये रे ॥ वोले देवचन्द्रजी ए पेखो ॥ स० ॥ संका० ॥ १४ ॥ इ-

त्यादि घणु शु कहीयेरे ॥ थोरु कह्ये घणु जाणो चतुर ॥ स० ॥ ज्ञान शीतलनु कहेण मानजोरे ॥ मिथ्यात्व भ्रमिक ज्यु धतुर ॥ स० ॥ संका० १५ ॥ ढाल अगीयारमी सपूर्ण ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ चतुर नर सामायक नय धारो ॥ ए देशी ॥

चतुर नर अव्रत ठीमा टाळो ॥ षट काय षट इंद्रीनो इंद्री ए बार अव्रत जाळो ॥ चतुर० ॥ अव्रत० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ आतम घर मेलातह्ये घटमां ॥ असख्य प्रदेशनी रचना ॥ अनत गुणपर्याये जरपुर ॥ सरखा बराबर सिद्धना ॥च०॥ अव्रत० ॥ २ ॥ ए बार ठीमांमां थइने आवे॥ नीरतर चोर रागद्वेष ॥ आतम गुण रीद्धि ले जावे ॥ तिहां चेतन करे कर्म क्लेष ॥ च० ॥ अव्रत० ॥ ३ ॥ पाच इंद्रिने मन नोइंद्रि ॥ तेनो विषय शुजाशुज कहीए ॥ राग द्वेषए अशुद्ध परिणति ॥ पुद्गल सगे लहीए ॥ च० ॥ अव्रत० ॥ ४ ॥ पृथवि पाणी अग्निने वायु ॥ वनस्पतिने त्रस ॥ ए सर्वे अव्रत सेवनथी ॥ कर्मबध रागद्वेषवस ॥च०॥ अव्रत०॥५॥ ए बार अव्रतथी अलगा थइने॥ अतर गत घटमाही ॥ चिदानद घन नजरे नीरखो ॥ करो शुद्ध उपयोग त्याही ॥ च० ॥ अव्रत० ॥ ६ ॥ एम जाव विरतीये स्वरूप रमणगत ॥ अतर मुहूर्त्तमाही ॥ रागद्वेष मोहादी हणीने ॥ लहीये केवळ अरिहत त्याही ॥ च० ॥ अव्रत० ॥ ७ ॥ एम अव्रतने टाळो जवीजन ॥ आश्रव अलगो होवे ॥ ज्ञान शीतल गुणगत परिणामे ॥ कर्म मेल सब धोवे ॥ च० ॥

अत्र॰ ॥ ७ ॥ ढाल बारमी संपुर्ण ॥

॥ ढाल तेरमी ॥ देशी चन्द्रावळानी ॥

कपायनी पहेली चोकडीरे ॥ अनतानुवधी ए दुष्ट ॥ जाव जिव लगे रहेरे ॥ क्रोध पथ्थर फाट पुष्ट ॥ त्रुटक॰ ॥ क्रोध पथ्थर फाट पुष्ट अमी लाओ ॥ मान पथ्थर थन्न नमे न नमाव्यो ॥ वांस मूळ वांकां तेसी माया ॥ कीरमज रंग ज्यु लोन्न कहाया ॥ समकित घाति ए मोह ॥ १ ॥ कपायनी वीजी चोकडीरे ॥ अप्रत्याख्यानीए ठळे ॥ वार मास लगे रहेरे ॥ क्रोध जमी फाट मले ॥ त्रु॰ ॥ क्रोध जमी फाट मले मेघ वरसे ॥ मान अस्थि थन्न जट नही नमसे ॥ शींग घेटानां वांकां तेसी भाया ॥ करदम रग ज्युं लोन्न कहाया ॥ देश विरति घाति ए मोह ॥ २ ॥ कषाय प्रत्याख्यानी चोकडी रे ॥ त्रीजी ग्रथे कहाय ॥ चार मास लगे रहेरे ॥ क्रोध वेळु लीक पूराय ॥ त्रु॰ ॥ क्रोध वेळु लीक पुराय वायु आपे ॥ मान काष्ट थन्न वळे तेल तापे ॥ गौमुत्रीका वांकी तेसी माया ॥ लोन्न गाडी उजण मली डाग थाया ॥ सर्व विरती घातीए मोह ॥ ३ ॥ कपायनी चोथी चोकडीरे ॥ सज्वलनी ते कहाय ॥ पच दश दीन ए रहेरे ॥ क्रोध जळ लीक ज्यु थाय ॥त्रु॰॥ क्रोध जळ लीक ज्यु थाय अळप ॥नेत्र थन्न नमे ज्यु मान छोडे टप॥ वास छोती वाकी तेसी माया॥ हलदी रग ज्यु लोन्न कहाया ॥ यथाख्यात घातिए मोह ॥ ४ ॥ कपायनी चउ चोकडीरे ॥ सोळ न्नेद विस्तार॥ दृष्टांत साथे वर्णवीरे ॥ स्थिती कही शास्त्रधार ॥ २ ॥

त्रु० ॥ थीती कही प्राङ्कधार अंतरमे ॥ इणमत नांही अनेकांत धर्मे ॥ हवे नोकषाय नव दाखु ॥ अनुक्रमे उप योगे ज्ञाखु ॥ आतम गुणघातीए मोह ॥ ५ ॥ हास्य मोहनी नोकषाय पहेलोरे ॥ वीनोद कारण त्रिपवाद ॥ रति मोहनी नोकषाय वीजोरे ॥ शाता द्वेष कारण नाद ॥त्रु०॥ शाता द्वेष कारण नाद पापस्थान ॥ अरति मोह त्रीजो अशातावान ॥ नय मोहनी नोकषायनी त्रीती ॥ मरणादी सप्त नय वर्ते अनीती ॥ आतम गुण घातीए मोह ॥ ६ ॥ शोक मोह नोकषाय पांचमोरे ॥ राग कारण करे क्लेश ॥ दुगंछा ते मोह नोकषाय छट्ठोरे ॥ अशुची कारण द्वेष ॥ त्रु० ॥ अशुची कारण द्वेष अणगमतु ॥ पुरुषवेद नोग निषय मन नमतु ॥ स्त्रीवेद कह्यो अग्नि काजो ॥ नपुसकवेदे सदा रहे दाझयो ॥ आतम गुण घातीए मोह ॥ ७ ॥ नोकषाय नव नेदे दाखीयोरे ॥ दाख्यासवे पचवीस ॥ आश्रव हेतु एह त्रीजोरे ॥ अनादी सबध आधीस ॥ त्रु० ॥ अनादी सबध आधीसपणे त्रूखीयो ॥ सिद्धसम चेतन प्रसगे दु खीयो ॥ ज्ञान शीतल प्रसग जव तूटे ॥ कर्म आठ सत्ताथी तूटे ॥ धन्य दीन धन्य घडी तेह ॥ ढाल तेरमी ॥

॥ ढाळ चौदमी ॥

॥ चेतन चेतोरे चेतना—ए देशी ॥

योग त्रणने सही वर्णवु ॥ मन वचनने कायरे ॥ नेद पचदश तेहना, कहेशु उपयोग लायरे ॥ योग० ॥ ए आकणी ॥ १ ॥ चउनेद मनना कह्या ॥ सत्य सत्या सत्य

दूजोरे ॥ असत्य असत्या सत्यए ॥ अर्थ सूणी नवी बुजोरे ॥ योग० ॥ २ ॥ शुद्ध वेहेवारे मन रमे ॥ घटमां नेद ज्ञान आवेरे ॥ नीरावर्ण गुण आत्मा ॥ केवळ ज्ञानादि ध्यावेरे ॥ योग० ॥ ३ ॥ नय ऋजु सूत्र सत्य मन्न ए ॥ हवे सत्या सत्य दाखुरे ॥ मतीज्ञानादी गुण आत्मा ॥ उपयोग व्यवहारे राखुंरे॥ योग० ॥४॥ असुद्ध वेहेवारे असत्य मन॥ समजे काया तेह जीवरे ॥ असत्या सत्य शुन्न व्यवहारे ॥ कर्म जनित काया गेहरे ॥ योग० ॥ ५ ॥ ए चउन्नेद मनना कह्या ॥ तेम वचन चउजाणोरे॥ चितवे बोले पटं-तरो ॥ ए आठ न्नेद परमाणोरे ॥ योग० ॥ ६ ॥ हवे का-याना सात कीजीए ॥ पहेलो योग उदारीकरे ॥ वीजो उदारीक मिश्र ए ॥ त्रीजो वैक्रिय ठीकरे ॥ योग० ॥ ७ ॥ चोथो वैक्रिय मिश्रए ॥ पांचमो आहारक जाणरे ॥ छट्ठो आहारक मिश्रए ॥ सातमो तेजस कार्मणरे ॥ योग० ॥८॥ ए सात न्नेदे काया कही हवे कहु तस अर्थरे ॥ मनुष्य तिर्यच दोयगती प्रत्ये॥ उदरीक काया गर्थरे॥ योग० ॥९॥ देवनर्क दोयगती प्रत्ये ॥ काया वैक्रिय जाणोरे ॥ आहा-रक प्रमाद ठाणे करे॥ चौद पूरवी राणोरे ॥ योग० ॥ ॥ १० ॥ आयुष बाधी मरी देह छोडीने ॥ जीव नवांतर जायरे ॥ तेजस कार्मण लेइने ॥ उपजे तीहां आहार था-यरे ॥ योग० ॥ ११ ॥ मरी कायाथी जीव छूटीयो ॥ जइने आहार न लीधोरे ॥ अतरालवृत्ति तेटला समे ॥ तेजस कार्मण कीधोरे ॥ योग० ॥ १२ ॥ ए चउ न्नेद प्रत्येके

कह्या ॥ हवे कहु मिश्र त्रण कायारे ॥ उदारीक वैक्रिय बीजी ॥ त्रीजी आहारक कहायरे ॥ योग० ॥ १३ ॥ ए त्रण नाम ते मुख्यता ॥ गुणता मिश्र ते दाखुरे ॥ तेजस कार्मण मिश्र ए ॥ ए सर्व सात भेद भापुरे ॥ योग० ॥१४॥ ए मुळयोग भेद त्रण कह्या ॥ उत्तर कह्या पंच दशरे ॥ चउद भेद सादि सांत छे ॥ एक भेद आगे कहीसरे ॥ योग० ॥ १५ ॥ तेजस कार्मण काय योगनो॥ ज्ञान नीतल कहे सवधरे ॥ अनादी अनत अभवीने ॥ भवीने अनादी सत भगरे ॥ योग० ॥ १६ ॥ ढाल चौदमी सपूर्ण॥

॥ ढाळ पंदरमी ॥

॥ ए छमी कीहा राखी–ए देशी ॥

कर्म बंध निरतर करीये ॥ ए विभाव क्रीया कहीये ॥ जीवने पुद्गल दोय मील्यां होवे ॥ एक जीवपणे न लहीयेरे भवीका ॥ ए क्रीया अनादीतारी॥ ए आंकणी ॥१॥ ए बंध चउभेदे दाखु ॥ प्रदेश प्रकृति बंध ॥ रसबंध स्थिती मर्यादा ॥ द्रष्टांत लाडु सवधरे भवीका ॥ ए क्रीया० ॥२॥ प्रदेश तेही आटो कहीए ॥ खांड गोळ प्रकृति॥ रस ते घी भेली लाडु वाळो ॥ थीती मर्यादा वरतीरे ॥ भविका ए क्रीया० ॥ ३ ॥ ए कह्यो नय हवे उपनय दाखु ॥ शुभाशुभ जेवी क्रीया ॥ तेवो आश्रव करस दळ खेचे ॥ खध परमाणु अनंता भरीयारे॥ भवीका ॥ ए क्रीया० ॥४॥ प्रकृति चउकषाय कहीए ॥ अनतानादी भेद चउ ॥ नोकषाय मिथ्यात्व ए छवीस॥ जेसी होवे तेसी बांधे बहुरे॥ भवीका

॥ ए क्रीया० ॥ ५ ॥ रस ते राग द्वेष अशुद्ध रस ॥ अज्ञान रस अशुद्ध ॥ जेटलो पोतामां होय ते रसथी ॥ बांधे आत्म प्रदेश अबुद्धरे ॥भवीका॥ ए क्रीया० ॥ ६ ॥ प्रदेश कर्मदळ मोह प्रकृति ॥ रस अज्ञान राग द्वेष ॥ निजातम असंख्य प्रदेशे ॥ बांधे एकत्व परिणमन वेसरे॥ भवीका॥ ए क्रीया० ॥ ७ ॥ ए कर्मबंध जीहा तक रेहेचे ॥ आत्म प्रदेशथी न विखरे ॥ तेना काळनु मान ते स्थिती ॥ उत्कृष्टी कहुं सिखरेरे ॥ भवीका ॥ ए क्रीया० ॥८॥ ज्ञानावर्णीने दर्शनावर्णी वेदनिकर्म अतराय ॥ त्रीस कोमाकोमी सागरोपमनी ॥ स्थिती ग्रथे कहायरे ॥ भवीका ॥ ए क्रीया० ॥९॥ मोहनी कर्मनी स्थिती दू भेदे ॥ मिथ्यात्व बीजो कषाय ॥ सीतेर कोमाकोमी सागरोपमनी ॥ मिथ्यात्व मोहनी कहायरे ॥ भवीका ॥ ए क्रीया० ॥ १० ॥ चाळीस कोमाकोमी सागरोपमनी स्थिति कषायनी दाखे ॥ समकीत घातीए मिथ्यात्व कहीए॥ घाती कषाय भाखेरे ॥भवीका॥ ए क्रीया० ॥ ११ ॥ नामने गोत्र बे कर्मनी स्थिती ॥ सागरवीस कोमाकोमी ॥ तेत्रीस सागर आयुष्य केरी॥ दाखी ग्रथे दृष्टी जोमीरे ॥ भवीका ॥ ए क्रीया० ॥ १२ अज्ञान राग द्वेष अशुद्धरस॥ मतीश्रुत विभग अज्ञान ॥ राग द्वेष परिणति अशुद्ध ॥ ए कर्मबंध हेतु स्थानरे ॥ भवीका ॥ ए क्रीया० ॥१३॥ समकित वीण ज्ञानी नही होवे ॥ वितराग विण रागी द्वेषी ॥ समकिती सद्भावे अबधक ॥ सकाम निर्जरा लेसीरे ॥ भवीका ॥ ए क्रीया० ॥ १४ ॥ ए विभाव क्रीयामां भांगा कहीए ॥

भवीने अभवीमा॥ अनादी अनत अभवीने लागे॥ अनादी सत भाख्यो भवीमांरे॥ भवीका ॥ ए क्रीया० ॥१५॥ अनादी क्रीया जब त्याग होवे ॥ तब होवे आत्म अबंध ॥ ज्ञान शीतल उज्वल घटमांही॥ ते लहे शीवसुख सवथरे॥भवीका ॥ ए क्रीया अभीनवप्यारी ॥ १६ ॥ ढाल पंदरमी सपूर्ण॥

॥ ढाल सोळमी ॥

॥ कपुर होवे अती उजळोरे–ए देशी ॥

चौकर्म अघाती पूर्व बधनीरे ॥ शुभ प्रकृति होय जेह ॥ तेनो उदय पुन्य कीजीएरे ॥ दाखु बायाली भेद तेहरे ॥ प्राणीए पुन्य तणो अधिकार ॥ ते सभारे सुखनुं गेहरे ॥ प्राणीए० ए आकणी ॥ १ ॥ साता वेदनी उदय थकीरे ॥ करे सुखनो अनुभव ॥ मधु लेप खम्ग धारज्युरे ॥ चाटया जीभ कापे दुःख थाय तबरे ॥ प्राणीए० ॥ २ ॥ उच गोत्र उदय थकीरे ॥ उच कुळे जन्मे जीव ॥ मान पजा प्रतिष्टतारे ॥ लहे आदर सत्कार दीव्यरे ॥ प्राणीए० ॥ ३ ॥ सुख आयुष कर्म उदय थकीरे ॥ पामे त्रण गति पर्याय ॥ काया देव मनुष्य तिर्यचनीरे ॥ हेरू बधन ए सर्व कहायरे ॥ प्राणीए० ॥ ४ ॥ ए त्रण कर्मना कह्यारे॥ पाच भेद ते उदार ॥ हवे सततीस नामनारे॥ ए भेद विचित्र चितारे रे ॥ प्राणीए० ॥ ५ ॥ मनुष्यद्विक नाम उदय थकीरे ॥ पामे मनुष्य गति पर्याय ॥ मनुष्यनी आनुपुरवीरे ॥ वक्रगती उत्पत्तिये लायरे ॥ प्राणीए० ॥ ६ ॥ सुरद्विक नाम उदय थकीरे ॥ पामे देवगति पर्याय॥

देवनी आनुपरवीरे ॥ मनुष्यद्विके कहीज्युं कहायरे ॥ प्राणीए० ॥ ७ ॥ पचेंद्री जाति उदय थकीरे ॥ पामे सही इंद्रीयो पांच ॥ देव मनुष्यादी गती प्रत्येरे ॥ उदय छते न लागे खाचरे ॥ प्राणीए० ॥ ८ ॥ उदारीक शरीरनोरे ॥ उदय होय जव सार ॥ उदारीक आहार लेइनेरे ॥ वांधे शरीर पींड नही वाररे ॥ प्राणीए० ॥ ए ॥ उदारीक अंगो पांग उदय थकीरे ॥ वांधे आठ अग उपांग ॥ अगुली रे खानख केस एरे ॥ इत्यादि कह्यां अंगोपांगरे ॥ प्राणीए० ॥ १० ॥ वैक्रीय शरीरनोरे ॥ अगोपांग उदय थाय ॥ ते वांधे उदारीकज्युरे, एम न्नावो ए सरखो न्यायरे ॥ प्राणीए० ॥ ११ ॥ वैक्रीयना दोय न्नेदछेरे ॥ औपपाति लब्धि एम ॥ औपपाती देव नर्कमारे ॥ लब्धि मनुष्य तिर्यच तेमरे ॥ प्राणीए० ॥१२॥ वैक्रियादि लब्धि एरे ॥ करे मनुष्यादी रुप अनेक ॥ प्रत्येक रूपे नीजात्मनारे ॥ प्रदेश असंख्यनी टेकरे ॥ प्राणीए० ॥ १३ ॥ ए प्रदेश लब्धिवतनारे ॥ काढे ते मुळ कायाथी सार ॥ अनेक रूपे एक आतमारे ॥ न त्रुटे प्रदेश श्रेणी काररे ॥ प्राणीए०१४॥ए रूपथी लढतां अन्य सुरे ॥ लागे एकने शस्त्र प्रहार ॥ तेनु दुःख जे प्रगटेरे ॥ ते अनुन्नव सर्वने धाररे ॥ प्राणीए० ॥ १५ ॥ असंख्याता प्रदेश विनारे ॥ कायजोग न वधाय ॥ रुप विखरे आवी मिलेरे ॥ मुळ कायाये श्रेणी समायरे ॥ प्राणीए० ॥ १६ ॥ आहारक शरीर उदय थकीरे ॥ आहारक दळ ग्रहाय ॥ शरीरपणे परिणमावीनेर ॥ मुंडा हाथनी वांधे ए कायरे ॥

॥ प्राणीए० ॥ १७ ॥ आहारक अगोपांग उदयथकिरे ॥ बांधे अग उपाग ॥ पूर्वे कह्यु ज्यु उदारीकेरे ॥ एम जाणो ए जोग अती चगरे ॥ प्राणीए० ॥ १८ ॥ तेजस शरीर उदय थकीरे ॥ आहारनु पाचन थाय ॥ जठरा अग्नि एहछेरे ॥ उदय अभावे काळ कहायरे ॥ प्राणीए० ॥ १९ ॥ कार्मण शरीर उदय थकीरे ॥ कार्मण दळ वधाय ॥ असरय प्रदेशे ऐक्यतारे ॥ एखीर नीर दृष्टांत न्यायरे ॥ प्राणीए० ॥ २० ॥ प्रथम सघयण उदय थकीरे ॥ हाड सधि दृढ बधाय ॥ मर्कट बध दोय पासथीरे ॥ उपर पाटाए खीली जडायरे ॥ प्राणीए० ॥ २१ ॥ पहेला सस्थान उदय थकीरे ॥ समचउरस पलाठी जणाय॥ माथो जानु जमणे खभेरे ॥ जमणो जानु डावे सम थायरे ॥ प्राणीए० ॥ २२ ॥ वर्ण चतुष्क उदय थकीरे॥ रस शुभ वर्णी काय ॥ सुवास कमल ज्यु महमहेरे ॥ शुभफर्स मनोज्ञ कहायरे ॥ प्राणीए० ॥ २३ ॥ अगुरु लघु नाम उदय थकीरे ॥ शरीर मध्यस्थता पाय ॥ नहि पुष्टता नहि कृसतारे ॥ ते अगुरु लघु नाम कहायरे ॥ प्राणीए० ॥ २४ ॥ पराघात नाम उदय थकीरे ॥ अनत वळ वीर्यता पाय ॥ एकपणे जीते अनेकशुरे ॥ भूजा वळे समुद्र तरी जायरे ॥ प्राणीए० ॥ २५ ॥ श्वासोश्वास उदय थकीरे॥सुखे श्वासोश्वास लेवाय ॥ विघ्न सभव होवे नहिरे॥ लब्धि छता सजीवन कहायरे ॥ प्राणीए० २६ ॥ आतप नाम कर्म उदय थकीरे ॥ तीखी तेजे तसी काय ॥ परने

परीताप उपजेरे ॥ उदय बादर पृथ्वीए कहायरे ॥ प्राणी-
ए० ॥ २७ ॥ उद्योत नाम कर्म उदय थकीरे ॥ शांत मुद्रा
शीतळ थाय ॥ परने प्रमोद हेतुएरे ॥ चंद्रोदय श्रमी
वरसायरे ॥ प्राणीए० ॥ २८ ॥ शुभ विहायो गती उदय
थकीरे ॥ पामे हस सरखी ए चाल ॥ शीख्यां अणशीख्यां
सपजेरे ॥ उदय अभावे न लहे ते ख्यालरे ॥ प्राणीए०
॥ २९ ॥ निर्माण नाम कर्म उदय थकीरे ॥ अगना अव-
यव सर्व ॥ योग्य स्थापे सूत्रधार ज्युरे ॥ सांधा मेळ पुद्-
गल द्रव्यरे ॥ प्राणीए० ॥ ३० ॥ जिननाम कर्म उदय
थकीरे ॥ समोसरणादी पामे ऋद्ध ॥ सेवे असख्य कोडी
देवनीरे ॥ अनत पुन्योदय तीहां कीधरे ॥ प्राणीए० ॥
३१ ॥ आहार निहार अन्य देखे नहीरे ॥ प्रस्वेद मळ
रहित शरीर ॥ श्वास सुगध महके कमळज्युरे ॥ मांस
लोही उज्वल जेसी खीररे ॥ प्राणीए० ॥ ३२ ए चार अ-
तिशय जन्मथीरे ॥ घाती कर्म खपे एकादश ॥ ओगणीस
देव कृत्य सपजेर ॥ ए चोतीस अतीशयव्रत तसरे ॥
प्राणीए० ३३ ॥ पण तीस गुण भर वाणीयेरे ॥ भवी जीवने
करे उपदेश ॥ बोध बीज पामे घणारे ॥ होवे विरति प-
रिणामी रुडा वेशरे ॥ प्राणीए० ३४ ॥ कोइ होवे साधु
साधवीरे ॥ कोइ श्रावक श्रावीका थाय ॥ क्षय उपशम
अप्रतिहतनेरे ॥ दीये गणधर पद जिनरायरे ॥ प्राणीए०
३५ ॥ त्यां द्वादशांगी रचना करेरे ॥ ज्ञान लब्धिए गण-
धरराय ॥ ए तीर्थ स्थापना कहीरे ॥ देशना निष्फल नही

जायरे ॥ प्राणीए० ३६ ॥ त्रस नाम कर्म उदय थकीरे ॥ न लहे स्थावर काय पाच ॥ वाकी सवे गति त्रसठेरे ॥ तीहा उपजे तेमा नही खाचरे ॥ प्राणीए० ॥ ३७ ॥ वादर नाम कर्म उदय थकीरे ॥ न लहे सूक्ष्म थावर पाच ॥ द्रष्टीगोचर काया कहीरे ते वादर नाम नही खाचरे ॥ प्राणीए० ३८ ॥ पर्याप्ति नाम उदय थकीरे ॥ करे पुरी पोतानी जे होय॥ कर्ण लब्धि होय ज्ञेदथीरे ॥ न मरे अ-पज्जत्तो कोयरे ॥ प्राणीए० ३९॥ प्रत्येक नाम कर्म उदय थकीरे ॥ वे निगोद गति होय वध ॥ जीव जीवनी काया जुदीरे ॥ ते प्रत्येक नाम सवधरे ॥ प्राणीए० ४० ॥ स्थिर नाम कर्म उदय थकीरे ॥ दाट दन हाड वाधो द्रढ ॥ नखसे हाड दत एहनारे ॥ सर्व अवयव निश्चल गढरे ॥ प्राणीए० ४१ ॥ शुभ नाम कर्म उदय थकीरे शुभ कहीए उर्ध्व अग ॥ अप्रिय न होवे कोइनेरे ॥ फर्स लाग्या माने अती चगरे॥ प्राणीए० ४२॥ सौभाग्य नाम कर्म उदय थकीरे ॥ उपकार विण वल्लभ होय ॥ सगपण प्रिती सवध विना रे ॥ जग वल्लभ इष्ट लागे सोयरे ॥ प्राणीए० ४३ ॥ सुस्वर नाम कर्म उदय थकीरे ॥ कठ शब्द मधुर ध्वनी होय ॥ सर्व लोक ग्रह एहनेरे ॥ श्रवण रस सुखदाइ सोयरे ॥ ॥ प्राणीए० ॥ ४४ ॥ आदेयनामकर्म उदयथकीरे ॥ प्रमा-णीक पुरुष गणाय ॥ सर्मीत वचन होवे नहीरे ॥ यथार्थ वचन पकशायरे ॥ प्राणीए० ॥ ४५ ॥ यशकीर्ति नाम उद-यथकीरे ॥ गाय गुण समुदाय जगजस ॥ ऋद्धि आम्वर

अतीघणोरे ॥ फेलाय जसकीर्ति तसरे ॥ प्राणीए० ॥ ४६ ॥ ए वायालीस न्नेद पुन्यनारे ॥ अघाती कर्म जनित कहाय॥ उदयिक न्नावे ते पामीयेरे॥ पुद्गलीक न्नाव ग्रंथे गवायरे॥ प्राणीए० ॥ ४७ ॥ ए न्नेद अर्थ रचना करीरे ॥ पहेला कर्म ग्रंथ अनुसार ॥ ज्ञानशितल कहे गुणवतनेरे ॥ हित जाणी अशुद्ध होय तो नीवाररे ॥ प्राणीए० ॥ ४८ ॥ ढाल सोलमी सपूर्ण ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ तीरथनी आशातना नवि करीए—एदेशी ॥

घाती करम पूर्व वधनी प्रकृति ॥ उदय आव्यां विघन करती ॥ आतम गुण पर्याय हणती ॥ अती मोटुं पाप ॥ घाती० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ मतीज्ञानावर्णी पापोदयमां आवे ॥ इंद्री उपयोग हीण थावे ॥ तीहां चेतन जड़ता पावे ॥ अचेतन सम एह ॥ घाती० ॥ २ ॥ श्रुतज्ञानावर्णी पापोदयमां आवे ॥ सीद्धांत वोध तीहां जावे॥ श्रोत इन्द्री वे'रासपावे ॥ मोटु अज्ञान एह ॥ घाती० ॥ ३ ॥ अवधि ज्ञानावर्णी पापोदयमा आवे ॥ रूपी प्रत्यक्ष ग्यान हीण थावे ॥ उदय होय तिहां नहि पावे ॥ पाम्यो होय तेनु जाय ॥ घाती० ॥ ४ ॥ मनपर्यव ज्ञानावरणी उदय माही ॥ मनोगत न्नाव ग्यान क्षय त्यांही ॥ उदय छता न प्रगटे क्यांही ॥ अढीद्विपनी मांही ॥ घाती० ॥ ५ ॥ केवळ ज्ञानावरणी पापनो उदे ज्याही ॥ तीहा अरिहंत पदवी नांही ॥ छद्मस्थ ए कहेवाय त्यांही ॥ न सनातक

एह ॥ घाती० ॥ ६ ॥ ए ज्ञानावरणी उदय कह्यु वीजु कहीए ॥ दर्शना वरणी उदय लहीए ॥ ज्ञान दर्शन हाणी तहीए ॥ कही कहु विचार ॥ घाती० ॥ ७ ॥ चक्षु दर्शनावरणी पाप उदयमा आवे ॥ चक्षु इंद्री दर्शन हाणी थावे ॥ चोरंडीपणु नही पावे ॥ तेरंद्रीए थाय ॥ घाती० ॥ ८ ॥ अचक्षु दर्शनावरणी पाप उदयमा आवे ॥ श्रोत गंध रसफर्स हाणी थावे ॥ मन हणता असन्नी कहावे ॥ नेद आगे कहेवाय ॥ घाती० ॥ ए ॥ श्रोत उपयोग हणता चोरंडी नाखु ॥ गध हणता वेरंडी दाखु ॥ रस हणता एकेंडी राखु ॥ फर्स हणता सूक्ष्म ॥ घाती० ॥ १० ॥ अवधि दर्शना वरणी पाप उदयमा आवे ॥ प्रत्यक्ष रूपी दर्शन हणावे ॥ दर्शन मर्यादा कहावे ॥ लाध्यु होय तेनु जाय ॥ घाती० ॥ ११ ॥ केवळ दर्शनावरणी पाप उदयमांही ॥ तीहां केवळ दर्शन नांही ॥ अपुर्ण कार्य कह्यु त्यांही ॥ एही मोटु दुख ॥ घाती० ॥ १२ ॥ निंद्रा पचक पाप उदे प्रत्येके आवे॥ इंद्रिगत उपयोग रुधावे ॥ दर्शन गुण घात कहावे ॥ अचेतन सम एह ॥ घाती० ॥ १३ ॥ निंद्रा पचक नेद प्रत्येके दाखु ॥ सुखे जागे ते निद्रा नाखु ॥ वीजा घाटानो रुप न राखु ॥ पहेली निंद्रा एह ॥घाती०॥ १४ ॥ वीजो नेद निद्रा निद्रा नवी जाणो ॥ दुःखे जागे ऊके घाटे साणो ॥ वेठा उना उघे त्रीजो टाणो ॥ तेनु प्रचला नाम ॥ घाती० ॥ १५ ॥ चोथो नेद प्रचला प्रचलाए दाखु ॥ चालता चालता उघ राखुं ॥

खातां खातां पीतां उघ न्नाखुं ॥ जागे काकरो त्यांही ॥ घाती० ॥ १६ निड्रा थीणद्धी पंचमि मांही फरीए ॥ रात्रे दीन चितीत काम करीए ॥ वासुदेव वळ नीमे वरीये ॥ मरि नरके ए जाय ॥ घाती० ॥ १७ ॥ ए दर्शनावर्णी उदये कह्यु त्रीजु कहीए ॥ मोहनी कर्म उदय लहीए ॥ चारित्र गुण स्थिर हाणी तहीए ॥ श्रद्धा हीण थाय ॥ घाती० ॥ १८ ॥ पापवध व्यासीमां मिथ्यात्व एक गणीयो ॥ तेनी उदयमां त्रण वणीयो॥ सवे जीवने ए मोटी रणीयो ॥ हांणी आगे कहेवाय ॥ घाती० ॥ १९ ॥ प्रथम गुणठाणे उदे मिथ्यात्व आवे ॥ ते मिथ्यात्व मोहनी कहावे ॥ ए ठे समकीत घाती स्वन्नावे ॥ न्नाव मदिरा एह ॥ घाती० ॥ २० ॥ त्रीजे गुणठाणे उदे मिथ्यात्व आवे ॥ ए तो मीश्र मोहनी कहावे ॥ समकीत गुण हणतां पावे ॥ पकतां रस्तो एह ॥ घाती० ॥ २१ चउथी सातमा लगे उदे मिथ्यात्व आवे ॥ ते समकीत मोहनी कहावे ॥ कायक समकीत नही पावे ॥ ए ठतां कोइ जीव ॥ घाती० ॥ २२ ॥ अनतानुं कपाय पाप चोकमी उदे आवे ॥ तीहां समकीत गुण हाणी थावे ॥ कर्मवध अनतो पावे ॥ अनत ससारी एह ॥ घाती० ॥ २३ ॥ अप्रत्याख्यानी पाप चोकमी उदय आवे ॥ तीहां देशविरती दूर थावे ॥ तिर्यंच गतीये पोहोचावे ॥ अणुव्रत हीण एह ॥ घाती० ॥ २४ ॥ प्रत्याख्यानी पाप चोकमी उदय आवे ॥ तीहां सर्व विरती काय पावे ॥ नीज गुण स्थिरता सवे जावे ॥ चारीत्र हीण थाय ॥ घाती०

॥ २५ ॥ संज्वलन कषाय पाप चोकडी उदय आवे ॥ तीहां क्षायक चारित्र नावे॥ अशुद्ध परिणति न जावे ॥ वीतराग न कहाय ॥ घाती० ॥ २६ ॥ नव नोकषाय पाप उदे प्रत्येके आवे ॥ तीहा कषाय प्रगट थावे ॥ कषायनु ए कारण कहावे ॥ सवे संसार मुळ ॥ घाती० ॥ २७ ॥ ए मोहनी कर्म उदय कह्यु चोथु कहीए ॥ अतराय कर्म उदय लहीए ॥ जीव गुण लब्धि हाणी तहीए ॥ दानादीकनी थाय ॥ घाती० ॥ २८ ॥ ज्ञान दर्शनोपयोग दान प्रवृत्ति न पावे ॥ तीहा श्रद्धा चरण लाभ नावे ॥ भोग उपभोगोपयोग अभावे ॥ वीर्य फुरणा न होय ॥ घाती० ॥ २९ ॥ घाती चो कर्मबध पापनो उदय भाख्यो ॥ गुण घात पुर्वक कही दाख्यो ॥ पहेलो कर्मग्रथपुरे साख्यो ॥ भवी समजो एह ॥ घाती० ॥ ३० ॥ पुर्वबध पाप भेद पच चालीए दाख्या ॥ उदयमा तेना सत्त चाली भाख्या ॥ अघाति सत्त तीस बाकी राख्या ॥ आगे कहीशु एह ॥ घाती० ॥ ३१ ॥ घाती कर्म वलीयो तीहा चेतन गलीयो ॥ भवोभव भमतां दुःख मलीयो ॥ ज्ञान शीतल गुण एणे हणीयो ॥ ए अनादी सबध ॥ घाती० ॥ ३२ ॥ ढाल सत्तरमी सपूर्ण ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ ढंलगमी आदीनाथनीरे ॥ ए देशी ॥

अघाती पूर्वबधनीरे ॥ अशुभ प्रकृति जेहलाल ॥ तेनो उदय पाप कीजीएरे ॥ भेद सत्त त्रीस तेह लाल ॥ पापो दय भवी सांभलोरे ॥ ए आकणी ॥ १ ॥ वेदनी अशाता

उदयथीरे ॥ करे दुःखनो अनुभव लाल ॥ नर्क निगोद गती विषेरे ॥ अनत दुःख सुख न लव लाल ॥ पापोदय० ॥ २ ॥ गोत्र नीचना उदय थकीरे ॥ नीच कूळे जन्मे जीव लाल ॥ भीक्षुक निंदनीक हीनभारे ॥ न पामे मान महत्व लाल ॥ पापोदय० ॥ ३ ॥ नर्क आयुष्य उदय थकीरे ॥ त्या जइ भोगवे आयुष्य लाल ॥ आयु छतांए गति छूटे नहीरे ॥ आयु हेरु कहे जगदीश लाल ॥ पापोदय० ॥ ४ ॥ ए त्रण कर्मनी कहीरे ॥ एक एक त्रण प्रकृती लाल ॥ हवे चौतीस कहुं नामनीरे ॥ ए सवे सततीस अघातीलाल ॥ पापोदय० ॥ ५ ॥ नर्क द्वीक नाम उदय थकीरे ॥ पामे नर्क गती पर्याय लाल ॥ नर्कनी आनुपूर्विरे ॥ वक्र गति उत्पत्तिये लाय लाल ॥ पापो० ॥॥ ६ ॥ तीर्यच द्वीक नाम उदय थकीरे ॥ पामे तीर्यच गती पर्याय लाल ॥ तीर्यचनी आनुपुर्विरे ॥ नर्क द्वीके कही ज्यू कहाय लाल ॥ पापोदय० ॥ ७ ॥ एकेंद्री जाती उदय थकीरे॥ पामे फर्स इंद्री एक लाल ॥ ए उदय छता दूजी नहीरे ॥ एम बोले ए ज्ञान विवेकलाल ॥ पापोदय० ॥ ८ ॥ बेरद्री जाती उदय थकीरे ॥ पामे फर्स रसना दोय लाल ॥ ए उदय छता त्रीजी नहीरे ॥ गध न लहे प्राणी कोय लाल ॥ पापोदय० ॥ ए ॥ तेरेंद्रि जाती उदय थकीरे ॥ पामे फर्स रसने गधलाल ॥ ए उदय छतां चोथी नहीरे ॥ न पामे ए चक्षु सबधलाल ॥ पापो० ॥ ॥ १० ॥ चौरद्री जाती उदयथकीरे ॥ पामे सही इंद्री चार लाल ॥

पापोदय तीहा पचमी नहिरे ॥ पचमी कही पून्यमा विचार लाल ॥ पापोदय० ॥ ११ ॥ बीजु सघयण ऊदयथकीरे ॥ हाड सघी ऊड वधाय लाल ॥ मर्कट वध दोय पासथीरे ॥ हाड पाटो ऊपर विटाय लाल ॥ पापोदय० ॥ १२ ॥ सघयण नाराच उदय त्रीजुरे ॥ मर्कट वध दोय पासे लाल ॥ अर्ध नाराच चोथु कह्युरे ॥ मर्कट एक एक खीली खासे लाल ॥ पापो० ॥ १३ ॥ सघयण किलीका उदयथकीरे ॥ हाड आकडे आकड वधी लाल ॥ छेवटु उदय छठु कह्युरे ॥ अणिए अणी सवधी लाल ॥ पापोदय० ॥ १४ ॥ बीजा सस्थान उदयथकीरे ॥ नाभि ऊपर लक्षणो पेत लाल॥ नीचु हेठळ अग हीनतारे॥ ए न्यग्रोधमडळ खेत लाल ॥ पापोदय०॥ १५ ॥ सादी सस्थान उदय त्रीजुरे ॥ नाभि नीचे लक्षणोपेत लाल ॥ नाभि ऊपर अग हीनतारे ॥ यु पुर्व कमाणि सकेतलाल ॥ पापोदय० ॥ १६ ॥ कुब्ज सस्थान उदय चोथुरे ॥ उत्तम हाथपग मूख ग्रीवालाल ॥ अधम पेट हृदयने पुठतारे ॥ सो न लहो फरी फरी वा लाल ॥ पापोदय० ॥ १७ ॥ वामन सस्थान ऊदय थकीरे ॥ वे हाथने पग वे हीन लाल ॥ बाकी उत्तम सवे अगछेरे ॥ ते वामन कहे देव जीन लाल ॥ पापोदय० ॥ १८ ॥ हुड सस्थान उदय छठुरे ॥ सवे अग अवयव हीन लाल ॥ उत्तम लक्षण एके नही रे ॥ अग आकार विशेषे खीन लाल ॥ पापोदय० ॥ १९ ॥ मनुष्य तीर्यंच गर्भज मारे ॥ षट सस्थान ग्रथे जाण्या लाल ॥ समचौरंस एक

देवमारे ॥ बाकी हुन सवे गतीए दाख्यां लाल ॥ पापोदय० ॥ २० ॥ वर्ण चतुष्क उदय थकीरे ॥ अशुभ रस वर्णी काया लाल ॥ स्वास परसेवो दूरवासनारे ॥ अमनोज्ञ फर्स कहाया लाल ॥ पापोदय० ॥ २१ ॥ असुभ विहायो गतिने उदेरे ॥ पामे उट खर जेसी चाल लाल ॥ पग घसाय होय पाठलारे ॥ टिचाय अन्यो अन्य एसो ख्याल लाल ॥ पापो० ॥ ॥ २२ ॥ उपघात नाम कर्म उदय थकीरे ॥ न्युनाधिक अगथी पिडाय लाल ॥ चोर दंत पडू जीभि रसो लीयेरे ॥ पथरिए पामे खलना काया लाल ॥ पापोदय० ॥ २३ ॥ थावर नाम कर्म उदय थकीरे ॥ एकेन्द्री बादर थाय लाल ॥ पृथ्वी, जळ, अग्निने, वायुमारे ॥ प्रत्येक वनस्पतीकाय लाल ॥ पापोदय० ॥ २४ ॥ सूक्ष्म नाम कर्म उदय थकीरे ॥ सूक्ष्म स्थावर चो होवे लाल ॥ दृष्टीगोचर काया नहीरे ॥ लोक व्यापी ते ज्ञानी जोवे लाल ॥ पापोदय० ॥ २५ ॥ अपर्यासो नाम उदय थकीरे ॥ पर्याप्ति पुरी न होवे लाल ॥ लब्धि अपज्जतो मरे तीहारे ॥ *आरंभ्यु जीवक ए खोवे लाल ॥ पापोदय० ॥ २६ ॥* साधारण नाम उदय थकीरे ॥ उपजे निगोदनी मांही लाल ॥ सूक्ष्म बादर दोय भेद एरे ॥ काय स्थिती अनत काळ त्यांही लाल ॥ पापोदय० ॥ २७ ॥ अस्थिर नाम कर्म उदय थकीरे ॥ कान, पांपण, जीभ प्रमुख लाल ॥ अगे अवयव जे चपळतारे ॥ स्थिर न होवे ध्रुव एसी रुख लाल ॥ पापो० ॥ २८ ॥ अशुभ नाम कर्म उदय थकीरे ॥

अशुभ कहीए अधो अग लाल ॥ पग फर्स लाग्या अप्रीती हुवेरे ॥ थाय राघ पुत्र जरी जग लाल ॥ पापोदय० ॥ २९ ॥ दुर्भाग्य नाम कर्म उदय थकीरे ॥ अवल्लभ लागे बहु जणने लाल ॥ उपकार कर्यां वल्लभ नहींरे ॥ न वल्लभ मावाप सहुने लाल ॥ पापोदय० ॥ ३० ॥ दुस्वर नाम कर्म उदय थकीरे ॥ कंठ शब्द पामे अनीष्ट लाल ॥ खर, उट, घुरु, काग सरीखोरे ॥ वीरूप श्रवण नही इष्ट लाल ॥ पापोदय० ॥ ॥ ३१ ॥ अनादेय कर्म नाम उदय थकीरे ॥ सत्य वचन न रुचे केने लाल ॥ असत्य मानी उथापक करेरे ॥ नावे बोल्यु खप वृद्ध वय तेने लाल ॥ पापोदय० ॥ ॥ ३२ ॥ अजस नाम कर्म उदय थकीरे ॥ जस न मीले जगत्रनी माहीं लाल ॥ जस लेवा बळ धन वापरेरे ॥ अजस बोले जग त्यांही लाल ॥ पापोदय० ॥ ३३ ॥ ए चोतीस भेद नाम कर्मनारे ॥ एकेक भेदनी आयुष्य गोत्र लाल॥ ए सस त्रीस चउअघातीनारे ॥ सवे वर्णव्यासो पाप स्तोत्र लाल ॥ पापोदय० ॥ ३४ ॥ ए पाप तत्व पुरण थयोरे ॥ दोय ढाळे कह्या भेद व्यासी लाल॥ ज्ञानशीतल हेय जाणी परीहरोरे ॥ तो सुख समाधी लहो खासी लाल ॥ पापोदय० ॥ ३५ ॥ ढाल अढारमी सपुर्ण ॥



क्षायकभाव तत्वविलास ग्रंथमां छापतां दुहा रही गयेला छे ते.

ग्रंथ मंगळाचरणना दुहा

नमु निरजर्न सिद्धने, पूद्गल योगातित ॥ नमु सयोगि जीनेंद्रने, अयोगी शैलेसि स्थित ॥ १ ॥ नमु क्षिणमोह ठाणमां, चरण यथाख्यातवत ॥ ए ससार निरबीजता, सर्व सिद्ध वधुकत ॥ २ ॥ क्षायक लब्धिचंतए महामगलिक महत ॥ शुद्ध परीणतिमा वसे, सहज भाव शीव संत ॥ ३ ॥ ज्ञाने ए पद पाइये, तीणे रत्नुत्रय थीर भाव॥क्षायक तत्त्व विलासए, ससार तारण नाव ॥ ४ ॥ क्षायकभेद अनत छे मुखथु कथा न जाय ॥ क्षायक नव भेदे कह्यु, ज्यु कर्मग्रंथ चोथे कहाय ॥ ५ ॥ समकितने चारित्रए, केवळज्ञान दरशन ॥ दान लाभने भोगए, उपभोग वीर्य घन ॥ ६ ॥ ए नव लब्धि गाइए, नव तत्व सयुक्त ॥ अनुभव योगे ध्याइये, थिर उपयोगे युक्त ॥ ७ ॥

पेहेली ढाळनी पूर्णताये दुहा —समकित मोहनि छेल्लो अणु, खपतां वेदक कहाय ॥ एक समय स्थिति तेहनी, त्या क्षायक समकित पाय ॥१॥ क्षायक चारित्र आतमा, परमातम वीतराग ॥ मोह ध्वस करी हुआ, ठाण बारमे शिव माग ॥ २ ॥ रागद्वेष अवली दशा, पुद्गल सग उपयोग ॥ छेदी सवळा सनमुखे, शुद्ध परिणति सयोग ॥ ३ ॥

बीजी ढाळनी पूर्णताये दुहा —क्षीणमोह ठाण अतमें, त्रण कर्म करे नाश सात गुण लब्धि त्या लहे, गुणठाण तेरमे वास ॥ १ ॥

त्रीजी ढाळनी पूर्णताये दुहा.—द्रव्य सक्ति ओळखावथु, सामान्यज्ञान विचार ॥ सर्व द्रव्यमा सपजे, ते सामान्य एम धार ॥ १ ॥ द्रव्यनो भेद जीहा पडे, जीवथी भिन्न सो अजीव ॥ ते विशेष एम जाणीए, ज्ञानी वचने सदीव ॥ २ ॥ सामान्य द्रव्यार्थक ए, पर्यायार्थक विशेष ॥ एक द्रव्यनी वृत्तिए, लाधे सामान्य विशेष ॥ ३ ॥

चोथी ढाळनी पूर्णताये दुहा —द्रव्य स्वरुपए दाखीयुं, दाख्यो स्याद्वाद धर्म ॥ द्रव्य पर्यायने जाणतां, टळे मिथ्या मति भ्रम ॥ १ ॥

पाचमी ढाळनी पूर्णताये दुहा—धर्मास्तिकाय वर्णव्यो, वर्णव्या गुण पर्याय ॥ ज्ञानी वचन आलवने, थिर मने रमणता पाय ॥ १ ॥

छठी ढाळनी पूर्णताये दुहा—अजीव अरुपी चो कह्या, गुणपर्याय संयुक्त ॥ हवे कहु पुद्गलने, तजतां ससार मुक्त ॥ १ ॥

सातमी ढाळनी पूर्णताये दुहा—वर्गणा आठे वर्णवी, तन वचन मन एह ॥ आठमी कार्मण कर्मए, सत्ता उदियादि तेह ॥ १ ॥ पुद्गलने जाण्या विना, जीव जाण्यो नहीं जाय ॥ अरुपी गोचर नहीं, गोचर पुद्गल काय ॥ २ ॥

आठमी ढाळनी पूर्णताये दुहा—वस्तुनो जे स्वभाव छे, ते कह्या गुण पर्याय त्रिकाळे गुण फीटे नहीं, ध्रुवता लक्षण सदाय ॥ १ ॥

नवमी ढाळनी पूर्णताये दुहा—पुद्गल द्रव्यने दाखीयो, दाख्या पांच द्रव्य अजीव ॥ हवे कहु आश्रवने, वचन सुधारस दिव्य ॥ १ ॥ कर्म दल आवे ए सही, आश्रव नाम कहाय ॥ मूळ हेतु चो दाखीया, कहु अधिकार बनाय ॥ २ ॥

दशमी ढाळनी पूर्णताये दुहा—आश्रव हेतु पेहेलो कह्यो, दुष्ट ए मिथ्यात्व नाम ॥ बीजो अव्रत दाखीये, उपयोग राखी ठाम ॥ १ ॥ इहां केइ तरक करे, तुमे कहो दुष्ट मिथ्यात ॥ गुणठाणु पेहलु कहु, ए अणमलती बात ॥ २ ॥ तेहने उत्तर दाखवु, रचु ढाळ रसाळ ॥ सांभळजो श्रोता जनो, थिर मन करी धर्मलाल ॥ ३ ॥

अगीआरमी ढाळनी पूर्णताये दुहा—मिथ्यात्व दुष्टता वर्णवी, समजो भवि चित्त लाय ॥ ए छुटे जब धन्य घडी, सम्यकगुण प्रगटाय ॥ १ ॥ मिथ्यात्व गुणठाणु कह्यु, तस उत्तर हवे थाय ॥ थिर चित्ते भवी सांभळो, उपदेस गर्भित न्याय ॥ २ ॥ नैगम सग्रह नयथी, मिथ्यात गुणठाण माहीं ॥ जीव वसे ते सिद्ध कह्यो, गुणमय सत्ता त्यांहि ॥ ३ ॥ गुणनु पात्र जीव छे, तेथी कहु गुणठाण ॥ जाणो भविजन एहने, होशे ज्ञान प्रमाण ॥ ४ ॥ जाणपणु जग दोहिलु, दुर्लभ सदगुरु योग ॥ पुन्योदय तिहां पामीये, सदगुरु वचन सयोग ॥ ५ ॥ गुरुवचन भाले करी, भविजन हणो मिथ्यात ॥ कुगुरु भ्रमने परिहरो, तीहां होशे सुखशात ॥ ६ ॥

जीवगुण ग्रहण करो, भेदज्ञान घटमांहि ॥ समविभाग त्यां सपजे, समकित लहो उछांहि ॥ ७ ॥ हवे अव्रतने वर्णवुं, सुणजो भविजन सार ॥ तजता लाभ होशे घणो, विरतिपणु निरधार ॥ ८ ॥

बारमी ढाळनी पूर्णताये दुहा —आश्रव हेतु बीजो कह्यो, अव्रत बार भेद नाम ॥ हवे त्रीजो हेतु कहु, कषाय पचवीश श्याम ॥१॥ अनतानादि घी चोकडी, ए सोळ भेद कषाय ॥ नो कषाप नव भेद सहु, अनुक्रमे व-र्णव थाय ॥ २ ॥

तेरमा ढाळनी पूर्णताये दुहा—आश्रव हेतु त्रीजो कह्यो, पचवीश भेद कषाय ॥ मन तन वचन योगना, भेदनो वर्णव थाय ॥ १ ॥ मन वचन दो चउ चउ, सात भेद कही काय ॥ सर्व मळी पच दस ए, योगना भेद सही थाय ॥ २ ॥

चौदमी ढाळनी पूर्णताये दुहा.—आश्रव हेतु चोथो कह्यो, योग भेद दश पांच ॥ कह्या सवे चउ हेतुना, भेद सत्तावन नहीं खांच ॥ १ ॥ ए हेतुये आश्रव खेंचीने, कर्म दळ मेळवे अनत ॥ आत्म प्रदेश सबध पणे, कार्मण वर्गणा तत ॥ २ ॥ कार्मण ते आठ कर्मछे, अवर सात कर्म नाहि ॥ समे समे सात बांधतो, मिथ्यात वसे जीव मांहि ॥ ३ ॥ आयुष आवता भवनु, बाधे जीव एकवार॥बध कहु चउ भेदथी, आत्म प्रदेशे धार॥ ४ ॥

पदरमी ढाळनी पूर्णताये दुहा —बध कह्यो चउ भेदथी, रसविण नहीं बधाय ॥ रागद्वेष परिणतिये, निश्चय कर्म बध थाय ॥ १ ॥ राग द्वेष जीहां नहीं, तीहां कर्म बध न होय ॥ वीतराग भावे अबध छे, निश्चय वचन ए सोय ॥ २ ॥ कर्म शुभाशुभ उदयथी, पुन्यने पाप कहाय ॥ पुन्य बायालिस भेदनो, कहु अधिकार बनाय ॥ ३ ॥

सोळमी ढाळनी पूर्णताये दुहा —पुन्य भोग ए दाखीयो, पूरव बध अनुसार ॥ पुनरपी बांधो नहीं, खेरवी सिद्ध पद धार ॥ १ ॥ निश्चय नयनो पख्ख ए, उतसर्ग साधन एह ॥ उपयोगे भावक्रिया, ध्याता ध्येय ध्यान तेह ॥ २ ॥ एकता अभेद भावमां, तीहां आत्म अबध॥ उदांयिकता छुटे तिहां, लहे सिद्ध वधु संबध ॥ ३ ॥ ए विण मुक्ति मळे नहीं, समजो

चतुर सुजाण ॥ स्वभाव विण धर्म छे नहीं, उत्तराध्ययन वखाण ॥ ४ ॥ मुक्ति बंध ए भाखीयो, भाख्यो निज परहित ॥ पुन्य बंध हेतु हवे, कहीशु उपयोग रीत ॥ ५ ॥ शुभ व्यवहार नये करी, बांधे प्रकृति शुभ ॥ ओगण चालीश जाणीये, गुरु वचने भली बुध ॥ ६ ॥ निश्चय नयनी दृष्टिये, सरागता परिणमि जाय ॥ तेह अणारोप शुभ छे. तिहां प्रणनो बंध थाय ॥ ७ ॥ चोथाथी सातमा लगे, जीन नाम कर्म बंधाय ॥ आ- ठमे बंध विच्छेदता, कर्मग्रंथ बीजे कहाय ॥ ८ ॥ अप्रमत्त ठाण सातमु, तीहां आहारक शरीर आहारक अंगोपांग दोय, बांधे शुद्ध संयमीवीर ॥ ॥ ९ ॥ ए पुन्य बंध हेतु कह्या, कहु हवे पाप दुख ॥ घाति अघाती व- र्णवु, ते छुटे लहे जीव सुख ॥ १० ॥

सत्तरमी ढाळनी पुर्णताये दुहा —गुण घाती पाप वर्णव्यु, पूरव बंध संबंध ॥ अघाती हवे सांभळो, दाखु ए पाप प्रबंध ॥ १ ॥

अढारमी ढाळनी पुर्णताये दुहा—पाप दुख भोग दाखीयो, घाती अघाती विचार ॥ पूर्व बंध अनुसार ए, सहीये समताये सार ॥ १ ॥ समताविण सेहेता थका, होवे न दुखनो अंत ॥ पुनरपि बांधे तिहां, इम भाखे सवि संत ॥ २ ॥ अघाती पाप एम टळे, हवे घातीनो विचार ॥ ज्ञान विना छुटे नहीं, ज्ञान छे सर्वमां सार ॥ ३ ॥ ते कारण भणो ज्ञानने, सेवो ज्ञानी गुरजेह ॥ विनय करो प्रमोदथी, लहशो ज्ञानगुण गेह ॥ ४ ॥ ज्ञान धर घटतरे, अनुभव भुवनमांहि ॥ ज्ञान भानु उदय हुवे, घाति पाप भागे त्यांहि ॥ ५ ॥ ए विण घाती टळे नहीं, स- मजो भविजन सार ॥ पापस्थान सेवो नहीं, पापए दुःखदातार ॥ ६ ॥ पाप बंध हेतु एह छे, अष्टादश भेद नाम ॥ पंच अव्रत कषाय चौ, रागद्वेष परिणति श्याम ॥ ७ ॥ कलह कलकने चाडीयो, रति अरति परनिंदा ॥ कपट फंद वचनए, मिथ्यात भारे मोटा जदा ॥ ८ ॥ ए हेतु पाप बंधना, एही पापतत्व जाण ॥ पूरण पंच अजीवना, कर्या कर्म जीव वखाण ॥९॥

श्री गुरुभ्योनमः

॥ अथ श्रद्धा प्रकरण लीख्यते ॥

दुहा.

प्रणमुं मल्ली जीणंदने, नम्र भोयणी सार.
यात्रा कारण आविया, जीन मंदिर दरवार ॥१॥
दर्शन दुर्लभ देवनुं, समकित हेतु मर्म.
त्रण तत्वसही भाषियां, देव गुरुने धर्म ॥२॥
श्रद्धा स्थिर शंका नही, ते समकित व्यवहार;
रचना कारण ते करुं, श्रद्धा प्रकरण सार ॥३॥
सर्व धर्मनुं मूळ ए, फळदायक आचार,
श्रद्धा विण फळ नवी लहे, समजो चतुर विचार ॥४॥
देव गुरुने धर्मनुं, अनुक्रम वर्णन थाय;
ते जाणी भवि सदहो, जन्म सफलता पाय ॥५॥

॥ ढाल पेहेली ॥

॥ अहो सर्व गुणी मुनिसुव्रत जीनराय काज
मुज सारो–ए देशी ॥

अहो सर्व गुणी वितराग अरिहंत सिद्ध विण देव नहि दूजो, घट ज्ञान लावी आत्म सत्ता गत धर्म जाणी भवि बूजो ॥ ए आंकणी निज निज सत्ता घट घट भासे, त्रिकाळ वृत्तिए नहि क्षय थाशे, अखंड अविनाशी तेहि द्रव्य धार्यो,, संग्रह नय पदे सर्वज्ञ भाख्यो ॥ अहो०॥१॥

चतुर सुजाण ॥ स्वभाव विण धर्म छे नहीं, उत्तराध्ययन वखाण ॥ ४ ॥ मुक्ति पथ ए भाखीयो, भाख्यो निज परहित ॥ पुन्य बध हेतु हवे, कहीथु उपयोग रीत ॥ ५ ॥ शुभ व्यवहार नये करी, बाधे प्रकृति शुभ ॥ ओगण चालीश जाणीये, गुरु वचने भली बुध ॥ ६ ॥ निश्चय नयनी दृष्टिये, सरागना परिणामि जाय ॥ तेह अणारोप शुभ छे तिहा प्रणनो बध थाय ॥ ७ ॥ चोथाथी सातमा लगे, जीन नाम कर्म बधाय ॥ आठमे बध विच्छेदता, कर्मग्रथ बीजे कहाय ॥ ८ ॥ अप्रमत्त ठाण सातमु, तीहा आहारक शरीर आहारक अगोपाग दोय, बाधे शुद्ध सयमीवीर ॥ ॥ ९ ॥ ए पुन्य बध हेतु कह्या, कहु हवे पाप दुख ॥ घाति अघाती व-र्णवु, ते छुटे लहे जीव सुख ॥ १० ॥

सत्तरमी ढाळनी पुर्णताये दुहा —गुण घाती पाप वर्णव्यु, पूरव बध सबध ॥ अघाती हवे साभळो, दाखु ए पाप प्रबध ॥ १ ॥

अढारमी ढाळनी पूर्णताये दुहा—पाप दुख भोग दाखीयो, घाती अघाती विचार ॥ पूर्व बध अनुसार ए, सहीये समताये सार ॥ १ ॥ समताविण सेहेता थका, होवे न दुखनो अत ॥ पुनरपि बाधे तिहां, इम भाषे सवि सत ॥ २ ॥ अघाती पाप एम टळे, हवे घातीनो विचार ॥ ज्ञान विना छुटे नहीं, ज्ञान छे सर्वमा सार ॥ ३ ॥ ते कारण भणो ज्ञानने, सेवो ज्ञानी गुरुजेह ॥ विनय करो प्रमोदथी, लहशे ज्ञानगुण गेह ॥ ४ ॥ ज्ञान धर घटतरे, अनुभव भुवनमाहि ॥ ज्ञान भा उदय हुवे, घाति पाप भागे त्याहि ॥ ५ ॥ ए विण घाती टळे नहीं, भजो भविजन सार ॥ पापस्थान सेवो नहीं, पापए दुःखदातार ॥ ६ ॥ पाप बध हेतु एह छे, अष्टादश भेद नाम ॥ पच अव्रत कषाय चौ, रा[illegible] परिणति श्याम ॥ ७ ॥ कलह कलकने चाडीयो, रति अरति परनिं[illegible] कपट फद वचनए, मिथ्यात भारे मोटा जदा ॥ ८ ॥ ए हेतु पाप [illegible] एही पापतत्व जाण ॥ पूरण पच अजीवना, कर्या कर जीव वखाण

दिये जीनपति देशना जलधार तिहां ॥ अहो० ॥ १० ॥ उपन्नेवा विगमेवा ध्रुवेवा, सूणी ज्ञान लहे गणधरपद लेवा, नव द्रव्यास्तिक पर्यास्तिक बोध इहां, लब्धिए रचे द्वादश अंग तिहां ॥ अहो० ॥ ११ ॥ मस्तक नमावे जीनपति आगे, इंद्र वासक्षेप आपे थाल भरी रागे, वासक्षेपथि गणधर पद स्थापे, विरती प्रणामि थाय प्रभू मुख गापे ॥ अहो० ॥ १२ ॥ साधू साध्वी सर्व विरती भावे, देश विरती श्रावक श्राविका थावे, एम संघ चउविध जीनपति स्थापे, आज्ञाये शिवपथे कर्मवध कापे ॥ अहो० ॥ १३ ॥ चोतीस अतिशयवत गुण खाणी, पचतिस गुणभर जीनपति वाणी, कचन कमले प्रभू विहार करे, अणहूता कोड सूर सेवे मन खरे ॥ अहो० ॥ १४ ॥ दोष अढार रहित वार गुणवता, क्षायक नव लब्धिए पूर्ण सता, जीन नाम कर्मनो विपाक उदय भयो, तेने खेरवे त्यां भव्यने ए कारण थयो ॥ अहो० ॥ १५ ॥ षट् द्रव्य वस्तु जीनवर भाखे, तेमां एक जीव पच अजीव दाखे, पच अजीव परने हेतु दाख्या जीवने निज हेतुपर अहेतु भाख्या ॥ अहो० ॥ १६ ॥ जीवने हेतु अहेतु उडिकताए कहीए, वस्तुए निज हेतु सद्दहिए, एम जाणी निज गुणगत लिन थइए, शक्ति भाव ते व्यक्तिपणुं लहे तहींए ॥ अहो० ॥ १७ ॥ एम चउ निक्षेपे जीनवर जाणी, तरणतारण घटगत भाव आणी, जीन गुण गावो ध्यावो भव्य प्राणी, गुण गाइने थया अनेक गुण खाणी ॥ अहो० ॥ १७ ॥ सयोगि केवळी गणे

स्थिति दाखी, उत्कृष्ट देशे ऊणी पूर्व कोम नाखी, जघन्य अंतरमुहूर्त एक राखी, एम ग्रंथ प्रकरणे बहुश्रुत साखी ॥ अहो० ॥ १९ ॥ आयुष्य अते योग रोध ध्यावे, तिहां शैलेशी करण करी स्थिर थावे, अयोगी अंते अघाति चो क्षय पावे, आत्म असख्य प्रदेश निर्मल नावे ॥ अहो० ॥ २० ॥ एहि सिद्ध निवऽधन दोय नागे, छूटी कायाथी पो-लनो एक नाग त्यागे, समश्रेणीये लोकते समे एक लागे, तिहां सादि अनत काल स्थिति नांगे ॥ अहो० ॥ २१ ॥ एम साध्य साधन नवि जे करशे, कारण ठति पर्याय ऋजु सूत्र महशे, कार्य सामर्थ्य पर्याय शब्दथी वरशे, पूर्ण कार्य लोकते सिद्ध स्थिति करशे ॥ अहो० ॥ २२ ॥ इहा एवं नूतनय एक कहीये, स्याद्वाद स्वरूप सिद्धगत लहीये, द्रव्यास्ति पर्यास्तिक पक्ष ग्रहीये, उपयोगे समकित निर्मल तहीये ॥ अहो० ॥ २३ ॥ एम देवतत्वनी जे श्रद्धा करशे, ते अरपकाळे सिद्ध वधू वरशे, सर्व जीव समूदाय सत्ता ए सरखा, ज्ञानशीतल करी गुरु गम लेइ परख्या ॥ अहो० ॥ २४ ॥ सपूर्ण

दुहा

देव तत्व ए वर्णव्यो, साधन साध्य अनेद,
धर्म स्व सत्ता जाणिये, नय पक्ष नेदानेद ॥१॥
निजपर सत्ता निन्नता, काळ अनादि सबंध,
पर नास्ति नावे रही, तजता आत्म अवध ॥२॥

गुरु तत्व हवे वर्णवुं, गुरुना गुण अनंत;
वहु श्रुत विण सद्गुरु नहि, समजो चतुर महंत॥३॥
जेने जे उपकारी छे, वोधी बीज दीये दान,
ते तेनो गुरु जाणिये, कीजे तस वहु मान ॥४॥
समकित दायक गुरु तणो, सदा सेवा करे एह;
भव कोडाकोडी लगे (पण) वदलो न वळे तेह ॥५॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ देखो गति दैवनी रे–ए देशी ॥

गुरु तत्व बीजो गुण निलोरे, जे श्रुत केवली अणगार, केवलीने ए बेमां अंतर नहिरे, वृहत् कल्प भाष्ये साख निरधार, जगत गुरुवदीएरे ॥ वधां टळे सहि भवना ए फंद, निमित्त हेतु पूछएरे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ सद्गुरु नहि सर्व क्षेत्रे सदारे, श्रेष्टकाळे पण एम, आ दूषम पंचम काळमारे कोइ अवसरे मीळ्या करो अति प्रेम ॥ जगत० ॥२॥ विनय करो तनमनथी रे, गुरु रायना गुण गावो सार, आज्ञा ग्रही गुणवृत्ति करो रे, गुरु करुणा रस भंडार ॥ जगत० ॥ ३ ॥ उपदेश करे योग्य जाणीनेरे, सम जावे ए जीव अजीव, चेतना लक्षण जीव छेरे, रहित चेतना तेह अजीव ॥जगत०॥४॥ चेतना द्विविध जाणीयेरे, उपयोग सामान्य विशेष, सामान्य दर्शन जाणीयेरे, ज्ञान उपयोग तेह विशेष ॥ जगत० ५ ॥ मनुष्यनी काया गत इंद्रि पांच छेरे, शब्द, रूप, रस, गध ने स्पर्श, मन नोइंद्रि छट्टो छे

सहीरे, तेमा उपयोगी चेतन रह्यो सरस ॥ जगत० ॥ ६ ॥ काष्टमा जेम अग्नि रहीरे, वळी घी रह्यु दुधनी मांहि ॥ तिलमा तेल व्यापीने रह्युरे, तेम चेतन रह्यो काया त्याही ॥ जगत० ॥ ७ ॥ ए चेतन सत्ताए सिद्ध समवेरे, परसगे ससारी कहाय ॥ परसग दूटये तद्गत परिणमिरे ॥ अनुभवी शिव पद पाय ॥ जगत० ॥ ८ ॥ परसगे वृद्धि रागद्वेषनीरे, कर्म बधनु कारण एह ॥ इन्द्रि सगे विषय जरूता अनुभवेरे, अनादि अशुद्ध परिणति ए तेह ॥ जगत० ॥ ए ॥ दश द्रव्य प्राण कहीये जीवनारे, ते अशुद्ध व्यवहार नय पक्ष ॥ नहि जीवना उदिक भावे पामीएरे, पूर्व बधज नित्य ए प्रत्यक्ष ॥ जगत० ॥ १० ॥ भाव प्राण जीव गुण उपयोग एरे, वर्ति पर्याय भावे त्रण काळ ॥ संग्रह सत्ता शक्तिएरे, घटमा नय ज्ञान वस्तु निहाळ ॥ जगत० ॥ ११ ॥ मिश्र भावे करे कर्मबधनेरे, कर्मबधथी जन्म मरण होय ॥ भवभ्रमण करे गति चक्रमारे, जेम्यो न लहे तेली वळदपरे कोय ॥ जगत० ॥ १२ ॥ भव भव प्रत्ये दु ख अति घणुरे चउगति ससार माहि ॥ तेमा घणु दु ख नारकी भोगवे तेथी अनतु निगोद गति त्याहि ॥ जगत० ॥ १३ ॥ तेनु कारण अज्ञान मोहवेरे, अव्यक्तव्य अनादि सवध ॥ अशुद्ध परिणतिए परीणम्योरे, तेथी न लह्यो निज गुणगंध ॥ जगत० ॥ १४ ॥ निज गुण सम्यक चो गति सन्निमारे, अगे शुद्ध परिणति होय ॥ केड भवी भेद लहेरे, जेदी अनादि मिथ्यात्व सोय ॥ जगत० ॥ १५ ॥ अगे उपाधि

परिणतिये टळेरे, श्रद्धामा टळे उपाधि सर्व ॥ पर वस्तु भिन्न भापे आत्मज्ञानथीरे, समकित ठाणु ए जाणो दीवाळी पर्व ॥ जगत० ॥ १६ ॥ इहांथी रस्तो सीधो शिव पथनोरे, घट अतर गुण श्रेणीमांही ॥ गुण गत मनुष्य भवे शिव लहेरे, न खळायतो एक मुहुर्त्ते पहोचे त्यांही ॥ जगत० ॥ १७ ॥ सीधे रस्ते खाळे अधिक एक आउखुंरे, रोकाय केवळी तेरमा ठाणमांहि ॥ अवळे रस्ते खाळे अनेक जाणीयेरे, तूटे ते पाके भव स्थिति त्यांहि ॥ जगत० ॥ १८ ॥ अनुभव विण शका टळे नहीरे, शका टळे जब समकित होय ॥ वस्तु गत वस्तुपणुं लहेरे, ते शुद्धातम अनुभवि सोय ॥ जगत० ॥ १९ ॥ सिद्ध स्वरूपी आतमा रे, जाणे देशथी जे अनुभवि होय ॥ सर्वथी जाणे केवळी रे, प्ररूपे अनतमे भागे अभिलाप्य सोय ॥ जगत० ॥ २० ॥ अधिक कहेवामां आवे नहि रे, एटलामां खुटे क्रोड पूर्व आयूष्य ॥ आठ वरसनी उम्मरे केवळ लहीरे, अखन्ड धाराये प्ररूपे आत्मऋद्धि जुष्य ॥ जगत० ॥ २१ ॥ अनअभिलाप्य तो वचनातित छे रे, केवळीना वचन गोचर नवि थाय ॥ अभिलाप्यथी अनंतो, अनअभिलाप एरे, एम बोले गितारथ राय ॥ जगत० ॥ २२ ॥ आत्मऋद्धि खुल्ली प्रत्यक्षछे रे, आळेखी अनुभव मंदीरमांही ॥ उपयोग भावे ते ऋद्धि ग्रहीये रे, लहीये सूख अव्याबाध अंश त्यांहि ॥ ॥ जगत० ॥ २३ ॥ शिव सूख कारण अनुभव छे रे, ए विण ससार पथ ॥ कदि चौगति भ्रमण टळे नहिरे,

करतां शुभ्र क्रिया बोले अनेक ग्रथ ॥ जगत० ॥२४॥ सद्-गुरु श्रवण हेतु अति भलारे, दिये अढलक बोधनु दान ॥ सुणि मनन चिंतवन घटतर करिरे, निंद्राशय न टाळी जागृत थे पामे ज्ञान ॥ जगत० ॥ २५ ॥ जागृत दशा जव जाणीयेरे, निज ने पर वेहु भासे भिन्न ॥ आप स्वरुपी आप-मारे, व्यापक परिणमन थाय तद्‌लीन्न ॥ जगत० ॥ २६ ॥ निज पर भिन्न भेद जीहा नहिरे, तिहां एकाते पर पोतानु मनाय ॥ विरती थेने ते धर्म करणी जो करेरे, नहि शिव हेतुए मिथ्यात्व कहाय ॥ जगत० ॥ २७ ॥ निज पर भेद भिन्न भासे जीहांरे, तिहा आत्म हेतु कहेवाय ॥ ज्यारे त्यारे पर परिहरेरे निजरुपे पूर्ण सिद्धता पाय ॥ जगत० ॥ २८ ॥ आत्मरुचि प्यारा तुमे अतर भजोरे, उदे पामशे अपरिताप ज्ञानभाण ॥ तिमिराधकार भागे तिहारे, पामो अनुभवभूवने केवळनाण ॥ जगत० ॥ २९ ॥ एम आत्म स्वरूपने जाणीयेरे, साधक वाधक वृत्तिनो विचार ॥ वाधक भावने परिहरीरे, लहीये साधकताए सिद्ध पद सार ॥ जगत० ॥ ३० ॥ गुरु दिनकर सम ज्ञाने दिपतारे, करे स्वपरने प्रकाश ॥ परपरपणे करीने लहेरे, स्व अनुभवे सिद्ध पद खास ॥ जगत० ॥ ३१ ॥ ए गुरुना गुणगण गाइएरे, हुतो सेवक सद्‌गुरुनो दास ॥ ज्ञानशितळ करी दाखी-येरे, कीधो उपदेश जीव गुणनो समास ॥ जगत० ॥३२॥ समाप्त ॥

दुहा.

गुरु उपकारी अति भला, जणाव्युं जीव स्वरुप;
साधक बाधक वारता, दाख्युं ज्ञान अनूप. ॥१॥
धर्म तत्व त्रीजो हवे, भाखुं वचन रसाल:
स्थिर चित्ते भवी सांभळो, श्रध्धा करो विशाळ. ॥२॥
धर्म मूळ श्रुतज्ञान ए, बीजुं चारित्र धर्म;
श्रुत दिपक घट अंतरे, मिथ्यामती टळे भर्म. ॥३॥
श्रुत ज्ञान द्रव्य भावथी, आराधो भले भाव
द्रव्य श्रुत कारण भावनुं, भाव भवो दधि नाव. ॥४॥
गुण स्थानक चोथुं इहां, ग्रंथी भेद करी पाय;
नहि तो अज्ञानी रहे, धर्म न तेह कहाय. ॥५॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ आदि जीणंद मया करो—ए देशी ॥

श्रुतज्ञान घटतर पाइने, उपयोगे मोह खपावोरे, बाह्य वृत्तिए परिणमन मोह छे, त्यां राग द्वेष वृद्धि न अभावोरे ॥ श्रुत० ॥ १ ॥ घटगत निज चेतन ओळखो, गुण अनतनो कदरे, निरुपद्रवस्थान अतर विषे, अनुभविने करो श्रद्धाए जीणदरे ॥ श्रुत० ॥ २ ॥ सर्व देवनो देव निज आत्मा, सर्व गुरुनो गुरु उपयोगरे ॥ धर्म वस्तु स्वभावे छे सहि, सत्ताए सिद्ध अनादि अनत भगरे ॥ श्रुत० ॥ ३ ॥ शक्ति व्यक्ति लहीए श्रुतज्ञानथी, श्रुतज्ञानी थाय वितरागरे ॥ वितराग श्रुतज्ञाने केवल लहे,

पामे सनातक पद अणगाररे ॥ श्रुत० ॥४॥ केवळ कारण सही श्रुत ज्ञानए, श्रुत ज्ञान शिवपंथ त्यांहिरे, करी अनुभव गुण श्रेणीये चढो, एकत्व परिणमन शुद्धातम मांहिरे ॥ श्रुत० ॥ ५ ॥ श्रुतनाणी होवे पचन्नेदे सजमी, यथाख्यात क्षिण मोहगणे वदेरे, श्रुतज्ञाने घातीकर्म क्षय करी, थाय केवळी त्यां परमानंदोरे ॥ श्रुत० ॥ ६ ॥ जाणे वस्तुगते एक निज आतमा, तेने सर्व जाण कह्या गणगेर, बाकी सर्व जाणे तेने अजाण कह्या, जो जो पहेला गणे मन चंगेरे ॥ श्रुत० ॥ ७ ॥ जाणे जगत प्रत्यक्ष जेम केवळी, तेम जाणे परोक्ष श्रुतनाणीरे, केवळीनो उपयोग वर्ते समे समे, छद्मस्थनो असंख्य समे वर्ते न्नव्य प्राणीरे ॥ श्रुत० ॥ ॥ ८ ॥ घटतर उपयोग ते न्नाव श्रुत छे, करे रमण अंतर परिणमन्नरे, उपादान कारणपणु त्यां लहे, करे कार्य थाय तद्लिन्नरे ॥ श्रुत० ॥ ए ॥ केइ कार्य करे इहा देशथी, केइ सर्वथी कार्य करे जाणरे ॥ देशथी कार्य ते समकित लहे, सर्वथी कार्य पामे केवळ नाणरे ॥ श्रुत० ॥ १० ॥ न्नाव श्रुत निश्राये द्रव्य श्रुत छे, नहि तो अश्रुत एम कहीयेरे, जीहा न्नणीये सूणीये विनय करी, तिहा द्रव्य श्रुत गुण महीयेरे श्रुत०॥११॥ श्रुत चउद न्नेद विश न्नेद छे, वळी सूत्र पिस्तालीस न्नेदरे, सद्गुरु मुखे सूणिये विधी करी, लहीये समकित मिथ्यात्व छेदरे, ॥ श्रुत० ॥ १२ ॥ न्नणावे अक्षर श्रुतना जेटला, तेटला महसवरस सुख पावेरे, स्वर्गे अनंता अनुन्नवे, एम विजय लक्ष्मीसूरी गावेरे ॥ श्रुत० ॥

१३ ॥ जाणे जीव द्रव्य क्षेत्र काळ भावथी, द्रव्य अखंम अविनाशी भणे काळरे, क्षेत्रथी असंख्य प्रदेशी कह्यो, काळथी अगुरुलघु परिणति रसाळरे ॥ श्रुत० ॥ १४ ॥ भावथी केवळनाण दर्शण सही, इत्यादि क्षायक लब्धि अनंतरे, ठे सत्ताए सग्रह नयथकी, करो शब्द पामी संग्रह एवंभूतरे ॥ श्रुत० ॥ १५ ॥ ध्यान धर्म शुक्ल दोय ध्याइए, तिहां श्रुतज्ञान उपयोग घटमां रे, एहि ज्ञान गज गर्जारव करे, मोहादि उपाधि भागे समाधि वरे फटमां रे ॥ श्रुत० ॥ १६ ॥ समाधि हेतु एकश्रुत दूजो नहि, ज्ञान शितळ ए वचन प्रमाणरे, एम जाणीने भविजन खप करो, लहो भावश्रुत अनुभव नाण रे ॥ श्रुत० ॥ १७ ॥ समाप्त ॥

॥ दुहा ॥

श्रुत ज्ञान ए वर्णव्यो, धर्म कहीजे तेह;
विरति ज्ञान फळ आदरी, टाळो आवरण खेह ॥१॥
विरति देशथी सर्वथी, द्रव्य भावे विचार;
द्रव्य विरतिथी स्वर्ग ठे, भाव शिव पद सार ॥२॥
देश विरति श्रावक कह्या, सर्व विरति अणगार,
पंच भेद ठे तेहना, यथाख्यात शिव सार ॥३॥
अणुव्रतादिक भेदथी, श्रावकनां व्रत बार,
गुरु मुखे भवि उच्चरो, समकित मूळ नरनार ॥४॥
श्राद्ध धर्म हवे वर्णवुं, आगळ ढाळ रसाल;
जाणिने भवि आदरो, विरति मुख्य नहि वाळ ॥५॥

तिहा उपाधि द्रव्य भाव थाय भेदरे ॥ गुण० ॥ १७ ॥ निश्चे व्यवहार दोय भेदथी रे, करो नित्य सामायक गुरु सगरे ॥ गुण० ॥ व्यवहार गुरु निमित्त हेतु भलारे, निश्चय गुरु निज शुद्ध उपयोगरे ॥ गुण० ॥ १८ ॥ द्रव्य उपाधि टले त्रण योगनी रे, अशुभ आचरणाना दोष वत्तिसरे ॥ गुण० ॥ भावे अशुद्ध परिणति पर्म पातळी रे, भावथु समभावे सामायक जगदिश रे ॥ गुण० ॥ १९ ॥ देसावगासिक बीजा शिक्षावृतमा रे, करो निरोपे सर्व दिशीनो सक्षेपरे, ॥ गुण० ॥ पोषधशाळाये करो त्रिकरण योगथी रे, व्यवहारे दश सामायक निर्लेपरे ॥ गुण० ॥२०॥ निश्चे देशावगासि ज्ञान घटमा लही रे, भहीयें शुद्धातम स्वरुप ये सिभरे ॥ गुण० ॥ परपरिणमन परदिशी टले ज्हारे, भाग वेंची एम थेए भिन्न भिन्नरे, ॥ गुण० ॥ २१ ॥ पोषधोपवास त्रीजा शिक्षावृतनारे, व्यवहार निश्चय दोय भेदरे ॥ गुण० ॥ देशथीने सर्वथी पोषह करी रे, मोहादि कर्मनी करो सत्ता उच्छेदरे ॥ गुण० ॥२२॥ देशथी पोसह दिन चोपहोरनो रे, सर्वथी दिवस रात्री आठ पहोररे, ॥ गुण० ॥ ए भेद दोय शुभव्यवहारनारे, कहु निश्चेना भेद जेसी हृधतोररे ॥गुण०॥२३॥पोषधज्ञान ध्याने आत्मा पोषीयेरे तिहा लहीए देशथी समकित गाणरे ॥गुण०॥ सर्वथी केवळ-नाण पामता रे, लहीये अघाति टाळी पद निरवाणरे॥गुण०॥ ।२४॥ चोथु अतिथी सविभाग शिक्षावृतएरे, अतिथीना पचम अगे भेद दोयरे ॥गुण०॥ एक गीतार्थ श्रमण अतिथी सही

रे, वीजा गीतार्थ निश्राये अतिथी होयरे ॥ गुण० २५ ॥ ए दोय परम पूज्य जीन शासन रे, तेमने भक्तिये दीजे अशनादि दानरे ॥ गुण० ॥ सत्य भाषा वोलीए पर आकंक्षा तजीरे अढळक आपो आग्रह करी वहु मानरे ॥ गुण० २६ ॥ दश रुगलां पूंठे वळावीनेर पछी पोते जमे व्रत धारि तेहरे ॥ गुण० ॥ ए अतिथी सविभाग व्यवहार थीरे निश्चे अतिथी निज जीव गुण गेहरे ॥ गुण० २७ ॥ गुरुज्ञाने जीवाजीव जाणीयेरे, तिहां निजपर भेद समजायरे ॥ गुण० ॥ परपरपणे करी तद्गत परिणम्योर, तिहां शुद्ध उपयोग गूण प्रगटायरे ॥ गुण० २८ ॥ ए विषय विमूख शिव अनुभवेरे, पामे क्षय उपशमादि लब्धिनु दानरे ॥ गुण० ॥ देता लेता निज पोते सहीरे, ते भाव अतिथी जाणी तेनु करो ध्यानरे ॥ गुण० २९ ॥ अतिथी संविभाग तस कीजीयेर, आराधे भाविश्रावक जे होयरे ॥ गुण० ॥ ए अणुव्रतादि सवे द्वादश ग्रहीरे, लहीये स्वर्ग के शिवगति सोयरे॥ गुण० ३० ॥ चौराशी सहस मुनि दाननुरे, भावे ग्रहस्थ दान भक्तिफळ कीधरे ॥ गुण० ॥ क्रिया गुणठाणे मूनि वमारे, न भाव तूल्य को जगप्रसिद्धरे ॥ गुण० ३१ ॥ एम जाणी भविभाव प्रगट करोरे, भाव शुद्धात्म स्वरूप उपयोगरे ॥ गुण० ॥ ज्ञान शितळ करी पामीयेर, घट अंतर अनूभवयोगरे ॥ गुण० ३२ ॥ समास.

स्वस्वरूप खासरे, लहे परमानंद जोग विलासरे ॥ संजमि० १ ॥ वीजो धर्म ए मुनितणो, मार्दन नाम हितकाररे, मृदुतामान मराशथी, विनयादिक गूण धारर, विनयथी श्रुतवृद्धि साररे, श्रुतफळ विरती अणगाररे, मद फणिधर रूसतो निवाररे, मदथी गूणहानि अपाररे, अशुज्ञ ए मोहनो परचाररे, ठेदी अनूज्ञवि आतमताररे, ॥ सजमि० ३ ॥ त्रीजो धर्म वखाणीये, आर्यव ऋजु सूत्र जेहरे, माया कपट विनाशथी, लहीये अंतर गूण गेहरे, टळे तिहां सर्व सदेहरे, मिथ्यात्व भ्रम ज्ञागे ठेहरे, निज एक शुद्धातम तेहरे, ज्रूटे सर्वपरथी स्नेहरे, रागद्वेषनो होय ठेहरे, अनूज्ञवि टाळे कर्म खेहरे ॥ सजमि० ४ ॥ चोथो मुक्तिधर्म मुनितणो, लोज्ञनो जीहां अज्ञावरे, निर्लोज्ञि तेने सपजे, ज्ञव जलधि तरवा ए नावरे, लोज्ञ दुःख दरीयो जाणो तावरे, ते अवसर गोरूवानो दावरे, ठोड्यां नमे सूरनर रावरे, सजम स्थिर गूणनो जमावरे, मोह ध्वंस करो ज्ञानखड्ग घावरे ॥ सजमि० ५ ॥ पचमो तप धर्म जाणीये, निर्जरा हेतू कहायरे, द्वादश ज्ञेद ठे तेहना, वाह्य अभ्यतर मळी थायरे, इच्छाए कर्म वधायरे, इच्छा रोध तप निर्जरा पायरे, इच्छा मोहथी प्रगटायरे, मोह मूळ त्याग मुनिपदरायरे, ज्ञानध्याने उपाधि हणायरे, निज अनुज्ञवि शिव पूर जायरे ॥ सजमि० ६ ॥ ठट्टो धर्म सजम कह्यो, सत्तर ज्ञेद शिव अगरे, आतमज्ञावे आराधीये, करीये शिववधु सगरे, ज्ञेदज्ञान निर्मल गगरे, मळ टळयां मूळरूप चगरे,

अनुभव ज्योति अभंगरे, परमानंद भोग रंगरे, शिवपद लहीये एकगरे, सादि अनंत लागे भंगरे ॥ संजमि० ७ ॥ सातमो सत्य धर्म मुनितणो, सत्य जब सत्ता प्रगटायरे, संग्रहनयथी शिवरूप छे, तेनो एवंभूत थायरे, ते सत्य धर्म कहायरे, असत्य उपाधि हणायरे, निरपाधि शिवपद पायरे, लोकते सिद्ध स्थिर थाय रे, निराकार निरंजन राय रे, अव्याबाध सूख सदायरे ॥ संजमि० ८ ॥ भावथी सोच धर्मे मुनि रमे, न गमे शुभाशुभ ज्यांहिरे, शुभाशुभ तेह एह छे, अनंतजीवे वसि जगमांहिरे, ग्रही आश्रव बांधे मुनिनांहिरे, निर्जरे मुनि उपयोग ताहिरे, योग्य जीवतारे ग्रही वांहिरे, ग्रतना उदासि भाव आहिरे, रहे भेळा भळे नहि क्याहिरे, भळे मूळरुपे सिद्ध शाहिरे ॥ संजमि० ९ ॥ नवमो अकिंचन धर्म ए, मुनिमारग शिवपथरे, कंचन दो भेदे भाखीयु, द्रव्यभाव देखो ग्रंथरे, तज्यां द्रव्यथी द्रव्य निग्रंथरे, मूळ न वळ्यु त्या रह्यो अनर्थरे, द्रव्य त्यागथी सरे नही अर्थरे, भावग्रंथी तज्या शिवरधू कथरे, इहा कार्य थाय यथा तथ्यरे, मिले यथाख्यात संयम रथरे ॥ संजमि० १० ॥ दशमो ब्रह्मव्रत पालता, शिलगरथे बेठा मुनिजायरे, संयम श्रेणीमा एकला, उपयोग स्थिर सहायरे आतम अनुभव पायरे प्रत्यक्ष प्रमाण कहायरे, ध्यान तुरग नचायरे, ज्ञान गजगर्जारव थायरे, उपाधि भ्रांति हणायरे, रिद्धि लै मुनि सिद्ध सधायरे ॥ संजमि० ११ ॥ एम दशभेदे मुनि धर्मने, आराधे जे अढीद्विपरे, ते सर्वने करु विधिवंदना ए मिले उदे थाय पून्य पीपरे, तिहा ल-

हीये ज्ञान जेसो दीपरे, वारवार आपे वोध जरी ठीपरे, पीतां पीतां जागे मोह टळे टीपरे, अनुक्रमे लहे अजेद स्वरूपरे, मोह न घटे त्यां ठारपर लीपरे, ज्ञान शितळनी गुण समीपरे ॥ सजमि० ॥ १२ ॥ समाप्त ॥

दुहा

संयति धर्म ए वर्णव्यो, दश जेदे गुणखाण.
तेने अंगे आणतां, लहिये पद निर्वाण ॥१॥
विण आत्म जे जे कथा, तेह न धर्म कहाय.
जव ज्रमण एहथी वधे, समजो जवि चित लाय ॥२॥
आत्म अनात्म जिन्नता, तेहिज कहिये ज्ञान.
स्थिर श्रध्धा पलटे नहि, ए समकित अनुमान ॥३॥
उपाधि देशथी टाळतां, लहे पंचम गुणठाण.
एकादश प्रकृत्तिनो, क्षय उपशम त्या जाण ॥४॥
उपाधी टाळे सर्वथी, तेहिज संयति धर्म
अप्रमतादि जावे लहे, क्षपक श्रेणी शिवशर्म ॥५॥

॥ ढाल छट्ठी ॥

॥ गायो गायोरे मैंतो देव गुरु धर्मने गायो ॥

देव अरिहतने सिद्ध निरजन, क्षायक लब्धि अनतस जोगी, समय समय जोग उपजोग करता, एक समय न कहिय अजोगी रे ॥ मैंतो देव० ॥ १ ॥ गायो गायो रे ध्यान ध्यायो रे, जीन आज्ञाये धर्मने पायो, ॥ ए आंकणी॥

परमानद अनतो प्रगटयो, रमण गुणगत भिन्न स्वभाव, क्षिण मोह अते घाति कर्म सत्ता छेदी, क्षायक लब्धि आस्वादि अरिहत राजरे ॥ मेंतो० ॥ २ ॥ त्यार्थी तुमे देव सेवक हु तमारो, जाणी पोतानो बांहि ग्रही तारो, तार कबिरुद निमित्त हेतु मिलीयो, तेथी जलदी लहीए भवोदधि आरोरे ॥ मेंतो० ॥ ३ ॥ गुरु गितारथ आतमज्ञानी, सदा निस्पृह भावे वर्ते, स्याद्वादादि वळी करुणा सागर, करे उपगार अनतो भापा खरतेरे ॥ मेंतो० ॥ ४ ॥ सद्गुरु भापा अमृत पीपासा, रुची करी उपयोग सूणशे, ते तत्त्वा तत्त्व विचारी शका छेदी, बोधि बीज लही विरती ठाण ग्रहशेरे ॥ मेंतो० ॥ ५ ॥ देव गुरु दोय निमित्त पूष्ट कहीये, तेथी उपादान धर्मवृत्ति लहीये, हेय उपादेय बुद्धि पामीने, हेय छमी उपादेय तिहा ग्रहीयेरे ॥ मेंतो० ॥ ६ ॥ उपादेय धर्म रत्नत्रयि तेहि, उपयोग भावे लहीये, शिवहेतु सवरनिर्जरा करता, उपाधि हणी उपरनु ठाण ग्रहीयेरे ॥ मेंतो ॥ ७ ॥ एम शुद्ध व्यवहारे साधन करता, अनुक्रमे केवळ नाण लहीये, अघाति चौहणी अयोगी अते, सिद्धि वरीये अक्षय सुख लहीयेरे ॥ मेंतो० ॥ ८ ॥ एम धर्म तत्त्व आराधो भविजन, शिव पथनो ए सीधो रस्तो, आ काळे पामवो अति दुर्लभ, मिळे तो श्रेष्ट काळे स्थिती पाके ग्रहतोरे ॥ मेंतो० ॥ ९ ॥ सिधो रस्तो भेद ज्ञाने लहीये, भेदज्ञान ग्रथी भेदी तिहा कहीये, जड चेतन दोय भिन्न परिणमावी, अनुभव करता विषय अण-

ग्रहीये रे ॥ मेतो० ॥ १० ॥ सिधो रस्तो न मिले तनमन वचने, देवेन्द्र नरेन्द्र ऋद्धि वापरतां, एतो मिले शुद्धातम शक्ति फोरवता, गुणपर्याय एकत्व अनुभवतां रे ॥ मेतो० ॥ ११ ॥ हवे अवळे रस्ते जीवने न पिछाणे, द्रव्य प्राणने एकांते जीव जाणे, ए नहि जीव पूर्वकृत उदिक भाव छे, ए वचन सत्य आगम प्रमाणे रे ॥ मेंतो० ॥ १२ ॥ द्रव्य प्राणने कहे जीव अशुद्ध व्यवहारे, हवे तेहना भेद दोय जेह, एक शुभने बीजो अशुभ छे ए शुभाशुभ पून्य पाप तेहरे ॥ मेतो० ॥ १३ ॥ शुभ कहीये देव दर्शन गुरुवदन, स्तुति भक्ति बहु मान आदरथी, सेवा पूजा वळी विनय वैयावच्च, सद्गुरुनु करो तनमनथी रे ॥ मेतो० ॥ १४ ॥ सुपात्रदान दीजे ने शियळ पाळीजे, तप कीजे शक्ति अनुसारे, भावना भावो धर्म ध्यान ध्यावो, शुभ बध हेतु ए सरल आचारे रे ॥ मेंतो० ॥ १५ ॥ अधिक शूभविरती परिणामी त्या कहीये, सर्व विरतीये चरण करण ग्रहीये, इच्छा वश टाळीने मूर्छा उतारी, कचन कामनीथी निर्लेप रहीये रे, ॥ मेतो० ॥ १६ ॥ इत्यादि धर्म कह्यो शुभ व्यवहारे, स्थिर श्रद्धाये ते शिव हेतु कहीये, नहि तो शुभ आश्रव ससार हेतुए, तिहां ससार वृद्धि लहीये रे, ॥मेंतो० ॥ १७ ॥ स्थिर श्रद्धा कही तिहा समकित कहीये, वस्तु गत्ये वस्तु सद्दहीये, द्रव्यास्ति पर्यास्तिक बोध लहीने, नित्या नित्य स्याद्वाद धर्म ग्रहीये रे मेंतो० ॥ १८ ॥ स्याद्वाद स्वरुप अनेकात धर्में, कारण कार्य सयोग, कारण

ग्रही कार्यमा आवे, तव शिव सुखनो होय ज्ञोगरे ॥मेंतो० ॥ १ए ॥ कारण ते ड्रव्यास्तिक कहीये, कार्य होवे पर्यास्तिक ज्ञावे , ए दोनयविण स्याद्वाद न लहीये, गुण गुणी ज्ञेदाज्ञेद ज्ञानी गावे रे ॥ मेंतो० ॥ २० ॥ ते ज्ञावे ज्ञावित चिदानद माहरो, अतर गुणगत रमतो, आतम अनुज्ञव अवसर पामी, ज्ञान शितळ करी उपाधी हणतो रे ॥मेंतो० ॥ २१ ॥ सपूर्ण ॥

॥ कळस ॥

॥ श्रीजगज्ञासन–ए देशी ॥

देवगुरु धर्म त्रण तत्त्वनो, अनुक्रमे वर्णव कर्यो, ते ज्ञाव जाणी श्रद्धा करीने, व्यवहार समकितने वर्यो ॥ १ ॥ निश्चे समकित ग्रथी ज्ञेद कीधां, ते ज्ञावनो वर्णव करु, अतर ज्ञावे यथा प्रवृत्ति, करण शक्ति अनुसरुं ॥ २ ॥ ए करण प्रज्ञावे खपे स्थिति, आयुवर्जीत कर्म सात ए, सागर कोमाकोमी हीण होवे, अपूर्व वीर्य उदेरे अनत ए ॥ ३ ॥ ज्ञेदी परिणति कर्मवज्र घनकी सहज वीर्य अखन्न प्रवाहए, ज्ञारिज्ञूमि ज्ञयकर चूरी हएयो अनादि मिथ्यात्व मोहए ॥ ४ ॥ अनतानु कषाय चौ अत होवे, अनिवृत्तिये समकितलहे, शितळता प्रगटे घट अतर, पापवेली ज्ञवज्ञवनकी दहे ॥ ५ ॥ ए समकित ज्ञावे अल्प ससारी, सात आठ ज्ञव उत्कृष्ट ए, पमते ज्ञावे अर्ध पुद्गल, माहेली कोरे लहे सिद्ध ए ॥ ६ ॥ व्यवहार निश्चे समकित ज्ञेद जाणी, पामवा ज्ञविजन खपकरो, ए विण

तप जप क्रिया करणी, निष्फळ वृथा जे आचरो ॥ ७ ॥ समकित विण अशुभ करणी, आत्महेतु नवि कही, ससार वृद्धि हेतु भावी, गामगाम देखो सही, ॥ ८ ॥ सर्व धर्मनु मूळ समकित, सत्तार्थनय ग्रहणवखाणीये, द्रव्यगुण पर्याय जाणी, जीव पुद्गल पीछाणीये ॥ ९ ॥ द्रव्य अखंड त्रीकाळवृत्ति, गुण पर्याय आधारए, जीवगुण सवर निर्जराने मोक्ष, ज्ञान दर्शनादि अनंतपर्यायए, ॥ १० ॥ पुद्गलरूपी निर्जीव गुण दाखु, पुन्य पाप आश्रवने बधए, शब्दरूप रस गध ने स्पर्स, संस्थानादि अनेक पर्याय ए ॥११॥ एम भिन्न भिन्न गुणपर्याय दाख्या, जीवने पुद्गल बेहु द्रव्यमां, पुद्गल गुणनी नास्ति जीवमां, अस्तिजीव गुणनी जीवमां ॥ १२ ॥ एम जगतमांहि तत्व बे छे, जीवने अजीव एम जाणीये, अजीवना पांच भेद भाख्या, अरूपी रूपी मन आणीये ॥१३॥ धर्म अधर्म आकाशकाळ चौ, अरूपीने रूपी पुद्गल ए, एम पांच द्रव्यनो समास अजीवमा जीव पुद्गल बे मिल्यां नवतत्व ए ॥ १४ ॥ जीव पुद्गल सयोगे मिश्र भावे, अनादि चउगति सवधए, हेय उपादेय बुद्धि जोगे, होवे भवनो अंतए ॥ १५ ॥ जाणवा योग्य जीव अजीव जाणी, पून्य पाप आश्रव बध छोडवा, जीव गुण सवर निर्जराने मोक्ष, उपादेय जाणी ग्रहवा ॥ १६ ॥ हेय उपाधि त्याग त्रण भेदे, द्रव्य भावे कर्मने नोकर्म ए, द्रव्यकर्म आठ ज्ञानावर्णादि, भाव कर्म सही रागद्वेष ए ॥ १७ ॥ नोकर्म जोग मन वचन काया, द्रव्य कर्मबध भाव हेतू सही, ते

कारण ठमी घटतर ग्रहीये, शुद्धात्म अनुभव शिव नहीं ॥ १८ ॥ एहि देव परमात्म पोते, एहि गुरु शुद्ध उपयोग ए, एहि स्याद्वादधर्मे परिणमतां, परमानंद स्थानपद सिद्धए, ॥ १९ ॥ एम देवगुरु धर्मतत्व अनुभव, शुद्धनय स्यादी कीजीये, आळपपाळने दूर टाळी, सेहेजे शिवसुख लीजीये, ॥ २० ॥ एम साध्य साधो सत्ता आराधो, आरोपित धर्म परिहरो, शक्ति प्रगटे व्यक्तिभावे, अजरामर सुखने वरो ॥ २१ ॥ ए सूख अनादि आत्मसत्ताए, गूणगुणता तिरोभावे रह्यु, आविर्भाव तेनो प्रगटता, लाधे क्षायकभाव एम सद्दहु ॥२२॥ क्षायकभावे अनंतगूण वृत्ति, गूणगूण स्वभावे भिन्नता, उत्पाद व्यय गुणगत होवे, द्रव्ये कहीये ध्रुवता ॥२३॥ पूर्व पर्याय व्यय गुण वृत्तिए, अभिनव पर्याय उत्पादए, एम समे समे हाणी वृद्धि वृत्तिये, तिहा प्रगटे परमानंद ए ॥ २४ ॥ परमानंद गुणगुणनो जुदो, अनंतगुण आनंदोपेतए, तेनो भोग गुण निष्पन्नसमे कहीये, वाकी उपभोग चिरकाळ गतए ॥ २५ ॥ एम पूर्णानंद भोगी सिद्धात्मा, तेमा अपूर्णता होवे नहि, एक समय मात्र विरहकाळ नावे, दुःख अशाता विघ्न कदी नहीं तहीं ॥ २६ ॥ ए सूख साधन घटतरमां, गुण श्रेणीये भेदाभेदता, भेद छेद करी अभेद लहता, पामे यथाख्यात वितरागता ॥ २७ ॥ इहा ससार मूळ बीज विनाश होवे, छूटे रागद्वेषने मोह ए, त्रण कर्म वितरागभावे हणता, चउघातीनो थाय उच्छेदए, ॥ २८ ॥ तिहा अनंत चतुष्टय

लहे अरिहंत-पदमां, आयु-छेने याप योग रोध ए, अघाति चोअंत अयोगी अंते. एम स्थिति पाके लहे नवि सिद्धए ॥ २९ ॥ ए सिद्ध हेतु तत्वगुण गाया. अंतरआत्म स्थिरभाव ए, निजपर हित अर्थे रचना कीधी, ते शुद्ध करो ज्ञानी गुणवंत ए. ॥ ३० ॥ ओगणीस वासठ विजापुरमां श्रावण शुक्ल बीज सोमवार ए. श्रद्धा प्रकरण ग्रंथ पुरण. करतां प्रमोद अपार ए ॥ ३१ ॥ आ ग्रंथ भविजन रुचीथे भणशे, सूणशे निश्चल चित्तए. ज्ञान शितळ तद्गत रटण करतां, पामे समकित रत्न त्रिनित ए ॥ ३२ ॥ सर्व गाथा २०० ॥ श्लोक संख्या सवात्रणसो (३२५) ॥ समपूर्ण. ॥

॥ श्री गुरुभ्योनमः ॥

अथ श्री नवपदजीनी पूजा लिख्यते

॥ दुहा. ॥

चउवीशे जीनपति नमु, नमु अप्रमत्त निग्रंथ ॥
धर्म तेनु भाख्यु सही, सो समकित शीवपंथ ॥ १ ॥
ते साधे सिद्ध चक्रने, पूजे नित्य द्रव्यभाव ॥
ते नव भेदे वर्णवु, अनुक्रमे निज सद्भाव ॥ २ ॥
अरिहत सिद्ध त्रीजे सूरि, पाठक मुनि गुण धाम ॥
दरशन नाण चरण वळी, तप द्वादशविध नाम ॥ ३ ॥
ए नवपद भक्ति करी, पूजा रचु मनोहार ॥
नव पद गुण गण गावता, त्रुटे कर्म प्रचार ॥ ४ ॥
नवपद सोहि आतमा, योग इन्द्रियी भिन्न ॥
पुद्गलमां लाधे नही, नवपद गुणनु चिह्न ॥ ५ ॥

भेद ज्ञान घटमां वसे, तो श्रद्धा स्थिर थाय ॥
स्वपर विभाग करे तिहा अनुभव घट प्रगटाय ॥ ६ ॥
समभाव वृत्ति एह छे, भाव पूजा पण तेह ॥
अनतकारण सिद्धनुं, तेमां नहीं सदेह ॥ ७ ॥

॥ ढाळ ॥ १ ॥

॥ राग विलावर ॥

जगत् प्रभु आगळ भवी वर अक्षत धरीए ॥ ए देशी ॥
अरिहत पद गण तेरमे, घाति कर्महणीने ॥
अनत चतुष्टयी पामीया, परियाय ठणीने ॥ हांहां रे
पर्याय ठणीने, हांहा रे उपयोगी थइने ॥
हांहा रे ज्ञान रमण लहीने, हांहां रे सभीहठ ग्रहीने ॥
हांहा रे मूळ रूपे रहीने, हांहां रे वीतराग वनीने ॥
अरिहत पद गण तेरमे, घाति कर्म हणीने ॥आकणी॥१॥
चार निकायना देवता, असरय तीहा आवे ॥
चोसठ इद्र देवागना, मळी मगळिक गावे ॥
हांहा रे मळी मगळिक गावे, हां० तीहां त्रिगडुं वनावे ॥
हां० केइ जळ वरसावे, हां० केइ कुसुम बीछावे ॥
हां० बीच कल्पवृक्ष गावे, हां० पर्षदा वार आवे ॥अ०॥२॥
तीर्थपति अरीहतजी, सिहासन सोहावे ॥
चउदीशि चउमुख देशना, देइ सउने सुणावे ॥
हां० देइ सउने सुणावे, हां० ज्ञान जीव जाणे आवे ॥
हां० तीहा मिथ्यात्व जावे, हां० समकित शुद्ध पावे ॥
हां० लहे वीरति भावे हां० सिद्ध अनुक्रमे थावे अ०॥३॥

इत्यादि वहु देशना, नवि जीवने आपे ॥
जीव पुद्‌गल जूदाजूदा, इम वीहु पक्ष थापे ॥
हां० इम वीहु पक्ष थापे, हां० सग्रह नयनीए व्यापे ॥
हां० परपणे नहीं व्यापे, हां० गुणपरने ए नापे ॥
हां० जीव निज पर मापे, हां० छुटे अन्यथी आपे ॥अ०॥४॥
इत्यादि देशना देइ, अरिहंतजी तारे ॥
ज्ञान शीतल श्रद्धा करी, केइ धर्म काज सारे ॥
हां० केइ धर्म काज सारे, हां० प्रभुनो उपगारे ॥
हां० नवी पूजो निरधारे, हां० धन खरचो अपारे ॥
हां० योगत्रण समारे, हां० नहींतो नवहां रे॥ अ० ॥ ५ ॥

इति प्रथम पदपूजा. ॥ १ ॥

श्लोक.—ॐह्रीँश्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय, जन्मजरा मृत्यु निवारयाण, अज्ञानोच्छेदकाय श्रीमतेवीरजीनेंद्राय जलंचंदन, पुष्प, धूप, दिप, अक्षतं, नैवेद्य, फलं च यजामहे स्वाहा (आ काव्य दरेक पूजा दीठ कहेवु)

पूजा ॥ २ ॥ जी ॥ दुहा ॥

सिद्ध निरजन गति नमुं, अलख अगोचर रूप ॥
आदि अंत नहीं एहने, परमानद स्वरूप ॥ १ ॥

॥ ढाळ २ जी ॥

॥ देखो गति दैवनीरे ॥ ए देशी

श्री सिद्ध पद आराधीयेरे, जे निज संपत्तिवत
ज्ञान अनतु दर्शनेरे, चरण वीर्य अनत नमो सिद्धरायनेरे.
॥ ए आंकणी ॥ १ ॥

अव्याबाध सुख शाश्वतु रे, परमानद स्वरूप
अटळ अवगाह अगुरु लघुरे, अमूर्ति अनूप ॥ नमो० ॥२॥
क्षायक समकितवतणो रे, चिन्ह मूर्त्ति परिब्रह्म
परमज्योति व्यक्ति हुइरे, टळीयां आठे कर्म ॥ नमो० ॥३॥
अज अवीनाशी निरजनो रे, लोक शिखर करे वास ॥
त्रणे काळनी वर्त्तनारे, एक समय प्रतिज्ञाप्य ॥ नमो० ॥४॥
एक सिद्ध तीहा अनत छे रे, निज निज रूपेरे भिन्न ॥
नहीं बाधा सिद्ध जीवनेरे, गुणपर्यायमा लीन ॥ नमो० ॥५॥
गुणपर्याय अनतनी रे, व्यक्ति अनती रे थाय ॥
कोइ कोइमा पेसे नहीं रे, सौ नीज धर्मे समाय ॥नमो०॥६॥
व्यक्ति व्यक्तिये भिन्नतारे, आनद केरी रे थाय ॥
एम आनद अनतो हुवे रे, तेना भोगी सिद्धा सदाय ॥नमो०७
एक अनेक आदि अनादिरे, गुरु, लघुने मध्यस्थ॥
इत्यादिक भेद सिद्धनारे, जाणो वेशी सयमरथ ॥नमो०८॥
तेथी सिद्ध पद पामीयेरे, भविजन करजो विचार ॥
ज्ञान शीतळ कहे आपजोरे, सिद्धराय सिद्धपद सार ॥न०९॥

इति सिद्ध पद पूजा ॥ २ ॥

पूजा ॥ ३ ॥ जी ॥ दुहा ॥

छत्रीस गुण विराजता, पाळे पचाचार ॥
पद् दर्शनने जाणता, स्याद्वादी सिरदार ॥१॥

॥ ढाळ ॥ ३ ॥ जी ॥

॥ महावीर प्रभु घेर आवे ॥ ए देशी ॥
आचारज पदने पूजीजे, गुणरागे वदन कीजे ॥

दीये देशना ते न भूलीजे, शका कखा पूछी लेहीजेरे ॥
मन मोहन जगगुरु राया ॥ तुज दरसण पुन्य पायारे ॥
मन मोहन जगगुरुराया ॥ ए आकणी ॥ १ ॥

तुमे पच महाव्रत धारी, दया वीस वसा निरधारी ॥
सत्य भाषा निरवद्य सारी, आतम धर्म शक्ति प्यारी रे॥म०२॥
अणदीधे सळी नही लेवे, योग त्रिकरणे नारी न सेवे ॥
रूप निरखण नजर न देवे, परिग्रह नव त्यागी रहेवेरे म०३॥
आशा तृष्णा मूर्च्छा उतारी, आ भव परभवनी नीवारी ॥
निर्लोभीनपुन्यग्राहकारी,ज्ञान ध्यानतप निर्जरा भारीरे म०४॥
भाव सवर अतर योगी, भाव अध्यातम गुण भोगी ॥
धर्म साधक शब्द सयोगी, करे करणी सदा उपयोगीरे म०५॥
शुद्ध पर्याय रमणता पाइ, सदबोध सयमश्री आइ ॥
भेटे आचार्य उभा थाइ,, तिहां आनंदवृद्धि सवाइरे म०६॥
निज गुण उपयोगे स्थिर, व्रते आचारीय थइ वीर ॥
अनुभव सरोवर तीर, भर्यु ज्ञान अगाधसो नीररे म०७॥
तेमां स्नाने सनातक थावे, कर्म मेल अनादिनो जावे ॥
समश्रेणीए सिद्ध गतिपावे, ज्ञानशीतळ पद भीजु गावे रेम ८॥

इति आचार्य पद पूजा ॥ ३ ॥

पूजा ॥ ४ ॥ थी ॥ दुहा ॥

पाठक पंचवीस गुणी, ज्ञान तणा भडार ॥
भणे भणावे साधुने, प्रभाविक सिरदार ॥१॥

॥ ढाळ ॥ ४ ॥ थी ॥

॥ रगरसीया रगरस वन्यो मन मोहनजी ॥ ए देशी ॥

पाठक पदने पूजीए मन मोहनजी, ए द्वादश अगना जाण ॥

मनकु मोह्यु रे मन मोहनजी

नय गर्भित दीये देशना म० नहीं एकांत पक्षनी ताण॥म० १॥
शब्द नये धर्म साधना म० तेमा चउ प्रथमनी समाय ॥मन०॥
अश आरोप नैगम भळे ॥मन०॥ सग्रह सत्ता ग्रहवाय ॥म० २
भेदज्ञान अतर जगे म०, करे चेतन पुद्गल भिन्न ॥ मन०
उपाधि अळगी टळे म०, ए व्यवहार नय चिन्ह ॥म० ३॥
मन स्थिर घरमां रहे म०, थइ शुद्धि अतरमांही ॥ मन० ॥
ऋजुसूत्रनय एह छे म०, परिणामग्राही त्याही ॥ मन० ४ ॥
ए चउ शब्द नये भळे म०, ज्हां प्रगटे समकित धर्म॥म०॥
अनुक्रमे वृद्धि लहे म०, आवे समभिरुढनो मर्म ॥ म० ५ ॥
ए नये अरिहत पद लहे म०, तीहा छ नयनु वृत्तांत॥म०॥
एम कार्य शब्दथी साधीयेम०, चउ पेहेला ए निमित्त एकांत॥६
आयुष्य अते सिद्धिवरे म०, लोक शिखर करे वास॥मन०॥
एवभूत नय तीहां होवे म०, हवे कारणिक तीहा नहीं पास॥७
पुद्गल सग जीहा लगे म०, तीहा कारणिकनो रहे वास॥म०
कार्ययोगे कारण कह्यु म०, नहीं तो कारण नहीं तास॥म०८
शब्द नय लाधे नही म०, तीहा स्थीर मिथ्यात्व धर्म॥मन०॥
कारण दुभेदे कह्यु म०, एक कार्य कारण मर्म ॥ मन० ९ ॥
योगता कारण बीजु कह्यु म०, ते समजो चतुर महत॥म०॥
कार्य उपादाननु हवे म०, ते कार्य कारण कहत म०॥१०॥

निमित्त प्रवृत्ति कीजीये म०, ते जोगे कार्य निपजत मन० ॥
ते योगता कारण सही म०,नही तो अकारण कहंत म० ११॥
एम सत्त नय ग्रहीए म०, नही एके उत्थापक हुत मन० ॥
शक्ति ते व्यक्ति हुवे म०, थाय सग्रह एवभूत मन० १२ ॥
इम सिद्ध साधन साधीये म०, कहे ग्रथे ज्ञानी गुरुराज म०॥
ज्ञान शीतळ श्रद्धा करो म०लहो समकित सारो काजम०१३

इति पाठक पद पूजा ॥ ४ ॥

पूजा ॥ ५ ॥ मी ॥ दुहा. ॥

ज्ञानी ते साधु नमु, जाणे वस्तु स्वभाव ॥
उपाधि अळगी करे, त्यां शीवसाधन दाव ॥ १ ॥

॥ ढाल ५ मी ॥

॥ गीरिवर दरसण वीरला पावे ॥ ए देशी ॥

मुनि महत पदपूजा कीजे, मुनि गुण उळखतां दील रीजे॥
मुनि महत पदपूजा कीजे ॥
मुनि दरसणथी समकित पामे, अनुक्रमे सिद्ध गति पण लीजे
मुनि महंत पदपूजा कीजे ॥ ए आकणी ॥ १ ॥
पचइद्रि विषय अशुभ निवारी, जीतेद्रिय यति धर्मे रीजे मु०
पेहेलुं धर्म क्षमा अतरमां, क्रोध तजी समता रस पीजे मु०२॥
बीजु मार्दव धर्म अमानी, मद आठ तजी मोटपे न रीजे मु०
त्रीजु आर्यवधर्म सरळता, कपटरहित अवक्र थइ जे मु०३॥
चोथुं मुनि धर्म ज्ञान वैरागे, तजी पर ममता लोभ हणीजेमु०॥
इम चोधर्म कषाय अभावे, गुरु मूल वचने एम सुणीजे मु० ४
पंचमु तपधर्म द्वादश भेदे, षट् षट् बाह्य अभ्यतर कीजे मु०

छठु संयम आश्रव त्यागे, सत्तर भेद घणी रीझे ग्रहीजे ॥मु०५॥
सातमु सत्यधर्म सत्य भाषाए, आज्ञासत्य वस्तु सत्य समजीजे मु०
अष्टम शौचधर्म भेद ज्ञाने, पुद्गल अनुभव त्यागी वरीजे मु ६॥
नवमु धर्म अकिंचन दाख्युं, परिग्रह त्यागी सनेह हणीजे मु ॥
दशमु बह्मचर्य धर्म भाख्यु, त्रिकरण योगे वेद विपन सेवीजे मु ७।
एम दशयतिधर्म आराधी, मुनिगुण वृद्धि लहे रगरीझे मु०॥
संयम ठाण विशुद्धी वरता, ज्ञान शीतलकरी शीवपद लीजे मु ८

इति मुनि पद पूजा ॥ ५ ॥ मी ॥

॥ पूजा ॥ ६ ॥ ठ्ठी ॥ दुहा ॥

वस्तुने वस्तुपणे, सद्दहे सो समकित ॥
अवस्तु वस्तु कहे, ते मिथ्यात्व भ्रम भित ॥१॥
भेद ज्ञान अंतर जगे, तीहा वस्तु ओळखाय
जीव पुद्गल दुफारता, श्रद्धा स्थिर न डोलाय ॥२॥
ते समकित दरशण नमु, शिवपद आपणहार ॥
सर्व धर्मनु मूळए, गुण वृद्धि आधार ॥३॥

॥ ढाल ६ छट्ठी ॥

॥ तीरथनी आशातना नवी करिये ॥ ए देशी ॥

समकित दर्शन पूजीए भवी भावे, भाव स्वभावे समकित आवे, तीहा मिथ्यात्व मूळथी जावे, पामे चोथु स्थान ॥ समकित० ॥ १ ॥ ए आकणी॥ दर्शन अनुभव ते सही प्रत्यक्ष, देखे शुद्ध स्वरूपनो पक्ष ज्ञान योगे दर्शन निचक्ष, जाणे देखे एम ॥ समकित० ॥ २ ॥ संसार छेदक ए सही, अति वळीउं, पमता अर्द्ध पुद्गल कहीउं, नहीतो

सात आठ नव रहीउं, पछी सिद्धि लहत ॥ समकित० ॥ ॥ ३ ॥ चारित्र विण सिद्धि वरे एम जाणो, नहीं समकित वीण शीवराणो, समकित गुण परथम आणो, थाशे कारज सार ॥ समकित० ॥ ४ ॥ समकित विण धर्म साधना अलेखे, करे किरिया जगत सौ देखे ॥ नणे ज्ञान कथे न जाणे रेखे, अकविण विंदु जेम ॥ समकित० ॥ ५ ॥ गत समकितने पूरवे आयु बांध्युं, ए वेउ विण समकित साध्युं॥ बीजु आयुष्य बांधे नहीं लाध्युं, देव वैमानि बध॥ समकित० ॥६॥ मळ उपशम क्षय उपशम क्षय जाणो, तेथी समकित त्रिविध आणो ॥ क्षायक त्रण चार नवे टाणो, सिद्धि वरशे एम ॥ समकित० ॥ ७ ॥ सास्वादन उपशम पंचवार लहीजे, क्षय उपशम असंख्यवार कीजे ॥ क्षायक एकवार ग्रही लीजे, नवस्थीति मांही ॥ समकित० ॥ ८ ॥ क्षयउपशम परथम लहे सिद्धांते, उपशम कर्म ग्रंथे अकांते ॥ पामे समकित शांत दांते, जिन्न शास्त्रे विचार ॥ समकित० ॥ ए ॥ समकित ठाणथी पमी मिथ्यात्वें जावे, तीहां रहतां अनत काळ थावे ॥ कर्मबध अनतो पावे, स्थिति न बधे एम ॥ समकित० ॥ १० ॥ इत्यादिक गुण मोटको सिद्धिदाता, गुरु वचने कहे गुणग्याता ॥ समकित नावना मुनि ध्याता, ज्ञान शितळ गाय ॥ समकित० ॥ ११ ॥

इति समकित दर्शन पद पूजा. ॥ ६ ॥ ठी.

पूजा ॥ ७ मी ॥ दुहा. ॥

जीव स्वन्नावे ज्ञान ते, चारित्र समकित मूळ ॥

अनुभवे शीव सुखने, सहजानंद अनुकूळ ॥ १ ॥
ज्ञानावरणी कर्म जे, क्षय उपशम तस थाय ॥
ज्ञान गुण प्रगटे सही, जाणे वस्तुने न्याय ॥ २ ॥
द्रव्यारथ दस भेदने, पर्यायारथ षट् भेद ॥
द्रव्यपर्यायने जाणता, लहीए ज्ञान अभेद ॥ ३ ॥

ढाळ ॥ ७ मी ॥

राग सारंग ॥ हो धन्ना ॥ ए देशी ॥

आतम ज्ञानपद पूजीएरे मिता ॥ शुद्ध उपयोगे स्थिर ॥ अंतर अजवाळु करेरे मिता ॥ अकृत्य चिंतक धीररे ॥ रंगीला मिता ॥ ए ज्ञान पूजोने ॥ ए ज्ञान पूजो घटमांरे मिता, लहो अनुभव प्रत्यक्षरे ॥ रंगीला० ॥ ए ज्ञान पूजोने ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ गुणपर्याय अनंतनो रे मिता, अनुभव स्हेजे थाय ॥ अनंत चक्षुवतो सहीरे मिता, परम ज्योति प्रगटायरे ॥ रंगीला मिता ॥ ए ज्ञान० ॥ २ ॥ अरूपी विषय ज्ञाननो रे मिता, आतम ज्ञाने ग्रहंत ॥ अनुभव रीते जाणतां रे मिता, स्पर्श ज्ञान कहंतरे ॥ रंगीला० ॥ ए० ॥ ३ ॥ निजातम विण सर्वने रे मिता, जाणे ते बाह्य ज्ञान ॥ बाळ ज्ञान बीजु नामछे रे मिता, त्रीजु व्यवहार ज्ञानरे ॥ रंगीला० ॥ ए० ॥ ४ ॥ स्वपर जाण ज्ञानी कह्यारे मिता, पर अनुभवी न कहाय ॥ अरीसामां अन्य भनी पडेरे मिता, तबीए अरीसो न लेपायरे ॥ रंगीला० ॥ ए० ॥ ५ ॥ परजाण उपमा वाचछेरे मिता, ज्ञानी निजातम जाण ॥ स्वभावे निज धर्मछे रे मिता, परभावे परधर्म गणरे

॥ रंगीला० ॥ ए० ॥ ६ ॥ परन्नावे धर्म नवि रहे रे मिता, पामेलुं क्षणमां विनाश ॥ धर्मघाति परन्नावनेरे मिता, तजी करो स्वन्नावे वासरे ॥ रंगीला० ॥ ए० ॥ ७ ॥ शुद्ध एकता अचलतारे मिता, अकृत्य चिंतक न्नाव ॥ परानुयायी ज्हां टल्योरे मिता, अन्नेदज्ञानी हुवा रावरे ॥रगीला० ॥ ए० ॥ ८ ॥ न्नेद ज्ञान कारण कह्यु रे मिता, टळतां कार्यता पाय ॥ केवळनाण दर्शण लहेरे मिता, ए शुद्ध सद्भूत थायरे ॥ रगीला० ॥ ए ॥ ए ॥ पर्याय द्रव्य एकाग्रतारे मिता, व्यक्ति अनंती न्निन्न ॥ अन्निन्न रूपे तिहां सहीरे मिता, ए स्याद्वाद धर्म चिन्हरे ॥ रंगीला० ॥ ए० ॥ १० ॥ एम ज्ञानयोग आराधीयेरे मिता, न्नेद अन्नेद विचार ॥ ज्ञान शीतल सिद्धिवरेरे मिता, लहे अव्याबाध हितकाररे ॥ रगीला० ॥ ए० ॥ ११ ॥

॥ इति ज्ञानपद पूजा ७ मी ॥

पूजा ॥ ८ मी ॥ दुहा ॥

जे चारित्र शरण करे, ते निर्न्नय पद पाय ॥
न्नव न्नव नाटक नवी करे, मोहादि कर्म क्षय थाय ॥१॥
चारित्र गुण अतर विषे, अनुन्नव ज्ञान सयोग ॥
स्थिर उपयोग शुद्धता, तीहां सयमश्री न्नोग ॥२॥
सयमश्री सगे रहे, चारित्र रायनी पास ॥
प्रमोदित अळगी नही, कार्य करे थइ दास ॥३॥

॥ ढाल ८ मी ॥

॥ तोरण आइ क्यु चले रे ॥ ए देशी ॥

चारित्र धर्मने पूजियेरे, निग्रथ पद अणगार ॥ सलूणा ॥ व्यवहार निश्चय भेदथी रे, परथम कहु व्यवहार ॥ सलूणा ॥ चारित्र धर्मने पूजिएरे, निग्रथ पद अणगार ॥ सलूणा ॥ ए आकणी ॥ १ ॥ पच महाव्रत उच्चरेरे, सुऋतो आहार निहाळे ॥ सलूणा ॥ लोचकरे भूमिये सूएरे, अऋवाणे पगे चाले ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ २ ॥ पट् आवश्यक बे टकनां रे, नव कल्पे विहार ॥ सलूणा ॥ देशना गुरु मुखे सुणे रे, पलेहण करे बे वार ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ ३ ॥ इत्यादि बहु साधनारे, व्यवहार चारित्र तेह ॥ सलूणा ॥ स्वर्ग सुख तेहथी लहेरे, परपर कारण एह ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥४॥ निश्चे चरणहवे दाखवुं रे, जे शीव सुखदातार ॥ सलूणा ॥ अनतर कारण सिद्धनु रे, अतर दृष्टि निचार ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ ५ ॥ ज्ञाने वस्तुने ओळखे रे, एक प्रणमन वस्तु भिन्न ॥सलूणा ॥ परसगे मिश्रित हुओरे, चेतन पुद्गल चिन्ह ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ ६ ॥ परसगी हुइ चेतनारे,, इन्द्रिद्वारे एह ॥ सलूणा ॥ उपयोगीक सदा रहेरे, पुद्गल धर्मे तेह ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ ७ ॥ मन मेलु नहि स्थिरतारे, भटकण लाग्यो तेह ॥ सलूणा ॥ वस्ती उजऋमा भ्रमेरे, गयण पायाले एह ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ ८ ॥ इन्द्रि नोइन्द्रि नहीं आतमारे, पुद्गल वस्तु तेह ॥ सलूणा ॥

तेमां जाणग गुण आतमा रे, उपयोग लक्षण एह ॥सलूणा ॥ चारित्र० ॥ ए ॥ एम भेदज्ञाने व्हेंचीये रे, जीव पुद्गल दोय भिन्न ॥ सलूणा ॥ हेय जाणी पर छोडीने रे, चेतना ग्रहो थइ लीन्न ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ १० ॥ वीर्य स्फूरणाये थइरे, पर्याय धर्मे वृत्ति ॥ सलूणा ॥ उपयोग अनतो हुवोरे, स्थिरपणे जेम धरती ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ ११ ॥ भाव अध्यात्म धर्मए रे, सवर निर्जरा साथे ॥ सलूणा ॥ ध्याता ध्येय ध्यान एकतारे, चारित्र राय जगनाथ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ १२ ॥ निर्मोही मोहने हणी रे, हणीया रागने द्वेष ॥ सलूणा ॥ अशुद्ध परिणतिने छेदीने रे, शुद्ध परिणतिये प्रवेश ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ १३ ॥ निर्ग्रं चरण ए भाखियुं रे, यथाख्यात तस नाम ॥ सलूणा ॥ वीत राग ठाण वारमे रे, लाध्युं पद हित काम ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ १४ ॥ पा क्षणमा ए केवळ लहेरे, त्यां गुणठाण तेरमु कहाय ॥ सलूणा ॥ ज्ञान शीतळ करे वदनारे, मानजो अरिहतराय ॥ सलूणा ॥ चारित्र० ॥ १५ ॥

इति चारित्र पद पूजा ॥ ८ मी ॥

पूजा ॥ ९ ॥ मी ॥ दुहा ॥

कर्म जले तप धर्मथी, तपथी जाय विकार ॥
अशुद्धता अळगी टळे, तप उत्तम आचार ॥१॥
ध्यान तप अतर विषे, आज्ञा अपाय विचार ॥
विपाकने सस्थानए, ध्याइ ल्यो धर्मसार ॥२॥

उत्सर्ग कायानो करे, त्याग ए ज्ञान सयोग ॥
वाधित न्नाव सवेटळे लहे अव्यावाध न्नोग ॥३॥

॥ ढाळ ९ मी ॥

॥ वगमानो वासीरे मोर न्नीट मारीयो ॥ ए देशी ॥

तप पद पूजीने निरजरा करीयेर, वधने विदारीरे कर्मथी तुटीये ॥ ध्यान तपे धर्मध्याने आज्ञा विचारीरे, मिथ्यात्वने मारीरे समकित लिजीये ॥ अज्ञानने निवारी रे ज्ञान रस पिजीये, अव्रतने गाळीरे विरति रसे न्नीजीये, प्रमादने टाळीरे अप्रमत्ते रीझीये, मोहने विदारी रे, यथा ख्याते सिजीये ॥ ए आकणी ॥ १ ॥ अप्पाय विचय वीजे पाये विचारी रे, आतमरामरे अनंत गुणीने किजीए ॥ विपाक विचय त्रीजे पाये गुणवतरे ॥ परसगे फळरे विपाक अगाता लिजीये ॥ अज्ञानने० ॥ अव्रत० ॥ प्रमाद० ॥ मोह० ॥ २ ॥ सस्थान विचार ते असख्याता लोकमांही रे ॥ कर्म पर्यायेरे जन्म मरणे फरसीये ॥ एम चउन्नेदे धर्मध्यान तप ध्यायारे ॥ शुक्ल ध्यानरे परसग त्यागी किजीये ॥ अज्ञान० ॥ अव्रत० ॥ प्रमाद० ॥ मोह० ॥ ३ ॥ पेहेले पाये स्वपर विचार न्निन्न न्निन्नरे ॥ वहेंची जूदा जूदारे जीव पुद्गल दोय कीजीये ॥ मोहमल्ल ज्हां आत्म प्रदेशथी टाळीरे ॥ ध्यान अग्निये लगाडीरे यथाख्यात लीजीये ॥ अज्ञान० ॥ अव्रत० ॥ प्रमाद० ॥ मोह० ॥ ४ ॥ वीजे पाये अन्नेद ज्ञान एकत्वरे ॥ परअनुन्नवरे वाण वार मेथी टाळीए ॥ ज्ञानावरणी दर्शनावर्णी अतरायरे ॥ तेने

हणतां रे केवळज्ञान नीहाळीये ॥ अज्ञान० ॥ अव्रत० ॥ प्रमाद० ॥ मोह० ॥ ५ ॥ त्रीजो पायो तेरमा गाणना अतेरे ॥ आयुपने ठेमेरे योग रोध किजीये ॥ चोथे पाये सही अयोगी अकर्मी रे ॥ क्रियाने कायानोरे उच्छेद करी सिजीये ॥ अज्ञानने० ॥ अव्रत० ॥ प्रमाद० ॥ मोह० ॥ ६ ॥ धर्म शुक्ल ध्यान चउ चउ पाया दाख्यारे ॥ ते अभ्नितररे पांचमो तप भ्नेद कीजीये ॥ ठ्ठो तप भ्नेद कायोत्सर्ग कहीजेरे ॥ ते भ्नाव आवी गयोरे, कायानो उच्छेद तीहां लीजीये ॥ अज्ञानने० ॥ अव्रत० ॥ प्रमाद० ॥ मोह० ॥ ७ ॥ वाकी रह्या दशभ्नेद तपना ते समजीरे, अंतर्दृष्टियेरे कर्म वळे एम कीजीये॥ ज्ञान शीतळ कहे ध्यान तपने आराधीरे॥ अकुरय अनुभ्नवरे योगे सिद्ध पद लीजीये ॥ अज्ञानने० ॥ अव्रत० ॥ प्रमाद० ॥ मोह० ॥ ८ ॥

इति तप पद पूजा ॥ ९ मी ॥

कळश.

॥ ढाळ ॥

घणु जीव तु जीव जिनराज जीवो घणु ॥ ए देशी ॥

अथवा ॥ करुखानी देशी ॥

नवपद पूजीये मुक्ति पथ लीजीये, देवगुरु धर्म त्रण तत्व जाणी ॥ शुद्ध श्रद्धा करी मिथ्यात्व परहरी, समकित सुमति वेहु लीयो ताणी ॥ नवपद पूजीये० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ परथम अरिहंत पदतणी पूजना, शत्रु द्रव्यभ्नाव दोय हणता थावे ॥ भ्नावथी रागद्वेप अशुद्ध परिणतिये, द्रव्यथी गुणघाति चउक्षय पावे ॥ नव० ॥ २ ॥ वीजी

सिद्ध पदतणी कहु हवे पूजना, अष्ट कर्मक्षयथी अष्ट गुण पावे॥ पुद्गल रहित ए आत्मरूपे सदा, अनत गुण वृत्ति अक्रुत्य थावे ॥ नव० ॥ ३ ॥ आचार्य उपाध्याय साधु सर्व पूजीये, कचन कामिनिथी रहित थइये सावद्य त्याग त्रि-करण त्रिकरण करी, जाव जीव लगे निस्पृही रहीये ॥ नव० ॥ ४ ॥ दर्शननाण चरण तप गुण पूजना, अतरकरणे उपयोगी रहीए ॥ तेथी तीहा पामीए स्वरूपे विशुद्धता, शक्ति सोव्यक्ति परगट लहीये ॥ नव० ॥ ५ ॥ एम नव पदतणी पूजना घट विषे, गुण प्रगटे सो भाव पूजा कहीए॥ तेह ज्ञाने करी पूजा मे वर्णवी, उपयोगे पूजी शीवसुख लहीए ॥ नव० ॥ ६ ॥ उंगणीसें बावन असाड वुवादजी, कृष्ण पक्ष वार गुरुए गाइ ॥ अनुभव पदतणा स्थिर विचारथी, रमण रचना करी पूर्णताइ ॥ नव० ॥ ७ ॥ म-नोरथ माहरो सफळ हुवो आज ए, आनद उलटभर हर्ष वाध्यो ॥ नवपद आतमा आत्म भावे पूजना, ए विण कार्य नहीं कोइए साध्यो ॥ नव० ॥ ८ ॥ एम भवि पूजीये भक्ति घणी कीजीये, वचन सत्य विवेके उचारीयेए ॥ ज्ञान शीतल करी उपयोग शुद्ध ग्रही, व्यक्ति लही शीव पथ चालीए ॥ नव० ॥ ए ॥

॥ कळश ॥

श्रुतज्ञान अनुभव ॥ ए देशी ॥

उपशम जळे मळ शान्त करीए उपयोग चदन पूजीए ॥
वळी ज्ञान पुष्पज धूप श्रद्धा, दिप अनुभव किजीए ॥

वैराग अक्षत ज्ञान गर्भित, दृष्टि सम नैवेद्य ए ॥
एम ज्ञान शीतळ भाव पूजा, फळ कह्युं संतोष ए ॥१॥
इति नवपदजीनी पूजा संपूर्ण.

अथ आरति लिख्यते.

॥ अपछरा करती आरती जीन आगे ॥ ए देशी ॥

आरति करु जीनराजनी सहज भावे, ज्ञान दीप ज्योति प्रगटावे ॥ घट अतर प्रकाश थावे, भागे तिमिरांधकार ॥ आरति करुं० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ जीनभाव संभाव ए ज्ञानयोग, टळे रागद्वेष भाव रोग ॥ वसे शुद्ध परिणति सयोग, क्षीण मोह वीतराग ॥ आरति० ॥ २ ॥ उतरवुं मुळरूपमां गुणे चढवुं, शुद्ध उपयोग रमण आदरवुं ॥ गुणपर्याय अनुभव करवु, लाधे केवळ ज्ञान ॥ आरति० ॥ ३ ॥ भाव जीन अरिहतजी ए प्यारो, घाति कर्महणी हुवो न्यारो ॥ गण तेरसु तीहां विचारो, अंते योगनो रोध ॥ आरति० ॥ ४ ॥ धर्म अनतो व्यक्तिए भिन्न वर्त्ते, सोही भाव नाटक नाच करते ॥ हुवा सिद्ध लोकंते ठरते, भांगे सादि अनत ॥ आरति० ॥ ५ ॥ सहजस्वभावे जीनजी सम थावुं, एम उलट मनमां लावुं ॥ ज्ञान शीतळ आरति गावु, तजी पुद्गलिक भाव ॥ आरति० ॥६॥

सपूर्ण

अथ मगळ दीवो लीख्यते.

ज्ञान प्रकाशसो मगलिक दीवो, उतारो आरति समकिती जीवो ॥ मूर्छा उतारो पुद्गल केरी, अप मगळिक

ए नहीं न्नलेरी ॥ ज्ञान० ॥ ए आकणी ॥ १ ॥ मगळीक जीव स्वरूपोपयोगी, न्नाव निक्षेप निजन्नाव सयोगी ॥ अरूपी शुद्ध परिणति त्या कहीए, ध्याता ध्येय ध्यान एकता लहए ॥ ज्ञा० ॥ २ ॥ रागद्वेष अपमगलिक हणीआ॥ गुणघाति टळया जे चउ रणीया॥ मगळीक केवळज्ञान सो दीवो, परमानद अनत रस पीवो ॥ ज्ञान० ॥ ३ ॥ एही मगळिक सिद्ध पद आपे, आयुष्य अते अघाति कापे, कार्मण कर्म मनुष्यन्नव छोमी, सिद्ध गतिये वर्या शीववधु जोमी ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥ अव्याबाध अनंत सुख सगी, पर्याय धर्मे वृति एकगी ॥ उत्कृष्ट मगळिक सिद्धने कहीए, ज्ञान शीतळ ए न्नावसो ग्रहीए ॥ ज्ञान० ॥ ५ ॥ सपूर्ण ॥

॥ अथ अध्यात्म चोवीशी लिख्यते ॥

प्रथम स्तवन.

शत्रुजय दीठो रे ॥ ए देशी ॥

युगला धर्म निवारण स्वामी, शीवपद साधन कामी रे ॥ हित चितक परमेश्वर प्यारो, ऋषन्नदेव शीरनामी रे ॥ देवाधि देव पूजोरे, पूज्या पूज्या परमानद ॥ न्नविक तुमे पूजो रे ॥ए शीव सुख केरो कद ॥ न्नविक तुमे पूजो रे ॥ ए आकणी ॥ १ ॥ प्रथम नरेसर प्रथम मुनीसर, प्रथम केवळ ज्ञानी रे ॥ त्रिगडे बेसी उपदेश देवे, नहीं कोइ एह सम दानी रे ॥ देवाधि० ॥ २ ॥ ए दान ग्रहे सो ज्ञाता, सघ चतुर्विध कहीएरे॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका, गणधर मुख्य पद लहीए रे ॥ देवाधि० ॥ ३ ॥

समकित मूळ आज्ञायुक्त तीरथ, स्थापे आदि जिणंदरे ॥ तीहां सूत्र दुवादश रचता, लब्धिये गणधर मुनिंद रे ॥ ॥ देवाधि० ॥ ४ ॥ भव्य जीवने ए महा उपगारी, मिथ्यात्व टाळण हारी रे ॥ ज्ञानशीतल करी समकित पामे, सोही सिद्ध अधिकारी रे ॥ देवाधि० ॥ ५ ॥ संपूर्ण

स्तवन बीजु.

॥ देशी ललनानी ॥

अजित जिनपति देशना, सुणतां प्रगटे आनंद ॥ ॥ ललना ॥ जीव पुद्गलनी भिन्नता, दाखे दुफार जिणंद ललना ॥ अजित जिनपति देशना ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ जीवसत्ताए सिद्ध अनादिनो, ए क्षायक लब्धिवंत ॥ ललना ॥ सग्रह नयना पक्षथी, अव्यक्तव्य गुण अनत ॥ ॥ ललना ॥ अजीत० ॥ २ ॥ एम छती पर्याये जाणीए, जिम बीजमां रह्यु वृक्ष ॥ ललना ॥ वळी काष्ट मांही अग्नि रही, तेम काया व्यापक जीव शुद्ध लक्ष ॥ ललना अजित जिन० ॥ ३ ॥ ए धर्म वस्तुगत उळखो, करो श्रद्धा जीव पुदगल भिन्न ॥ ललना ॥ जीव गुण रागी थइ ग्रहो, तेहने अनुभवो तद्गत थइ लिन्न ॥ ललना ॥ अजित०॥ ॥ ४ ॥ तदगत भावे ग्रथी भेदीने, पामो सम्यक दर्शन ज्ञान ॥ ललना ॥ शुद्धातम अनुभव करो, मळे नीज गुण लब्धि दान ॥ ललना ॥ अजित० ॥ ५ ॥ त्यां गुण गण भिन्न व्यक्तव्यता, ए लाभ लब्धि कहेवाय ॥ ललना ॥ भोग लब्धि गुणगत त्यां लहो, भोग गुण निप्पन्न समे

थाय ललना ॥ अजि० ॥ ६ ॥ उपभोग वारंवार भोगवे, बीजा समयथी यावत् चिरकाळ ॥ ललना ॥ वच्चे विरह-काळ आवे नहीं, उपभोग लब्धिमांहे रसाळ ॥ ललना ॥ ॥अजित०७॥ वीर्य स्फुरणा गुण स्वभावे लहे, गुणगुणगत उपयोग भिन्न ॥ ललना ॥ समे समे फुरणा अभिनव पणे, वीर्यलब्धि माही सदा लिन्न ॥ ललना ॥अजित॥८॥ ए लब्धि पाच क्षायक भाववनी, भवि प्रकट करो व्यक्ति-भाव ॥ ललना ॥ लहो सामर्थ्य पर्याय सिद्धगति, त्यां घाति अघाति कर्म अभाव ॥ ललना ॥ अजित० ॥ ९ ॥ हेतुक्षय उपशम चोथा ठाणथी, क्षिण मोह ठाण पर्यंत ॥ ललना ॥ घाति चउकर्म तेहथी खपे, लहे केवळनाण महा संत ॥ ललना ॥ अजित० ॥ १० ॥ जीव सत्ताये लब्धि रही पिरूपणे, ज्ञान नीतळ ए नीरसुख कद ॥ ल-लना॥ तेने रोपो अभिनेव अवसरे, सींचो ज्ञान रस वृद्धिये आणद ललना ॥ अजित० ॥ ११ ॥ सपूर्ण

स्तवन श्रीजु

॥ चद्रप्रभु मुख चद्र, सखी मुने देखण दे ॥ ए देशी ॥

श्री सभव स्वभाव रमण ॥ सखी देखण दे ॥ उपयोग अनु-भव ज्ञान ॥ सखी मुने देखणदे ॥ क्षायक लब्धि अनत सदा सखी० ॥ गुण गुण भिन्न व्यक्ति विज्ञान सखी० ॥१॥ जीवसत्ता निर्मळ सदा ॥सखी०॥ अनादि अनत ए सिद्ध ॥ सखी० ॥ आवरण लाधे नहीं कदा ॥ सखी० ॥ ए निर्लेप वस्तु रुद्ध ॥ सखी० २ ॥ मिथ्यात्व भावे न देखीयो ॥ सखी० ॥ अ-

ज्ञाने नही न्नास ॥ सखी० ॥ मोह विकलताए आधळो ॥ सखी० ॥ अहममत्व न्नर्यो घणो त्रास ॥ सखी० ॥ ३ ॥ दर्शनावरणी रुठ्यो घणु ॥ सखी० ॥ करे चक्षुअचक्षु अन्नाव ॥ सखी० ॥ काळ अनत निगोदमां ॥ सखी० ॥ कारण नही सामग्री दाव ॥ सखी० ॥ ४ ॥ त्रस थावरमां न दे-खीयो ॥ सखी० ॥ दीठो न चउगति मांही ॥ सखी० ॥ ज्ञान सम्यक विण जरु थयो ॥ सखी० ॥ रागद्वेषनी वृद्धि त्यांही ॥ सखी० ॥ ५ ॥ क्लेशानदी आतमा ॥ सखी देखणदे ॥ वांधे कर्म अनत ॥ सखी० ॥ संतापे उदयिक अवसरे ॥ सखी० ॥ इष्ट हाणि महा डुखवत ॥ सखी० ॥ ६ ॥ अ-तराय नमीर्ठ अनादिनो ॥ सखी० ॥ तेथी पाम्यो न सन्नव न्नूप ॥ सखी० ॥ काळ लब्धि आवी डुकमी ॥ सखी० ॥ न्नाव लब्धि प्रगट नीजरूप ॥ सखी० ॥७॥ ड्रव्य कर्म न्ना-ग्योतदा ॥ सखी० ॥ न्नाव कर्मनो अन्नाव ॥ सखी० ॥ नो कर्म सग परहर्यो ॥ सखी० ॥ हुवा सिद्ध निरजन राव ॥ सखी० ॥ ७ ॥ ज्ञान शीतळ करी पामीए ॥ सखी० ॥ मुक्ति सुखनुं धाम ॥ सखी० ॥ सादि अनत स्थिति त्यां न्नली ॥ सखी० ॥ तेने पामु ए ठे मुज काम ॥ सखी० ॥ए॥

संपूर्ण

स्तवन चोथु.

॥ सुगुण सनेहारे कबुये न वीसरे ॥ ए देशी ॥

अन्निनदन जिन आनंद पूरणो, न्नाव अध्यातम पा-

मीजी ॥ द्वितिय न्नाव उन्मूलन ताह्रे, अचळ अवाधित रामीजी॥ अन्निनदन जिन आनद पूरणो॥ ए आंकणी ॥ गाथा॥१॥ ज्ञानानदी स्वन्नावे पामीया, गुणी पर्याय अनतजी॥ निज निज व्यक्तिरे आणद न्निन्नता, आणद ल्हेर अनतजी ॥ अन्निनं० ॥ २ ॥ निर्मळ व्यक्तिरे सपत्ति ताह्रे, मारे तुज सम शक्तिजी॥ समळ उपाधि न्नयों मुज आतमा, तेथी न प्रगटे व्यक्तिजी ॥ अन्निनंदन० ॥ ३ ॥ तेथी तु सिद्ध सेवक हु ताहरो, तुज गुणरगी अन्नगजी ॥ तुज गुणज्ञान ध्यान मुज मन वस्यो, रुचे नहीं अन्य सगजी ॥ अन्नि० ॥ ४ ॥ चिन्ह मूर्त्ति अनरमां थापीए, सवर जळ करीए पखाळजी ॥ अनुन्नव रमण परमपद पूजतां, पामे सिद्धपद लालजी ॥ अन्निनद० ॥ ५ ॥ नाचो राचो निरजन मदिर स्तुति स्वरूप उपयोगजी ॥ तेथी ज्ञान शीतळ थाय आपणुं, ए पूरण आणंद योगजी ॥ अन्निनद० ॥ ६ ॥ संपूर्ण.

स्तवन पाचमु ॥

॥ राग रामग्री ॥ कऱखो ॥

सुमति शुद्ध चेतना, मूळ रूप देखना, तेहशु सगपण जोमना ए ॥ मुजमन ते वसी तेनो हु वहु रसी, स्वामी एणे नाथ तुमने कीधा ए ॥ सुमति शुद्ध चेतना० ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ कुमति रीसाइ गइ दूख दिन लइ गइ, नमतर न्नाग्यो अनादिनो ए ॥ सुख सपत्तिन्नयी वृद्धि सनाननी, न्नोग न्नोगी हुउं आतमाए ॥ सुमती० ॥२॥

सदीव स्वामी सेवती चित उत्साहथी, क्षीण न अळगी थाये कदीए ॥ परोणापरे पूजती वचन न लोपती, अमृत रसोइ जमाभती ए ॥ सुमति० ॥ ३ ॥ भूख भागी गइ, तृप्ति पूरण थइ, वीर्य अनत वाध्यो तीहां ए ॥ रंगभर रीझथी सेवे शुद्ध चेतना, सादि अनत भंग सिद्धमां ए ॥ सुमति० ॥ ४ ॥ एम अनुभव करी सुमति शोधी लीइ, रूप जोइने रीझयो घणु ए ॥ गुण तस अति घणा वचने आवे नहीं, ज्ञान शीतळ करी जाणीए ए ॥ सुमति० ॥५॥

सपूर्ण

स्तवन ॥ ६ ठु ॥

॥ देशी उपरनी ॥

पद्म द्रह भर्यो अमृत जळ अति घणो, चारित्र रायना देशमां ए ॥ तेह मीठो घणो शीतळ शुद्ध वासना, रसकुपीका तस नाम छे ए ॥ पद्म द्रह भर्यो० ॥ ए आंकणी ॥ ॥ गाथा ॥ १ ॥ ते द्रहमां नाहीने कर्म मळ काढीउं, निरमळ चेतना त्यां थइए ॥ पद्म प्रभ तस नाम जग वीस्तर्यु, परमपूज्य तीर्थंकरु ए ॥ पद्म० ॥ २ ॥ तेह उपदेश भव्य जीवने आपता, तुज मुज एक देशी सहीए ॥ आपणो राय चारित्र नाम निर्मळु ॥ हित वछक सर्व जीवनो ए ॥ पद्म० ॥ ३ ॥ तेने तुमे कीम तजो मोह रायने भजो, परघर पोतीकु मानता ए ॥ तेणे कबजे कर्या चोर जाणी करी अनर्गळ ऋद्धि पाभी लीए ए ॥ प्रद्म० ॥ ४ निरधन त्यां थया सर्व ससारीउं, चउगति मुलकमां फेरवे ए ॥ दुःख

आतमज्ञानी सोज्ञागी रे ॥ सुपार्श्व० ॥ २ ॥ जीव पुद्गल व्हेंचण करी, उपयोग स्वरूपमां कीधोरे ॥ चिदानंद ज्योति जगमगे, परमानद रस पीधोर ॥ सुपार्श्व० ॥ ३ ॥ अप्रमत्त आतम हुउं, क्षपकश्रेणी तीहां मांमेरे ॥ सुक्ल प्रथम पगथालीए, मोह प्रकृति सर्व ठांमेर ॥ शुपार्श्व० ॥ ४ ॥ समज्ञावे चढती कळा, शुद्ध परिणतिमां आवेरे ॥ वीतराग गण अते बारमे, त्रण कर्म क्षय थावेरे ॥ सुपार्श्व० ॥ ५ ॥ अनंत चतुष्टयी पामीया, त्रिगडुं देव बनावेरे ॥ पर्षदा बार मळे तीहां, देशना जीनजी सुणावेर ॥ सुपार्श्व० ॥ ६ ॥ उपजे विणसे थीर रहे, एतो वस्तु विचार रे ॥ जे मरियादा वस्तुकी, सो सत्ता निरधार रे ॥ सुपार्श्व० ॥ ७ ॥ उपजवु वीणसवुं ते सही, पर्याय धर्म सद्भावरे ॥ स्थीरपणु तीहां द्रव्यनु, एम वर्त्ते लक्षण न अज्ञावरे ॥ सुपार्श्व० ॥ ८ ॥ ते वस्तु पट् ज्ञेदे जाणीये, गुण पर्याय सयुक्तरे ॥ हेय जाणी अजीव पांच परहरो, ग्रहो उपादेय चेतन निज युक्तरे॥ ॥ सुपार्श्व ॥ ९ ॥ एम सुणी केइ समकित पामीया, केइक देश विरति थावेरे केइक महाव्रत उचरे, एम लाज्ञ बहु पावेरे ॥ सुपार्श्व० ॥ १० ॥ एम ज्ञव्य जीवने तारता, करता बहु उपकाररे ॥ आयु पूर्ण करी सिद्धि वर्या, ज्ञान शीतळ जीन अणगाररे ॥ सुपार्श्व० ॥ ११ ॥ सपूर्ण ॥

स्तवन ॥ ८ मु ॥

गिरुआरे गुण तुम तणा ॥ ए देशी ॥

चंद्र प्रज्ञ जिन देशना, सुणतां शंका ज्ञाजे रे ॥ नि-

शकित थाय आतमा, समकित शुद्ध विराजेर ॥ चद्र प्रज्ञ जिन देशना ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ श्रद्धा कारण सुणो देशना, स्थीर करी मन वच कायारे ॥ मनन करो चिंतवन करो, न ज्रूलो वचन गुरु रायारे ॥ चद्र० ॥ २ ॥ जीवस्वरूपने ऊळखो, पुद्गलमां ढकाणो रे ॥ चिंतवन शक्ति वीस्तरे, ए कारण मुख्य वखाणो रे ॥ चद्र० ॥ ३ ॥ यथा प्रवृत्ति प्रमुख सही, त्रण करण करी आवेरे ॥ अतर करणे अनुज्रवे, जीव पुद्गल जिन्न ज्रावेरे ॥ चद्र० ॥ ४ ॥ ग्रंथि ज्रेद करे ते समे, वीर्य वृद्धि जोगरे ॥ ज्ञान ध्यान उपयोगशु, हणो मिथ्यात्व ज्राव रोग रे ॥ चद्र० ॥ ५ ॥ वीज चद्र सम आतमा, शुद्ध हुई नीज रूपरे ॥ प्रकाश घट अंतर करे, चढती कळाए थाशे ज्रूपरे ॥ चद्र० ॥ ६ ॥ एही चंद्र प्रज्ञ सेवीए, अतर मदिर स्थापी रे ॥ शीव सुख आपे ततक्षणे, ज्ञान शीतळ घट व्यापी रे ॥ चद्र० ॥ ७ ॥ सपूर्ण ॥

॥ स्तवन ॥ ९ मु ॥

कपुर हुवे अति ऊजळुं जी ॥ ए देशी ॥

सुबुद्धि नाथ नवमा प्रज्रुजी, कांति फटक समान ॥ एक सत धनुष्य प्रमाण छे जी, काया वहु बळवान ॥ सोज्रागी जीन तुज गुणनो नहीं पार ॥ शीव सुखनो दातार सोज्रागीजीन, मारे अवलंबन आधार सोज्रागीजीन, तुज गुणनो नहीं पार ॥ ए आकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ सुबुद्धि वर्णन करुजी, ज्ञान श्री तस नाम ॥ ते छमे नीज देहनेजी, ग्रहे नाथ आतमराम ॥ सोज्रागीजीन० ॥ २ ॥ सुबुद्धिनाथ

तस कीजीएजी, घट अंतर रहे वास ॥ उपयोगे रमे रंगशुं
जी, तोमे कर्म वंधन पास ॥ सोन्नागी० ॥ ३ ॥ ऋद्धि अ-
नती न्नोगवेजी, खरचे उदयिक न्नाव ॥ तिम तिम तेज
वधे घणुंजी, वेग त्यां समन्नाव नाव ॥ सोन्ना० ॥ ४ ॥
संसार सागर उतर्याजी, पहोच्या शीवपुर मांही ॥ सिद्ध
वधुए वधावीयाजी, दीधो बहु आदर त्यांही ॥ सोन्ना०॥
॥ ५ ॥ आणंद क्रीमा त्यां करेजी, वेशी एक रुपधार ॥
सिद्ध वधुने ज्ञान श्रीजी, न्नोगी चेतन सार ॥ सोन्नागी०॥
॥ ६ ॥ अवाधित सुख न्नोगवेजी, सादि अनतो काल, ज्ञान
शीतळ चित्त तीहां वस्योजी, जावुं देठ एक फाळ ॥ सो-
न्ना० ॥ ७ ॥ सपूर्ण ॥

॥ स्तवन ॥ १० मु ॥

सेवक किम अवगणीए हो मल्लिजीन ॥ ए देशी ॥

शीतल जिन शितल गुण ज्ञानी, निजपर सौने जाणे॥
निज रूपे शीतलता वाधे, त्यां परने कुण आणे ॥ शीतल-
जीन ए अव शोन्ना सारी ॥ मुज मनने अति प्यारी ॥
शीतलजीन ए अव शोन्ना सारी ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥
जीव अनादि सिद्ध स्वरूपी, शक्ति न्नावे लाधे ॥ अव्यावाध
सुखनो न्नोगी, परसंगे दुख वाधे ॥ शीतल० ॥ २ ॥ पर-
सग तेही अग्नि जाणो, चेतन गुणने वाळे ॥ दश प्राण ते
पुद्गल कहीए, तेमां चेतन न्नाळे ॥ शीतळ० ॥ ३ ॥ ए
परसग तुटे सुख आवे, आवे उपयोग घरमां, अनुन्नव मित्र
मळे तीहां वेगे, लावे केवळज्ञान पळमां ॥ शीतळ ॥ ४ ॥

जाणीए ॥ त्रीजी नयोगर्भित आवे, तेमा हठ नवी ताणीए ॥३॥ एम सप्तनये रे वस्तु धर्म तुमे वर्या, तेथी धर्मनाथरे अमे तमने कहीए खरा ॥ तुमे अहनीश रे मुज घट अंतर आवजो, मुज चेतना रे तुम संगे जगावजो ॥ त्रुटक ॥ एम कीधु धर्मनाथे, आव्या अनुभव मंदिरे ॥ पण मुजने मलीन देखी, बेठा नहीं कइ चित्त थिरे ॥ तीहा मुजने प्रमोद काजे, आणद हरख वधामणां ॥ ज्ञान शीतळ करे विनति, वळी दर्शन देजो तुम तणा ॥ ४ ॥ संपूर्ण ॥

स्तवन ॥ १६ मु ॥

शांति जिणेसर केशर अर्चित जगधणी रे ॥

के अर्चित जगधणी रे ॥ ए देशी ॥

शाति जिणेसर साहेब मुज मनमा वस्यो रे ॥ के मुज मनमा वस्यो र ॥ भाव रोगनो टाळण अवरन तुज जिस्यो रे ॥ के अवर० ॥ रोग सोग सताप क्लेश निवारीयो रे ॥ क्लेश० ॥ थइ शाति टल्यो रोग निरोगी तुं भाळीउं रे ॥ निरोगी तु० ॥ १ ॥ रूप अनतु साहिब दीसे ताहरु रे ॥ के दीसे ताहरु रे ॥ तुज मुख पुनमचद हृदय हीसे माहरु रे ॥ हृदय० ॥ कचन वरणी काया कचन सम दीपती रे ॥ कचन० ॥ सेवा करता लाभ घणो मुज आपती रे ॥ घणो० ॥ २ ॥ जळचदन वरधूप दीपशु पूजीए रे ॥ दीपशु पूजीए रे ॥ कुसुम अक्षत नैवेद्यने फळ धरी बुजीये रे ॥ फळ० ॥ इत्यादिक शुद्ध द्रव्य शु पूजो भवि जनो रे ॥ के पूजो० ॥ निमित उपादान समज्या कार्य करे सवि जनो रे ॥ कार्य करे० ॥ ३ ॥ तुज गुण गाता अतर रग वधे मुने रे

॥ के रंग० ॥ तु उपगारी पूज्य तार कहुंबु तुने रे ॥तार०॥ तुजवीण दुजो देव न दीसे दयाळुर्ज रे ॥ न दीसे० ॥ करुणासिंधु मनमोहन तुही, मायाळुर्ज रे ॥ के तुही० ॥४॥ तुज नक्ति शुद्ध युक्ति मुक्तिने खेंचशेरे ॥ मुक्तिने० ॥ जीव पुद्गल दोय निन्न जाति नेद व्हेंचशे रे ॥ जाति० ॥ नेद ज्ञाननु ए काम बीजाथी न नीपजे रे ॥ बीजाथी० ॥ आतमरुप अनत महत तीहां नजे रे ॥ महत० ॥ ५ ॥ अनंतर आतम सिजे त्यां वार लागे नही रे ॥ त्यां वार० ॥ अनुनव मित्र चेतन शुद्ध दोय मिळे तहीं रे ॥ के दोय० आणद लहेर अनग रग तीहां वधे रे ॥ के रंग० ॥ ज्ञान शीतळनु ए काज आज पूरण सधे रे ॥ के आ० ॥ ६ ॥ ॥ सपूर्ण ॥

स्तवन ॥ १७ मु ॥

॥ मरकलर्मानी देशी ॥

कथुनाथ जिन पूजोजी ए प्रजु गुण नीलो ॥ डुनिआमां देव नहीं दुजोजी ए प्रजु गुण नीलो ॥ द्रव्य नाव दोय नेदेजी ॥ ए प्रजु० ॥ तेमां नावपूजा अखेदेजी ॥ ए० ॥ १ ॥ द्रव्य पूजाए द्रव्य उपयोगजी ॥ ए० ॥ शुद्ध चेतन नहीं संयोगजी ॥ ए० ॥ नाव पूजाये शुद्ध उपयोगजी ॥ ए० ॥ ज्हां आतमस्वरूप थयो नोगजी ॥ ए० ॥ २ ॥ द्रव्य पूजा ते चार नय शुद्धजी ॥ ए० ॥ नाव पूजाए शब्दमां बुद्धिजी ॥ ए० ॥ द्रव्य पूजा आरोपित दाखीजी ॥ ए० ॥ नावपूजा अणारोप नाखीजी ॥ ए० ॥ ३ ॥ एम

पूजा विवेके करीएजी ॥ ए० ॥ निज पर भिन्नता बुद्धि धरियेजी ॥ ए० ॥ शब्दयोगे सर्व नय सत्यजी ॥ ए० ॥ नहीं तो चउ कहीए असत्यजी ॥ ए० ॥ ४ ॥ शब्दादि तरण नय भाख्याजी ॥ ए० ॥ एतो आतमस्वरुपमा राख्याजी ॥ ए० ॥ एना संगे नैगमादि भळताजी ॥ ए० ॥ नहीं तो पुद्‌गलमां ठरता, ॥ ए प्रभु० ॥ ५ ॥ चोथी नय सुधी मिथ्यात्व वाइयोजी ॥ ए० ॥ शब्दमां समकित रुको खाइयोजी ॥ ए० ॥ मुक्ति मारग शब्द नयथीजी ॥ ए० ॥ साधन ए विण होय कहाथीजी ॥ ए० ॥ ६ ॥ स्थिरादृष्टि शब्द नये साधेजी ॥ए०॥ चारे दृष्टिमां मिथ्यात्व वाधजी॥ए० भावशत्रुमां मिथ्यात्व मोटोजीए० एथी जीव ससारी छोटोजी ॥ए०॥७॥ शरधा वीपरित दुख दाताजी ॥ए०॥ एना अभावे जीवने शाताजी ॥ए०॥ एम ज्ञान शीतळनी वाणीजी ॥ए०॥ गुरु वचन श्रवण करी जाणीजी ॥ ए० ॥ ८ ॥ सपूर्ण ॥.

॥ स्तवन ॥ १८ मु ॥

॥ राग बंगाली ॥

अरनाथजीनजी अढारमा देव, अतरयोगे मिलवा कहं देव ॥ साहेब सांभळो ॥ हु तुमने चाहु दीनरात, न गमे मुजने बीजाथी वात ॥ साहेब साम्भळो ॥ १ ॥ तुज वचन सुणवानो प्यार, तुम सगे स्थिरता करवा हु त्यार ॥ सा० ॥ तुम पासे मारे करवो रहेवास, तु दूध बीजी सघळी छाश ॥ सा० ॥ २ ॥ तुमे मळो त्यां मुने परमोद, रीझ मोजथी करीए विनोद ॥ सा० ॥ तुम सगे

मुज चेतन शुद्ध, तुज कृपाए थइये बुद्ध ॥ सा० ॥ ३ ॥ तुज गुणनो मुज रग अन्नग, तुज मुज वेळनु करवुं एकग ॥ सा० ॥ तुजवीण वीजुं न गमे वाज्य, संसार सागर तरवा तुं जहाज ॥ सा० ॥ ४ ॥ सुणी विनति मीव्या अरनाथ, सत्ता शक्तिये त्यां त्रिज्ञुवन नाथ ॥ सा० ॥ वात करे तुज मुज रूप एक, शक्तिमां नही कोइ अन्यनो न्नेग ॥ सा० ॥ ५ ॥ व्यक्तिमां अंतर पमीउं सार, निर्मळ समळनो न्नेद विचार ॥ सा० ॥ ज्ञान शीतळ श्रद्धा एस धार, स्थिति पाके तुं सिद्ध वधु न्नरथार ॥ सा० ॥ ६ ॥

संपूर्ण.

॥ स्तवन ॥ १९ मु ॥

॥ दीठी हो प्रज्ञु ॥ ए देशी ॥

मूरती हो प्रज्ञु मूरती मल्लि जिणद, ताहरी हो प्रज्ञु ताहरी अनंत गुणे न्नरीजी॥ केवळ हो प्रज्ञु केवळ ज्ञान-दर्शन, चरण हो प्रज्ञु चरण यथाख्यात मय ठरीजी ॥ १ ॥ दान लान्न हो प्रज्ञु दान लान्न आत्मा अन्नेद, न्नोग हो प्रज्ञु न्नोग उपन्नोग स्वगुण महीजी ॥ वीर्य हो प्रज्ञु वीर्य स्फुरणा अनंत, अप्रयास हो प्रज्ञु अप्रयास अन्य सहाय नहीजी ॥ २ ॥ क्षायक हो प्रज्ञु क्षायक लब्धि ए पांच सादी हो प्रज्ञु सादि अनंत न्नांगे कहीजी ॥ अव्रतक हो प्रज्ञु अव्रतक कदीए न होय ॥ गुण सव्वे हो प्रज्ञु गुण सव्वे त्रिविध परिणती ग्रहीजी ॥ ३ ॥ व्यक्ति हो प्रज्ञु व्यक्ति न्निन्न न्नेद अनंत ॥ प्रगटे हो प्रज्ञु प्रगटे तेथी

परमानंदताजी ॥ सुख हो प्रभु सुख ए अनंत अव्याबाध॥ लहरी हो प्रभु लहरी विलास आस्वादताजी ॥ ४॥ अक्षय हो प्रभु अक्षय स्थितिये गति सिद्ध ॥ अरूपी हो प्रभु अरूपी वरणादि नही तीहांजी ॥ अगुरु हो प्रभु अगुरु लघु चार भेद ॥ हाणी हो प्रभु हाणी वृद्धि गुण वृत्ति तीहाजी ॥ ५ ॥ इत्यादि हो प्रभु इत्यादि गुण अनंत, धर्म हो प्रभु धर्म गुणगत स्वभावएजी ॥ गुण ते हो प्रभु गुण ते पर्याय समुदाय ॥ भिन्न हो प्रभु भिन्न कहीए हेतु उपदेशमाजी ॥६॥ वस्तुये हो प्रभु वस्तुए द्रव्य पर्याय॥ गुणनय हो प्रभु गुणनय नही सिद्धांतमाजी ॥ प्रदेश हो प्रभु प्रदेश असंख्याता भाग्य॥ तस घन हो प्रभु तस घन निवरु सिद्धमांजी ॥ ७ ॥ तेहीज हो प्रभु तेही मूरती मल्लि जिणंद ॥ उगणीस हो प्रभु उगणीसमा तीरथपतिजी ॥ ज्ञान हो प्रभु ज्ञान शीतल शुद्धभाव ॥ पूजार्थी हो प्रभु पूजार्थी भवि लहे सिद्धगतिजी ॥ ८ ॥

सपूर्ण

॥ स्तवन ॥ २० मु ॥

॥ सांभळजो मुनिसयम रागे ॥ ए देशी ॥

मुनिसुव्रत जगत गुरुराया, शुद्ध नयचित्त ठरायारे ॥ शुद्ध पर्याय रमण उपयोगे, ध्यान तुरग नचायारे ॥ मुनिसुव्रत जगत गुरुराया० ॥ ए आकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ निज सत्ता धर्म प्रगट पाया, व्यक्ति गुण पर्यायारे॥ सेहेज स्वभावे क्षायक लब्धि, अचळ अनंती कहायारे ॥मुनि०॥

॥ २ ॥ तेमां नवभेदे इहां दाखु, समकित परथम भाखु रे॥ चरण यथाख्यात वीतराग भावे, शुद्ध परिणतीए राखुरे ॥ मुनि० ॥ ३ ॥ केवळ ज्ञानने केवळ दर्शन, विशेष सामान्य उपयोगरे ॥ समय अतंर वे सिद्धाते मान्या, नयवादे एकविशेषो पयोगरे ॥ मु० ॥४॥ दान लाभ भोग उपभोग वीर्य, दाखुं तस वृत्तांतरे ॥ दान देतो निज लेतो पोते, सहाय गुण गुणने करंतरे ॥ मु० ॥ ५ ॥ भोग स्वपर्याय भोगवे, उपभोग स्वगुण वृत्तिरे ॥ स्वपर्याय गुण वृत्ति सहायी, वीर्य स्फुरणा अनतीरे ॥ मु० ॥ ६ ॥ ए पांच लब्धि मुज सत्ताये, अव्यक्तव्य अनादिरे ॥ ते व्यक्तव्य पणे करी आपो, तो ज्ञान शीतळ सिद्ध आदिरे ॥ मु० ॥ ॥ ७ ॥ संपूर्ण.

स्तवन ॥ २१ मु ॥

ऋषभनो वश रयणायरो ॥ ए देशी ॥

नमि जिनपति अरीहा नमो, एथी करो गुण राग रे॥ जीव स्वरुपने ओळखो, तजो अन्य लावी वैराग रे ॥ नमि जिनपति अरीहा नमो ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ अन्य वस्तु जीवने पांच छे, तेमा दु खदायी एकरे ॥ पुद्गल वधन दृढ छे, कर्म वर्गणा अनेकरे ॥ नमि० ॥ २ ॥ ज्ञानावरणादि आठनो, कर्मदळ वृत्ततरे ॥ समे समे अज्ञाने वाधतो, सात आठ कर्म महतरे ॥ नमि० ॥ ३ ॥ तेथी अशुद्ध थयो आतमा, उदयिक भाव सयोगेरे ॥ वंधाणो वर्गणा सातमा, राग द्वेप पर उपयोगे रे ॥ नमि० ४ ॥ सं-

सार स्थिर चउगति न्नमे, डुःख सहे वारंवाररे ॥ क्लेश करी काळ निरगमे, अह ममत्व अपाररे ॥ न० ॥ ५ ॥ निज वस्तु धर्म रूचे नहीं, अतरदृष्टि न थायरे परवस्तु धर्मे लागीउं, तीहा मिथ्यात्व सदायरे ॥ नमि० ॥ ६ ॥ सदगुरु वचनथी वेगळो, माने पुदूगलने जीव रे ॥ द्रव्य क्रियातप आद रे, तेथी काज नहीं नहि ए शीवरे ॥ नमि० ॥ ७ एम समजी अन्य सग तजो, न्नजो ज्ञानने ध्यानरे ॥ निर्विकल्प रस पीजीए, प्रगटे अनुन्नव ज्ञानरे ॥ नमी ० ॥ ८ ॥ एह शीवसाधन आदरो, आराधो न्नवि सतरे ॥ अन्य तजता वीर्य वाधशे, ज्ञान शीतळ एक तरे ॥ नमी० ॥ ए ॥ सपूर्ण

॥ स्तवन २२ मु ॥

॥ सांन्नळजो मुनि सयम रागे ॥ ए देशी

नेमि प्रन्नु नीम कर्यो सही दाखु, उदयिक न्नाव नही चाखु रे॥ परवस्तु अग्राह्य चेतनने, सर्व विरति एम राखु रे॥ नेमि प्रन्नु नीम कयो सही दाखु० ॥ ए आकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ कारण कार्य ते निज स्वन्नावे, अकारण परन्नावे रे॥ क्षय उपशम शुद्ध कारण कहीए, कार्य ते क्षायक न्नावे रे ॥ नेमि० ॥ २ ॥ ए विण कारण कार्य ते नांही, अरिहंतने सिद्ध पदनुरे ॥ न्नविजन समजीने आदरजो, वचन ए नेमि जीणदनुरे ॥ नेमि० ॥ ३ ॥ कारण ते कार्यने ध्यावे, सोही कार्यने पावे रे ॥ कारण कार्ये नहीं प्रवर्त्ते, ते कार्य रूप नहीं थावे रे ॥ नेमि० ॥ ४ ॥ कारण सो कार्ये प्रवर्त्ते,

ते कारण कहेवाय रे ॥ कार्य प्रवृत्ति अण करतां, कारण एम न बोलाय रे ॥ नेमि० ॥ ५ ॥ कार्य योग्यतानी छति जेमां, ते कारण एम कहीए रे ॥ ए सत्य वचन प्रवृत्ति जोगे, नही तो कारण शेनु 'सही'ए रे ॥ नेमि० ॥ ६ ॥ कारण वस्तु स्वभावे वर्ते, सोही साधन उत्सर्ग रे ॥ ज्ञान शितळ निष्पन्न कार्य तहीं, व्यक्ति अनत अपवर्ग रे ॥ नेमि० ॥ ७ ॥ संपूर्ण

॥ स्तवन ॥ २३ मु ॥

॥ हो धन्ना ॥ ए देशी ॥

पार्श्वनाथ त्रेवीसमा रे ॥ मिता ॥ वामा राणी तसमात ॥ पिता अश्वसेन नरपति रे ॥ मि० ॥ नील वरण ए जीन प्रख्यात रे ॥ रंगीला मिता ए प्रभु सेवोने ॥ ए प्रभु सेवो अतरंगमां रे ॥ मि० ॥ नहीं बाह्य पारस रूप रे ॥ रंगीला मिता ए प्रभु सेवोने ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥१॥ बाह्य ते उदयिक भावछे रे ॥ मि० ॥ पूरव बध संवध ॥ कर्म जनित पक्ष बाह्यए रे ॥ मि० ॥ ते नहीं चेतन शुद्ध रे ॥ रं० ॥ ए० ॥ २ ॥ चेतनरूप अतरंगमां रे ॥ मिता ॥ पर तजतां प्रगटाय ॥ ज्ञान दीपक अनुभव सही रे ॥ मिता ॥ तिमिरांधकार भाग्यो जाय रे ॥ रं० ॥ ए० ॥३॥ परभावथी न्यारापणे रे ॥ मिता ॥ अनुभवे वस्तु धर्म ॥ स्याद्वाद धर्म इहां संपजे रे ॥ मिता ॥ लहे आनंद अति पर्म रे॥ र० ॥ ए० ॥४॥ स्वस्वभाव तस कीजीए रे ॥मिता॥ वर्त्तना ए व्यवहार ॥ भेद ज्ञान योग वर्णव्यो रे ॥ मिता ॥

सोही कारण शीवसाररे॥ रं० ॥ ए० ॥ ५ ॥ ए त्रिण अव रने कारण कहेरे ॥ मिता ॥ ते कल्पना सो असत्य ॥ ज्ञान शितळ उपदेश एरे ॥ मिता ॥ सुणो नाणी सगे सदा सतरे ॥ रगीला० ॥ ए० ॥ ६ ॥ सपूर्ण

॥ स्तवन २४ मु ॥

॥ मन मोहन मेरे ॥ ए देशी ॥

॥ वीर जिनेश्वर साहेवा मन मोहनमेर ॥ न्नाव वीर्य शीव सत जीनजी गुरु मेर ॥ तुज सम अवर न देखीयो ॥ मन० ॥ हणी शत्रु दयालु कहत ॥ जी० ॥ १ ॥ प्रथम हएयो मिथ्यात्वने ॥ मन० ॥ तीहा फीटयो अचेतन न्नाव ॥ जी० ॥ चेतन जन्म त्या कीजीये ॥ म० ॥ ए साधन अवसर दाव ॥ जी० ॥ २ ॥ अज्ञान नाठु ते समे ॥म०॥ उग्यो अतर न्नाण ॥ जी० ॥ हुवो प्रकाश स्वन्नावमां ॥ म० ॥ थया ज्ञानी अनुन्नवी जाण ॥ जी० ॥ ३ ॥ परएया समिती सयम श्री ॥ म० ॥ तीहा त्यागी असयम नार ॥ जी० ॥ कुमती टळी अधर्म बुद्धि ॥ म० ॥ तेना सतान हणीआ ते वार ॥ जी० ॥ ४ ॥ कपाय पचवीशने मारीया ॥ म० ॥ हएया विपय विकार तेवीस ॥ जी० ॥ योग चपळताने परहर्या ॥ म० ॥ नाठी निद्रा चढावीने रीस ॥ जी० ॥ ५ ॥ अप्रमत थयो आतमा ॥ म० ॥ स्वरूप उपयोगवंत ॥ जी० ॥ ज्ञान वीर्य तीहा वाधीयो ॥ म० ॥ टाळी उपाधि हुआ महत ॥ जी० ॥ ६ ॥ रागद्वेप मोह न्नागीया ॥ म० ॥ वळी न्नागी परिणति अशुद्ध ॥ जी० ॥

शुद्ध परिणति पूरण थइ ॥ म० ॥ थया वीतराग जावी ए बुद्ध ॥ जी० ॥ ७ ॥ द्वादश गुणठाणे चढया ॥ म० ॥ त्रण कर्मनो तीहां विनाश ॥ जी० ॥ अनत चतुष्ट प्रगट थइ ॥ मन० ॥ कीधो अरिहत पदमां वास ॥ जी० ॥ ८ ॥ चार अतिशय मूळथी ॥ मन० ॥ गुणघाति खपे अगिआर ॥ जी० ॥ उंगणीस देवकृत सपजे ॥ म० ॥ ए चउतीस अतिशय सार ॥ जी० ॥ ए ॥ पांत्रीस वाणी गुणे जर्या ॥ मन० ॥ वळी नाठा दोष अढार ॥ जी० ॥ वार गुणे विराजता ॥ मन० ॥ ठाजे प्रातिहार्य आठ सार ॥ जी० ॥ १० ॥ अणहुता सुर कोमीशुं ॥ मन० ॥ सदा सेवे पूरण नाण ॥ जी० ॥ जीन नाम कर्म उदय हुओ ॥ मन० ॥ तेने खेरवे ए वचन प्रमाण ॥ जी० ॥ ११ ॥ क्षत्रिय कुंरु पुरे जनमिया ॥ म० ॥ राय सिद्धारथ कुळ चद ॥ जी० ॥ त्रिसलानंदन गुण नीलो ॥ म० ॥ सेवे सघ समुदाय वृंद ॥ जी० ॥ १२ ॥ कचन वरणे दीपतो ॥ म० ॥ उचा सत्त हाथ प्रमाण ॥ जी० ॥ बोतेर वर्षनुं आवखुं ॥ म० ॥ लंछण सिंह गुण मणिखाण ॥ जी० ॥ १३ ॥ सिंहपेरे धीर एकला ॥ म० ॥ करे शत्रु विनाश ॥ जी० ॥ तुज गुण को न गणी शके ॥ म० ॥ तु पूज्य हुं ठु तुज दास ॥ जी० ॥ १४ ॥ अंतरदृष्टियें प्रीतकी ॥ म० ॥ कीधी जगगुरु तुजशुं अनग ॥ जी० ॥ ज्ञान शीतळ रीझे तुजशुं ॥ म० ॥ बीजो न गमे अन्यनो सग ॥ जी० ॥ १५ ॥ संपूर्ण.

॥ कलश ॥

गाया गायारे वर्त्तमान जीन चउवीस गाया ॥ निज स्वन्नावे अनुन्नव करवा, उपयोग स्थिरजमाया॥ तीहां चेतन रूप जिनरूप अनोपम, तेने ध्यातां परमोद पाया रे॥ वर्त्तमान जीन चउवीस गाया ॥ गाया गाया रे, ज्ञान पाया रे, तीहा जीव स्वरूप उंळखाया ॥ ए आंकणी ॥ गाया ॥ १ ॥ ए साधन सिद्ध पदनु साचु, ए वीण सर्वे काचु ॥ मिथ्यात्व हणता समकित आवे, ते न्नावे घणु राचु रे ॥ वर्त्त० ॥२॥ स्तुति करी गुण रागे करीने, तीहा आणंद हरख सवाया ॥ चढतान्नावे स्तवन कीधां, अनुन्नवगम्य अर्थ रचाया रे ॥ वर्त्त० ॥ ३ ॥ उंगणीसें उंगणपचास साले, प्रथम अषाढ गुरुवा रे ॥ पूरण चोवीसी अमावाश्यायें, कीधी अल्प बुद्धि अनुसारेरे ॥ वर्त्त० ॥ ४ ॥ आज मनोरथ पूरण मारा, जीन गुण न्नक्तियें गाया ॥ प्रमोद न्नावना रुमी न्नावी, ज्ञान शीतळ शुद्धता पाया रे ॥वर्त्त०॥५॥ सपूर्ण ॥ सर्व गाथा१८१

इति चोवीशी समाप्त

अथ चैत्यवदन अधिकार

॥ चैत्यवदन ॥ १ ॥ लु ॥

॥ श्री सिद्धाचल सिद्ध क्षेत्र ॥ ए देशी ॥

प्रणमी श्री गुरु रायने, हुकम आज्ञा ग्रही जे॥ द्रव्य पर्यायने जाणवा, न्नेदज्ञान घट लीजे ॥ १ ॥ द्रव्य अविचळ रूप छे, ध्रुवता षड्विध जेह ॥ गुणपर्याय अन्नेदता,

अन्नव्य स्वन्नाव तेह ॥ २ ॥ अपलटण धर्म एहनो, पलटे नहीं निरधार ॥ कार्य प्रवृत्ति नहीं, अव्यक्तव्य विचार ॥ ॥ ३ ॥ द्रव्य शक्ति धर्म ए कह्यो, हवे कहु पर्याय धर्म ॥ स्याद्वाद इहां सपजे, ए जिन वचननो मर्म ॥ ४ ॥ कार्य प्रवृत्ति करे, उपयोग न्नाव स्वन्नाव ॥ व्यक्ति गुण गुणनी न्निन्नता, सोही न्नेद स्वन्नाव ॥ ५ ॥ उत्पाद् व्यय गुण वृत्तियें, अनतो न्नाख्यो ॥ अन्निनव उत्पाद ठे, व्यय पूरव दाख्यो ॥ ६॥ उत्पाद व्यय करे कार्यने, ध्रुवता कारणमांही॥ एही न्नव्य स्वन्नाव कह्यो, मुळ स्वन्नाव ठें त्यांही ॥ ७ ॥ पर्याय नय धर्म ए सही, शब्द नयनो पक्ष ॥ शीवसुखदाता एह ठे, अनुन्नव ज्ञान प्रत्यक्ष ॥ ८ ॥ एह धर्मने जाणवा, हेतु ठे द्रव्य न्नाव ॥ द्रव्य हेतु सद्गुरु न्नला, न्नावे क्षय उपशम नाव ॥ ए ॥ पूरण कार्य जव हुवे, त्या लब्धि क्षायक न्नाव ॥ ज्ञान शितळने चित्त वस्यो, ए शीव साधन दाव ॥ १० ॥

॥ चैत्यवदन ॥ २ जु ॥

॥ सेवो पास सखेश्वरो मन्न शुद्धे ॥ ए देशी ॥

सुधानद सिद्ध साधना साध्यरामी, वस्तु धर्म आराधना शुद्ध पामी ॥ अनुन्नव योगी सहज गुण न्नोगी, कलक कर्म त्यागी थया ते निरागी ॥ १ ॥ कहुं तारा विचार अत मांही खोजी, चिदानद मोजे रमे जेम तेजी ॥ अनादि मिथ्यात्वी अचेतन जेवो, अमोवास रात्री काळी अंध तेवो ॥ २ ॥ समकित शुद्ध पामे जीहां जास, तीहां

चन्द्रोदय बीज कला प्रकाश ॥ मिथ्या मोह तिमीर अणा-
नोग नाश, अनतानु कषाय चोकय तास ॥ ३ ॥ देश
विरति आवे बार व्रत भावे, अप्रत्याख्यानी चोकडी त्यां
अभावे ॥ लीए सद्गुरु सगे महा व्रत रगे, प्रत्याख्यानी
चउ त्या हणे उमगे ॥ ४ ॥ अप्रमत्त सदा प्रमत्तन कदाइ,
श्रेणिगत चेतन त्या निर्मळाइ ॥ सजलना कषाय भणने
भेदी छेदी, आशादि षट् कद मूळथी उछेदी ॥ ॥ ५ ॥
वेद विषय अभिलाष अग्नि, समावे छेदे भावे गर्भवास र-
जनी ॥ रह्यो लोभाणु उदय दास दक्ष, हणे वीर्यवंत करे
बाळी भस्म ॥६॥ हणयो मोहराय सत्ताथी छेदाय, त्यां अशुद्ध
परिणतीनो क्षय थाय॥ परिणति रागादि अनादिनी टाळी,
वीतराग परिणति त्या अजवाळी ॥ ७ ॥ यथाख्यात चा-
रित्र सपन्न स्वामि, रमे निर्विकल्प ध्यानी अनामी॥ वीत्यो
राग वेरागी क्षीण मोह त्यागी, त्या करे त्रण कर्म चकचूर
भागी ॥ ८ ॥ लहे केवळनाण दर्शन अरिहंत, ज्योत करे
व्यक्ति धर्म अनत ॥ आयु जेटलुं तेटलो योगवास, छेदे
अंत छेके करे जोग नाश ॥ ९ ॥ योगातित सिद्ध सम
श्रेणी सधावे, पोचे शीव धाम समय एक थावे॥ करे त्या
स्थिति भग सादि अनत, समावे ज्योति ज्योत भावे
सिद्धत ॥ १० ॥ अनुभव करी साधना सिद्धभावी, चेतन
सज्ज कीधो स्वरूपे रमावी ॥ आतम नीरखी परखी मूळ
रूप, ज्ञान विमळ नदे सिद्धराय भूप ॥ ११ ॥

॥ चैत्यवदन ॥ ३ ॥ जु ॥

॥ देशी उपर प्रमाणे ॥

समकितनुं मूळ ज्ञान आराधी, समकित शुद्ध त्या ज्ञान समाधि ॥ ज्ञान फळ वीरती फळमुक्ति, विवेके करो साधना शुद्ध युक्ति ॥ १ ॥ अनुभव लावो अत मा रमावो, मनस्थिर त्यां उपयोग जमावो ॥ करे ते जूदाइ वस्तु ठेळखाइ, पुद्गल जीव भेदी दुफार देखाड ॥ २ ॥ आतम परखो परमातम सरखो, सत्ता भिन्न चिन मूरति नीरखो ॥ तीहां चेतना वीर्य ते एकठामे ॥ करे ग्रंथि भेद त्यां समकित पामे ॥ ३ ॥ समकित मूळ वीरति जोग लेवो, चिदानंद वासी स्वरूपने सेवो ॥ स्वरूपे ज्ञान उपयोग मिलावो, तीहा गुणठाण अप्रमत्त पावो ॥ ४ ॥ ज्ञान उपयोगथी अळगो चाले, तीहा प्रमत्त गुणठाणु खाळे ॥ करे तेज मद ज्ञान गुण केरो, वधे तेज उपयोग भळतां भलेरो ॥ ५ ॥ ए वीरति ठाण साधन पाया, तजी ग्रथि अभ्यंत्र निग्रंथराया ॥ करी साधना शुद्ध श्रेणि आरोहे, तिहण उपयोगे चरण स्थिर सोहे ॥ ६ ॥ अनुभवे आतम धर्म अनतो, करे भेद ठेद अभेद लहतो ॥ निर्विकल्प भाव आतम पाया, शुद्ध परिणतिमां चेतन आया ॥ ७ ॥ एकत्व वीतर्क शुक्ल ध्यान ध्याया, संभावबृत्ति चेतन रमाया॥ पामे नाण दर्शण केवल ताजा, सकल शिरोमणि अरिहंत राजा ॥ ८ ॥ अनत धर्म शक्ति काळ अनादि, व्यक्ति ए लहे ते समय दिन आदि ॥ असख्य प्रदेश निरावर्ण पाया, त्यां निर्वाण

सिद्ध निरजन राया ॥ ए ॥ सादि अनत भग सिद्ध सो-
हावे, कार्य रूपे तेही पोतेज थावे ॥ मूळ स्वभाव अचळ
अविनाशी, परमानद भोगी थया शीव वाशी ॥ १० ॥
मुक्ति साधन करे आतमज्ञानी, समकित विरती लहे वि-
ज्ञानी ॥ वाह्य ज्ञान विरति पेहेले गुणठाणे, साधन सिद्धनु
ज्ञान शितळ जाणे ॥ ११ ॥

॥ चैत्यवदन ॥ ४ थु ॥

॥ विमळ केवळ ज्ञान कमळा ॥ ए देशी ॥

सिद्ध खेत्र पचमी गति मुक्ति, परिवह्म केवळ ज्ञान॥
क्षायक चरणने वीर्य अनतु ॥ नमो सिद्ध निरजन ॥ १ ॥
चिन्ह मूर्त्ति अज अविनाशी, निकलक केवल दर्शन ॥
शीव परमातम परम योति, नमो सिद्ध निरजन ॥ २ ॥
अव्यावाध अरूपी अमूर्त्ति, अखरू अटळ अवगाहन ॥
अनाश्रित अनत गुण मन्दित, नमो सीद्ध निरजन ॥ ३ ॥
अगुरु लघु निर्मळता व्यक्ति, पूर्ण परम पद परधान ॥
परमेश्वर निर्वाण पवित्री, नमो सिद्ध निरजन ॥ ४ ॥
गुण पर्याय स्वभाव अनता, व्यक्ति सौनी भिन भिन ॥
ते वस्तु गत धर्म अनतो, नमो सिद्ध निरजन ॥ ५ ॥
अनंत धर्मे अनतो आनद, अचळ अतिंद्रिय निधान ॥
ते परमानद लहरी भोगी, नमो सिद्ध निरजन ॥ ६ ॥
एक सिद्ध तिहां सिद्ध अनता, योतिमा योति समासनं ॥
नीज नीज रूपे भिन्नता सौनी, नमो सिद्ध निरजन ॥ ७ ॥
अनादि अनत ए सिद्ध सेवो, पूजो ध्यावो तरं ध्यानं ॥
ज्ञान शितळ तीहां केवळ पामो, नमो सिद्ध निरजन ॥ ८ ॥

॥ चैत्यवदन ॥ ५ मु ॥-

वस्तु स्वन्नावने जाणवा,अनुन्नव उपयोग रग॥ निज पर सत्ता न्निन्नता, एही ज्ञान तरग ॥ १ ॥ पर सगे-उपयोगता, एही अशुद्ध आचार ॥ साधन वाधक फळ दीए, तेथी स्थीर ससार ॥ २ ॥ चेतन जब वळीउं हुवे, वीर्य स्फूरणा पाय ॥ विन्नाव उपयोग परिणमन, पर परिणति ठेदाय ॥ ३ ॥ एहीज इच्छा माहरी, परअनुन्नव क्षयथाय ॥ शुद्ध परिणतिमां वशी, निर्विकल्प रस पाय ॥ ४ ॥ अनुन्नव स्थिर सहेज न्नावमां, सहज संवर प्रकाश ॥ आश्रव रोध शुद्ध निर्जरा, कर्मघन तिमिर विनाश ए॥५॥ स्वन्नाव चेतनता, व्यक्ति धर्म अनत ॥ अति निर्मळ विशुद्धता, एही सिद्ध महत ॥ ६ ॥ निरजन निराकारए, अगम अनोपम रूप ॥ अवाधित आनदमां, ज्ञान शीतळ गुण न्नूप ॥ ७ ॥

॥ अथ स्तुति अधिकार. ॥

॥ सिद्धचक्रजीनो थोय जोडो १ लो ॥

॥ गौतम वोले ग्रथ सन्नारी ॥ ए देशी ॥

सिद्धचक्र वडु मनरंगे, नवपद न्नावना न्नाव उमंगे; आत्म स्वन्नावना संगे ॥ पेहेलो अरिहंत पद अवकाश, गुण घाति चउकर्म विनाश, अनत चतुष्टयी वास ॥ ए पद सयोग अयोगमां धारु, योगातित सिद्धपदमां विचारुं, सकल शिरोमणि प्यारु ॥ आचार्य उवज्झायने साधु, प्रमत्त अप्रमत्त गुणमां लाध्यु, शीवपद साधन वाध्यु ॥ १ ॥ द-

दंसणनाण चरण तप तपिया, क्षायक समकित सुधुं जपीया, वेदक अवसर खपीया ॥ तीहां चेतन समभावनो रंगी, आतम गुण श्रेणी दृढ जंगी, निर्विकल्प एकंगी ॥ रागद्वेष मोह सव भागे, अशुद्ध परिणति अळगी लागे, क्षायक चरण तीहा जागे ॥ वीतराग क्षीण मोह दुवादश्म, त्यां त्रण कर्म वाळी करे भस्म, सचिसंत परमानंद रश्म ॥२॥ ज्ञान बोध अनुभव विण नाही, अनुभव विण पर छोके नाहीं, पर छोके समकित त्याही ॥ धर्म अनतनुं वीज ए प्यारु, सुख दुःख सरखुं लागे खारु, भेद ज्ञान वीण अंधारु ॥ अनुभव शुद्ध घट अंतर जागे, वध सत्ता कर्म चेतन त्यागे, त्यां रागद्वेष मोह भागे॥केवळनाण दर्शण तीहां पामे, अनतु लोकालोक सव सामे, ते ज्ञान धर्म हित कामे॥३॥ वीजा पदमा ते सिद्ध कहीए, वाकी आठ सिद्ध साधन ग्रहीए, अरिहंत सभीरुदे लहीए ॥ आचार्य ते पचाचारी, उपाध्याय पढे श्रुत भारी, साधु विरति वलिहारी ॥ दर्शण सामान्यने ज्ञान विशेष, उपयोग स्थिर त्या चरण लहेश, तप निर्जरा प्रवेश ॥ इम नवपद सिद्धचक्रने पूजे, सूरनर इन्द्र तीहा दिल रीझे, ज्ञान शीतळने सीझे ॥ ४ ॥

थोय जोडो ॥ २ ॥ जो ॥

॥ वीरजीणेसर वंदिए ए प्रगटयो वीरगुण जासतो

॥ ए देशी ॥

शुद्धानंद निज वंदिये ए, परम देव प्रधानतो ॥ मोक्ष कारण एह छे ए, उपादान रुपी रीततो ॥ निमित्त कारण

देवगुरु कह्या ए, जीन वचने दृढ चित्ततो ॥ शक्ति भाव प्रणमन करीए, व्यक्ति सनातक सिद्धतो ॥ १ ॥ वस्तु स्वभाव सिद्ध साधनाए, रमण स्थिर गुण पर्यायतो ॥ निर्विकल्प रस पीजीये ए, ज्ञान अभेदता पायतो ॥ भाव सवर शुद्ध निर्जराए, कर्म अनत क्षय थायतो ॥ निर्मळ निरजन बुद्ध थइए, सर्व संत सिद्धरायतो ॥ २ ॥ केवळ-नाण दर्शण लहीए, धर्म दान दातारतो ॥ हित उपदेश भव्य जीवने ए, करता वारवारतो ॥ वोधि वीज विरती लहे ए, नरनारीना वृंदतो॥ गणधर सूत्र दुवादश रचे ए, ते ज्ञान भाण पवित्रतो ॥ ३ ॥ सर्व देवनो देव छे ए, निजा-तमे शुद्ध सिद्धतो ॥ सूत्रग्रंथनी साख्यथीए, गुरु वचने परतिजतो ॥ ज्ञान शीतळ जुए तेहने ए, आगम अनोपम रूपतो ॥ सेवे पूजे समकितिए, देव देवांगना भूपतो ॥४॥

थोय जोडो ॥ ३ जो ॥

॥ प्रह उठी वंदु ऋषभदेव गुणवत ॥ ए देशी ॥

सिद्ध बुद्धने वदु, नीज रूप निहाळी ॥ उपयोगे भावुं, वोधि वीज तीहां भाळी ॥ शुद्ध श्रधा साची, चिद घन भोग संयोग ॥ उपाधि हणतां, परमातम निरोग ॥१॥ रोग शोग दुःख कापे, महा मोह मल भागे ॥ ज्ञान सुभट वळीउं, ध्यान अग्नि तीहां जागे ॥ कर्म काष्टने वाळे, तीहां शितळता वाधे ॥ परमानंद भोगी, सर्व सिद्धता साधे ॥ २ ॥ अरूपी अवीनाशी, अव्यावाध अ-नत ॥ निरमळ निरजन ॥ अखंडित महंत ॥ अचळ

अनोपम, निराकार शीवसत ॥ इत्यादि अनतु, अनुभव ज्ञान लहृत ॥ ३ ॥ योग रोध अयोगी, सैलेशि करण अकप ॥ आयुष्य अंत तेहे , देव देवीना संप ॥ उच्छवनु कारण, निर्वाण मगलिक गावे ॥ ज्ञान शीतळ हरखे, ज्योतिमा ज्योति समावे ॥ ४ ॥

॥ थोय जोडो ॥ ४ ॥ थो. ॥

॥ सखेश्वर पासजी पूजीए ॥ ए देशी ॥

वीतराग अरिहत पूजीए, केवळ नाण दर्शन लीजीए ॥ कर्म कलक सव परहरी, निकलक कन्या सिद्ध वधु वरी ॥ १ ॥ भेदज्ञानी अनुभवी आतमा, निजपर सत्ताभीन्न महातमा ॥ क्षपक श्रेणी आरोह ध्यानातमा, सवि जैन थया सिद्धातमा ॥२॥ षट्द्रव्य वस्तुने ओळखी, गुण पर्याय स्वभाव लक्षण लखी ॥ परपाच अजीव अकारणी, आतम ज्ञानी धर्म धारणी ॥ ३ ॥ एही देव परमातम कीजीए, सेवे सुरनर इन्द्र मन रीझीये ॥ तीहा ज्ञान शितळ जश लीजीए, परमानद मय रस पीजीए ॥ ४ ॥ इति स्तुति अधिकार सपुर्ण

॥ अथ स्तवन अधिकार ॥

स्तवन ॥ १ ॥ लु ॥ समकितनु ॥

॥ तुम तजकर राजुल नार तज्या सव घर रे ए देशी ॥

धन्य धन्य दिवसने धन्य घडी ते आजे ॥ समकित गुण पायो सिद्ध हुओ निज काजे ॥ मिथ्यात्वने हणीओ

भणीओ ज्ञान समाजे॥जम चेतन लक्षण भिन्न भिन्नता गाजे॥धन्य धन्य दिवसने॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥१॥ चेतन उपयोगे निज स्वभावमां देखे ॥ तव उदिक भावनो भोग रमण उवेखे ॥ इहा मुक्तिपुरनो पंथ वहे सिद्ध लेखे ॥ अविनाशी चेतनराम निरंजन पेखे ॥ धन्य० ॥२॥ निज द्रव्य गुण पर्याय स्वभाव शुद्ध थावे ॥ तीहां मोहमल्ल ओर रागद्वेष दुर जावे॥ घटअतर भेद ज्ञान जग्यो शुद्ध भावे॥ पुनरपि कर्मनो वध इहां नहीं पावे ॥ धन्य० ॥ ३ ॥ अनुभव विवेक भयो अध्यातम भावे ॥ चेतन गुण समकित शुद्ध आविरभाव पावे ॥ धन्य धन्य ते समये काळ प्रमोदित गावे ॥ पटराणी समता संग चेतन साथ थावे॥ ॥ ४ ॥ इम निश्चय समकित परम निधान चित भाव्यो ॥ पामवो छे एहीज सार उमेद मन आव्यो ॥ जे पाम्या छे निरधार भर्मने गमाव्यो ॥ कहे ज्ञान शितळ शुद्ध चेतन तद्रूप पाव्यो ॥ धन्य० ॥ ५ ॥

॥ स्तवन २ जु ज्ञाननु ॥

॥ शत्रुजय दीठो रे ॥ ए देशी ॥

ज्ञानने आतम स्वरूप जे जाणे, ते निश्चय नय ज्ञानीरे ॥ ए विण सर्व पदारथ जाणे, ते व्यवहार नय ज्ञानी रे ॥ ज्ञान पद सेवो रे ॥ ज्ञान चेतन सद्भाव, आनद पद सेवो रे ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ ए वे पक्षनो पटतर जाणो, वीवरीने इहां दाखु रे ॥ विवेक ग्रही श्रोता जन सुणजो, अनुभव रस शुद्ध चाखुं रे ॥ ज्ञान० ॥ २ ॥ ठाणांग

सूत्रे पेहेले गाणे, वीर प्रजुनुं वचनरे ॥ एक जाण्यो तेणे सर्वे जाण्यु, निश्चे शुद्धातम धन्यरे ॥ ज्ञान० ॥ ३ ॥ आत्म स्वरूप अजाण अनाणी, मिथ्यात्व अणाजोग जदे वर्त्ते रे ॥ बाकी सर्व जाण थइ वेगे, ते नहीं ज्ञानी महंतरे ॥ ज्ञा० ॥ ४ ॥ ए सूत्रे इत्यादिक जो जो, परखी ज्ञानी ग्रहजोरे ॥ अज्ञानी सगत ठोमीने, चेतनराय सग जणजोरे ॥ ज्ञान० ॥५॥ व्यवहार नय नाणी दुजेदे, तेह स्वरूपने जावु रे ॥ रमण उदयिक जम दृष्टियें जोतो, तजवो ते चित्त लावु रे ॥ ज्ञा० ॥ ६ ॥ नय व्यवहार वीजो जेद जाणी, वस्तु स्वजावमा देखेरे ॥ उदयिक जावदृष्टि नहीं करता, त्यां साधन शुद्ध लेखे रे ॥ ज्ञान० ॥ ७ ॥ निज उपयोगे परिक्षा कीजे, ज्ञानी सग करीजेरे ॥ अतरदृष्टि अनुजवी नाणी, तेहनु वचन सुणीजेर ॥ ज्ञान० ॥ ८ ॥ ए नाणी सग क्षण नहीं तजवो, परमपूज्य चित्त जणवो रे ॥ आतम ऋद्धि अनती देखामे, तीहा परमानद वरवो रे ॥ज्ञान० ॥ ए ॥ परमानद पद आत्म अजेदी, सहजानंद स्वजावेरे ॥ तीहा मुक्ति ठे चेतन तारी, कर्म रहित सद्भावे रे ॥ ॥ ज्ञा० ॥ १० ॥ ए साधन उपयोग नाणमां, रमतां लब्धि जागेरे ॥ ते कारण ज्ञान पूजी वदी, ज्ञान शीतळ नाण मागे रे ॥ ज्ञान० ॥ ११ ॥

॥ स्तवन ॥ ३ जु ॥ शत्रुजयनु ॥

साजळजो मुनि सयम रागे ॥ ए देशी

जागोने मारा अतर जामी, शत्रुजय गीरि चढिये रे ॥

मनुष्य जन्म भव सफळो कीजे, आदि जिणद पाये पमीये रे॥जागोने मारा अंतर जामी० ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥
॥ १ ॥ जागोने चेतन जम वेंहेचीने, निज स्वरूप निहालो रे ॥ रत्न त्रयी चेतन गुण प्रगटे, समकित मूळ सभाळो रे ॥ जा० ॥ २ ॥ जात्रा सफळ समकित गुण आदे, संवर निर्जरा वाधे रे ॥ श्रद्धा भासन रमण उपयोगे, परमानंद पद साधे रे ॥ जा० ॥ ३ ॥ सफळ जन्म शंत्रुजय भेटये, निमित्त उपादान हेतु भेदे रे ॥त्यां विषय कषाय भव वीजक तजीए, भजीए श्री आदि जिणद रे ॥ जागो ॥४॥ आदि जीणेसर मेरुदेवानंदन, नाभीराया कुळचद रे ॥ पूर्व नवाणु वार शत्रुंजय गीरि, समोसरीया जीनद रे ॥जागो० ॥ ५ ॥ तीर्थपति गीरिराय सेवीने, सिद्धा साधु अनत रे ॥ ज्ञान शीतळ कहे तीरथ सेवो, गुण निप्पन्न महत रे ॥ ॥ जा० ॥ ६ ॥

॥ स्तवना ॥ ४ थु ॥ श्री गीरनारजीनु ॥

॥ देशी ॥ उपर प्रमाणे

वाळ बह्मचारी जिनद पदधारी, सेवे सुरनर वरइदारे ॥ गीरनार गीरि नेमि नाथजी विराजे, भेटतां टळे भव फदारे ॥ वाळ बह्मचारी० ॥ ए आकणी ॥ गाथा ॥१॥ वाळ ब्रह्मचारी विषय निवारी, निःस्नेही गुण रायारे ॥ सचित्त पुद्गल भोग कर्म क्षीण जाणी, लेवा सयम सहेसावन आयारे ॥ वाळ० ॥ २ ॥ जिणद पदधारी रागद्वेष निवारी, घाति कर्म क्षयकारीरे ॥ सहसावन केवळनाण

ज्योत परमानद रमे रे ॥ म० ॥ ८ ॥ सैलेशि करण स्थिर थंभ पुद्गल योग रुंधी रे ॥ योगातीत स्वभाव लहे तव शुद्धि रे ॥ भाग एक पोलाण घटे घन, भाग दोरे ॥ एक समय समश्रेणी लोकाग्रे सिद्धिरे ॥ मल्लि० ॥ ए ॥ गुणपर्याय स्वभाव अनत रमंत रे ॥ निज निज व्यक्ति भिन्न परमानंदवंतरे ॥ आनंद लहरी विलसंत भग सादि-नत रे ॥ निमित्त कारण मल्लिनाथ भंग सादि संत रे ॥ मल्लि० ॥ १० ॥ सार्थवाह सिद्ध साथ भाख्यो सिद्धांते रे ॥ गायो निज गुण हेते सुणो सवि संतरे ॥ तरण तारण जिन जहाज निमित्त बळवंतरे ॥ उपादान संयोगे सेवो गुणवंतरे ॥ मल्लि० ॥ ११ ॥ प्रभावतीनो नंद सेवे सुर वृंदरे॥ कुंभ नरपति कुळ चद पुजे पाय नरिंदरे॥ जन्म महोच्छव सुर इंद्र करे मेरु गीरींदरे ॥ उलट अग न माय प्रसन्न चित्त चदरे म.१२ सहस पंचावन आयुवरण नील कायरे॥ पंचवीस धनुष्य प्रमाण, लंछन कळश पायरे ॥ मिथिला नयरीए जन्मीया जीनरायरे ॥ समेतशीखर निर्वाण कर्मथी मुकायरे ॥ मल्लि० ॥ १३ ॥ ओगणीसमो जिनेंद्र चउव्रत धारीरे ॥ छद्मस्थ काळ दीन एक घातिकर्म टारीरे ॥ केवळनाण दर्शण पामीने उपगारीरे ॥ बोधि बीज दातारी शीव सुखकारीरे ॥ मल्लि० ॥ १४ ॥ सार्थवाह सिद्ध साथ यथारथ कीधो रे ॥ आतमरूप नीहाळी अनुभव पीधो रे॥ भोयणी नगरमां वीराजे दर्शन लाभ लीधो रे ॥ ज्ञान शीतळ ए साथ मळ्यां काज सिद्धो रे ॥ मल्लि० ॥ १५ ॥

ग्रहीये रे ॥ मल्लि० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ चोथाथी चउद-
मा लगे संघ कहीये रे ॥ श्रावक श्राविका सार पचम
गण वहीएरे ॥ प्रमत्त अप्रमत साधु साधवी त्यागी लही-
ये रे ॥ पूरण आज्ञावंत व्यवहार मुख्य रहीये रे ॥ मल्लि०
॥ २ ॥ उपरांत शुद्ध व्यवहार छे ज्ञानी ध्यानी रे ॥
मुख्यता निश्चय साथ दशम अत गणी रे ॥ त्यांथी यथा-
ख्यात सयमी मोह हानी रे ॥ साधन आत्म अन्नेद अनंत
गुण ज्ञानी रे ॥ मल्लि० ॥ ३ ॥ सघ चउन्नेद समुदायनो
प्रवाहेरे ॥ प्रयाणको मल्लिनाथ समाधि स्वन्नावे रे ॥ मार्गे
शत्रु मेहेवासी तीहां आवे रे ॥ सैन्य तणो नही पार
अतुल बळ दावे रे ॥ मलि० ॥ ४ ॥ अनादि मिथ्यात
अनतानुवधि न्नट वळीआरे ॥ देखी जिनपति साथ
न्नाग्या थइ गळीयारे ॥ शत्रु सैन्य ञखु थयु जरा न्नरीया
रे ॥ शुक्ल ध्यान ज्ञान आंचे मोह राय जळीआ रे ॥
मल्लि० ॥ ५ ॥ दृष्टात एक आपु न्नलु उपयोगे रे ॥ काष्टे
उधेइ वळगे जिम सयोगे रे ॥ काष्ट सत्ता प्रगटे जदा
तव न्नागे रे ॥ अग्नि जोर तीहां वाधे उधेइ नही लागे
रे ॥ मल्लि० ॥ ६ ॥ उपनय करशु तेहनो चित्त देइरे ॥
अज्ञान योगे कर्म ग्रहे गुण खोइरे ॥ जीवाजीव सत्ता
न्निन्न जाणतां जूदाइरे, क्षायक लब्धि प्रगटयां कर्म जळा-
इरे ॥ मल्लि० ॥ ७ ॥ चरण यथाख्यात पाम्या अत गण
दशमे रे, त्रण कर्मनो घात क्षीण मोह दुवा दशमे रे ॥
शुद्ध परिणति रीझे चेतनराय वशमे रे ॥ अनत चतुष्टी

उद्योत परमानंद रमे रे ॥ म० ॥ ८ ॥ सेलेशि करण स्थिर थंज्ञ पुद्गल योग रुंधी रे ॥ योगातीत स्वज्ञाव लहे तव शुद्धि रे ॥ ज्ञाग एक पोलाण घटे घन ज्ञाग हीरे ॥ एक समय समश्रेणी लोकाग्रे सिद्धिरे ॥ मल्लि० ॥ ए ॥ गुणपर्याय स्वज्ञाव अनत रमंत रे ॥ निज निज व्यक्ति ज्ञिन्न परमानंदवंतरे ॥ आनंद लहरी विलसंत ज्ञंग सादि-नत रे ॥ निमित्त कारण मल्लिनाथ ज्ञंग सादि संत रे ॥ मल्लि० ॥ १० ॥ सार्थवाह सिद्ध साथ ज्ञाख्यो सिद्धांते रे ॥ गायो निज गुण हेते सुणो सवि सतरे ॥ तरण तारण जिन जहाज निमित्त वळवतरे ॥ उपादान सयोगे सेवो गुणवंतरे ॥ मल्लि० ॥ ११ ॥ प्रज्ञावतीनो नंद सेवे सुर वृंदरे॥ कुंज्ञ नरपति कुळ चद पूजे पाय नरिंदरे॥ जन्म महोच्छव सुर इंद्र करे मेरु गीरींदरे ॥ उलट अग न माय प्रसन्न चित्त चदरे म.१२ सहस पंचावन आयुवरण नील कायरे॥पंचवीस धनुष्य प्रमाण, लंछन कळश पायरे ॥ मिथिला नयरीए जन्मीया जीनरायरे ॥ समेतशीखर निर्वाण कर्मथी मुकायरे ॥ मल्लि० ॥ १३ ॥ ओगणीसमो जिनेंद्र चउव्रत धारी रे ॥ छद्मस्थ काळ दीन एक घातिकर्म छारी रे ॥ केवळनाण दर्शण पामीने उपगारी रे ॥ वोधि वीज दातारी शीव सुखकारीरे ॥ मल्लि० ॥ १४ ॥ सार्थवाह सिद्ध साथ यथारथ कीधो रे ॥ आतमरूप नीहाळी अनुज्ञव पीधो रे॥ ज्ञोयणी नगरमां वीराजे दर्शन लाज्ञ लीधो रे ॥ ज्ञान शीतळ ए साथ मळ्यां काज सिद्धो रे ॥ मल्लि० ॥ १५ ॥

॥ स्तवन ७ मु श्री ऋषभदेव स्वामीनु ॥

॥ प्रणमु पद श्रद्धारसुरे लाल ॥ ए देशी ॥

आदि जिणेश्वर पूजीयेरे लाल, स्नान करी पेहेरीये चीररे ॥ केशरीया लाल ॥ जीन मुद्राने निहाळीएरे लाल, अगे मोर पीछी कीधरे ॥ केशरीया लाल ॥ आदि जिणेश्वर पूजीयेरे लाल ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ त्रिकरणयोगे स्थिरता करी रे लाल ॥ करीये न अन्य वीचाररे ॥ के० ॥ उपयोग स्वरूपें जोमीयेरे लाल ॥ रमण घटतर धाररे ॥ के० ॥ आ० ॥ २ ॥ पचामृते पखाळीयेरे लाल ॥ करीये जळ अभिषेकरे ॥ के० ॥ वाळाकुची रुमी कीजीयेरे लाल जळधारा झाझीनो विवेकरे ॥ के० ॥ आ० ॥ ३ ॥ अग लोहणा त्रण कीजीयेरे लाल॥ वरास लेप अगे थायरे॥ के० अत्तर केवमो गुलावशुरे लाल ॥ पूजीये त्रीभुवनरायरे ॥ के० ॥ आ० ॥ ४ ॥ धूपदशांग उखेवीयेरे लाल ॥ केशर काकु घोळी भेळरे ॥ के० ॥ मृगमद कस्तुरी तेहमांरे लाल ॥ अरचो नव अगे रगरेलरे ॥ के० ॥ आ० ॥ ५ ॥ पुष्प चपोने वळी मोगरोरे लाल ॥ जाइ जुइने गुलावरे ॥ के० ॥ हार उत्तम ताजा पुष्पनारे लाल ॥ ठवो प्रभु कठे भारी गावरे ॥ के० ॥ आ० ॥ ६ ॥ दोय शिखानो कीजे दीवमोरे लाल ॥ पूरीये मांही ताजु घृतरे ॥ के० ॥ अखंम दीवो प्रभु आगळेरे लाल ॥ राखीये सदा भक्तिवतरे ॥ के० ॥ आ० ॥ ७ ॥ अक्षत अणी शुद्ध उजळारे लाल॥ साथीयो कीजे नदावर्त्तरे ॥ के० ॥ उपर श्रीफळो मूकीनेरे लाल ॥

मोक्ष फळ मागो महतरे ॥ के० ॥ आ० ॥ ८ नैवेद्य सुखडी वहु जातनी रे लाल ॥ थाळ जरी मुको सनमुखरे ॥के० अणहारी पद जाचीयेरे लाल ॥ लहीये अव्याबाध सुखरे ॥ के० ॥ आ० ॥ ए ॥ इत्यादि द्रव्यपूजा करीरे लाल ॥ करो नाटक गीत ज्ञानरे ॥ के० ॥ ज्ञान शीतळ जक्ति गुणेरे लाल ॥ लहीये स्वर्ग एक तानरे ॥ के० ॥ आ० ॥१०॥

॥ स्तवन ८ मु श्री शातिनाथनु ॥

मनमोहनजी जगतात वात सुणो जिनराजजीरे ए देशी

अचिरासुत शांति जिणंद, शांति स्वरूपने दाखवेरे ॥ चालो सुणीये वचन रसाळ, मनुष्य जन्म सफळो हुवेरे ॥ अचिरासुत शांति जिणंद ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ शाति द्रव्यजाव दुजेद, परथम द्रव्य वखाणतारे ॥ त्याग आश्रव अग्नि विचार, हिंसादि पंच नीवारतारे ॥ अचिरा० ॥ २ ॥ हवे जाव शांति जव पाय, रागद्वेष मोह जमता टळेरे ॥ तीहां लाधे चरण यथाख्यात, वीतराग ठाणे चेतन चलेरे ॥ अचि० ॥ ३ ॥ एम शांति रूप अनुप, जीन वयणे करी जाणियेरे ॥ ते आपे सिद्ध पद सार, त्यां सुख अनतु मन आणीयेरे ॥ अचि० ॥ ४ ॥ करो जविजन वचन प्रतित, शुद्ध यथारथ एम सद्दहोरे ॥ तेथी पामशो अविचळ ऋद्ध, शांतिपणु ज्ञान शीतळ ग्रहोरे अचि० ॥ ५ ॥

॥ स्तवन ॥ ९ मु ॥

॥ श्री कुंथुनाथजीनुं ॥

॥ ए देशी ॥

कुंथुनाथ दुःख कापो दयालु धणी, अनत चतुष्टयी आपो दयालु धणी॥ अव्याबाध सुख आवे ॥द०॥ कर्म आठ क्षय आवे ॥ द० ॥ कुंथुनाथ दुःख कापो ॥द०॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥१॥ तरण तारण तुमे साचा ॥द०॥ आप्तसमान सत्य वाचा ॥द०॥ ससार सागर तारो ॥ द० ॥ जन्म मरण भय वारो ॥द०॥ कुंथु० ॥२॥ अजर अमर सिद्धभावे ॥द०॥ निरजन पदपावे ॥ द० ॥ परमानद पद सोइ ॥ द० ॥ सादि अनंत भग होइ ॥ द० ॥ कुंथु० ॥ ३ ॥ एह मनोरथ मारो ॥ द० ॥ निमित्त कारण छे तमारो ॥ द० ॥ कारणे कारज थावे ॥ द० ॥ एम सिद्धांती गावे ॥ द० ॥ कुंथु० ॥ ४ ॥ एम श्रद्धा शुद्ध कीधी ॥ द० ॥ ज्ञान समकित ऋद्धि लीधी ॥ द० ॥ ज्ञान शीतळ नीज भावे ॥ द० ॥ शीव सुख कारज पावे ॥ द० ॥ कुंथु० ॥ ५ ॥

स्तवन ॥ १० ॥ मु ॥

॥ श्री मल्लिनाथजीनु ॥

॥ ढाळ ॥ १ ॥ ली

॥ काज सिध्या सकळ हवे सार ॥ ए देशी ॥

मल्लिनाथजी शिवपंथे चाले, तीहां मोहादि आवीने खाळे ॥ वेहु वळीआ सैन्य सज कीधु, हथियार हाथमां लीधु ॥ १ ॥ सासा सामी रोपे रणस्थभ, लश्कराने कीधो

आरंभ ॥ सौ सजनुं वीर्य दाखे, तेमां कचाश कोइ न राखे ॥ २ ॥ अन्यो अन्य शत्रु भाव, सज सजना मनने राव ॥ बेहु बाजु सुभट अति बळिया, सामासामी नजीके मळीया ॥ ३ ॥ तीहां मल्लि तीर्थपति बोल्या, शुं करवा मरो भागो उल्या ॥ तीहा मोहराय खेदे भराणो॥ बोल्यो वेरी रहे तु ठानोमानो ॥ ४ ॥ जो मे तने नाच नचाव्यो, जरूप करीने भमाव्यो ॥ मुज आणामां अनंत काळ वसीयो, त्यांथी तुं आज दीसे छे खसीउ ॥ ५ ॥ पूरवना दिवस तुं भूल्यो, तने कवजे करुंतुं शुं फुल्यो ॥ तुज ऋधि पलकमां पभावु, हेकमाही हुं तने ठलावुं ॥ ६ ॥ तुज जेवा में कगाल कीधा, पकमी निगोदने दीधा ॥ लोकाधिपति मुजनाम, त्रण लोक अमारुं गाम ॥ ७ ॥ मुज आज्ञा कोइ न लोपे, लोपे तो चढावुं हु तोपे ॥ इत्यादि घणा बोल बोल्या, मल्लि वळतु कहे सुण उल्या ॥ ८ ॥ तें कह्यु ते सरवे साचुं, तु रुठयो मुके नही काचुं ॥ तुं निर्दय हृदये कठोर, अभिमानी तुही छे निठोर ॥ ए ॥ भव स्थिति जेनी न पाकी, तेने दुःख दीये तुं एकाकी ॥ माहारे तो स्थीति हवे पाकी, नही चाले तारुं तुं नापाकी ॥ १० ॥ कोइ कोइनु कह्यु नही माने, वळी वचन सुणे नही काने ॥ सुभटो भाभा झुझे, पराक्रम जोइ पर्वत ध्रुजे ॥ ११ ॥ रणभूमिये सग्राम थावे, सामासामी शस्त्रो वरसावे ॥ सावचेत आळसु नही कोइ, खान पान दीये पक्ष दोइ ॥ १२ ॥ ए [illegible] मां थावे, वीरुदावलि बेहु

जण गावे ॥ हवे आगळ जे कांइ थावे, ज्ञान शीतळ
कहेशे ते जावे ॥ १२ ॥

॥ ढाळ २ जी ॥

॥ देशी कमखानी ॥

मल्लिनाथ जिनेंद्र देव उगणीसमा, अतुळी बळ कुळे
जेम जने कुवो ॥ ज्ञान गुण निर्मलो, स्वरूपे प्रकाशीयो,
जासियो जीव पुद्गल जूदो ॥ मल्लिनाथ जिनेंद्र० ॥ ए
आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ शुद्ध श्रद्धा करी, विकलता पर
हरी, प्रगट समकित जीम गयणे चंदो ॥ जागीयो लागीयो
नकुण चडयारलो, मिथ्यात्व वंश कीधो निकंदो ॥ म०
॥ २ ॥ उपशम सुभट नव समकित जोमीउं, मोहनो स्थं
रण पाये हेतो ॥ कषाय चउ चोकडी सोळ दबावीया, तीह
हुवो आनन्द शीतळ जेतो ॥ म० ॥ ३ ॥ शियळ सुभ
निद्रा खेडनो भेडनो, कदर्प चोरने बाण तीखो ॥ ते सु
स्या पनरो भूमिपर रमवके, जरिजनो साधना एम शीख
॥ म० ॥ ४ ॥ वैराग सुभट तीहा कुकतो बुकतो, शत्रु स
सुम्ब आगळ आवे ॥ ज्ञान कटार मारे बहु बळ करी, आश
दि पट तीहां थन थावे ॥ म० ॥ ॥ ५ ॥ भाव श्रु
ज्ञान सुभट बळ गाजतो ॥ दीप दीनकर उ
पूर्व दीसि ॥ ए हणे ते कहु नीद्रादिक सुभटने
जाये एम जगगुरु ए वचन वीशी ॥ मल्लि० ॥ ६
क्षय उपशम जिहां प्रगट चेतन तीहां, विस्तारे चेत
रुप धारे ॥ वीर्य तीहा आवीयो, बळ करी मारीयो, च

मनने तीहां रहीने पाखे ॥ म० ॥ ७ ॥ इंद्रि निग्रह सुन्नट चित्त चोखु करी, स्थीर उपयोगे तीहां झूझे बुझे ॥ तप तीहां आवियो हाथ देखावीयो, असयम न्नूमि पक्यो थरथर ध्रुजे ॥ म० ॥ ८ ॥ धर्म शुकल ध्याइए, तुरंग गति पाइए, ध्यान ए सुन्नटोमां ज्ञान मोटो ॥ ते हणे आरत रौद्र दोय सुन्नटने, वचन ए सत्य ठे नही ए खोटो ॥ म० ॥ ए ॥ न्नाव सवर सुन्नट आतम ज्ञानमां, झुझे बुझे अति वीर्य दाखे ॥ ते हणे आश्रव शुन्न अशुन्नने, निरमळ चेतनारूप चाखे ॥ म० ॥ १० ॥ निर्जरान्नाव सुन्नट वळ गाजतो, राजतो ज्ञानमां शुद्ध न्नावे ॥ पूर्व बध कापतो अजीवने आपतो, मुक्ति पंथ चालतो मगल गावे ॥ म० ॥ ११ ॥ अनुन्नव ज्ञान सुन्नट निज रूपमां, झुझे बुझे निरन्नय ठे मनमां ॥ वीर्य अधिको धरे जमरूप तीहां मरे, निर्मळता करे मूळ रूपमां ॥ म० ॥ १२ ॥ सुन्नटो इत्यादि अधिक बळे झूझता, सिंह नाद करता ए धोंके ॥ मोह तीहां न्नागीउं पुठ देखावीयो, ज्ञान शीतळ फरी युद्ध मांके ॥ म० ॥ १३ ॥

ढाळ ॥ ३ ॥ जी ॥

करजोमी कहे कामनी ललना ॥ ए देशी ॥

मल्लिनाथने मोह आविया, ललना, लालाहो रणन्नूमिये झुझवा काज ॥ ए युद्ध सारुंरे ललना ॥ ढेप गजेंद्र उपरे ललना, लालाहो वेगे ठे मोह राज्य ॥ ए० ॥ १ ॥ ए आंकणी॥ राग केशरी पुत्र साथे लइ ललना, लालाहो

पोते चढी आव्यो त्यांही ॥ ए० ॥ तेना सामा मल्लि जि
नपति ललना, लालाहो आवे हरख उछांहि ॥ ए० ॥ २ ॥
श्रद्धा अष्टापद वेसीया ललना, लालाहो साथे अप्रमत्त
ज्ञान पुत्र ॥ ए० ॥ त्रारक पक्षी सो सचेत छे ललना, ला-
लाहो सुपे तेने घरसूत्र ॥ ए० ॥ ३ ॥ मल्या सामासामी
एकठा ललना, लालाहो तीहां मार्यो मल्लीये मोहराय ॥ए०॥
महा जोरावर जे हुतो ललना, लालाहो ते एक लीलाये
हणाय ॥ ए० ॥ ४ ॥ रागद्वेष मुआ ते समे ललना, ला-
लाहो अशुद्ध परिणति त्यां छेदाय ॥ ए० ॥ चरण यथा
ख्यात पामीया ललना, लालाहो पूरण शुद्ध परिणति थाय
॥ ए० ॥ ५ ॥ वीतराग गुणठाणे वारमे ललना; लालाहो
आव्या मल्लि जिणंद ॥ ए० ॥ तीहा शत्रु त्रण सामा आ
वता ललना, लालाहो तेने मार्या तीहां प्रगटयो आणंद
॥ ए० ॥ ६ ॥ अनत चतुष्टी प्रगट थइ ललना, लालाहो
गुणठाणुं त्या तेरमु सार ॥ ए० ॥ देवो समवसरण रचे ल-
लना, लालाहो पर्षदा मीले तीहा बार ॥ ए० ॥ ७ ॥ पाद
पीठे मल्लीजी विराजता ललना, लालाहो चउ मुखे देशना
दीये सार ॥ ए० ॥ उपजे वीणसे स्थीर रहे ललना, लालाहो
सुणी करवो वस्तु विचार ॥ ए० ॥ ८ ॥ ए विचार चितक
जे थया ललना, लालाहो ते पाम्या वोधने वीज ॥ ए० ॥
ज्ञान वेरागी ते जाणीये ललना, लालाहो व्रत उचरे लाव
रीझ ॥ ए० ॥ ९ ॥ केइक ग्रहे व्रत देशथी ललना, लालाहो
केइक सर्व विरती थाय ॥ ए० ॥ सर्व विरती ते साधु सा

धवी ललना, लालाहो देशविरति श्रावक श्राविकाय ॥ ए० ॥ १० ॥ एम संघ चउविध स्थापे मल्लिजी ललना, लालाहो प्रथम स्थापे गणधरराय ॥ ए० ॥ द्वादशांगी सूत्र गणधर रचे ललना, लालाहो लब्धिये पूर्ण पद थाय ॥ ए० ॥ ११ ॥ तीहां तीर्थ स्थापन थयु ललना, लालाहो ए तीर्थ पति मल्लिनाथ ॥ ए० ॥ जिननाम कर्म उदय थयो ललना, लालाहो तेने खेरवे ए जगत्रनो नाथ ॥ ए० ॥ १२ ॥ अंते करण सैलेशी करे ललना, लालाहो तीहां थाय योगनो रोध ॥ ए० ॥ आव्या अयोगी ठाण चउदमे ललना, लालाहो तीहां टाल्यो अघातिनो विरोध ॥ ए० ॥ १३ ॥ शत्रु समुदायनो क्षय थयो ललना, लालाहो त्यां त्यागी उदारिकादी हेरु ॥ ए० ॥ परवत सम ढकण हतु ललना, लालाहो ते त्रुटी आज कार्मण तेरु ॥ ए० ॥ १४ ॥ त्रीजुं शरीर तेना मानथी ललना, लालाहो घटे एक भाग अवगाह ॥ ए० ॥ निवरु घन दोय भागे रच्यो ललना, लालाहो ते कहीए अटळ अवगाह ॥ ए० ॥ १५ ॥ एक समय सम श्रेणीये ललना, लालाहो पोत्या सिद्ध लोकंत ॥ ए० ॥ सादि अनंत स्थिति तीहा ललना, लालाहो सिद्ध वधुनो प्यारो ए कंत ॥ ए० ॥ १६ ॥ एम युद्ध अंतररूपे कुरुश ललना, लालाहो तीहां करशु शत्रु विनाश ॥ ए० ॥ ए शक्ति मल्लिजी मने आपजो ललना, लालाहो पूरजो ज्ञान शीतळनी आशा ॥ ए० ॥ १७ ॥

॥ ढाळ २ जी ॥

॥ ऋषनजी अमकु तारोरे ॥ ए ढशे ॥

मुनिसुव्रत नवि नावमारे, समजो चतुर सुजाण ॥ ज्ञानादिक शुद्ध चेतनारे, ए जीवना छे नाव प्राण ॥ सुव्रतमुनि ॥ नावो निज स्वरूप ॥ ए आंकणी ॥ अनुनव मंदिरमांही, सुव्रतमुनि, नावो निज स्वरूप ॥ गाथा ॥ १ ॥ ए नाव प्राण रक्षण जाणीरे, हणे मिथ्यात्व अज्ञान ॥ रागद्वेष मोहादि हणेरे, तीहां प्रगटे केवळज्ञान ॥ सुव्रतमुनि० ॥ २ ॥ मृषावादने टाळवारे, जाणो वस्तु स्वनाव ॥ गुणपर्यायने जाणवारे, नेद ज्ञान घट लाव ॥ सुव्रतमुनि० ॥ ३ ॥ अदत्तादान तजवा नणीरे, नावे संवर नाव ॥ आश्रव शुनाशुन ग्रहे नहींरे, ए उपयोगी मुनिराव ॥ ॥ सुव्रत० ॥ ४ ॥ मैथुन तजशु नावथीरे, करी निज परिणति शुद्ध ॥ पर परिणतिने छेदवारे ॥ तत्पर छे ए बुद्ध ॥ ॥ सुव्रतमुनि० ॥ ५ ॥ परिग्रह ग्रहे नहींरे, ग्रहे मूळ स्वरूप ॥ कर्मबंध तोमे तीहारे, अनुनवे वस्तु अरूप ॥ सुव्रतमुनि० ॥ ६ ॥ पुद्गल गुण नोगी नहींरे, निज गुण नोगी सदाय ॥ ज्ञानानंदी आतमारे, क्लेश न व्यापे कदाय ॥ सुव्रतमुनि० ॥ ७ ॥ ए नाव विरति मुक्ति दियेरे॥ जगगुरु नाखे एम ॥ ज्ञान शीतळ नूले नहींरे, कीधी श्रद्धा प्रतित वळी प्रेम ॥ सुव्रत० ॥ ८ ॥

इति मुनिसुव्रत स्वामीनु स्तवन

॥ स्तवन १२ मु श्री नमिनाथजीनु ॥

॥ अभिनव ज्ञान भणो मुदारे लाल ॥ ए देशी ॥

नमि जिनपति गुण गाइएरे लाल, पाइए जीव गुण ज्ञानरे ॥ हु वारी लाल ॥ निज शुद्ध रूप निहाळीएरे लाल, कीजीये उपयोगे ध्यानरे ॥ हुं वारी लाल ॥ नमि जिनपति गुण गाइएरे लाल ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ पर्यायमय द्रव्य एकतारे लाल, उपजे वीणसे अने ध्रुवरे ॥ हुं वारी० ॥ पर्यायें उपजेने वीणसेर लाल, द्रव्यें ध्रुव सदीवरे ॥ हुं वारी० ॥ नमि० ॥ २ ॥ ए त्रण लक्षण पट जाणीयेरे लाल, एक जीव पांच अजीवरे ॥ हुंवारी० ॥ स्वभाव पर्याये चउ शुद्धतारे लाल, बे विभावे पुद्गल जीवरे ॥ हुवारी० ॥ नमि० ॥ ३ ॥ पुद्गल शुद्ध परमाणुउरे लाल, मीले विखरे खध अशुद्धरे ॥ हु० ॥ जीव ससारी कर्मबंधथीरे लाल, गति पर्यायें अशुद्धरे ॥ हुं० ॥ नमि० ॥४॥ गति पर्याय ते काया सहीरे लाल, जोग इंद्रिए परभावरे ॥हु०॥ तेना संगे उपयोगी चेतनारे लाल, रागद्वेष परिणमे विभावरे ॥ हु० ॥ नमि० ॥ ५ ॥ ए संसार स्थिर कारण सहीरे लाल, परभाव तेह निमित्तरे ॥ हुंवारी० ॥ उपादान रागद्वेष चेतनारे लाल, तेथी कर्म वध सदीव अहितरे ॥ हुं ॥ नमि० ॥ ६ ॥ ए परसगे ससार दाखीयोरे लाल, हवे निज संगे शिवपुर जायरे ॥ हु० अनुभव योगे वर्णवुरे लाल, स्थिरता मनवच कायरे ॥ हु० ॥ नमि० ॥ ७ ॥ जोग इंद्रि द्वारे हुइ चेतनारे लाल, ए उपयोग अशुद्ध अनादरे ॥ हुं०

॥ ढाळ २ जी ॥

॥ ऋषन्नजी अमकुं तारोरे ॥ ए ढशो ॥

मुनिसुव्रत न्नवि न्नावमा रे, समजो चतुर सुजाण ॥ ज्ञानादिक शुद्ध चेतनारे, ए जीवना ठे न्नाव प्राण ॥ सुव्रतमुनि ॥ न्नावो निज स्वरूप ॥ ए आकणी ॥ अनुन्नव मन्दिरमाही, सुव्रतमुनि, न्नावो निज स्वरूप ॥ गाथा ॥ १ ॥ ए न्नाव प्राण रक्षण जाणीरे, हणे मिथ्यात्व अज्ञान ॥ रागद्वेष मोहादि हणेरे, तीहां प्रगटे केवळज्ञान ॥ सुव्रतमुनि० ॥ २ ॥ मृषावादने टाळवारे, जाणो वस्तु स्वन्नाव ॥ गुणपर्यायने जाणवारे, न्नेद ज्ञान घट लाव ॥ सुव्रतमुनि० ॥ ३ ॥ अदत्तादान तजवा न्नणीरे, न्नावे सवर न्नाव ॥ आश्रव शुन्नाशुन्न ग्रहे नहींरे, ए उपयोगी मुनिराव ॥ ॥ सुव्रत० ॥ ४ ॥ मैथुन तजशु न्नावथीरे, करी निज परिणति शुद्ध ॥ पर परिणतिने ठेदवारे ॥ तत्पर ठे ए बुद्ध ॥ ॥ सुव्रतमुनि० ॥ ५ ॥ परिग्रह ग्रहे नहींरे, ग्रहे मूळ स्वरूप ॥ कर्मबध तोमे तीहारे, अनुन्नवे वस्तु अरूप ॥ सुव्रतमुनि० ॥ ६ ॥ पुद्गल गुण न्नोगी नहींरे, निज गुण न्नोगी सदाय ॥ ज्ञानानदी आतमारे, क्लेश न व्यापे कदाय ॥ सुव्रतमुनि० ॥ ७ ॥ ए न्नाव विरति मुक्ति दियेरे॥ जगगुरु न्नाखे एम ॥ ज्ञान शीतळ न्नले नहींरे, कीधी श्रद्धा प्रतित वळी प्रेम ॥ सुव्रत० ॥ ८ ॥

इति मुनिसुव्रत स्वामीनु स्तवन

स्तवन ॥ १३ ॥ प्रु ॥ श्री नेमिनाथ जीनतु ॥

॥ साधुजी समता आदरो ॥ ए देशी ॥

नेमिनाथजीनी जान न्नवी सांन्नळो, आवे परणवा करी वहु ठाठ मेरे लाल हय गय रथ शणगारीया, पगपाळा हलमल नाठ मेरे लाल ॥ नेमिनाथजीनी जान० ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ जादववंश सरवे सज थया, दीपे वस्त्र आन्नुपण युक्त ॥ मे० ॥ वाळ तरुण वृद्ध आविया, लइ राजऋद्धि न्नली युक्त ॥ मेर० ॥ नेमि० ॥ २ ॥ कृष्ण नरेंद्र गज उपरे, शोन्ने जेम तारामा चंद्र ॥ मेरे० ॥ तेथी अधिक शोन्ने नेमिजी, रथ वेठा अधिक आणंद ॥ मेरे० ॥ ॥नेमि०॥३॥मणी आदि जमित आन्नूपणो,राजे कोट केहेरु कांनु कान ॥ मेरे० ॥ वस्त्र अमुलख अंगमां, शेलां मंमिल जामो जरियान ॥ मेरे० ॥ नेमि० ॥ ४ ॥ दीनकर मुख जोइ आवीयो, हुआ नेमि अधिक तेजवान ॥ मेरे० ॥ मोती अमुलख घणां ठागले, चावे वीकुं नागरवेल पान ॥ मेरे० ॥ नेमि॥ ॥ ५ ॥ स्त्री वृंद उलटन्नरे, गावे मंगलिक गीत विनित ॥ मेरे० ॥ मोहित शब्द तीहां वापरे, सुस्वर विकल रंगीत ॥ मेरे० ॥ नेमि० ॥ ६ ॥ वाजित्र वाजे अति घणा, ऊऊा वडुकी करे अवाज ॥ मेरे० ॥ उंट घोमे नगारां गमगमे, दारुखानु उमे रीऊ काज ॥ मेरे० ॥ नेमि० ॥ ७॥ अश्व अनेक खेलावता, गज चढी रा महा ऋद्धिवंत ॥ मेरे०॥ केइक रथमा वेशीया, पगपाळा अनेक न गणत ॥ मेरे० ॥ नेमि० ॥ ८ ॥ पालखी मेना अति घणा, तेमां वेठा केइ

वैराग भावे ॥ मुळरूप जुए निज गुण स्थिर उपयोग अनुभव प्रगटावे ॥ ए आंकणी ॥ ५ ॥ इहां वैराग रग वृद्धि घटमां, रथ वाल्यो तोरणथी झटपटमां ॥ धिक्कार हो संसार कारजमां, ॥ आज ज्ञान० ॥ मूळ० ॥६॥ तव राजुल दुःख ज्वाळा लागी, विलाप करे हुं निरभागी ॥ समजाव्या नहीं समजे रागी ॥ आज० ॥ मूळ० ॥ ७ ॥ घेर आवी वरसी दान दीये, नित्य एक क्रोड आठ लाख भव्य लीये ॥ हाथ धरतां न धरे लाज हीये ॥ आज० ॥मूळ०॥ ८ ॥ तीहां कीर्त्ति जश जग गाजीउं, करुणा सागर जीन राजीउं ॥ दान भव्यने देइ दुःख भाजीउं ॥आज ज्ञान०॥ मूळ० ॥ ए ॥ हवे दिक्षा उच्छवने दाखशुं, ज्ञान शीतळ घटमां राखशुं ॥ जीन भक्ति करुं गुण रागशु ॥आजज्ञान० ॥ मूळ० ॥ १० ॥

॥ ढाळ ॥ ३ ॥ जी ॥ राग विलावर ॥

॥ जगत प्रभु आगळ भवी वर अक्षत धरीये ॥ ए देशी॥

नेमि निरागी संयम लीये, रग अंतर मांहि भेद ज्ञान चित्त वासीयो, अनुभव स्थिर ज्यांहि हांहां रे ॥ अनुभव स्थिर ज्यांही, हांहा रे समकित शुद्ध त्यांही ॥ हांहां रे तीहां मिथ्यात्व नांही, हांहां रे भोग चिदघन माही॥ हांहां रे॥ उदवेग नहीं क्याही,हांहां रे एतो उत्सर्ग सांही॥ नेमी नीरागी सयम लीये,रंग अंतर मांही॥ए आंकणी गाथा१॥ ॥उच्छव महोच्छव अति घणो, देव नर करे भावे ॥ समुद्र विजय सर्व जादवा, इंद्र चोसठ आवे ॥ हांहां रे इंद्र चो-

पुन्य स्थन्न ॥ मेरे० ॥ समुद्र विजयराय शिवादेवी, नेमि मात तात निरदन्न ॥ मेरे० ॥ नेमि० ॥ ए ॥ ए जान जोइने दील रीजीया; नरन्नव सफळ समजत ॥ मेरेलाल ॥ इत्यादिक ठाठ अति घणो, एक जीन्ने न जाय कहत ॥ मेरे० ॥ नेमि० ॥ १० ॥ आव्या उग्रसेन घर आंगणे, जान स्थन्नी हरख अपार ॥ मेरे० ॥ ज्ञान शीतळ घट नेमीने, राग रग पतग ससार ॥ मेरे० ॥ नेमि० ॥ ११ ॥

॥ ढाळ २ जी ॥

॥ एक दिवस विषे नेमिकुमर निज मित्र सघाथे आवे ए देशी ॥

आज हरख वशे राजुल सखीयो वृंदे गोखे आवे ॥ नेमि मुख जुए वोले वचन सुणे सखीउं हरख न मावे ॥ ए आकणी ॥ अतरग अमीरस वर साथे, ए परणे मुने एवी तृषा छे ॥ एथी अधिक नही जगमां सरज्या छे ॥ आज० ॥ नेमि० ॥ १ ॥ सखीउं कहे ए वरणे काळो, तेने रुपाळो तुमे शु न्नाळो ॥ तुमने कीम ए लागे वहालो ॥ आज० ॥ नेमि० ॥ २ ॥ तीहा राजुल सखीयोने कहेवे, काळी कस्तुरी कीकी रेहेवे ॥ एम गुणवत्त वस्तु ते काळी हुवे॥आज० ॥ नेमि० ॥ ३ ॥ए रत्न चितामणी सरखो छे, करे पूर्ण मनोरथ परख्यो छे ॥ गुण उज्वळ जोइ मन हरख्यो छे ॥ आज० नेमि० ॥ ४ ॥ एणे अवसर पशुआ पोकार करे, ते सुणी नेमिजी विचार करे ॥ तस दु ख टाळी मन व्रत धरे ॥ आज ज्ञान रसे नेम निरागी ॥ अतर

वैराग ज्ञावे ॥ मुळरूप जुए निज गुण स्थिर उपयोग अनुज्ञव प्रगटावे ॥ ए आंकणी ॥ ५ ॥ ज्हां वैराग रंग वृद्धि घटमां, रथ वाल्यो तोरणथी ऊटपटमां ॥ धिक्कार हो संसार कारजमां, ॥ आज ज्ञान० ॥ मूळ० ॥६॥ तव राजुल दु:ख ज्वाळा लागी, विलाप करे हुं निरज्ञागी ॥ समजाव्या नहीं समजे रागी ॥ आज० ॥ मूळ० ॥ ७ ॥ घेर आवी वरसी दान दीये, नित्य एक क्रोम आठ लाख ज्ञव्य लीये ॥ हाथ धरतां न धरे लाज हीये ॥ आज० ॥मूळ०॥ ८ ॥ तीहां कीर्त्ति जश जग गाजीउं, करुणा सागर जीन राजीउं ॥ दान ज्ञव्यने देइ दु:ख ज्ञाजीउं ॥आज ज्ञान०॥ मूळ० ॥ ए ॥ हवे दिक्षा उच्छवने दाखशु, ज्ञान शीतळ घटमां राखशुं ॥ जीन ज्ञक्ति करुं गुण रागशुं ॥आजज्ञान० ॥ मूळ० ॥ १० ॥

॥ ढाळ ॥ ३ ॥ जी ॥ राग विलावर ॥

॥ जगत प्रज्जु आगळ ज्ञवी वर अक्षत धरीये ॥ ए देशी॥

नेमि निरागी संयम लीये, रंग अतर मांहि ज्ञेद ज्ञान चित्त वासीयो, अनुज्ञव स्थिर ज्यांहि हांहां रे ॥ अनुज्ञव स्थिर ज्याही, हांहां रे समकित शुद्ध त्यांही ॥ हांहां रे तीहां मिथ्यात्व नाही, हांहां रे ज्ञोग चिदघन मांही॥ हांहां रे॥ उदवेग नहीं क्यांही,हांहां रे एतो उत्सर्ग सांही॥ नेमी नीरागी सयम लीये,रंग अंतर मांही॥ए आकणी गाथा१॥ ॥उच्छव महोच्छव अति घणो, देव नर करे ज्ञावे ॥ समुद्र विजय सर्व जादवा, इंद्र चोसठ आवे ॥ हांहां रे इंद्र चो-

सठ आवे, हांहा रे देव असंग्य घोलावे ॥ हांहा रे सूर्य पूरसां तेमावे, हांहां रे सर्व मगलिक गावे ॥ हाहा रे घणां वाजा वजावे, हांहा रे तीहां थाक न आवे ॥ नेमि निरागी सयम लीये रग अतर माहीं ॥ २ ॥ तीर्थोदक वर ओपधि, लावे नीज नीज रगे ॥ आठ जाति कळश आठने, एक सहस मन चगे ॥ हाहां रे एक सहस मन चगे ॥ हांहां रे जळ भरे सौ सगे ॥ हाहां रे लावी उलट अगे ॥ हांहा रे स्थिर वृत्ति एकगे ॥ हांहां रे घणी रीझ उमगे, हाहा रे ठे प्रमोद ए भगे ॥ नेमि निरागी० ॥ ३ ॥ समुद्रविजय पेहेलो करे, पठी सूर अभिषेक ॥ समकित शुद्ध होवे तीहा आवे श्रद्धा विवेक ॥ हांहा रे आवे श्री श्रद्धा विवेक, हाहा रे शुद्ध निज गुण टेक ॥ हाहा रे नहीं परगुण भेक, हाहा रे ध्यान भक्तिनु एक ॥ हांहा रे तीहा धर्म अनेक, हाहां रे भवि समजो दरेक ॥ नेमि० ॥ ४ ॥ उत्तरकुरु शिविका वेसे नेमि निरागी, एकसत आठ उपाकता देवनर वडभागी हाहां रे देवनर वडभागी, हाहा रे राजी यइ लीये मागी॥ हाहां रे भक्तिमा लय लागी, हांहां रे घणा गुण नीरागी ॥ हांहां रे चाले पथे सोभागी, हाहा रे माने पुन्याइ जागी॥ नेमि ॥ ५ ॥ देव देवी नरनारीनी, दृष्टि ठे प्रभु सामी ॥ तारतार तुहीं साहिबा, वश्ये अतरजामि ॥ हाहां रे वश्ये अतरजामि, हांहां रे तुही ठे शीवगामी, हाहा रे अरुपी गुणधामी ॥ हाहा रे उपयोग गुण रामी, हांहा रे उपाधि सर्व वामी ॥ हाहा रे तुहीं जगगुरु स्वामी ॥ नेमि निरागी

॥ ६ ॥ वरघोमेथी उतर्या, सहसावन मोझार॥ श्रावण शुदी छट्ठने दिने, ग्रहे महाव्रत चार ॥ हांहां रे ग्रहे महाव्रत चार ॥ हांहां रे साथे पुरुष हजार ॥ हांहां रे लीये व्रत मनोहार, हांहां रे करे तत्व विचार ॥ हांहां रे वहे शीव पंथ सार ॥ हांहां रे लहे धर्म अपार ॥ नेमि० ॥ ७ ॥ मन पर्यवज्ञान उपन्युं, अप्रमत गुणठाणे ॥ विपुलमति चढती कळा तेनो उपयोग नाणे, हांहां रे तेनो उपयोग नाणे, हांहां रे उपयोग श्रुत न्नाणे ॥ हांहां रे अनुन्नव घट आणे, हांहां रे निज पर न्नेद जाणे ॥ हांहांरे हण्यो मोहज्ञान वाणे, हांहां रे त्रुटयो राग ते टाणे ॥ नेमि निरागी सयम लीये रग अतर मांही ॥ ७ ॥ छद्मस्थ चोपन दिन वितीया सनातक तीहा थावे ॥ अनत चतुष्टय पामतां, अरिहत कहावे ॥ हांहां रे अरिहत कहावे, हांहां रे तीहां राजुल आवे हांहां रे, वळी शीश नमावे, हांहां रे प्रज्जुना गुण गावे॥ हांहां रे मेली क्यां शीव जावे, हांहां रे छोमयां नहीं मुने फावे ॥ नेमि० ॥ ए ॥ दीक्षा दीये तीहां साहेबो, लीये राजुल रगे ॥ अप्रमत्त ठाण सेवता हण्यो मोह एकगे हांहां रे हण्यो मोह एकगे, हांहां रे तीहां वीर्य अन्नगे ॥ हांहां रे छेदे सर्व कर्म चगे, हांहा रे नव खायक अगे ॥ हांहां रे वसे शिवपुर संगे, हांहा रे पेहेलां सिद्ध उमगे ॥ नेमि० १० ॥ सहस वरसनु आवखु, पाळी गढ गिरनार ॥ परण्या अपूरव महोच्छवे, शीव सुदरी प्यार ॥ हांहा रे शीव सुदरी प्यार, हांहां रे समश्रेणी त्या धार ॥ हांहां रे

एक समय त्या वार, हांहांरे लोकते रहे गार ॥ हांहारे अव्यावाध हितकार, हांहांरे ज्ञान शीतळ सार ॥ ॥ नेमि० ॥ ११ ॥

॥ कळश ॥

पाया पायारे नेमि राजुल सिद्ध पद पाया ॥ वेद विषय राग दुर कराया, वीतराग नावमा आया ॥ अनुन्नव ज्ञान स्वरूपमा लावी, चिदानद ध्यान ध्यायारे ॥ नेमि राजुल सिद्ध पद पाया ॥ पाया पायारे, मैंतो गायारे, नेमि राजुल सिद्ध पद पाया ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ गुण पर्याय एकत्व नावे, अनेद ज्ञानमां आया ॥ उपयोग स्थिर अक्षयरमणमा, केवळनाण दर्शण पायारे ॥ नेमि० ॥ २ ॥ ए नावे अरिहत पद लाध्यु, त्याथी सिद्ध पद साध्युं ॥ ससार बीज निकदन कीधु, तीहा सुख अनतु वाध्युरे ॥ नेमि० ॥ ३ ॥ नेमि पेहेला राजुल सिद्ध थावे, स्वामि आज्ञा शीर चढावे ॥ पति अनिप्राये पतिपणु पामी, सिद्ध वधुकत कहीने बोलावे रे ॥ नेमि० ॥ ४ ॥ सिद्ध निरजन ज्योति स्वरूपी, अचळ अक्षय पद रामी ॥ अकळ अलख तुही रूपी अरूपी, ज्ञान शीतळ अतर जामी रे ॥ नेमि० ॥ ५ ॥ सपूर्ण सर्व गाथा ३७ ॥

स्तवन ॥ १४ ॥ मु ॥ श्री पार्श्वनाथजीनु ॥

॥ वीर कुवरनी वातमी कोने कहीए ॥ ए देशी ॥

पार्श्व जीणदने ध्याइयें, नवी नावे, नाव उपयोग तीहां कहावे॥ शीन साधन ए विण नावे, सत्य समजो एम॥

पार्श्व जिणंदने ध्याइये जगविजयो ए आंकणी ॥ गाथा ॥१॥
पारस स्पर्शे लोह कंचन थावे ॥ फरी लोह थाउं नहीं पावे॥ समजवा दृष्टांत विवेक आवे, ध्यावे ज्ञानने ध्यान ॥पा.२॥ शुद्ध स्वभाव पारस मळी ने फरसे, तीहां परसंग उपयोग टळशे ॥ निज उपयोग शुद्धता करशे, एमां नहीं संदेह ॥ पार्श्व० ॥ ३ ॥ उपयोग शुद्ध स्वरूपनो सार जाणो, गुणपर्याय मांही आणो॥ निर व्यक्ति अनंती टाणो, ही· स्वरूप रसाल ॥ पार्श्व० ॥ ४ ॥ आतम ज्ञाननी शुद्धता त्यां थावे, शक्ति व्यक्ति करी जीव साधे ॥ ज्ञान शीतळ सिद्ध आराधे, पामे पद निरवाण ॥ पार्श्व० ॥ ५ ॥

स्तवन ॥ १५ ॥ श्री वीरस्वामीनुं ॥

मारुं मन लोभाणुंजी, मारुं दील लोभाणुंजी देखी पद ऋद्धि वीरनी मारुं मनलोभाणुंजी ॥ ज्ञायक ऋद्धि सदगुरु ओळखावे, तेहनो राग करावे॥ रागनी प्रथम भावे धीर्ये धोरवे, त्यां ग्रंथि भेदि समकित पावे ॥ मारुं मन लोभाणुंजी॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ समकितादि हाणे जीव चंदे जागे, गुणस्थानक अनुक्रम चढशे ॥ क्षपक श्रेणि मांड वीर्य अनंतु, त्यां हणे रागद्वेष मोह जडनो ॥ मारुं० ॥ २ ॥ ए मोह नाशे ध्याये वीतराग भावमां शुद्ध वीतरागपणो पावे ध्याना ॥ ज्ञानावरणादि त्रण घने त्यां हणीने, लहे केवळ ए लोकालोक ज्ञाना ॥ मारुं० ॥ ३ ॥ ज्ञायक ऋद्धि अनंती ए जेने प्रगट प्रकाशे ज्ञानमां॥ ए ऋद्धिनुं दर्शन पावे सदा मग्न रहे चेतना करी संयमां ॥ मारुं० ॥ ४ ॥

क्षायक समकित वेदक करीने लहे चोथे वा सप्तम ठाणे ॥ क्षायक चरणठाण दसमा अंते, करे उनमूळ मोहनु ते टाणे ॥ मारु० ॥ ५ ॥ केवळज्ञानने केवळ दर्शन, दानादिक वळी पाच ॥ ए सत गुणठाण द्वादश अंते, सवे क्षायक नव नहीं खाच ॥ मारु० ॥ ६ ॥ ज्ञानावरणीने दर्शनावरणी, अंतराय सत्ता खुटे॥ तेनो अंत ठाण द्वादश अंते, एम घाति कर्म सवि तुटे॥मा७॥ए क्षायक ऋद्धि आत्म सत्ताये,अनादि शक्तिये जाणो॥महावीर प्रभुए व्यक्ति भावे करीने, अयोगी अंते अघाति अंत आण्यो ॥ मा८० ॥ ८ ॥ ए सिद्ध निरंजन समश्रेणीये लोक शिखर करे वास ॥ त्यां भोगवे अव्याबाध सुख अनंतु, लागे सादि अनंत भग खास ॥ मारु० ॥ ९ ॥ ए सुखना रसीया मनोरथ करता, उपयोग भावे रमता ॥ ज्ञान शीतळ हणे मोहनी उपाधि, ते समाधि ये शीव पद वरता ॥ मारु० ॥ १० ॥

॥ स्तवन १५ मु श्री वीरप्रभुनु ॥

॥थारा मेहेला उपर मेह झरुखे वीजळी हो लाल ए देशी॥

वीर जिनेश्वर देव शासन पति जगधणी हो लाल ॥ शासनपति जगधणी ॥ तु उपगारी महासत महंत अनंत गुणी हो लाल ॥ महंत० ॥ ज्ञान ध्यान उपयोग वीर्य बळ एस्यता हो लाल ॥ वीर्य० ॥ अनुभवे द्रव्य पर्याय स्वभावनी टेकता हो लाल ॥ स्वभाव० ॥ १ ॥ उदिक भाव नहीं व्यापे व्यापक उपयोमा हो लाल ॥ व्यापक ०॥ ज्ञान समग चउ धार अपुरव खेलमा हो लाल ॥ अपूर्व०

हणीर्ड-मद्दा मोहमल हएया रागद्वेषने हो लाल ॥हएया० ॥ टळी परिणति अशुद्ध त्यां शुद्ध प्रवेशने हो लाल ॥ त्यां शुद्ध० ॥ २ ॥ ज्ञान दर्शन अतराय त्रिकर्म इहा टळे हो लाल ॥ त्रिकर्म० ॥ गुण घातिने अन्नावे अनंत चतुष्टी मळे हो लाल ॥ अनत० ॥ इत्यादिक घणी रीते साधन पक्ष दाखीये हो लाल ॥ साधन० ॥ नय निक्षेपा प्रमाण सयुक्तादि न्नाषियो हो लाल ॥ सयुक्तादि० ॥ ३ ॥ एम उपगार अनंत सिद्धांते तुमे कर्यो हो लाल ॥सिद्धाते०॥ तुज शासन सयोगे हुं मार्गे चढयो खरो हो लाल ॥ हुं मार्गे० ॥ अन्य दर्शन कुपथ कुधर्मेन सचरु हो लाल ॥ कुधर्मे० ॥ ज्ञान शितळ जैन न्नावे सिद्ध पदने वरुं हो लाल ॥ सिद्ध पदने० ॥ ४ ॥

स्तवन ॥ १६ मु ॥

॥ उंधवजी सदेशो कहेजो श्यामने ॥ ए देशी ॥

अपूर्व अवसर एवो क्यारे आवशे, क्यारे यइशु क्षायक लब्धिवतजो॥ आत्म सत्ताये शक्तिन्नावे अनादिनी, रही व्रती पर्याये एम न्नाषे गुरुसतजो॥ अपूर्व अवसर एवो क्यारे आवशे ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ क्षायक लब्धि पामवा बे कारण कहु, चौ न्नेदे मीले जव क्षयोपशमनी सहायजो ॥ परिणामिक न्नाव शुद्ध स्वन्नावे परिणमे, तिहां क्षायक लब्धि पामे चेतनरायजो ॥ अपूर्व ॥ २ ॥ क्षायक लब्धि अनत न्नेदे एम जाणीये, ते केवळीथी पण वचन अगोचर न कहेवायजो ॥ क्षायक लब्धि नव न्नेदे ग्रथे

कही, ते घाति कर्मना क्षयथकी प्रगटायजो॥ अपूर्व० ॥३॥ क्षायक समकित पामे गण चोथा वा सातमे, तेना बद्धायु क्षायकने अबद्धायु क्षायक दो भेदजो॥ बद्धायु क्षायक लहे शीव्र सुख त्रीजे चोथे भवे ॥ अबद्धायु क्षायक लहे तद भवे शीव्र पदजो ॥ अपूर्व० ॥ ४ ॥ क्षयोपशम समकिती वेदक करी क्षायक लहे ॥ ते वेदक समकितनी स्थिति एक समयनी होयजो ॥ सात प्रकृति होय छेद तीहा सत्ता थकी॥ ज्ञान दर्शण दोउ त्यां अप्रतिपाति जोयजो ॥ अपूर्व० ॥ ५ ॥ अबद्धायु क्षायक समकीति क्षपक श्रेणी माण्डीने, गण दशमा अते करे सत्ताथी मोहनो विनाशजो॥ राग द्वेष परिणति अशुद्ध टळे तीहां ॥ लहे चरण यथाख्यात करे क्षीण मोह ठाणमा वासजो ॥ अपूर्व० ॥ ६ ॥ ए क्षीण मोह अते त्रण कर्म साथे हणे,ज्ञानावरणीने दर्शनावरणी अतरायजो॥ केवळनाण दर्शणने लब्धि पाच क्षायक भावनी, ए गुण प्रगटे त्या कहीए श्री अरिहंत रायजो॥अपूर्व०॥ ॥ ७ ॥ इहां सयोगी केवळी गुणठाणु तेरमु कीजीए ॥ तीहा क्षायक नव लब्धिनी पूरण प्राप्ति थायजो ॥ ए लब्धि जोगे सेहेजे शीव सुख सपजे, अयोगी अते अघाति हणी सम श्रेणीये सधायजो ॥ अपूर्व० ॥ ८ ॥ ए सिद्ध निरजन लोकाग्र भागे रह्या ॥ अचळ अविनाशी तीहा सादि अनत लागे भगजो ॥ क्षायक ऋद्धि अनत भेद इहा भोगवे ॥ परमानद पामे अव्याबाध सुख सगजो ॥ अपूर्व० ॥ ९ ॥ जे समय पामु शक्तिथी व्यक्तिपणुं ॥

ते समय होय अनुमोदवा योग्यजो ॥ क्षायक ऋद्धि आविर्भावे प्रगटे ॥ त्यां भागे वीरह थाय शुद्ध चेतना संयोगजो ॥ अपूर्व० ॥ १० ॥ क्षायक लब्धि पामवा में इच्छा करी ॥ तीहां पुद्गलिक भावनी इच्छा भागी जायजो ॥ परवस्तुनी ममता मूर्छा परिहरी ॥ क्षायक गुण रागे प्रशस्त राग कहायजो ॥ अपूर्व० ॥ ११ ॥ क्षायक ऋद्धि भव स्थिति पाके संपजे ॥ ते उद्यम जोगे जलदी पाके एमजो ॥ उद्यम करीये भाव निक्षेपे घटंतरे ॥ त्यां अनुभव जोगे समाधि लहतां खेमजो ॥ अपूर्व० ॥ १२ ॥ विषय विकार वेदवामां आवे नहीं ॥ त्यां अंतर क्रिया अंतर रमण कहायजो ॥ ज्ञान शीतळ निजात्म भावे होय साधना ॥ तीहां शुद्ध उपयोगे क्षायक ऋद्धि ग्रहायजो ॥ अपूर्व० ॥ १३ ॥

॥ स्तवन १७ मु उपदेशीक ॥

चेतावुं चेती लेजोरे एक दिन जरुर उभी जावुं ॥ ए देशी

सुणजो भविजन भाइरे, साधन भाव निक्षेपे साचु ॥ भाव निक्षेपे ग्रथि भेद करता, समकित भावे राचुं॥ सुणजो भविजन भाइरे ॥ साधन० ॥ १ ॥ भावे ध्यान तुरगे नाचु ॥ भावे शीवसुख लहीए जाचु ॥ ए त्रीण साधन सव काचु ॥ सुणजो भविजन ॥ ए आंकणी ॥ द्रव्य निक्षेप कह्यो अना उपयोगे, अनुयोग द्वार सिद्धांते॥ भाव निक्षेप उपयोगे दाख्यो, ते लहो भविशांत दांते ॥ सुणजो० ॥२॥ द्रव्य प्राणने चेतन जाणी, द्रव्य निक्षेपे किरिया करतो ॥

जीवा जीव सत्ता भिन्न न जाणे, व्यवहार मार्गे ए बाळ रमतो ॥ सु० ॥ ३ ॥ किरियामा लिंगमा चरण आरोपे, भाव अपेक्षा न राखे ॥ निमित्त उपादान भेद न समजे ते शीव सुख कदीये न चाखे ॥ सु० ॥ ४ ॥ ए द्रव्य निक्षेपो कह्यो ते करता, ससार वास न तुटे ॥ कर्म वध करी चौ गति भटके, भाव निक्षेपे ससार खुटे ॥ सु० ॥ ५ ॥ हेय उपादेय बुद्धि लहीने, भाव निक्षेपो भावो ॥ हेय उपाधि पर वस्तु ठरी, उपादेय शुद्धात्म निज ध्यावो ॥ सु० ॥ ६ ॥ ए भाव निक्षेपो शिव हेतु दाख्यो, स्वरूप रमणमा राख्यो ॥ भाव उपशम क्षयोपशम क्षायक, लहो उपयोगे ज्ञानीए भाख्यो ॥ सु० ॥ ७ ॥ क्षायक भावने कार्य मानो, क्षय उपशम कारण जाणो ॥ शक्ति व्यक्ति लहीये ते साधन, ज्ञान शीतळ वचन प्रमाणो ॥ सु० ॥ ८ ॥

॥ इति स्तवन अधिकार सपूर्ण ॥

अथ सज्झाय अधिकार.

॥ सज्झाय ॥ १ ली ॥ समकितनी ॥

॥ ऋषभनो वशरणायरो ॥ ए देशी ॥

चेतन समकित आदरो, लक्षण पांच विचारो रे ॥ सम संवेग निरवेदए, अनुकपा आस्ता धारो रे ॥ चेतन समकित आदरो ॥ ए आंकणी० ॥ गाथा ॥ १ ॥ उपशम लक्षण पेहेलु भावीए, क्षमायें क्रोधादि हणीये रे ॥ वेर विरोध समाविए, समभावे भवि भजीये रे ॥ चेतन० ॥२॥ बीजु लक्षण संवेगीयो, सुरनर सुख दुःख सरखु रे ॥ वेग

मोक्ष अभिलाषीयो, करम रहित चेतन परखु रे ॥ चेतन० ॥ ३ ॥ त्रीजु लक्षण निर्वेद लहे, चउगति बंधीखानु भारी रे ॥ अनुत्तर सुख झेर सरीखुं, ग्रहु अतिंद्रि ठकु इद्रि रे ॥ चेतन० ॥ ४ ॥ अनुकंपा लक्षण चोथु चितवे, निजपरमां द्रव्य भावरे ॥ परअनुकंपा दोय भेदथी, समजी करूणा लाव रे ॥ चेतन० ॥ ५ ॥ परदु:ख छेदे निज शक्तिये, परप्राण रखोपु रे ॥ त्रस थावर नही दुभवे, ते द्रव्य अनुकपा रोपु रे ॥ चेतन० ॥ ६ ॥ भावथी उपदेश धर्म कथा, भेद ज्ञाने देखाडे रे ॥ जीव पुद्गलनी भिन्नता, वस्तु सत्ता जूदी पाडे रे ॥ चेतन० ॥ ७ ॥ गुण पर्याय समजावीए, ज्ञान चेतना दीजे रे ॥ तेथी अनुभव पोते करे, निर्धार थयां दील रीझे रे ॥ चेतन० ॥ ८ ॥ श्रद्धा शुद्ध वस्तु भिन्नता, अनुभवे निज उपयोगे रे ॥ समकित प्रगट करे प्राणीउं, ते भाव अनुकंपा पर जोगे रे ॥ चेतन० ॥ ॥ ए ॥ स्व जोगे हवे भावथु, देश विरति सर्व विरति लेवे रे ॥ विषय कषायने परहरे, ते द्रव्य अनुकपा सेवे रे ॥ चेतन० ॥ १० ॥ रागद्वेष वळी मोहने, ठंडी स्वभावमां आवे रे ॥ शक्ति भाव व्यक्ति पणुं लहे, ते भाव अनुकपा निज थावे रे ॥ चेतन० ॥ ११ ॥ आस्ता लक्षण ग्रहो पांचमुं, करो जिन वचन प्रमाणो रे ॥ जेन भाव समभावमां, देख चेतन राणो रे ॥ चेतन० ॥ १२ ॥ इम पांच लक्षण लाधे आपमां, ते जाणो समकित रे ॥ ज्ञान शीतळ कीधां सपजे, ते चेतन जन्म पवित रे ॥ चेतन० ॥ १३ ॥

सज्झाय ॥ २ ॥ जी ॥ चेतनज्ञाननी ॥

॥ चेतनजी वारणे मत जावोरे ॥ ए देशी ॥

चेतनजी ज्ञान स्वरूपने धारोरे, तुमे पर उपयोग निवारो ॥ चेतनजी ज्ञान स्वरूपने धारोरे ॥ ए आकणी ॥ पूर्व कर्म जनित दश प्राणरे ॥ ते परवस्तु प्रमाणरे ॥ तेना सगे उपयोग जाण ॥ चेतनजी० ॥ १ ॥ ए उपयोग चेतन वस्तुरे ॥ परसगे जमता लहतुरे ॥ रागद्वेष अज्ञान कहतु ॥ चेतनजी० ॥ २ ॥ ए जूल अनादिनी तुजमांरे, तेथी कर्त्ता जोगता पुदगळमांरे ॥ बांधे कर्म वर्गणा चेतनमा ॥ चेतनजी० ॥ ३ ॥ तेथी चउगति जटकण लाग्योरे, मूळरूप कीहा नहीं जाग्योरे ॥ सुकृत साधन सव ताग्यो ॥चेतनजी०॥४॥ तेथी दुःखीयो अनादि ससारीरे॥ अहं मसत्व करी जूल जारीरे ॥ हवे गड वाजी ल्यो सुधारी ॥ चेतनजी० ॥ ५ ॥ सदगुरूनी सेवा करीयेरे ॥ करी विनय श्रवण अनुसरीयेरे ॥ तेथी ज्ञान ऋद्धिने वरीये॥ चेतनजी० ॥ ६ ॥ जे अवसर चेतन ज्ञानीरे ॥ पूर्व रीत जुए स्थिर ध्यानीरे ॥ परसगे अनती हानी ॥ चेतनजी० ॥ ७ ॥ ज्ञान वीर्य एकता कीधीरे ॥ पुदगल परिणमन तजी दीधीरे ॥ उपयोग गुणस्वरूपमा लीधी ॥ चेतनजी० ॥ ८ ॥ शुद्ध अनुजवी आतम धर्मी रे, शक्ति जाव व्यक्ति परिणमी रे ॥ पूज्य अरिहत थया शीवरमी ॥ चेतनजी० ॥ ए ॥ गुण घाति चउनो विनाशरे ॥ तीहा अनत धर्म अवकाशरे ॥ कीधो क्षायक जावमा वास ॥ चेतनजी० ॥ १० ॥ आयुष

अते योगरोध थावेरे, तीहां चेतन अयोगी गण पावेरे॥ अंते अघाति चउ थाय अन्नावे ॥ चेतन० ॥ ११ ॥ एही सिद्ध सनातक वंदुंरे ॥ मुळरूप जोइ आनदुरे ॥ ज्ञान शीतळ करी कर्म निकदु ॥ चेतनजी० ॥ ॥ १२ ॥ संपूर्ण. ॥

॥ सज्जाय ३ जी मुनिपदनी ॥

॥ ऋषभनो वश रयणायरु ॥ ए देशी ॥

रुडु मुनिपद मुज मन वस्यु, समकित मूळ ज्ञान पाइरे ॥ उलट घणो मुज अंगमां, ए वीण सर्व दु ख दायीरे ॥ रुडुं मुनिपद मुज मन वस्युं ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ शब्दनये मुनिपद संपजे, परसंग त्याग विन्नागरे ॥ अलख निरजन अनुन्नवे, स्थिर रमण उपयोगरे ॥ रुडु मुनिपद० ॥ २ ॥ श्रुतज्ञान उपयोगवंत जे, ते जीव एम बोलीजेरे ॥ अना उपयोग तन मन्न ते. नहीं जीव ए अजीव कहीजेरे ॥ रुडु० ॥ ३ ॥ शब्द अर्थनी पूर्णता, जे वस्तु गत धर्म रे ॥ शुद्ध सत्ता प्रगटे ते साधना, ए जीन वचननो मर्म रे ॥ रुडु० ॥ ४ ॥ ए विण कार्य सरे नहीं, समजो चतुर विवेकरे ॥ अंतर दृष्टियें सपजे, ग्रह्यां निज स्वन्नाव टेकरे ॥ रुडु० ॥ ५ ॥ स्वन्नाव धर्मे जे मुनि थया, नित्य प्रणमु तस पायरे ॥ अनुमोदु तस धर्मने, विनय करु जो मीले रायरे ॥ रुडु० ॥ ६ ॥ धन्य धन्य तस अवतारने, धन्य धन्य तस दरशनरे ॥ ज्ञान शीतळ कहे लीजीयें. मुनिपद ते दीन धन्यरे ॥ रुडु० ॥ ७ ॥

सज्झाय ॥ ४ ॥ थी ॥ विजयशेठ अने विजया राणीनी ॥

ढंगी उपर प्रमाणे

वीर जिनेश्वर पाय नमी, नमी अप्रमत्त राय रे ॥ विजयशेठ राणी विजया, गुण गाता हरष न मायरे ॥ धन्य धन्य ए शियळ सोहामणा ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ भरतक्षेत्र दक्षिण दिशे,समुद्र तीरे कच्छ देशरे॥त्यां विजय शेठ वसे समकिती, निरविषय रंग वेशरे ॥ धन्य० ॥ २ ॥ कृष्ण पक्षे विरति हुवा, स्त्री भोग त्याग करशुरे ॥ बाळपणे निश्चे एम कीयो, वेद विषय परिहरशुरे ॥ धन्य० ॥ ३ ॥ तिहां नामे विजयारूपे भली, समकिती कन्या बाळरे॥ गुण रागे गुरु सनमुखे, गहुली करी ठवे मणीलालरे ॥ धन्य० ॥ ४ ॥ गुरूने मोतीए वधावती, कहेती व्रत उचरावोरे ॥ शुक्ल पक्षे चोथु सद्गुरु, व्रत दीये जग चावो रे ॥ धन्य० ॥ ५ ॥ पूर्व कर्म संबंधी, ए बेहुनो विवाह करी तातरे ॥ शुभ लग्ने परणावीयां, द्रव्य खरची जमाडी नातरे ॥ धन्य० ॥ ६ ॥ तव विजया शणगार सजी, अवसरे पेउ पासे आवेरे ॥ तेने देखी शेठ हरख धरी, बोले वचन मन भावेरे॥ धन्य० ॥ ७ ॥ शेठ कहे कृष्ण पक्षनो, त्याग विषय व्रत मुजरे ॥ त्रण दिवस रह्या तेहना, पछे करशु भोग तुजरे ॥ धन्य० ॥ ८ ॥ तव विजया विलखी थइ, चिंतवे चित्त मोझार रे ॥ शेठ कहे तुं शी चिंता करे, दीन त्रण जताशी वाररे॥ धन्य० ॥ ९ ॥ विजया कहे मीठे बोलडे, शुक्ल पक्षे व्रत मुज रे ॥ गुरु पासे बाळ वये लीयो, ते केम सेवुं हुं स्वामी तुज रे ॥

॥ धन्य० ॥ १० ॥ उन्नय पक्षे अमे पाळशु, पेहेरी शियळ सन्नाह रे ॥ काम वाण लागे नही, ज्ञान योगे टालु वेद दाह रे ॥ धन्य० ॥ ११ ॥ तमे अवर नारी परणीने, सेवो शुक्ल पक्षे तेह रे ॥ कृष्ण पक्षे विरति रहो, त्याग विषय सेवा एह रे ॥ धन्य० ॥ १२ ॥ एम विजया मुख वचन ए, मधुर साकर जेम द्राख रे ॥ सांन्नळी शेठ आगळ कहे, ज्ञान शितळ सुणी शियळ राख रे ॥ धन्य० ॥ १३ ॥

॥ ढाळ ॥ २ ॥ जी ॥

॥ श्रुतशु रंग लाग्यो ॥ ए देशी ॥

शेठ शियळ दृढ रंग अनोपम, निर्विष निर्मळ काया रे ॥ शुरवीर काम कदर्प हणवा, श्रुत ज्ञानी मांहि ए सवायारे ॥ शियळशु रग लाग्यो० ॥ रग लाग्यो रे चोळ मजीठ ॥ शियळशुं रग लाग्यो ॥ ए आकणी ॥ गाथा ॥ ॥ १ ॥ वीजी नारी न परणु न न्नोगवु, विषय काळकुट विष सरखु रे ॥ एम समजी उन्नय पक्ष पाळी, निर्विष शिळ गुणे हरखु रे ॥ शियळशु रग लाग्यो० ॥ २ ॥ सदा सर्वदा विषय न सेवु, त्रिकरण योगे व्रत वहालु रे ॥ मात पिताने ए वात न जणावु, जाणे तव दिक्षा लइ पाळुं रे ॥ शियळ० ॥ ३ ॥ एम अन्निग्रह वेहु एक वृत्तिये, लीये शुद्ध शिळ परिणामेरे ॥ त्यागी वैरागी ए जीव गुण रागी, चढी न्नाव चरण ठाण पामे रे ॥ शियळ० ॥ ४ ॥ क्षण क्षण वरते निज उपयोगे, अनुन्नवे निज पर न्निन्नरे ॥ न्नाव शियळसो पुद्गल त्यागे, परश विन्नागी तद लीन्नरे॥

॥ शियळ० ॥ ५ ॥ तद्गत लीन्न वेहु एक सज्याए, सुवे मध्य खड्ग व्रत धारारे ॥ धेर्यवंत वीर्यवत ज्ञानी, नरनारी संगी सग न्यारारे ॥ शियळ० ॥ ६ ॥ एक आसने वेद विषय हणीने, सुए वेसे वोले व्रत राखे रे ॥ ते कारणे केइ व्रत धर पमीया, न पम्या ते अधिक ज्ञानी भाखे रे ॥ ॥ शियळ० ॥ ७ ॥ अचळ शियळ रत्न ए अमुलख, गाम गाम नहीं नहीं गाजे रे ॥ विजय शेठ विजीया राणी वेहुने, अगे शिळ रत्न विराजे रे ॥ शियळ० ॥ ॥ ८ ॥ एम शिळव्रते प्रमोद भाके, ज्ञान शीतळ शुद्ध भावे रे ॥ विषय विकार न व्यापे अगे, ते चेतनराम कहावे रे ॥ शियळ शु रग लाग्यो० ॥ ए ॥

॥ ढाळ २ जी ॥

॥ देशी एकवीसानी ॥

विमळ केवळीरे, चपायें आवी समोसर्या ॥ मुनि समुदायरे, सहस चोराशीयें परवर्या ॥ तीहां श्रावक रे, जीनदास वीरति सही ॥ करे वदनारे, मुनिपति मुनिनो विनय तहीं ॥ त्रुटक ॥ दीये देशना विमळ केवळी, मुनि पद उळखावता ॥ एक ज्ञानी ते मुनि कहीए, वीजा ज्ञानी निश्रा पावता ॥ ए वे विण त्रीजो मुनि न कह्यो, जिनपतिए जिन शासने ॥ तेवा मुनिने विनये वादता, टोमे कर्मवध पासने ॥ १ ॥ ए मुनिनेरे, आहार पाणी आदें श्रावक दीये ॥ खप पूरतु रे दोप वर्जीत शुद्ध ते लीये ॥ आग्रह करीरे, अधिक देवानी इच्छा करे ॥ तेना फळनीरे, वढा

कदीए ते ना करे ॥ त्रुटक० ॥ ना करे वछा शुन्न फळ केरी, शुन्न कर्में शुद्ध न कोइरे ॥ शुन्न कर्म ए पुन्य प्रकृति दीये शातामें उदये जोइरे ॥ ते पापस्थान दश पंचमुं रति, पाप दाता ए सही ॥ पुन्य न्नोगवतां पाप आवे, ते कारण पुन्य न्नलुं नहीं ॥ २ ॥ एम सांन्नळीरे, अज्ञानी ते वोले इश्युं॥ सुपात्रनेरे, दान देइ न इच्छे फळ कश्युं ॥ एम जोतांरे, सुपात्र निरथक हुर्ज ॥ फळ दातारे, सुपात्र तो सुत्रे कह्या जुर्ज ॥ त्रुटक० ॥ सुपात्र तो सुत्रे कह्या ठे, वोधि वीज दाता सही ॥ दिक्षा दाता चरण प्रख्याता, आश्रव पंच त्यागी लही ॥ निर्जरा हेतु तप गुण दाता, शीवसुख हेतु ए न्नला ॥ इच्छा रहित विनय जोगे, दान देइ शुन्ना शुन्नथी टल्या ॥ ३ ॥ एम सांन्नळीरे, जीनदास विनति करे ॥ मुज घरे मुनिरे, सहस चोरासी पारणु करे ॥ ए विनतिरे साहेव मारी मानजो ॥ मनोरथ फळेरे, गुण रागे न्नक्ति जाणजो ॥ त्रुटक० ॥ वळतु केवळज्ञानी वोले, एम वाततो नहीं वने ॥ सहस चोरासी सूज्तु लेवे, आहार पाणी कीहा क्यां कने ॥ एटलो आहारादिक एक ठामे, सुजतो कदी निपजे नही ॥ तुज मनोरथ पूरवा दाखुं, फळ एटलुं होवे सही ॥ ४ ॥ वच्छ देशेरे, शेठ विजय राणी विजया ॥ न्नावयति शुद्धरे, ग्रहस्थी व्रे ज्ञाने न्निजीया ॥ शियळ शुद्धरे, अदूत्तूत अचल मगे नहीं ॥ उत्कृष्टारे, ए सम अवर न जग मही ॥ त्रुटक० ॥ ए वेहुने उलट न्नर देवो, न्नोजन न्नलो रस स्वाद ए ॥ न्नक्ति करीने रग

रीजे, गुणगावो करी नाद ए ॥ तेथी फळ लहो एटलु कहे केवळी भगवान ए ॥ ते सांभळी जीनदास जावे, ज्ञान शीतळ एक तान ए ॥ ५ ॥

॥ ढाळ ४ थी ॥

॥ धन्य लोक नगर धन्य वेळारे, मन मोहन सुंदिर मेळा ए देशी ॥

जीनदास श्रावक सधाव्या, जीन वचने वच्छ देश आव्या॥ विजय शेठने विजया राणी, देखी मळी कहे उलट आणी रे॥ स्वामी धन्य तु शियळ सोभागी, धन्य मारी जनित गुणरागीरे स्वामी धन्य तु शीयळ सोभागी० ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ नमी प्रणमे भक्ति भावे, प्रमोदित आनद पावे ॥ गुण वृद्धि लहे गुण गावे, भाव यति गाणे तु सोहावे रे ॥ ॥ स्वामी० ॥ २ ॥ सहस चोराशी मुनिने देवे, आहार पाणी सूझतु ए लेवे ॥ बहु माने देता फळ थावे, एटलु फळ तुजथु पावे रे ॥ स्वामी० ॥ ३ ॥ एम विमळ केवळी भाख्यु, ते वचन में घटमां राख्युं ॥ मुज मनोरथ पूरो स्वामी, जमो बेहु कहो शीरनामी रे ॥ स्वामी० ॥ ४ ॥ ए मनोरथ पूरवा हेते, जमे भोजन धर्म सकेते ॥ विजय शेठने विजया राणी, दीए एटलु फळ हीत आणी रे ॥ ॥ स्वामी० ॥ ५ ॥ जीनदासे पुरु फळ लीधु, सतकार विनय घणु कीधु॥ गुण गावे वचन विवेके, पूछे मात तात वे विशेके रे ॥ स्वामी० ॥ ६ ॥ जीनदास शियळ वखाणे, भाख्यो केवळीये ते प्रमाणे ॥ तेथी मात ताते वात जाणी,

पुत्र वधु जोमी गुण खाणी रे ॥ स्वामी० ॥ ७ ॥ इहां अ-
भिग्रह पुरो थावे, लीए चारित्र चढता भावे ॥ विजय
शेठने विजया राणी, प्रतिबधन करे गुण खाणी रे॥ स्वामी०
॥ ८ ॥ छंमी ग्रहवास कचन माया, तजी चोकमी त्रण
कषाया ॥ मिथ्यात्व त्रण भेदने वामे, क्षायक समकित
त्यां पामे रे ॥ स्वामी० ॥ ए ॥ भाव मति श्रुत ज्ञान शुद्धि
जागे, टळे पर अनुभव विभागे ॥ तीहां उपयोग स्थिर
थावे, शुद्धात्म अतर ध्यावे रे ॥ स्वामी० ॥ १० ॥ विजय
शेठने विजया राणी, त्यागी हुवां एसो भाव आणी ॥
ज्ञान शीतळ ए केवळी पासे, लेइ दीक्षा शीव गति जाशे रे
॥ स्वामी० ॥ ११ ॥

॥ ढाळ ५ मी ॥

केवळज्ञानी जगगुरु पासे, दिक्षा चारित्र लीधुं रे ॥
विजयशेठ विजयाराणीए, सावद्य पच्चक्खाण कीधुं रे ॥
चारित्र ए रुडु ॥ रुडु रमण निज गुण स्थिर ॥ चारित्र ए
रुडु ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ पचमहाव्रत उचरीयां
हिंसा मृषा अदत्तरे ॥ मैथुन परिग्रह त्यागी सर्वथी, ग्रही
आत्म सत्ता ज्ञान गतरे ॥ चारित्र० ॥ २ ॥ अनात्म सत्ता
उपाधि तजीन, द्रव्य भाव चारित्र लीधु रे ॥ तेथी चउ-
गति भ्रमणने टाळी, अपुनर्भव शीवसुख लीधु रे ॥ चारित्र०
॥ ३ ॥ शुभा शुभ दोय निर्वद्य नांही, निर्वद्य एक सम-
दृष्टिरे॥ रागद्वेष हणे तीहां थावे, समभाव शक्ति उत्कृष्टिरे
॥ चारित्र० ॥ ४ ॥ ते शक्तिये केवळ पामे, चउ गुण घाति

हणीने रे ॥ ए ज्ञावे अरिहंत सिद्ध थावे, अंते योग रोध करीने रे ॥ चारित्र० ॥ ५ ॥ अघाति चउनो क्षय ज्हां थावे, रूपातित सिद्ध ज्ञावेरे ॥ एक ज्ञाग पोलारनो ठंकी, वे ज्ञागे प्रदेश समावे रे ॥ चारित्र० ॥ ६ ॥ समश्रेणीए सिद्धि वरियां, विजयशेठ विजय राणी रे ॥ लोकते अवगाहना वीराजे, अनत धर्मनी ए खाणी रे ॥ चारित्र० ॥ ७ ॥ ए सिध्यां सादि अनतमे ज्ञांगे, अकृत्य अनुज्ञव वृत्तिरे ॥ निज गुण पर्याय ऐस्यता, न तजे लक्षण आकृतिरे ॥ चारित्र० ॥ ८ ॥ निज द्रव्यें ध्रुवता स्थिर सिद्धमां, ज्ञान शीतळ कृत ज्ञानरे ॥ सिद्ध राय ज्ञान अकृत आपो, तो रूपातित करु ध्यानरे ॥ चारित्र० ॥ ए ॥

॥ कळश. ॥

॥ त्रिजगज्ञासन ॥ ए देशी ॥

एम शियळ सुध्धु, त्रिकरण योगे, उज्ञय पक्षे पाळिये ॥ जाव जीव निश्चळ वृत्तिये, देवगति निहाळीये ॥ १ ॥ शियळे देव सानिध्य करे, शियळे शितळ आगरे॥ शियळे सकट ज्ञय हरे, फूलमाळ होय विषधर नागरे ॥ २ ॥ द्रव्य शियळ ए पुन्य कारण, शिव कारण शिळ ज्ञावथी ॥ पुद्गल त्याग अनुज्ञव योगे, ज्ञावो शिळ आत्माथी ॥ ३ ॥ ज्ञाव शीयळ एक अनुज्ञव ज्ञाने, निज पर ज्ञिन्न होवे सही ॥ शुद्ध पर्याये रमण अनुज्ञव, जांगें सिद्धगति महीं ॥४॥ विजय शेठने विजया राणी, शियळ अरुण पाळता ॥ सावद्य त्याग समदृष्टि ज्ञाने, सिद्धगति

पथ चालता ॥ ५ ॥ ए दंपतिना गुण गाया, अनुन्नव उपयोग न्नावथी ॥ तेह तणी पांच ढाळो कीधी, गुण रागे प्रमोदथी ॥ ६ ॥ मुज मनोरथ सफळ कीधो, अनुमोदना फळ मे लह्यो ॥ ज्ञान शीतळ एम गुण रागे, रमण करतां मन स्थिर रह्यो ॥ ७ ॥ आ सज्झाय जे न्नणशे गणशे, सुणशे निश्चळ चित्तथी ॥ ज्ञान शितळ आतम ज्ञान जोगे, गुण वृद्धि विनितथी ॥ ८ ॥

संपूर्ण ॥ सर्व गाथा ॥ ५५ ॥

॥ सज्झाय ५ मी अनाथ सनाथ विचारनी ॥

॥ ऋषन्ननो वंश रयणायरो ॥ ए देशी ॥

चतुर सनेही सांन्नळो, अनाथ सनाथ विचार रे ॥ द्रव्य खेत्र काळ न्नावथी, कहुं ते करो निरधार रे ॥ चतुर सनेही सांन्नळो ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ द्रव्य अनाथ जरूता तीहां, जीव अज्ञानी मिथ्यात्वी रे ॥ अशुद्ध उद्यमी ए वहिरातमा, अनादि न्नविने अन्नवी रे ॥ चतुर० ॥ २ ॥ खेत्र अनाथ वाह्य खेतमां, क्षुधा तृपादि काया गत दुःखरे ॥ मन ममताये नही तृपति, आशा अधुरि त्यां आवे नहीं सुखरे ॥ चतुर० ॥ ३ ॥ काळ अनाथ जरा मरण ए, चवन जन्म अति दुःखरे ॥ लाग्या चउगति संसारमां, केम्हे आवे एनी न्नांगी नहीं सुखरे ॥ चतुर० ॥ ४ ॥ न्नाव अनाथ विन्नाव ए, रागद्वेप दोय त्रीजो मोह रे ॥ विपय कपाय मिथ्यात्व छे, ए संसार मूळ वीज तेहरे ॥ चतुर० ॥५॥ ससार चउगति अनाथ छे, तेनो दाता मिथ्या

मोह अनाथरे ॥ एने ग्रहे ते जीव अनाथ छे, तेनो बेली नहीं सनाथरे ॥ चतुर० ॥ ६ ॥ द्रव्य अनाथ दाता अज्ञानए, खेत्र अनाथ क्षय उपशम हानी रे ॥ काळ अनाथ दाता मिथ्यात्व छे, भाव अनाथ परिणति अशुद्ध प्राणीरे ॥ चतुर० ॥ ७ ॥ तेने हण्या सनाथ त्रण लोकनो, जेहणे ते सही थाय रे ॥ एम जाणी भविजन क्षय करो, गुरु ज्ञान खरुग हाथ लाय रे ॥ चतुर० ॥ ८ ॥ ए विण अवरे क्षय नही, क्षय होय जो आतम ज्ञान रे ॥ तो घटतर प्रकाश करे, ए चोरो तीहां भागे एम मान्य रे ॥ चतुर० ॥ ९ ॥ ज्ञान योगे सनाथ आतमा, धर्म कार्य वत थाय रे ॥ तेह चउभेदे दाखवुं, उतकृष्टे परमातमरायरे ॥ चतुर० ॥ १० ॥ द्रव्य सनाथ दो भेदे कह्यु, सम्यक दर्शन ज्ञानरे ॥ धर्म उद्यमी अंतर आतमा, लहे भवि केइ एम मान्य रे ॥ चतुर० ॥ ११ ॥ खेत्र सनाथ अंतर खेत्रमा, अनुभव भुवने वास रे ॥ दृष्टि स्वभाव पर्यायमां, तीहा नहीं आश्रव अवकाशरे ॥ चतुर० ॥ १२ ॥ काळ सनाथ अप्रमत्त वृद्धिये, क्षपकश्रेणी मंडायरे ॥ ते नर अमर शीवपद वरे, अयोगी अते छुटे कायरे ॥ चतुर० ॥ १३ ॥ भाव सनाथ शुद्ध परिणतियें, चरण यथाख्यात वीतरागरे ॥ रागद्वेष मोह सवि टळे, ससार निरबीज शीवमागरे ॥ ॥ चतुर० ॥ १४ ॥ त्रण भेदो जो भावपणु लहे, तोहोय तद्भव सिद्ध राय रे ॥ नहीं तो ससार स्थिति रहे, उत्कृष्टी जघन्य कहायरे ॥ चतुर० ॥ १५ ॥ पकता अरथ

पुद्‌गल वर्त्तना, नहि तो सात आठ नव थाय रे ॥ जघन्य त्रीजे नवे शीव लहे, त्यां अव्याबाध सुख सदाय रे ॥ ॥ चतुर० ॥ १६ ॥ द्रव्य सनाथ दाता अथि नेद ए, क्षेत्र सनाथ क्षय उपशम वृद्धि रे ॥ काळ सनाथ दाता उपयोग नाव ठे, नाव सनाथ अनुनव शुद्धि रे ॥ चतुर० ॥ १७ ॥ एम अनाथ सनाथ विचारीने, अनाथ नावने हणीया रे ॥ अनाथी मुनितस नाम ठे, सनाथ ए ज्ञान गुणे दरिया रे ॥ ॥ चतुर० ॥ १८ ॥ त्रण सनाथ कारणरूप ठे, नावसनाथ कार्य अनुप रे ॥ अनाथ पद दुःखनु मूळ ठे, सुख मूळ सनाथ नूप रे ॥ चतुर० ॥ १९ ॥ सनाथ पद धारीने करुं वदना, प्रणमु तेहना पाय रे ॥ गुण गाउ अतरंगशु, अनुमोद वारवार थाय रे, ॥ चतुर० ॥ २० ॥ त्रण सनाथ दोय गति पामता, देवनी एक वीजी सिद्ध रे ॥ नावमां ए आवे तो सपजे, नही तो लहे देवनी ए ऋद्ध रे ॥ चतुर० ॥ २१ ॥ नही नाव सनाथ त्यां संसार ठे, त्रण सनाथ ससार अल्प रे ॥ वहुल ससार अनाथसा, द्रव्य अनाथ मिथ्यात्व जल्प रे ॥ चतुर० ॥ २२ ॥ अनत पुद्‌गल परावर्त्तनो, मालिक अनादि मिथ्यात्व रे ॥ एथी छुटयां संसार अल्प ठे, पामे समकित लहे गुण सत्व रे ॥ चतुर० ॥ २३ ॥ अनाथ उपादान मोह ठे, ठे वळी रागने द्वेष रे ॥ सनाथ उपादान जीव गुण ठे, ठे जीव पर्याय प्रदेश रे ॥ चतुर० ॥ ॥ २४ ॥ वाह्य दृष्टियें धर्म अनाथ ठे, अतरदृष्टियें धर्म सनाथ रे ॥ वाह्य दृष्टि ससार साथ ठे, अंतरदृष्टि शीव

साथ रे ॥ चतुर० ॥ २५ ॥ व्यवहार वर्त्तना ते बाह्य ठे, शुन्नाशुन्न जोग त्रण वृत्तिरे ॥ आश्रव करणी ठे ए सही, धर्म कहे ए अनाथ आकृति रे ॥ चतुर० ॥ २६ ॥ शब्द वर्त्तना अतरगमा, अनुन्नवे उपयोग स्थिर रे ॥ स्वरूप रमण शुद्ध न्नावथी, गुण वृद्धि होय लहे स्फुरणा वीर रे ॥ ॥ चतुर० ॥ २७ ॥ सोही सनाथ पद न्नावीयें, न्नेद ज्ञान लावी घट मांही रे ॥ सप्रविन्नाग तीहा सपजे, हेय जाणी ठंके पर त्यांही रे ॥ चतुर० ॥ २८ ॥ आदर एक शुद्ध स्वरूपनो, ध्याता ध्येय ध्यान एकत्व रे ॥ ध्येय शुद्ध ऊव्यार्थक ए, ध्याता पर्याय धर्म महत्व रे ॥ चतुर० ॥२९॥ ध्यान शुक्ल एकता अन्नेदता, पर्याय धर्म द्रव्य मांहि रे ॥ न्निन्न गवेषण इहां टळे, मिळे परिणति शुद्ध अशुद्ध नांही रे ॥ चतुर० ॥ ३० ॥ इहां मोहनु उन्मूलन थयु, टल्या रागने द्वेष दोयरे ॥ क्षय उपशम न्नाव इहां टल्यो, लहे मुनि यथाख्यात सोही रे ॥ चतुर० ॥ ३१ ॥ न्नाव सनाथ तस कीजीये, ससार निरवीज वत रे ॥ वीतराग गुणठाण बारमे, त्रण कर्म हणे महा सत रे ॥ चतुर० ॥ ३२ ॥ केवळनाण दर्शण प्रगटे, प्रगटे क्षायक लब्धि पांचरे ॥ दान लान्न न्नोग उपन्नोग ए, वीर्य स्फुरणा अनत न खांचरे ॥ चतुर०॥३३॥ ए परमानद पद मोटको, अरिहत तेरमे वासरे॥ आयु अंते योग रोध करे, अयोगी ठाणे सिद्ध पास रे ॥चतुर० ॥३४॥ अघाति चउ कर्मथी टल्या, तुटी वर्गणा कारमणरे॥ तुटी वळी मनुष्यगति इहा, तुटयु चउगति न्रमण रे ॥

चतुर० ॥ ३५ ॥ आत्म असख्य प्रदेशनो, निबरु घन दोय नागे थाय रे ॥ एक नाग पोलाणनो घटे, त्रुटयुं शरीर तेहथी गणाय रे ॥ चतुर० ॥ ३६ ॥ ए घन सिद्धनी अवगाहना, लोक शिखर करे वास रे ॥ समश्रेणीये एक समयमां, ज्योतमां ज्योतनो समास रे ॥ चतुर० ॥ ३७ ॥ रुपातित सिद्ध महरायने, सादि अनंत नंग कहिये रे ॥ सिद्ध गति अनादि अनंत छे, एसी अक्षय पदवी लहीये रे ॥ चतुर० ॥ ३८ ॥ अकृत अनुनववत छे, अनंत केवळ नाण दर्शन्न रे ॥ चारित्र वीर्य अनत छे, ए प्रत्यक्ष प्रमाणे मानुं धन्न रे ॥ चतुर० ॥ ३९ ॥ सोहि सनाथ व्यक्ति धर्मना, अव्याबाध सुखवत रे ॥ अलख निरंजन अचळ ए, परमानद नोगी महंत रे ॥ चतुर० ॥ ४० ॥ एवंनूत नय पूर्णता, सनाथ विचारे गवेषी रे ॥ ज्ञान शीतळ कहे पामीये, शुद्धात्म अनुनव पेखी रे ॥ चतुर० ॥ ४१ ॥

॥ सज्जाय ॥ ६ ठी ॥ मधु बिंदवानी ॥

एक दिवस विषे नेमि कुंवर निज मित्र संघातें आवे ॥
॥ ए देशी ॥

संसार वने चउगति नव न्रमण जीवने दुःख मोटुं॥ अनुनव विना, धर्म साधन करीए ते सर्वे ठोटुं ॥ ए आंकणी ॥ मधु बिंदु दृष्टांत चित्त धरीये, अघोर वन चउगतिमां फरीये, तीहां वनगज मारे ते मरीये, ससार वने० ॥ १ ॥ जीव आगळ गज पाछळ दोडे, वडनीचे कूप दीठो दोडे ॥ तेमां लटके वडवाइ दो जोडे, ॥ ससार० ॥ २ ॥

अध्यात्म त्यांही ॥ मेरे० ॥ अकृत्य अनुभव पामीया, हुइ व्यक्ति अनंत गुण मांही ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ १७ ॥ तेमां मुख्यता केवळज्ञाननी, सद्भूत शुद्ध क्षायक तेह ॥ मेरे० ॥ परमातम पद ए मोटको, तीहां जमी गइ कर्म खेह ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ १९ ॥ निरंजन सिद्ध निराकार ए, परमानंद ज्योति अनंत ॥ मेरे० ॥ अव्याबाध सुख अनुभवे, अविनाशी अचळ शीवकत ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ २ ॥ तुही अलख अगोचर माहरे, कहे ज्ञान शीतल सुणो सिद्ध ॥ मेरे० ॥ ते दु:ख साले छे अति घणुं, दु:ख जाय जव देखुं तुज ऋद्ध ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ २१ ॥

॥ कळश ॥

एम हरखे गायो, ज्ञान पायो, मधुबिंदु विचारए ॥ तेह तणी दो ढाळो कीधी, समजी लहो भव पार ए ॥१॥ ससार दुखनु मूळ छे, हानि सुखनी थाय ए ॥ ते कारण अंतर्दृष्टिये, तजीये संसार रागए ॥ २ ॥ आतमज्ञानी गुरु जोइने, दिक्षा लियो भवि हित ए॥ ज्ञान शितळ निजद्रव्य भावे, आणंद लहो सिद्ध खेत ए ॥ ३ ॥ संपूर्ण ॥ सर्व ॥ ३७ ॥

॥ सज्जाय ॥ ७ ॥ मी माळा आरोपणनी ॥

॥ तपशुं रंग लाग्यो ॥ ए देशी ॥

समकित मूळ गुण माळा आरोपण, गुरु निर्ग्रंथ निश्राये थाय रे ॥ उपधान वहीने पेहे रे, ते श्रावक श्राविका कहाय रे ॥ माळा आरोपण रे ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ माळा

कूपे दु खी जीव ॥ मेरे० ॥ सुबुद्धि कहे काढो दया करी, लावो निर्वध विमाने करो शीव ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ ए ॥ आतम ज्ञानी विद्याधर कहे, ए नहीं माने मुज केहेण ॥ मेरे० ॥ ध्यान तुरगे जावु वेगशु, फोगट कुण रेवे रेण ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ १० ॥ पुनर पतनी प्रेर्यो थको, ध्यान घोडेथी उतरे ते स्थान ॥ मेरे० ॥ कहे ससार कूप थकी नीकळो, वेसो ज्ञान वैराग ते विमान ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ ११ ॥ ए माने नहीं विकल घणो, परिग्रह भोग विषयनी मांही ॥ मेरे० ॥ सद्गुरु तीहां समजावता, दुर्गति ससार राग त्यांही ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ १२ ॥ ते कारण तजीए प्रेमथी, जेम कांचळी उतारे सर्प ॥ मेरे० ॥ फरी मनसा नवी लावीए, एक ग्रहीये संयम महा तप ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ १३ ॥ ए वचन सुणे इद्रि गुणे, न चितवे हृदयनी मांही ॥ मेरे० ॥ हिताहित समजे नहीं, गुरु उपदेश गुण नहीं त्यांही ॥ मेरे० ॥ चे० १४ ॥ फरी स्वर्गना सुख गुरु दाखवे, कहे पामो तजीने ससार ॥ मेरे० ॥ देवांगना ऋद्धि लावे आयुपे, करो भोग दिक्षा लेइ जीव तार ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ १५ ॥ ए वचन सुणी मन चितवे, मीठु लाग्यु मोहित थयु मन ॥ मेरे० ॥ ससार राग कूप नवी टळे, मोह वळग्यो न छुटे जेम जन्न ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ १६ ॥ कहे आगळ ससार छोडशु, हाल भोगवु अनुकूळ सुख ॥ मेरे० ॥ दु ख नजरे नथी आवतु, मिथ्यात्वी माने सुख ए तो दु ख ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ १७ ॥ एम समजी ध्यान घोडे चडी, गुरु गया भाव

अध्यातम त्यांही ॥ मेरे० ॥ अक्षय अनुभव पामीया, हुइ व्यक्ति अनंत गुण मांही ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ १७ ॥ तेमां मुख्यता केवळज्ञाननी, सद्भूत शुद्ध क्षायक तेह ॥ मेरे० ॥ परमातम पद ए मोटको, तीहां जमी गइ कर्म खेह ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ १९ ॥ निरंजन सिद्ध निराकार ए, परमानद ज्योति अनंत ॥ मेरे० ॥ अव्याबाध सुख अनुभवे, अविनाशी अचळ शीवकत ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ २ ॥ तुंही अलख अगोचर माहरे, कहे ज्ञान शीतल सुणो सिद्ध ॥ मेरे० ॥ ते दु:ख साले छे अति घणु, दु:ख जाय जब देखुं तुज ऋद्ध ॥ मेरे० ॥ चे० ॥ २१ ॥

॥ कळश ॥

एम हरखे गायो, ज्ञान पायो, मधुबिंदु विचारए ॥ तेह तणी दो ढाळो कीधी, समजी लहो भव पार ए ॥ १॥ ससार दुखनु मूळ छे, हानि सुखनी थाय ए॥ ते कारण अतर्दृष्टिये, तजीये ससार रागए ॥ २ ॥ आतमज्ञानी गुरु जोइने, दिक्षा लियो भवि हित ए॥ ज्ञान शितळ निजद्रव्य भावे, आणद लहो सिद्ध खेत ए ॥ ३ ॥ संपूर्ण ॥ सर्व ॥ ३७ ॥

॥ सजाय ॥ ७ ॥ मी माळा आरोपणनी ॥

॥ तपशुं रग लाग्यो ॥ ए देशी ॥

समकित मूळ गुण माळा आरोपण, गुरु निर्ग्रंथ निश्राये थाय रे ॥ उपधान वहीने पेहे रे, ते श्रावक श्राविका कहाय रे ॥ माळा आरोपण रे ॥ ए आकणी ॥ १ ॥ माळा

मूळ भेद पच परमेष्टि, उत्तर गुण एक सत आठ रे ॥ अरिहत सिद्ध सूरि पद त्रीजे, उपाध्याय साधु गुण करुं पाठ रे ॥ माळा० ॥ २ ॥ अरिहत प्रथम परमेष्टि, गुण वार उज्वल वरणे रे ॥ तीहा घाति चउ कर्म हणीने, अनत चतुष्टी प्रगट निरणे रे ॥ माळा० ॥ ३ ॥ सिद्ध पद परमेष्टि वीजा, आठगुणे रक्त वरणे रे ॥ कार्मण कर्म रहित पुद्गलथी, मूळ रुप प्रगट लीयो शरणे रे ॥ माळा० ॥ ४ ॥ आचार्य परमेष्टि त्रीजा, छत्रीस गुणे पीत वरणे रे ॥ षट् दर्शन शास्त्रने जाणे, सही सयम श्री तस परणे रे माळा० ॥ उपाध्याय परमेष्टि चोथा, पचवीश गुणे नील वरणें रे॥ द्वादशागी सिद्धातनी पेटी, भणे भणावे खपी जो रहे शरणे रे ॥मा०६॥ साधु ते पचम परमेष्टि, सत्तवीस गुणे श्याम वरणे रे॥ निर्दोषी मूळ व्रत सदाये, दोष लागे तो उत्तर गुण हणेरे॥ माळा० ॥ ७ ॥ आचार्य उपाध्यायने साधु, अप्रमत्त ठाणे पद पावे रे ॥ प्रमाद ठाणे आवे नहीं तो, श्रेणी माडी अरिहत सिद्ध थावे रे ॥ माळा ॥ ८ ॥ पंच परमेष्टि गुण प्रमाणे, माळामां कीधा सही गुच्छारे ॥ द्वादश उज्वळ आठ रक्त ए, पीत छत्रीस खील्या रुडा अतुच्छारे॥ माळा० ॥ ९ ॥ नीला पचवीश श्याम सत्तावीस, एम पचवर्णी माळा रे ॥ एक सत्तने आठ गुच्छानी, शोभे अद्भूत पेहेरी धर्म लालारे॥ माळा० ॥ १० ॥ माळा गुण घट अतर माहि, अनुभव भुवने आवे रे ॥ समभाव वृत्तिये तद्गत खेले, गुणगत उपयोग परिणमावेरे ॥ माळा० ॥११॥ उच्छव महो-

च्छव अधिको घटमां, अनहद वाजां वाजेरे ॥ सहस सूर्योदय तेजे तपता, त्यां अनुज्ञव ज्ञानी विराजेरे ॥माळा० ॥ १२ ॥ इत्यादि गुण घटंतरमां आवे, नय व्यवहार निश्चे बेहु ज्ञावेरे ॥ व्यवहारे उपाधि हणतां, निश्चय तदूगत गुण प्रगटावेरे ॥ माळा० ॥ १३ ॥ वाज्य कल्प करणी व्यवहारे, देखी मूढ रजन थावे रे ॥ अतर करणी रंजन चतुर नर, एम सिद्धांती सही गावे रे ॥ माळा० ॥ १४ ॥ अतर गुण माळा जे पेहेरे, हु तस प्रणमु पायारे ॥ तेथी ज्ञान शीतळता लहीये, गुण गातां गुण वृद्धिये सवायारे ॥माळा०॥१५

॥ सज्झाय ८ मी लघुता विचारनी ॥

॥ चतुर नर सामायक नय धारो ॥ ए देशी ॥

चतुर नर लघुता वृत्ति पेखो, लघुताए सुखीयो गुरुताए दु.खीयो, जीव जगतमा देखो चतुरनर ॥ लघुतावृत्ति पेखो ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ लघुताए उपशम आवे, मोह प्रकृति दवावे ॥ तीहा समकित चारित्र लहीए, ए शीव सुख कारण थावे ॥ चतुर० ॥ २ ॥ गुरुतामां माननो वासो, मद मोटपमां ज्ञराणो ॥ वाल्यो न वळे पथ्थर थज्ञो, एम मान न ठोके जाणो ॥ चतुर० ॥ ३ ॥ मोटप करतां ठोटप थावे, दुर्गति दीनता पावे ॥ एसो जाणी मोटप मेलो, एम सिद्धांती सही गावे ॥ चतुर० ॥ ४ ॥ लघुता करतां विनय आवे, वोधि वीज तीहा पावे ॥ विनय रहितने गुण न थावे, गुरुवाइ अनम्र कहावे ॥ चतुर० ॥ ५ ॥ लघुता चारित्रनुं अंग, चतुर ग्रहो तुमे ज्ञाइ ॥

मोह श्रग मोटपने टालो, ए पाप प्रकृति दु खदाइ ॥चतुर० ॥ ६ ॥ उपशम श्रन्नावे परमा पेसे, परथी तुटे नाहि॥ ते कारण उपशम श्रादरीये, लहीए निज घर लघुता त्यांहि ॥ चतुर० ॥ ७ ॥ उपाधि रोकण श्रति वळीयो, उपशम न्नाव कहावे ॥ उपाधि एक ध्वस करणकुं, ज्ञान वको श्रागु थावे ॥ चतुर० ॥ ७ ॥ उपशम श्रेणीये उपशम श्रागु, ठाण एकादशमे श्रटके॥ श्रतर महुरत एकज रहेवे, तीहांथि उदय श्रावीने पटके ॥ चतुर० ॥ ए ॥ क्षपक श्रेणीये ज्ञान श्रागु, उपशम पाछळ लागु ॥ उपशमे उदय उपाधि श्रव्यापक, उपाधि हणे ज्ञान जागु ॥ चतुर० ॥ १० ॥ घाति कर्म उपाधि खुटे, सत्ता उदय न लाधे ॥ श्ररिहत सजोगी एही, श्रायु ठेके योग रोध साधे ॥ चतुर० ॥ ११ ॥ श्रघाति चउ कर्म श्रन्नावे, सिद्ध सनातक थावे ॥ ज्ञान शीतळ ए निरजन निर्मळ, समश्रेणीये सिद्ध सधावे ॥चतुर०॥१२॥

सज्झाय ॥ ९ ॥ मी ॥ आयु अथिरनी ॥

॥ ऋपन्ननो वश रयणायरु ॥ ए देशी ॥

श्रायुष्य तुटयाने साधो को नहीं, चतुर चित्तमा चेतोरे॥ काळ क्षण क्षण श्रायु छेदतो, छेल्ली क्षणे मरण देतो रे ॥ श्रायुष्य त्रुटयाने साधो को नही ॥ ए श्रांकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ ते कारण प्रमाद परहरो, ग्रहो स्वरूप उपयोगरे ॥ ज्ञान दर्शनादि तीहा सपजे, करे सकाम निर्जरा निरोगरे ॥ श्रायु० ॥२॥ मिथ्यात्व कपाय जीहा टळे, टळे श्रज्ञान श्रतरायरे ॥ रागद्वेप मोह सवि टळे, तीहां क्षीण

मोह वीतराग थाय रे ॥ आयु० ॥ ३ ॥ए निरोगी पुनरपि मरे नहीं, न जन्मे चउगति संसाररे ॥ केवळनाण दर्शण लही, अमरपद सिद्ध निरधाररे ॥ आयु० ॥४॥ एम आयुष अथिर विचारतां, अप्रमत्त ठाण न ठोडेरे ॥ रूपक श्रेणि अपूर्वे मांमीने, शुक्लध्याने कर्म सवि तोडेरे ॥ आयु० ॥ ५ ॥ जन्म जरा मरण काळथी, कह्यो छुटवानो उपायरे ॥ ज्ञान शीतळ करी जे लहे, ते जीवन मुक्त कहायरे ॥ आयु० ॥ ६ ॥

॥ इति सज्झाय अधिकार सपूर्ण. ॥

॥ अथ श्री गुरु भक्तिनो रास लिख्यते ॥

॥ दुहा ॥

प्रणमुं श्री गुरु रायने, वोधि वीज दातार ॥ शिव सुख हेतु ए भला, मोह विदारण हार ॥ १ ॥ गुरु भक्ति गुण गाइशुं, रास रचुं मनोहार ॥ ढाळ वंध रचना करुं, त्यां प्रमोद भावना सार ॥ २ ॥ गुरुगुण रत्न चिंतामणी, गुरु वच हे रसकूप ॥ गुरु ज्ञान पथ शीवनो, गुरु अनुभव शीव रूप ॥ ३ ॥ गुरु दर्शन पूरव दिशी, गुरु मुख पुनमचंद ॥ गुरु विनय मूळ धर्मनु, गुरु शीव सुखकंद ॥४॥ गुरु आज्ञा पारस मणी, गुरु शिक्षा सुर कुभ ॥ गुरु रागथी सिद्धि ऋद्धि, गुरु स्मरण चित्त शुभ ॥ ५ ॥

॥ ढाळ ॥ १ ॥ ली ॥

समुद्र विजय कुळ चदलो जीन वदिये ॥ ए देशी ॥

वस्तु सत्ताना जाण रे ॥ गुरु वंदीये ॥ हुकम मुनि

जसनाम सदगुरु वदीए ॥ ओळखावे वस्तु प्रते ॥ गुरु० ॥
सत्ता सहित हित काम॥ सदगुरु० ॥१॥ गुण पर्याय भाजन
सही ॥ गुरु० ॥ एक रुप त्रण काळ ॥ सदगुरु० ॥ तेह
द्रव्य निज जातिनो ॥ गुरु० जश नहि भेद विचार ॥ सद-
गुरु० ॥ २ ॥ धर्म कहीए गुण स्वभावे ॥गुरु०॥ कर्म भावी
पर्याय ॥ सदगुरु० ॥ भिन्न अभिन्न त्रिविध सदा ॥गुरु०॥
एक पदारथ पाय ॥ सदगुरु० ॥ ३ ॥ उपजे वीणसे स्थीर
रहे ॥ गुरु० ॥ ए छे वस्तु वखाण ॥ सदगुरु० ॥ उपजवु
विणसवु ते सही ॥ गुरुवदीये ॥ पर्याय धर्म ते जाण ॥
सदगुरु० ॥ ४ ॥ स्थिरपणो तीहा द्रव्यनो ॥ गुरु० ॥ पलटे
नहीं निरधार ॥ सदगुरु० ॥ अवगाहना सर्व द्रव्यनी ॥
गुरु० ॥ गुण पर्याय प्रदेश धार ॥ सदगुरु० ॥ ५ ॥ तेहीज
सत्ता द्रव्यनी ॥ गुरु० ॥ वीणसे नहीं त्रण काळ ॥सदगुरु०॥
द्रव्यें द्रव्य मिले नहीं ॥गुरु०॥ असहाय अनादि निहाळ
॥ सदगुरु० ॥ ६ ॥ निज सत्तामय द्रव्य छे ॥ गुरु० ॥
परसत्ता ग्रहे न कदाय ॥ सदगुरु० ॥ द्रव्यरुप छति
कार्यनी ॥ गुरु० ॥ तिरोभाव शक्ति सदाय ॥ सदगुरु०
॥ ७ ॥ आविरभावे निपजे ॥ गुरु० ॥ व्यक्ति गुण
पर्याय ॥ सदगुरु० ॥ कार्य कारण निज द्रव्य छे ॥
॥ गुरु० ॥ परद्रव्य अकारण अकार्य ॥ सद० ॥ ८ ॥ छति
पणे स्व द्रव्य छे ॥ गुरु० ॥ अछति पणे परद्रव्य ॥ सद० ॥
एम अस्ति वे वस्तुनी ॥ गुरु० ॥ रही छे सर्व द्रव्य ॥ स-
दगुरु० ॥ ९ ॥ द्रव्य स्वभावे नित्य छे ॥ गुरु० ॥ पर्याय

स्वन्नावे अनित्य ॥ सदगुरु० ॥ नित्य अनित्य एक वस्तुमा ॥ गुरु० ॥ न्नाषे ज्ञानी विनित ॥ सद० ॥ १० ॥ स्वद्रव्य स्वखेत्र स्वकाळथी ॥ गुरु० ॥ स्वन्नाव सहित चार सत्य ॥ सदगुरु० ॥ परद्रव्य परखेत्र परकाळथी ॥ गुरु०॥ परन्नाव ए चार असत्य ॥ सद० ॥ ११ ॥ द्रव्य पदारथ एक ठे ॥ ॥ गुरु० ॥ तेमां गुण पर्याय अनेक ॥ सद०॥ गुण पर्यायमां एक ठे ॥ गुरु० ॥ द्रव्य पणुं ते ठेक ॥ सदगुरु० ॥ १२ ॥ शक्ति न्नाव अव्यक्तव्य ठे ॥गुरु०॥ वक्तव्य व्यक्ति न्नाव ॥ ॥ सदगुरु० ॥ अन्नव्य स्वन्नाव पलटे नहीं ॥ गुरु० ॥ पलटे न्नव्य स्वन्नाव ॥ सद० ॥ १३ ॥ पर्यायार्थक न्नेद वस्तु ठे ॥ ॥ गुरु० ॥ द्रव्यार्थक अन्नेद ॥ सदगुरु० ॥ उन्नय धर्मी द्रव्य ठे ॥ गुरु० अविरोधि अठेद ॥ सद० ॥ १४ ॥ एम स्याद्वाद लक्षण मयी ॥ गुरु० ॥ द्रव्य सत्ता गुणनी खाण ॥ सद० ॥ इत्यादिक वहु न्नेदथी गुरु० ॥ वस्तु सत्ता उंळखाण ॥ सद० ॥१५॥ ते वस्तु पद् न्नेद ठे ॥ गुरु०॥ एक जीव अजीव पांच न्नेद ॥ सद० ॥ एक रुपी चार अरुपी ॥ गुरु०॥ तेने वरणवतां अखेद ॥ सद० ॥१६॥ आ ढाळने पूरण करी ॥ गुरु० ॥ न्नेद कहेशुं वीजी ढाळ मांही॥ सद० उलट अगे अति घणो ॥ गुरु० ॥ ज्ञान शीतळ उठांही सद० ॥ १७ ॥

दुहा.

वस्तु सत्ता गुण दाखीयो, दाख्यो स्याद्वाद धर्म ॥
द्रव्य पर्यायने जाणतां, टळे मिथ्यामति न्नर्म ॥ १ ॥

ढाळ ॥ २ ॥ जी

॥ देशी चन्द्रावळानी ॥

हुकम मुनिसर वदीये रे षट् द्रव्यना जाण ॥ सत्ता गुण पर्यायनेरे, जाणवा दिनकर जाण ॥ त्रुटक ॥ जाणवा दिनकर नाण स्वभावे, उपयोग जोमे न विभावे ॥ तेहीज आतमज्ञानी कहीए, ए विण अवर न ज्ञानी लहीए॥ वदो भविजन एह ॥ ए आकणी० ॥ १ ॥ धर्मास्तिकाय पहेलो कह्योरे, बीजो अधर्मास्तिकाय ॥ आकाशास्ति त्रीजो कह्योरे, चोथो काळ कहाय ॥ त्रुटक ॥ चोथो काळ कह्यो उपचारे, वता पणो तेमा न विचारे ॥ पांचमो द्रव्य पुद्गलास्ति कहीए, छठो द्रव्यजीवास्ति लहीये ॥ वदो० ॥ २ ॥ षट् द्रव्य नाम दाखीया रे, हवे कहु तास विचार ॥ प्रथमना त्रण द्रव्यनो रे, साधर्मिकपणो धार ॥ त्रुटक ॥ साधर्मीकपणो धारते दाखु, अरूपी अचेतन अक्रिय भाखु ॥ ए त्रण गुण त्रण द्रव्यमा सरखा, एक गुणे भिन्न धरमे परख्या ॥ वदो० ॥ ३ ॥ गति हेतु धरमास्ति छेरे, स्थिति अधर्मास्ति काय ॥ अवकाश धर्मी आकाश छे रे, एम भिन्न धर्मी कहाय ॥ त्रुटक० ॥ एम भिन्न धर्मी कहाय स्वभावी, एक गुणे ते चित्तमां लावी ॥ पर्याय चार हवें ते दाखु, उपयोग स्थिर छामे राखु ॥ वदो० ॥ ४ ॥ खध देश प्रदेश छेरे, अगुरु लघु सयुक्त ॥ ए पर्याय चार दाखीयारे, ते समजवा जुक्त ॥त्रुटक० ते समजवा जुक्त ते सारो, धर्म अधर्म खध लोकमा धारो॥

आकाश खध लोकालोक त्यांहि, अलोक अंत कह्यो नहीं क्यांही ॥ वंदो० ॥ ५ ॥ उर्ध्व अधो तिर्च्छादिके रे, कल्पित देश कहाय ॥ धर्म अधर्म वे द्रव्यमां रे, असंख्य प्रदेश समाय ॥ त्रुटक० ॥ असंख्य प्रदेश समाय लोकमां, आकाश द्रव्य रह्यो लोकालोकमां ॥ अनंत प्रदेशी ते खंध कहाय, अगुरु लघु चोथो पर्याय ॥ वदो० ॥ ६ ॥ चोथो द्रव्य ते काळछेरे, अवस्तु रूप जेह ॥ ते मान्यो उपचारथी रे, दाखु तस गुण गेह ॥ त्रुटक० ॥ दाखुं तस गुण गेह ते चार, अरूपी अचेतन अक्रिय धार ॥ नवा पुराण वर्त्तना लक्षण, काळ गुण ए कहे विचक्षण ॥ वंदो०॥ ७ ॥ काळ पर्याय चार दाखवुं रे, पेहेलो अतित अनंत ॥ अनागत अनंत छे रे, वर्त्तमान समय लहत ॥ त्रुटक० ॥ वर्त्तमान समय लहत अळगो, वीजो समय तेने नहीं वळग्यो ॥ अगुरु लघु चोथो पर्याय, काळ द्रव्य मांहि ते समाय ॥ वंदो० ॥ ८ ॥ अजीव अरूपी वर्णव्या रे, चार द्रव्य संयोग॥ जीव पुद्गल वाकी रह्या रे, ते दाखुं उपयोग ॥ त्रुटक० ॥ ते दाखुं उपयोग लगावी, त्रीजी ढाळमां ते भाव लावी ॥ ढाळनी इहां थइ पूरणता, ज्ञान शीतळ उपयोगनी लीनता ॥ वंदो० ॥ ९ ॥

दुहा.

अजीव अरूपी दाखीया, चार द्रव्य सयुक्त ॥
जीव पुद्गल वाकी रह्या, ते दाखुं भली जुक्त ॥ १ ॥

ढाळ ॥ ३ ॥ जी.

॥ देखो गति दैवनी रे ॥ ए देशी ॥

हुकम मुनिसर वंदीये रे, जाणवा पुद्गल जीव ॥ हित उपगारी अति नलारे, अधिक ज्ञानी ए शीव ॥ जगतगुरु वंदियेरे ॥ परमानंदनो ए कंद ॥ जगत० ॥ ए आंकणी गाथा ॥ १ ॥ पुद्गलनी आठ वर्गणा रे, तेणे चेतन बधाय॥ चेतन निज गुण नवि लहेरे, दाखु उपयोग लाय ॥ जगत० ॥ २ ॥ उदारिक वर्गणा पेहेली कहीरे, बीजी वैक्रिय जाण ॥ त्रीजी आहारक वर्गणारे, चोथी तेजस वखाण ॥ जगत० ॥ ३ ॥ नाषा वर्गणा पांचमी रे, श्वासोश्वास छट्ठी कहेवाय ॥ मनोवर्गणा सातमी रे, आठमी कार्मण थाय ॥ जगत० ॥ ४ ॥ प्रथमनी चार वर्गणारे, बादर कही जीन राय ॥ पाछलनी चार वर्गणारे, ते सूक्ष्म चित्त लाय ॥ जगत० ॥ ५ ॥ बादरमा गुण वीसछेरे, वरण पांच रस पाच ॥ दोय गध फरस आठछेरे, ए वीस गुण नहीं खांच ॥ जगत० ॥ ६ ॥ सूक्ष्ममा सोळ गुणछेरे, हिण फरस छे चार ॥ ते डुखदाता जीवनेरे, बधन जाळ विचार ॥ जगत० ॥ ७ ॥ अविनाशी चेतनछे रे, परमानद स्वरूप ॥ अनतज्ञान दर्शण नर्यो रे, अनत चरण वीर्य नूप ॥ जगत० ॥८॥ अव्याबाध अनतछेरे, अमूरती अरूप ॥ अटळ अवगाह अगुरु लघुरे, तेहीज धर्म प्ररुप ॥ जगत० ॥ ए ॥ ए धर्म चेतननु रे, धरमी आतमाराम ॥ तेने हणे ते दाखवु रे, कार्मण तेहनु नाम ॥ जगत० ॥ १० ॥ कार्मण ते आठ कर्मछेरे, घाति

चेतन धर्म ॥ पुद्गल भोगी चेतन थयो रे, दाखुं तेहनो मर्म ॥जगत०॥११॥ ज्ञान घाति ज्ञानावरणी रे, दर्शनावरणी हणे दरशन ॥ चारित्र घाति मोहछेरे, अतराय पांच टळे प्रसन्न ॥ जगत० ॥ १२ ॥ लब्धि पांच क्षायक भावनी रे, दान लाभ भोग उपभोग ॥ वीर्य गुण प्रगटे चेतनारे, तेनो घाति अतराय रोग ॥जगत०॥१३॥ अव्याबाध वेदनी हणेरे, अमूर्त्ति हणे नाम कर्म ॥ उदारिकादिक सात वर्गणारे, रचना पुद्गल धर्म ॥ जगत० ॥ १४ ॥ तेहीज नाम करम थकी रे, चेतन पुद्गल रूप ॥ अटळ अवगाह आयु हणेरे, गोत्र हणे अगुरु लघु भूप ॥ जगत० ॥ १५ ॥ एम विनाश पुद्गल थकी रे, चेतन धर्मे विघन ॥ तेथी चेतन पुद्गल सगेरे, मिलण विखरण सलग्न ॥ जगत० ॥ १६ ॥ परसंगे ससारी थयो रे, चउगति भटकण चाल ॥ आतम घातिए वर्णव्यो रे, पुद्गल रूप निहाळ ॥ जगत० ॥ १७ ॥ ॥ टाळे परसगी पणुं रे, अनुभवे चेतन धर्म ॥ ज्ञान शीतळ शीवपद वरे रे, हणि कार्मण आठ कर्म ॥ जगत० ॥१८॥

दुहा

पुद्गलने जीव दाखिया, ए बेहुनो अनादि सबध
ते जोगे ससार स्थिर छे, तजता आत्म अबध ॥१॥

॥ ढाळ ॥ ४ चोथी ॥

॥ तप शु रग लाग्यो ॥ ए देशी ॥

गुणी जीन वंदो मुनि समकिती, हुकम मुनि जस नामरे ॥ समकित गुण निश्चळ करवाने, उपगारी गुण

धामरे ॥ गुणीजन वदो रे ॥ वंदो वदो रे स्थविर भगवान ॥ डुरित निकदो रे ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ वस्तुने वस्तुपणे राखे, तेहीज समकित धर्म रे ॥ अवस्तुने वस्तु माने, ते मिथ्या अधर्म रे ॥ गुणीजन० ॥ २ ॥ वस्तु द्रव्य षट शास्त्रे भाख्या, धर्म अधर्म आकाश रे ॥ काळ पुद्‌गल पाच अजीव अचेतन, एक जीव चेतनरे ॥ गुणीजन० ॥ ॥ ३ ॥ ते चेतन सत्ताये जोता, सिद्धनो साधर्मी रे ॥ गुण पर्याय स्वभाव छे सरखा, निर्मळ छे अकर्मी रे ॥ ॥ गुणीजन० ॥ ४ ॥ ए वचन छे सग्रह नयनु, शक्ति भाव अपेक्षी रे ॥ सिद्ध ससारीमां अंतर नाहि, त्रणकाळ शुद्ध लक्षी रे ॥ गुणीजन० ॥ ५ ॥ चेतन वस्तु चेतन भावे, वस्तुपणे सद्दहीए रे ॥ तेहीज समकित शास्त्रे दाख्युं, भाख्यु जीनेंद्र ते कहीये रे ॥ गुणीजन० ॥ ६ ॥ अवस्तुने वस्तु माने, तेह भाव हवे दाखु रे ॥ कर्म जनित भाव पामीने, माने जीव ते भाखु रे ॥ गुणीजन० ॥ ७ ॥ उद-यिक भावनी योगता जोइ, वस्तु पोतानी माने रे ॥ ममता तृष्णा राखे झाझी, रग धरे एक ताने रे ॥ गुणीजन० ॥ ८ ॥ ते वस्तुने वस्तुपणे छे, पुद्‌गल द्रव्यना धरमी रे ॥ तेने पोते जीव माने छे, ते मिथ्या अधरमी रे ॥ गुणीजन० ॥ ॥ ए ॥ मिथ्यात्व समकित भेद यथारथ, द्रव्य स्वभावे दाख्या रे॥ जीव स्वभावे धर्म सद्दहीए, ते समकित एम शाख्या रे ॥ गुणीजन० ॥ १० ॥ विना विमानीक आयु न बाधे, कर्मग्रथे समकिती रे॥ समकिती देव मनुष्यनु बांधे,

रोकी तिर्यंच नरक गतिरे ॥ गुणी जन वंदो रे ॥ ११ ॥ नरक तिर्यंचनो बंध मिथ्यात्वे, तीहां दु खना दरिया रे ॥ एम जाणी मिथ्यात्वने हणीयो, तेणे बे द्वार बंध करीयारे॥ ॥गुणी० ॥ १२ ॥ पुद्गलीक भावे धर्म करे छे, तप जप कीरीया काजी रे ॥ तेथी मिथ्यात्व कुश न थावे, भ्रमणाये भूल्यो बाजी रे ॥ गुणी ॥ १३ ॥ श्रद्धा ज्ञान निर्मळ उपयोगे, निज स्वरूपे वर्त्ते रे ॥ रंग चोळ मजीठना सरखो, उपद्रवे नव पलटे रे ॥ गुणी० ॥ १४ ॥ कदापि आवरण उदयागत, मिथ्यात्व पाछु आवे रे ॥ तो श्रद्धा विपरीत करावे, अज्ञान थाय ज्ञान जावे रे ॥ गुणी० ॥ १५ ॥ थोडा काळे ते क्षय थावे, संवेग ज्ञान स्वभावे रे ॥ ज्ञान वीर्य उपयोग लगावी, हणशे कर्म विभाव रे॥ गुणीजन० ॥१६॥ ज्हां संसार विनाश करीने, सिद्ध हुवो निजरूप रे॥ सादि अनंतो काळ आनंदमे, वर्त्ते चेतन भूप रे ॥ गुणीजन० ॥ ॥ १७ ॥ ए दशा समरे जे मुनिश्वर, तेहीज आतम अर्थी रे ॥ तेने त्रण काळ वांछुं, ज्ञान शीतळ शुद्ध घरथी रे ॥ गुणी० ॥१८॥

॥ दुहा ॥

वस्तुने वस्तु पणे, जाणे त्यां लहे समकित ॥
अवस्तु वस्तु कहे, ते मिथ्या भ्रमभीत ॥ १ ॥

॥ ढाळ ॥ ५ ॥

॥ मेंदी रंग लाग्यो ॥ ए देशी ॥

वंदो भवियां मुनि संवेगी, हुकम मुनी दृढ रंगी रे ॥

सवेग रग तरंग वतावे, शुद्धातम गुण सगी रे ॥ सवेग रग लाग्यो ॥ रंग लाग्यो चोळ मजीठ ॥ सवेग रंग लाग्यो ॥ ए आकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ सवेग समकित एकज कहीए, त्रण भेद मूळ दाखु रे ॥ क्षय उपशम उपशमने क्षायक, उपयोग गुण तीहा राखु रे ॥ सवेग० ॥ २ ॥ चेतन कर्म अनादि सवधे, एक पणे भिन्न सत्ता रे ॥ जीव सत्तामां जीव रह्यो छे, कर्म वर्गणा पुद्गलतारे ॥ सवेग० ॥ ३ ॥ ते कर्म मूळ आठ भेदे, चेतन गुणने हणता रे॥ तेमां मोह अति बळवतो, लोकाधिपति बिरुद धरता रे ॥सवेग० ॥४॥ तेना पुत्र वळी पांच अटारा, चेतन गुणना घाति रे ॥ अतराय ज्ञाना दर्शनावरणी, तीहां आवे लड कातीरे ॥सवेग०॥ ॥ ५ ॥ ए सर्वे भाव शत्रु तेमां, मिथ्यात्व अति अटारारे ॥ पापनो बाप दुखनो दाता, जाणीए झेरनो पटारो रे॥ सवेग० ॥ ६ ॥ अनादि मिथ्यात्वी चेतन, ते समकित केम पामे रे॥ सद्गुरु सगे विनय विवेके, दृष्टि करे गुरु सामे रे ॥सवेग०॥ सद्गुरु ज्ञानी भेद बतावे,जीव अने पुद्गलनोरे जीव पुद्गल गुण न्यारा दाखे, तीहा चेतन गुणमां भळनो रे ॥ सवेग० ॥ ८ ॥ चेतन गुणमां रग लगावी, उपयोग विस्तारे रे ॥ ज्ञान ध्यान वीर्य शक्तिये, मिथ्यात्व झेर उतारे रे॥सवेग०॥९॥ झेर रहित मिथ्यात्व हुवो जब, ते समकित क्षय उपशमरे ॥ उत्तर भेद विचित्र प्रकारे, आवे जावे वार असख्यरे ॥ सवेग० ॥ १० ॥ छासठ सागर झाझी स्थिति, उत्कृष्टी सिद्धांतेरे ॥ जघन्य अतर महुरत रहेवे, क्षय उपशम सात

प्रकृतिरे ॥ सवेग० ॥ ११ ॥ अनादि मिथ्यात्वी समकित, क्षय उपशमने पामेरे ॥ सूत्र सिद्धांते वचन छे एस्यो, प्रथम चेतन रामरे ॥ सवेग० ॥ १२ ॥ ए क्षय उपशम भाव देखाड्यो, दृष्टांते समजावुरे ॥ फेर रहित मिथ्यात्व बताव्यो, खसखसमां फेर न पावुंरे ॥ संवेग० ॥ १३ ॥ सत्ता जोतां फेर पटारो, खसखसनो एक दाणोरे ॥ ते दृष्टांते विवेके समजो, शुं करे चेतन राणोरे ॥ सवेग० ॥ १४ ॥ उपशम क्षायक छठी ढाळमां, आ ढाळनी ज्हां थइ पूरणतारे ॥ चेतन गुण उपयोगे भावी, त्यां ज्ञान शीतळनी शुद्धतारे ॥ संवेग० ॥ १५ ॥

दुहा.

समकित मोहनी उदयमां, ते क्षयोपशम समकित ॥
चोथा ठाणथी वृद्धिये, चढे सातमे थिर चित्त ॥ १ ॥

॥ ढाळ ६ ठी ॥

॥ सांभळजो मुनि सयम रागे ॥ ए देशी ॥

हुकम मुनीश्वर ज्ञानी ध्यानी, उपशम समकित दाखेरे ॥ ते सुणवाने चालो गुणिजन, सिद्धांत साक्षी राखेरे ॥ हुकम० ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ आ संसार भव अटवी भमतां, चारगति विसामोर॥ अनत पुद्गल परावर्त्त कीधां, नाव्यां एके कामोरे ॥ हुकम० ॥२॥ कार्य अवसर संसार थाके, अर्द्ध पुद्गलना नाकेरे ॥ सद्गुरु सग मले चेतनने, तत्व रुचि तिहां जागेरे ॥ हुकम० ॥ ३ ॥ आतम गुण अनुभव स्थिर आवे, रग चोल लय पावेरे ॥

राचे नाचे चेतन गुणमां, अकृत्य सहज स्वनावेरे ॥ हुकम० ॥ ४ ॥ पुद्‍गल अनुनव त्याग करीने, अनुनव चेतन धर्मेरे ॥ शुद्ध स्वरूप अनुनव समनावे, ते समकित उपशमरे ॥ ॥ हुकम० ॥ ५ ॥ अतर महुरत मूळ स्वरूपे, चेतन रस अढळक पीधोरे ॥ परमानंद पदनुं पस्तानु, वछित कारज सिधोरे ॥ हुकम० ॥ ६ ॥ अनतानु चउ मिथ्यात्व साथे, ए पाचनो उपशम रे ॥ उदयागत विपाक न आपे, तीहा वळीयो एकदम रे ॥ हुकम० ॥ ७ ॥ स्थिति काळ पूरणना जोगे, उपशम नाव विनाशीरे ॥ उदयागत मिथ्यात्व हुओ जव, पूर्व रीत तपासीरे ॥ हुकम० ॥ ७ ॥ पमतां सास्वादन स्थिर रहेवे, क्षीर वमन स्वाद लेवे रे ॥ पट आवलि काळ प्रमाणे, मिथ्यात्वे अनत काळ सेवे रे ॥ ॥ हुकम० ॥ ए ॥ अनंत काळ मिथ्यात्वे रहेवे, अनत कर्म दळ लेवे रे ॥ स्थिति सागर कोमाकोमी उपर, न वधे सिद्धात एम केहेवे रे ॥ हुकम० ॥ १० ॥ उपशम सास्वादन आवे तो, पाच वार जीव पावे रे ॥ त्यार पठी ते क्षायक नावे, एम सिद्धान्ती गावे रे ॥ हुकम० ॥ ११ ॥ अनादि मिथ्यात्वी परथम, उपशम समकित पामे रे ॥ कर्मग्रथादिक एम बोले, मिथ्यात्व मळ तीहां वामे रे ॥ ॥ हुकम० ॥ १२ ॥ उपशम नाव मने एम सुणयो, ज्ञानी कहे ते साचु रे ॥ अशुद्ध देखो ते शुद्ध करजो, ते वाते घणु राचु रे ॥ हुकम० ॥ १३ ॥ उपशम नाव ते मूळ स्वरूपे, अनुनव महुरत अत रे ॥ उदवेगता इहां नहीं

लाधे, ज्ञान शीतळ एकंतरे ॥ हुकम० ॥ १४ ॥

॥ दुहा ॥

मिथ्यात्व उदय अभावथी, लहे उपशम समकित ॥
स्थिति महुरत पूरण थये, पडे एम परतित ॥ १ ॥
पडतां क्षयोपशम लहे, सास्वादन कोइ ॥
क्षयोपशम चोथे टके, सास्वादन बीजे सोइ ॥ २ ॥

॥ ढाळ ॥ ७ मी ॥

॥ कपट होवे अति उजलु रे ॥ ए देशी ॥

हुकम मुनीश्वर वंदिये रे, क्षायक समकित वंत ॥ तेह भावने पामवा रे, उपगारी ए संत रे ॥ प्राणी वंदो ए जगगुरु राय ॥ ए परमानंदनो कंद रे प्राणी ॥ वंदो ए जग गुरु राय ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ क्षायक समकित जव लहे रे, चेतना तजे परधर्म ॥ परधर्मे वळगी रहे रे, जाणो तेहनो मर्म रे प्राणी ॥ वंदो० ॥ २ ॥ पर ते पुदगल द्रव्यछे रे, धर्म तेना पर्याय ॥ शब्द रूप रस गंधछे रे, फरसादिक गवाय रे प्राणी ॥वंदो० ॥ ३ ॥ एह धरम पुदगल विषे रे, नहीं छे चेतन मांही ॥ तेने भजे छे चेतना रे, ते दाखु हुं आंही रे प्राणी ॥ वंदो० ॥ ४ ॥ श्रोत चेतना शब्दने भजे रे, चक्षु भजे वरणने घाट ॥ रस चेतना रसने भजेरे, घ्राणे गंधनी वाट रे ॥ प्राणी० ॥ वंदो० ॥ ५ ॥ फरस चेतना फरसने भजे रे, ए पुदगलना पर्याय ॥ तेने भजे छे आतमा रे, ते अधर्म छे न्याय रे ॥ प्राणी ॥वंदो०॥ ॥ ६ ॥ पांच इन्द्री पुदगलने रे, जाणग गुण तेही चेतन ॥

एम व्हेंचण ज्ञाने करी रे, जजे अरुपी रतन रे प्राणी ॥ वदो० ॥ ७ ॥ इहां विजाग न्यारापणु रे, नहीं पुदगलनो सग॥अतर करणे अनुजवे रे,तीहा क्षायकनो रगरे ॥प्राणी० वं०८॥धर्मी चेतन तेहठेरे,नहीं अधर्मनो प्रवेश॥क्षायक समकित इहां लहोरे, हणी मिथ्यात्व नही ढेपरे ॥ प्राणी० ॥ ए ॥ तेना मित्र अनतानुवधिरे, चउ मराणा साथ ॥ ए सात प्रकृति क्षय थइरे, टल्यो अनाथ थयो नाथरे प्राणी० ॥ वंदो० ॥ १० ॥ मिथ्यात्व त्रण जेदथी टल्यो रे, सत्ता मूळ उच्छेद ॥ समकित पद निर्जय हुर्ड रे, जाखु उत्तर दोय जेदरे॥ प्राणी० ॥ वदो० ॥ ११ ॥ स्वपर जाग वेच्या पेहेला रे, आयुष्य बाध्युं होय जेह ॥ खंम श्रेणी पेहेलो जेदएरे, श्रेणी न मांमे तेहरे प्राणी ॥ वदो० ॥ १२ ॥ सागरोपम तेत्रीस जाजो वसे रे, चउगति ससार जाव ॥ त्रण चार जव ते करे रे, जव स्थिति पास्यानो दावरे प्राणी ॥ वदो० ॥ १३ ॥ अखम श्रेणी वीजो जेदठे रे, मांमे श्रेणी तरत ॥ क्षायक जाव दशा जजेरे, एकत्व जावमा ठरत रे प्राणी ॥ वदो ॥ १४ ॥ तीहा हणे मोहरायने रे, सत्ता मूळ विनाश ॥ अशुद्ध परिणति ठेदीने रे, शुद्ध परिणतिमा वास रे प्राणी ॥ वदो० ॥१५॥ चरण यथारयात पामीया रे, पाम्या वीतराग जाव ॥ त्रण कर्म तीहा हएया रे, ए चउघाति अजाव रे, प्राणी ॥ वदो० ॥ १६ ॥ केवळ ज्ञान प्रगटे तीहा रे, केवळ दर्शन साथ ॥ लब्धि पाच क्षायक जावनी रे, ए त्रण जुवननो नाथ रे प्राणी ॥ ॥ वदो० ॥ १७ ॥

गुणठाणु तीहां तेरमु रे, वसे ऊणा पूरव कोरु ॥ जघन्य अतर महुरत रहे रे, आयुष्य खुटे जब ठोरु रे ॥ प्राणी० ॥ ॥ वंदो० ॥ १८ ॥ आयुकर्म पूरण थयो रे, तीहां हुवे योगनो रोध ॥ चार कर्म अघाति टल्यां रे, टल्यो पुद्गलनो विरोधरे ॥ प्राणी० ॥ वंदो० ॥ १९ ॥ रूपातित पद पामीयारे, समश्रेणिये हुवा सिद्ध॥ ते सिद्धने करु वंदनारे, ज्ञान शितळनी ए ऋद्ध रे ॥ प्राणी० ॥ वदो० ॥ २० ॥

॥ दुहा ॥

वेदक करी क्षायक लहे, चोथे वा सातमे ठाण ॥
सात प्रकृति त्यां टळे, आत्म सत्तार्थी प्रमाण ॥ १ ॥

॥ ढाळ ८ मी. ॥

॥ राग सारग ॥

हुकम मुनि महाराज, जगत गुरु हुकम मुनि महाराज ॥ सत भय भजन, निरभय रंजन, शक्ति निजातम आजे ॥ उपयोग स्वभावे करतां, अति इंद्रिय वळ गाजे ॥ जगत गुरु० ॥ वंदु गीतारथ राज ॥ जगतगुरु हुकम मुनि महाराज ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ आ भव परभव मरण वेदना, अनरक्षक अनगुप्त ॥ अकस्मात ए सात भयोने, छेदे ज्ञानी युक्त॥ जगतगुरु० ॥ २ ॥ आ भव भय ते नवविध परिग्रह, वियोग चिन्ता कहीए ॥ ते भय निवारण मत्र, निर्भय निजगुण रहीए ॥ जगत० ॥ ३ ॥ निज गुण ज्ञाने स्वपर भिन्न कीजे, आत्मा अनत गुण भरीयो ॥ ते अविनाशी वस्तु अमारी, परवस्तु परहरीजे

॥ जगत० ॥ ४ ॥ परभव भय ते मुज आत्माने, दुर्गति जावु पडशे ॥ ते चिंता निवारण मंत्रे, जन्म मरण जरा टळशे ॥ जगत० ॥ ५ ॥ ज्ञान कळा निज घटमा लावी, असंख्य प्रदेशमां वसीए ॥ ए गतिये मुक्ति लहीए, चउ गति संसार खसीये ॥ जगत० ॥ ६ ॥ मरण प्राण रहित भय चिंता, हणवा मंत्रने भणीए ॥ अमर थइने कोइ रह्या नहीं, तीर्थंकर अतुल बळ गणीए ॥ जगत० ॥ ७ ॥ ज्ञानादिक गुण भाव प्राण जीव, शाश्वत अविचळ रुपे ॥ त्रण काळमा विनाश हुवे नही, एम जिनेंद्र प्ररुपे ॥ ॥ जगत० ॥ ८ ॥ वेदना भय रोगादिक कारण, कष्ट आशाता आपे ॥ ते भय निवारण मंत्रे भापे, पूर्व कृत मुज पापे ॥ जगत० ॥९॥ आतमज्ञाने पर भागे व्हेंचीने, शुद्ध स्वरूपने हु वेदु ॥ त्या परमानंद योगनो भोगी, वेदनी कर्म तीहां छेदु ॥ जगत० ॥ १० ॥ अनरक्षक भय चिंता जागी, मुज रक्षण कोण करशे ॥ ए भय निवारण मंत्र आराधी, चेतन वीर्यने वरशे ॥ जगत० ॥ ११ ॥ द्रव्य स्वभावे त्रणे काले, असहायी जीव ॥ रक्षकभक्षक कोइ न लाधे, सत्ता स्वरूपमय शीव ॥ जगत० ॥ १२ ॥ अनगुप्त भय चोरनी चिंता, सदा सरवदा मनमां ॥ ते भय निवारण मंत्र जपीने, साहासिक धीर एक तनमां ॥जगत० ॥ १३ ॥ ज्ञानादिक गुण पर्याय लक्ष्मी, मुज घर माहि अनादि ॥ ते धननो कोइ चोर न दीसे, टाळो अनगुप्त भयादि ॥ जगत० ॥ १४ ॥ अकस्मात भय चिंता जागे,

અણ ચિંતવ્યું શું થાશે ॥ એ ચિંતા નિવારણ મંત્રે, સર્વ ભય મુજ જાશે ॥ જગત૦ ॥૧૫॥ આદિ અંત જેહનો, નહીં હોવે નહીં કોઇ પરનો સંગી॥ તીહાં ભયને શોક ન આવે, અખંડ આનંદમય રંગી ॥ જગત૦ ॥ ૧૬ ॥ એમ અનુભવ જ્ઞાનની શક્તિ, ભય શોકાદિ છેદે ॥ નિર્ભય ચેતન મૂળ સ્વરૂપે, રમણ આનંદમય વેદે ॥ જગત૦ ॥ ૧૪ ॥ ઉદયિક ભાવ પોતાનો માને, તીહાં ભયનો વાસો ॥ ભેદ જ્ઞાન ઘટ અંતર જાગે, તીહાં નિર્ભય પદ ખાશો ॥ જગત૦ ॥ ૧૮ ॥ ભયનું સ્થાનક મિથ્યાત્વ મોહની, સસાર વાસ ન છુટે ॥ નિર્ભય સ્થાનક સમ્યક જ્ઞાની, ક્ષીણમાં સંસાર વાસ તુટે ॥જગત૦॥ ૧૯ ॥ એમ જાણી સવેગ રંગ કરવો, અનુભવી વસ્તુ ધર્મ ॥ જ્ઞાન શીતળ ઉપયોગ રમણમાં, મુક્તિ વરે હણી કર્મ ॥ જગત૦ ॥ ૨૦ ॥

॥ દુહા. ॥

સત ભય જ્ઞાને ટળે, ટળે પર મમતા ખાસ ॥
પર પોતાનું માનતાં, લહે દુરગતિ વાસ ॥ ૧ ॥

॥ ઢાળ ॥ ૯ મી ॥

તીરથની આશાતના નવિ કરીયે ॥ એ દેશી ॥

હુકમ મુનિસર વાંદવા ભવી જઇએ, વિનય ગુણમાં રહીએ ॥ ગુરુ સનમુખ દૃષ્ટિ વહીયે, ચિત્ત કરીયે સ્થિર ॥ હુકમ મુનીસર વાંદવા ભવી જઇએ ॥ એ આંકણી ॥ ગાથા ॥ ૧ ॥ ઉપયોગી ગુરુ અવસરને જાણે, ઉપદેશ કરે તે ટાણે॥ ઉગ્યો અતર દિનકર ભાણે, હવે વચન રસાળ ॥ હુકમ૦ ॥

॥ २ ॥ प्रश्न कर्युं गुरुरायने अति प्यारु, मुनिपद जाणवुं सारुं॥ उपदेश करो हु धारु, टकुं ससार ॥ हुकम० ॥ ३ ॥ मुनिपद ते मोटको पांच भेदे, परथम मिथ्यात्वने छेदे ॥ पामे समकित निर्वेदे, लीये सदगुरु पास ॥ हुकम० ॥४॥ अध्यातम पक्ष ग्रहीने इहा दाखु, प्रथम सामायक भाखु॥ आतम गुण रमणता चाखु, सहज समाधि माही॥हुकम० ॥ ५ ॥ परमाद योगे समाधि अन्तराणी, तेने छेदे जे प्राणी॥ समाधि स्थापे गुणखाणी, उपयोग विशेष ॥ हुकम० ॥६॥ छेदो स्थापन चारित्र ए बीजु, आतम शुद्ध थाय त्यां रीझुं॥ दाखु हवे चारित्र त्रीजु, तीहा वीर्य विशेष ॥ हुकम०॥७॥ परिहार विषय कषायनो इहा थावे, चेतन विशुद्धिमां आवे ॥ परिहार विशुद्धि कहावे, ए त्रीजो भेद ॥ हुकम मुनिसर० ॥ ८ ॥ गुणठाणु छठु सातमु इहां सुधी, चोथो भेद कहु भली बुद्धि ॥ श्रेणी आरोह विशुद्धि, उपयोगीक भाव ॥ हुकम० ॥ ए ॥ निरालबी आतमा श्रेणी मांडे, आठमेथी चडवा धोडे ॥ परसगी पणे सब छांडे, शीवपुर प्रयाण ॥ हुकम मुनि० ॥ १० ॥ कर्म प्रकृति थोकडा इहा टाले, उपाधि सघळी बाळे ॥ अरुपी रूप निहाळे, चिदानंद भगवान ॥ हुकम० ॥ ११ ॥ विशुद्ध भावे चढता ठाण पासे, सूक्ष्म सपराय ते नामे ॥ अणु लोभ उदयगत सामे, ए चोथो भेद ॥ हुकम० ॥ १२ ॥ यथारयात ते पांचमु हवे भणीये, मूळथी मोहरायने हणीए ॥ क्षायक चारित्र ते गणीए, हणी रागने द्वेष ॥ हुकम० ॥ १३ ॥ ए पाच भेदे

मुनिवरा अढी द्वीपे, नाण दरशण तेजे दीपे ॥ विचरे उपयोग समीपे, वंदु वार हजार ॥ हुकम० ॥ १४ ॥ ए मुनिरायनी योग्यता जव लाधे, प्रमोद अतिशय वाधे ॥ वस्तु धर्म कारज साधे, करे हित उपकार ॥ हुकम०॥१५॥ उपगारी ए मोटका दुःख वारे, संसार समुद्रथी तारे ॥ चेतननु कारज सारे, आपे शीतळ ज्ञान ॥ हुकम०॥ १६ ॥

॥ दुहा ॥

मुनिपद पंच भेदथी, पूरण कार्य यथाख्यात ॥
क्षपक श्रेणीये सपजे, अव्याबाध प्रख्यात ॥ १ ॥

॥ ढाळ ॥ १० ॥ मी ॥

॥मोह्या मोह्यारे त्रिभुवन लोक मुनि गुण देखीने॥ ए देशी॥

वंदो वंदो रे भविक जीव सर्व, हुकम मुनि ज्ञानी ॥ ज्ञानी शुद्ध स्वरूप उपयोगी, अनुभवे वस्तु तेहरे ॥ जीव पुद्गल सत्ता भिन्न अळगी, गुण पर्याय भिन्न तेह ॥ हुकम मुनि ज्ञानी ॥ ए आंकणी० ॥ गाथा ॥ १ ॥ जीव सत्ता मूळ स्वरूपे, निर्मळ सिद्ध समानरे ॥ कर्म जनित पक्षथी जीव, दाखे ते अज्ञान ॥ हुकम० ॥ २ ॥ वेदयोग वळ भीक प्रत्येके, भेद त्रण त्रण धार रे ॥ गति संज्ञा कषाय प्रत्येके, भेद थाय चार चार ॥ हुकम० ॥ ३ ॥ शरीर सस्थान इद्रि निद्रा, प्रत्येके पांच पांच भेदरे ॥ पर्याप्ति लेश्या संघयण, ए त्रणेना षट् षट् भेद ॥ हुकम० ॥ ४ ॥ वर्ण रस गंध स्पर्श प्रत्येके, पांच पांच बे आठरे ॥ जन्म जरा ने मरण पुनरपि, ए संसारनो ठाठ ॥ हुकम० ॥ ५ ॥

दश प्राण आयुष्य योनि, श्वास उश्वास वळी रोगरे ॥ शुन्नाशुन्न क्रिया वहु न्नेदे, सुख दुःख वळी शोग ॥ हुकम० ॥ ६ ॥ अग उपाग उच नीच कुळ जाति, सुस्वर दुःस्वररे ॥ त्रस स्थावर प्रत्येक साधारण, सूक्ष्मने बादर॥ हुकम० ॥ ७ ॥ अवगाहना बहु विध जीवनी, रूप कुरूप वळी देहरे ॥ क्षुधा तृषा वळी पीडा जाणी, जठरा अग्नि छे तेह ॥ हुकम० ॥ ८ ॥ आहारने निहार करवो, परिणमे सर्वे अगरे ॥ उदयिक न्नाव सघळो इहा छे, जीवनो तेह एकग ॥ हुकम० ॥ ए ॥ इत्यादिक वस्तु छे जाणी, ते नहीं जीव स्वरूपरे ॥ कर्म वध योगता ए लाधी, पूर्वकृत ए रूप ॥ हुकम० ॥ १० ॥ ए सत्ता सघळी पुद्गलनी, न्नापी छे जीन न्नूपरे॥ कर्म न्नावी पर्याय प्ररूप्या, छे नहीं जीव ए रूप ॥ हुकम० ॥ ११ ॥ विनाशी न्नाव पुद्गलमां कहीए, अविनाशी चेतनरे॥ ते बे एकपणे कीम थावे, कीहां काच ने रतन ॥ हुकम० ॥ १२ ॥ पुद्गलनी आठे वर्गणा, ते देखे पर वस्तुरे ॥ एम परन्नाग व्हेंचण करीने, अनुन्नवे जीव ए सत्य ॥ हुकम० ॥ १३ ॥ गुण पर्याय स्वन्नाव रमणमां, एकत्व वितर्क पावरे ॥ समन्नावे विकल्पने हणीउं, तीहां सनातक न्नाव ॥ हुकम० ॥ १४ ॥ आयुष्य अते लहे समश्रेणिये, रूपातित पद सिद्धरे॥ असंख्य प्रदेश निर्मळ निरजन, ज्ञान शीतळमय ऋद्ध ॥ हुकम० ॥ १५ ॥

॥ दुहा ॥

जीव स्वरूप सत्ता विषे, सिद्ध निरंजन नूप ॥ १ ॥

॥ ढाळ ११ मी ॥

॥ देशी उपर प्रमाणे ॥

वंदो वदो रे नविक जीव सर्व, हुकम मुनिराया ॥ राज्य करे ठे चेतनपुरनु, गुण पर्याय निज वास रे ॥ मोह राय आज्ञा नहीं धारे, निर्नय निज गुण तास ॥ हूकम-मुनिराया ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ अनंत ऋद्धि चेतनपुर नरीयो, नहीं चोरनो रहे वासरे ॥ उपयोग नाव सुनट अति वळीयो, नहीं चोरनो अवकाश ॥ हूकम०२॥ मिथ्यात्व अव्रत कषाय जोग, मूळ चारना उत्तर नेद रे॥ पांच बार पचीशने पंदर, ए चोर सत्तावन नेद ॥हूकम०॥ ॥३॥ तेमां अधिक अतुल अनिमानी, वलीयो मिथ्यात्व चांच रे ॥ चेतनरायनु राज्य पचावी, हेरुयो जमेठे पांच ॥ हूकम० ॥ ४ ॥ तेमा एक हेरु मजबूत ठे, कार्मण नामे फार रे ॥ अनंत पुदगल परावर्त्त करतां, त्रुटे नहीं निरधार ॥ हूकम० ॥५॥ चेतन गुण वीर्य शक्तिये, पाडशे मिथ्यात्व तेरु रे ॥ त्यार पठी पुदगल अर्द्धमांही, त्रुटशे कार्मण हेरु ॥ हूकम० ॥ ६ ॥ अव्रत कषाय जोग ए त्रणे, वळीया मिथ्यात्व संग रे ॥ मिथ्यात्व नाश थया वळहीणा, वळीयो चेतन रग ॥ हूकम० ॥ ७ ॥ उपयोग नावे वीर्य फोरवी, हणशे सरवे चोर रे ॥ राज्य करे तीहां निर्नय ठावे, सर वधी वहु जोर ॥ हूकम० ॥ ८ ॥

भेदे धर्म अनतो, आनद ल्हेर ते पाय ॥ हुकम० ॥ ए ॥ ठकुराइ शुद्ध चेतन तदरुपे, तीहां चेतननु राज्यरे ॥ ए राज्यना भोगी मुनिश्वर, राज मळे सरे काज ॥ हुकम० ॥ ॥ १० ॥ मुनिश्वर मोटा चेतनरूपे, परमानद स्वरूपरे ॥ अविनाशी पद पूरण तेहनु, ज्ञान शीतळ निजरूप ॥ हुकम० ॥ ११ ॥

॥ दुहा ॥

तदरूप लीन योगमा, अनुभव रमणि थाय ॥
उपाधि अळगी टळे, त्यां चेतन राज्य कहाय ॥ १ ॥

॥ ढाळ ॥ १२ मी ॥

॥ भवि तुमे वदो रे सूरिश्वर गच्छराया ॥ ए देशी ॥

भवि तुमे वदो रे हुकम मुनि गुणराया ॥ अनत गुण भरीयो छे चेतन, तेह स्वरूपने पाया ॥ भवि तुमे० ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ अनंत गुणमां मुख्य ज्ञान छे, ए विण जडता दाखी ॥ ज्ञान दीपक उपयोग अनुभव शुद्ध, तीहा चेतन बुद्धि राखी ॥ भवि० ॥ २ ॥ ज्ञान शक्ति चेतन निश्चाये, तीहां समकित गुण पामे ॥ ते ज्ञान ज्ञानमां गणीए, बाकी अज्ञान नामे ॥ भवि० ॥ ३ ॥ सम्यक ज्ञानने सम्यक दर्शन, दोय मित्र सग प्यारो ॥ अनंत गुण रत्ननी पेढी, जुवे ज्ञान मनोहारो ॥ भवि० ॥ ४ ॥ गुण पर्याय स्वभाव अनता, लक्षण अनतां दाख्यां ॥ ते अनत व्यक्ति निज धर्मे अनत धर्म ज्ञाने चाख्यां ॥ भवि० ॥ ५ ॥ अनंतानद ल्हेर अनुभवमा, उपयोग स्थिर

लगावे ॥ समन्नाव वृत्ति चेतनमां, ज्योति अनंत जगावे ॥ न्नवि० ॥ ६ ॥ एम ज्ञान शक्तिये चेतन, शीवपद क्षणमा पामे ॥ अनत धर्म आत्मिक अनुन्नव शुद्ध, ते गुण रायनु कामे ॥ न्नवि० ॥ ७ ॥ एवा मुनिगुण समरण करता, न्नजतां कोम कल्याण ॥ दर्शन पुन्योदये थावे, दुर्लन्न उपदेश टाणे ॥ न्नवि० ॥ ८ ॥ हुकम मुनिसर मुज उपगारी, ते गुण नित्य सन्नारु ॥ ज्ञान शीतळ कहे पूजु वदु, मुज आतमने प्यारु ॥ न्नवि० ॥ ए ॥

॥ दुहा. ॥

ज्ञानादि गुण संपदा, अनुन्नवे तद्रूप ॥
परम समाधि जे लहे, ते कहीए गुण न्नूप ॥ १ ॥

॥ ढाळ १२ मी ॥

हुकम मुनिश्वर न्नावे वदिये, गीतारथ गुण खाण ॥ सुगुरुजी ॥ आश्रव अनाश्रव चेतन केम हुवे, ते दाखो चतुर सुजाण ॥ सुगुरुजी ॥ हुकम मुनिसर न्नावे वदिये ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ आश्रव लक्षण दोन्नेदे कह्यु, ऊव्य न्नाव आश्रव ॥ सुगुरुजी ॥ तेथी चेतन चउगति वासीयो, जमीउं पुद्गल ऊव्य ॥ सुगुरुजी० ॥ हुकम० ॥ २ ॥ ज्ञानावरणी प्रमुख कर्म वर्गणा, जीव प्रदेश ग्रासे ॥ सुगुरुजी ॥ ऊव्य आश्रव ते शास्त्रे दाखीयो, ते छुटे शीव पद थाशे ॥ सुगुरुजी ॥ हुकम० ॥ ३ ॥ न्नावित आश्रव न्नाव शत्रुपणे, रागद्वेष मोह जागे ॥ सुगुरुजी ॥ तेथी

हुकम० ॥ ४ ॥ इणि विध आश्रव दो भेदे ग्रहे, ते चेतन आश्रवी ॥ सुगुरुजी ॥ हवे अनाश्रव चेतन दाखवु, आश्रवनी हाणि करवी ॥ सुगुरुजी ॥ हुकम० ॥ ५ ॥ जीहा शुद्धि परसगीपणुं, तीहा चेतन परधर्मी॥ सुगुरुजी ॥ राग-द्वेष मोह जागृति तीहा अह ममत्व अधर्मी ॥ सुगुरुजी ॥ हुकम० ॥ ६ ॥ ए पद्धति मिथ्यात्व मोहनी, तीहा आश्रव अवकाश ॥ सुगुरुजी ॥ तेने हणवो रे सद्गुरु ज्ञानथी, सवेग अनुभव जास ॥ सुगुरुजी ॥ हुकम० ॥ ७ ॥ सवेग ते परभाग टाळवो, अनुभव आतम ज्ञान ॥ सुगुरुजी ॥ चिदानद वदन तीहा सपजे, उपयोगिक प्रधान ॥ सुगुरुजी ॥ हुकम० ॥ ८ ॥ ए पद्धति सम सवेगनी, अतर सवर भावि ॥ सुगुरुजी ॥ ज्ञान कळा चेतनमय अनुभवी, शुद्ध स्वरूप मय लावी ॥ सुगुरुजी ॥ हुकम० ॥ ९ ॥ जीवन मुक्त एही परमात्मा, आश्रव भाव विनाशी ॥ सुगुरुजी ॥ द्रवित भावित दोय भेदने हणी, थया निराश्रव वाशी ॥ सुगुरुजी ॥ हुकम० ॥ १० ॥ आश्रव भाव रह्यो परभा-वमां, स्वभावे थाय विनाश ॥ सुगुरुजी ॥ निज स्वभाव ग्रहे निज चेतना, तीहा अनाश्रव खास ॥ सुगुरुजी ॥ हुकम० ॥ ११ ॥ आश्रव भावे स्थिर ससार छे, अनाश्रव शिवपद आपे ॥ सुगुरुजी ॥ आत्मज्ञानी उपयोगी थइ, आश्रव भावने कापे, ॥ सुगुरुजी ॥ हुकम० ॥ १२ ॥ निराश्रवी नाम जेणे प्रभु, पूजु तेहना पाय ॥ सुगुरुजी ॥ अनुमोदुं हु शुद्ध स्वभावने, त्या ज्ञान शितळ शुद्ध थाय॥

सुगुरुजी ॥ हुकम० ॥ १३ ॥

॥ दुहा ॥

आश्रव आवे परपणे, शुन्नाशुन्न कर्म तेह ॥
संवर न्नावे टाळीये, त्यां निजगुण वृत्ति गेह ॥१॥

॥ ढाळ ॥ १४ मी ॥

॥ देशी ॥ एकवीसानी ॥

हुकम मुनिश्वर रे, वदु विनय गुणमां रही ॥ क्रियावंत रे ए सम श्रवर दुजो नही ॥ ते दाखुं रे, नवन्नेदे क्रिया करे, निजात्मा रे, शुद्ध स्वन्नाव तीहां वरे ॥ त्रुटक श्रवण किर्त्तन वीजी, निंदा लघुता वांदवु ॥ सेवा समता ध्यान एकता, ए नव वोले श्रनुन्नवु ॥ विस्तारे सवंग रुचि, उपयोग, स्थिर न्नावमां ॥ तीहां कारज नीपजे, चेतन मूळ स्वन्नावमा ॥ १ ॥ पेहेली किरिया रे, श्रवण गुरु मुखेथी करे ॥ गुरु ज्ञाने रे जीव पुद्गळ जूदा ठरे ॥ जीवनो गुण रे, ज्ञान चेतना दाखीयो ॥ पुद्गळनो रे, श्रचेतन गुण न्नाखीयो ॥ त्रुटक ॥ एम न्निन्न धरमी, जीव न्यारो, पुदगलमा खुती रह्यो ॥ पुद्गलने पोतानो मान्यो, त्यां मिथ्यात्व चेतन लह्यो ॥ कारण कारज पुदगल साथे, श्रनादि संवंध ए ॥ तेथी दुखीयो चउगति न्नटके, करे कर्मनो वध ए॥२॥ वीजी किरिया रे, किरतन जीव गुणनु करे ॥ निजात्मा रे, त्यां पर ठहेंचीने परहरे ॥ चेतन गुण रे, ज्ञानदीपक प्रगटे तदा ॥ शुद्ध धर्मी रे, मिथ्यात्व ग्रहे नही कदा ॥ त्रुटक ॥ समकित शुद्ध तीहां पामे, गुण श्रेणीमां रमे ॥ श्रनत गुण

पर्याय धर्म, व्यक्ति पणे होय त्या जमे ॥ भूख भागे सुख साधे, वीर्यवळ वृद्धि करे ॥ समभावे भावे ए चेतन, अनत कर्मतीहा निर्जरे ॥ ३ ॥ त्रीजी किरियारे, निंदा करे पुद्गलनी ॥ तेना सगे रे, वृद्धि राग द्वेषनी॥ तेथी चेतनरे, अचेतन सरखो हुओ ॥ वेपारी रे इंद्रि पोषण ते जुओ ॥ त्रुटक ॥ तीहां सेवे पापस्थानक, अष्टादश दृढ चित्तए ॥ पाप बांधे व्यासी भेदे, नावे दुखनो अत ए ॥ नरक निगोदमाही वास्यो, असख्य अनंतो काळ ए ॥ ते फळ पाम्यो अज्ञान जोगे, निंदा करु ज्ञान सग ए ॥ ४ ॥ चोथी किरिया रे, लघुता भावे जीवनी ॥ तु गुण हीण रे, आशा करे पुद्गलनी॥ लोभी लालची रे, सेवक तु मोहरायनो ॥ अपराधी रे, अरुची वचन जीनरायनो ॥ त्रुटक ॥ कुदेवने कुधर्म कुगुरु, पक्ष ग्राहक तु थयो ॥ मिथ्यात्व रगी, मद जगी फेर वेर घणो कीयो ॥ ॥ क्लेश भुका सतोष तेमां, अपलक्षण निधान ए॥ मातु करता रीझ पामे, ते लघुता ठाम ए ॥ ५ ॥ किरिया पाचमी रे, वादवु उपयोग स्थिर करी ॥ सिद्ध सरखो रे, परमानद पदने वरी ॥ मूळ रुपेरे, निरजन निराकार ए ॥ अविनाशी रे, अनत गुणभडार ए ॥ त्रुटक ॥ अनत गुण पर्याय व्यक्ति, आविर्भाव हुए जदा ॥ धर्म अनतु तीहा लाधे, परमातम थावे तदा ॥ ए कार्य पूरण चेतननु, मुज मनमा इच्छा घणी ॥ ते रूपनो आरोप करीने, वाडुउ त्रीभुवन धणी ॥ ६ ॥ छठ्ठी किरियारे, सेवे शुद्ध रूपे थइ

॥ निज पदमां रे, ज्ञान ध्यान रंग ते मची ॥ मूळ रूपे रे, धर्म अनंतो रह्यो जदा ॥ तेमां वसीये रे, ते सेवा पूजा तदा ॥ त्रुटक ॥ अनंत गुण पर्याय धारे, तेनो संग ठोमे नही ॥ परद्रव्य पक्ष अग्राहक, चेतन धर्म रह्यो नही ॥ आनंद वृद्धि व्यक्ति फूरणा, लहेर ठे उपयोगमां ॥ ते सेवा मे जाणी प्यारी, प्रमोद ठे मुज अंगमां ॥ ७ ॥ किरिया सातमी रे, चेतन शमता न्नावमां ॥ पथ शोधे रे, इर्या समिति अटोपमां ॥ पुद्गलमां रे, प्रवेश ते सावद्य कह्यो ॥ निजद्रव्यमां रे, प्रवेश ते निर्वद्य लह्यो ॥ त्रुटक ॥ न्नापा समिति विवेक करवो, पुद्गल पांचमी वर्गणा ॥ ते वस्तु नही आपणी, निजगुण न्नास मुज लक्षणा ॥ एषणा समिति त्रीजी, आहार लेवो निर्वद्य ए ॥ केवळ ज्ञानी सावद्य देखे, निर्वद्य निज गुण माहि ए ॥ ८ ॥ चोथी समितिरे, आदान निखेपणमां कही ॥ आदानते रे, चेतन गुण लेवे सही ॥ निपेपण रे, परवस्तु पुद्गलनु ॥ इम कीजे रे, ग्रहण निज खेपण परतु ॥ त्रुटक ॥ पारिठ वणिया पांचमी, समिति चेतन रक्षणा ॥ रागद्वेष विन्नाव सरवे, तजवि कार्मण वर्गणा ॥ ए समिति शीवपद आपे, मळ रहित चेतन करे ॥ ते दिवस मंगलिकनी माळा, परमानद पदने वरे ॥ ए ॥ किरिया आठमी रे, ध्यान करे स्वन्नावमां, चेतन गुण रे, निर्मळ शक्ति न्नावमां॥ मुज व्यक्तिरे, परसगे परने न्नजु ॥ ते अघटित रे, परधर्मीपणो तजुं ॥ त्रुटक ॥ निजद्रव्य स्वन्नाव धर्मे, उपयोग स्थिर

रमणता ॥ अचपळ भावे शक्ति जोडे, तोडे विभाव पर भगता ॥ तीहां चेतन धर्मनी व्यक्ति, स्फुरणा गुण पर्यायमां ॥ परमानंद पद भोग भोगी, अपूर्व भाव ए ध्यानमां ॥ १० ॥ किरिया नवमी रे, एकयता चेतन भावमां ॥ दुविधा हणी रे, वरते शुद्ध स्वभावमा ॥ समभावे रे, ध्याता ध्येय ध्यान एकता, भेद हणीयो रे, ग्रहण कीयो अभेदता ॥ त्रुटक ॥ अनंत गुण पर्याय व्यक्ति, अनत धर्म प्रगटपणे ॥ मूळरूपे सहेज स्वभावे, परिणमन एकयतापणे ॥ भार पीळो चीकणो, व्यक्ति कचनमा रही ॥ परिणमन एकत्व रूपे, कदी भिन्न पडे नही ॥ ११ ॥ इम नव विध रे, किरिया करे जे मुनिवरा ॥ ते ज्ञानी रे, भव भ्रमणाने परहर्या ॥ संसारथी रे, तुटया कर्मपास छेदीने ॥ तेने वदु रे, गुणरागे आणदीने ॥ त्रुटक ॥ गुणराग आनद आणी, मुज आतमने तारवा ॥ एवा मुनिसर नित्य नमु, कर्म रोगने वारवा ॥ ए भाव उपयोगे लाधे, भेद ज्ञान प्रगटे जदा ॥ ज्ञान शीतळ आतम गुण एकयता, कारज सिद्ध करे तदा ॥ १२ ॥

॥ दुहा ॥

नव विध किरिया योगथी, चारित्र गुण कहाय ॥
उपयोग भावे जे लहे, ते सयम ठाण पाय ॥ १ ॥

॥ ढाल १५ मी ॥

॥ साभळरे तु सजनी मोरी रजनी क्या रमी आवीजी ए देशी ॥

हुकम मुनिश्वर आतम ज्ञानी, परमातम पद ध्या-

वेजी ॥ अतर आतम उपयोग अतर, चेतन रसमां रमावे ॥ मुनिपद वदोजी ॥ भव भव सचित पाप ॥ मूळथी निकंदोजी ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ अनुभव ज्ञानी चक्षु अतर, वस्तु धर्मने निहाळेजी ॥ निराकार निरंजन निर्मळ, अलख रूप तीहां भाळे ॥ मुनि० ॥ २ ॥ अरूपी ज्ञान घन ज्योति परमानंदनो कंदजी ॥ शांत सुधारस जलनिधि सरीखो निरखतां आनद ॥ मुनि० ॥३॥ अविनाशी अचळ अखंडित, परम रहस्यनो धामजी ॥ अव्याबाध सुख अनतु, पुरुसोतम जस नाम ॥ मुनि० ॥ ॥ ४ ॥ चिदानद जगदीश्वर अरिहा, तीर्थंकर भगवानजी॥ वीतराग विमळवत योति, परमदेव प्रधान ॥ मुनि० ॥५॥ शुद्ध बुद्ध अनंत अक्षय अज, अकळ अमळ अछेदीजी ॥ अकर्मा अ बधक अनुदय, अनुदरिक अभेदी ॥ मुनि॥६॥ अभोगी अरोगी अजोगी, अगम अकंप अवेदीजी ॥ अशरीरी अकपायी असखायी, अलेशी अखेदी ॥मुनि०॥७॥ अणाहारी अण अवगाही, अगुरु लघुपरिणामीजी ॥ अति इन्द्रिय अप्राणी अयोनि, अ ससारी अनामि॥मु०॥८॥ अमर अनाश्रित अविरुद्ध अशोकी, अनाश्रव असगीजी॥ अनत गुण पर्यायनु भाजन, परमातम पद जगी ॥मुनि०॥ ॥९॥ निजातम परमातम सरीखो, आतम ज्ञाने जाणेजी ॥ तेह स्वरुपने स्थिर उपयोगे, अनुभवे ध्यान टाणे ॥मुनि० ॥ १० ॥ निज स्वरुपमा मगन सदीवए, समभावे सुखशाताजी ॥ उदयिक भाव अव्यापक हुवे जव, ज्ञानशीतळ

शुद्ध माता ॥मुनि०॥ ११ ॥

॥ दुहा ॥

धर्म शुकल दोय ध्यानमां, आतम रमणता पाय ॥
उपाधि उन्मूल करी, परमातम सम थाय ॥ १ ॥

॥ ढाळ १६ मी ॥

॥ हो पेज पखीमा ॥ ए देशी ॥

हो गुरुजी प्यारा हुकम मुनि महाराजजो ॥ हुं तुं सेवक अतर दृष्टि ताहरोंरे लोल ॥ हो गुरुजी प्यारा क्षण न विसारु तुजजो, हितवच्छकठे उपगारी तु माहरोरे लोल ॥ १ ॥ हो० धर्म अर्थ काम मोक्षजो, पुरुषारथ अग जाणवा मुज मन उलस्यो रे लोल ॥ हो० ते दाखो विस्तारजो, श्रवण करवा उमग चित्तमां विलस्योरे लोल ॥ २ ॥ हो० मूरख माने धर्मजो, पोतीका कुळ आचार करणी तेहने रे लोल ॥ हो० पन्डित माने धर्मजो, वस्तुनो स्वभाव धर्म छे एहने रे ॥ ३ ॥ हो० अज्ञानी कहे अर्थजो, नव विध परिग्रह रक्षण तेहीज अर्थ छे रे लोल ॥ हो० ज्ञानी कहे छे अर्थ जो, षट द्रव्य वस्तु दर्शाव ते गर्थछे रे लोल ॥ ४ ॥ हो० दुर्बुद्धि कहे कामजो, स्त्री पुरुष सजोग भोग ते कामछेरे लोल ॥ हो० सुबुद्धि कहे कामजो, अभिलाप चित्त इच्छा तेहीज कामछे रे लोल ॥ ५ ॥ हो० ॥ मूरख अजाण कहे मोक्ष जो, स्वर्ग मांहि इंद्रनुं स्थान ते मोक्ष छे रे लोल ॥ हो० पन्डित दाखे मोक्षजो, कर्म रहित हुओ चेतन तेहीज मोक्षछे रे लोल ॥ ६ ॥ हो० ॥ चउभेदे कयुं

वखाणजो, ते वचन सत्य मुज मनमा रुच्यु सही रे लोल ॥ हो० ॥ अज्ञानी दुर बुद्धि मूर्ख जो, मतिमंद हीण बुद्धिवंत कल्पना ग्रही रे लोल ॥ हो० ॥ ज्ञानी सुबुद्धि पंडित जो, ग्रहण करे सर्वांगी वचन सत्य तेहनु रे लोल ॥ हो० ॥ पुरुषार्थ चउ अंगजो, साधे कार्य ज्ञान शीतळ होय जेहनु रे लोल ॥ ८ ॥

॥ दुहा ॥

धर्म अर्थ काम मोक्षए, पुरुषारथ चउ अंग ॥
धर्म वस्तु स्वभाव ए, अर्थ रत्न त्रयी संग ॥ १ ॥
अभिलाषा काम कीजीए, अजरामर मोक्ष तेह ॥
कर्म अभावे संपजे, परमानंद पद एह ॥ २ ॥

॥ ढाळ ॥ १७ मी ॥

॥ नरसी मेहेता भगतहरीना जूनागढना रहेवासी॥ ए देशी॥

गुरु गुणे मोटा ज्ञानी ध्यानी हुकम मुनिश्वरने वंदो ॥ विनयादिक गुण अंगे लावी, सुणो उपदेश टळे भव फंदो ॥ गुरु गुणे मोटा० ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ उपदेश करता मिथ्यात्व हणता, अनंतानु चो अंत करता ॥ अनंत पुद्गल परावर्त्त छुटे, संसार अर्द्ध पुद्गल हिणता ॥ गुरु० ॥ २ ॥ धर्म दान दीए चेतन गुणनु, अचेतन गुण मूळथी छेदे ॥ भाव संवर मय साधन दाखे, तीहां चेतन ग्रंथी भेदे ॥ गुरु० ॥ ३ ॥ बोधि बीज अणारोप रोपे, रत्न त्रयी साधन वाको ॥ अंतरंग अनुभव एकताळी, अप्रमत्त गुण हे ताको ॥ गुरु० ॥ ४ ॥ समभावे भावित हुउं चेतन,

शीव रमणी तेमवा आवे ॥ सादि अनत काळ अजर अमर पद, जन्म मरण ते क्षय पावे ॥ गुरु० ॥ ५ ॥ एम उपगार निमित्त सद्गुरुनो, न वळे भवोभव दास थया ॥ भव कोमाकोमि अनुकुळ सेवा, करता सर्व उपाय जीहा ॥ गुरु० ॥ ६ ॥ ए उपगारी गुण न वीसरे, समकित रत्न मुज हाथ दियो ॥ गुरु गुण गाउ आनद पावु, ज्ञान शीतळ उपयोग लीयो ॥ गुरु० ॥ ७ ॥

॥ दुहा ॥

पुष्ट निमित्त गुरु कह्या, तत्ववोध दीये दान ॥
पाहाणने पल्लव आणवा, उपदेश करे एक तान ॥१॥

॥ ढाळ ॥ १८ मी ॥

॥ ए गुरु वाल्हो रे ॥ ए देशी ॥

हुकम मुनीश्वर वदिये रे, आतमज्ञानी ध्यानी रे वाहिर अतर परमने रे, उंळखावे अमानी रे, सदगुरुज्ञानी रे ॥ हणीओ चपळ स्वभाव, स्थिरपद ध्यानी रे ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ आतम वुद्धि कायादिकेरे, वहिरातम अघरुप रे ॥ कायादिकनो साक्षी रे, अतर आतम स्वरूप रे ॥ सदगुरु० ॥ २ ॥ पूरण ज्ञानानदनो रे, समाधि मय तदरूप रे ॥ पावन गुण मणि आगरु रे, ते परमातम भूप रे ॥ सदगुरु० ॥ ३ ॥ अह करता परभावनो रे, वहिरातम दुर्गुण गेह रे ॥ कर्त्ता शुद्ध स्वभावनोरे, अतर आतम तेह रे ॥ सदगुरु० ॥४॥ वहिरातम भाव ठोमवो रे, ग्रहवो अतर आतम रे ॥ परमातमनु ध्यान करु रे, तिहा विक-

रुप होय केम रे ॥ सद्गुरु० ॥ ५ ॥ वहिरातम आतम वेरी रे, अतर आतम मित्र रे ॥ वहिरातम क्रम वांधतो रे, अतरातम शोभे विचित्र रे ॥ सद्गुरु० ॥ ६ ॥ अनुमोदु अंतर आतमा रे, संवर निर्जराभावे रे ॥ मोक्ष तत्वने साधतो रे, ज्ञान शीतळ शुद्ध स्वभावे रे ॥ सद्गुरु० ॥ ७ ॥

॥ दुहा ॥

वाहिर अतर परम ए, आत्म परिणति तिन्न ॥
देहादिक आतम भ्रमी, वहिरातम वहु भिन्न ॥ १ ॥
साक्षि कायादि योगनो, अतर आतमरुप ॥
क्षायक भावे केवळी, ते परमातम भूप ॥ २ ॥

॥ ढाळ १९ ॥ मी ॥

॥ नाथ निरंजन देव ए प्यारो, कुंथु नाथ वदो प्यारे ॥ ए देशी ॥

गीतारथ गुणे दिनकर सरीखा, हुकम मुनि वंदो प्यारे ॥ दर्शण करतां समकित वरवुं, मिथ्यात भर्म तजवो भारे ॥ गीतारथ गुणे० ॥ ए आंकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ सप्तनये धर्म उपदेश करता, अनेकांत पक्ष अनुसरता ॥ द्रव्य पर्याय वस्तुने ठणता, स्याद्वाद गुणमां ठरता ॥ गीतारथ० ॥ २ ॥ नैगम सग्रह व्यवहार किरिया, ऋजुसूत्र नयने वरता ॥ त्यां सुधी समकित नही पामे, मिथ्या सग साधन करता ॥ गीतारथ० ॥ ३ ॥ शब्दनये समकित गुण पामे, तिहा विरति भावे रमता ॥ समभिरुढ केवळनाण दरशण, एवभूत शीवपद वरता ॥ गीता० ॥ ४ ॥

योग प्रवृत्ति साधन मिथ्या, समकित साधन उपयोगे ॥ वस्तु अरूपी धर्म अरूपी, जोगातित पद निज जोगे ॥ गीता० ॥ ५ ॥ एसो बोध आपे गीतारथ, जड चेतन भिन्न ओळखावे ॥ जड तज्या चेतन निजरूपे, ज्ञान शितळ शीवपद प्यावे ॥ गीता० ॥ ६ ॥

॥ दुहा ॥

बोध सही नय ज्ञानमा, जाणो द्रव्य पर्याय ॥
स्याद्वाद धर्म उपजे, एम भाखे जीनराय ॥ १ ॥
ए विण स्याद्वाद नही, स्याद्वाद वस्तु मांही ॥
स्व पर विभागे लहे, अनुभव प्रगटे त्यांही ॥ २ ॥

॥ ढाळ ॥ २० ॥ मी ॥

॥ प्रथम गोवाळा तणे भवेजी ॥ ए देशी ॥

हुकम मुनिसर वांदिएजी, जीन शासन शणगार ॥ स्वपर समय ज्ञाता भलोजी, ए सम भावी अणगार ॥ भविकजन वंदो ए अणगार ॥ धर्मदान दातार ॥ भविकजन वंदो ए अणगार ॥ ए आकणी ॥ गाथा ॥ १ ॥ शुद्धातम अनुभव सदाजी, ते स्व समयविलास ॥ परवशी छाया पडेजी, तेपर समय निवास ॥ भविक० ॥ २ ॥ स्वसमय स्व वस्तु छेजी, पर समय पर वस्त ॥ स्व वस्तु धर्म अनुभवेजी ॥ छाया जळ दर्पण गस्य ॥ भविक० ॥३॥ गुण पर्याय अनतछेजी, व्यक्ति अनतीरे भिन्न ॥ तस अनुभव शुद्धातमाजी, स्व समय धर्मे लिन्न ॥ भविक० ॥ ४॥ शुद्धातम अनुभव जीहांजी, तीहां विकल्प नही कोइ ॥

निर्विकल्प रस पीजीएजी, अनत गुण एकता सोड ॥ नविक० ॥ ५ ॥ शुद्धातम अनुनवजीहांजी, तीहां मुक्ति निरधार ॥ कर्म रहित हुवो आतमाजी, तीहां लहे सिद्ध पदसार ॥ नविक० ॥ ६ ॥ शुद्धातम अनुनव लहेजी, त्यां साधन पूरण साध्य॥परमानद रस पीजीयेजी, त्याग मोहादि कीजे उपाध्य ॥ नविक० ॥ ७ ॥ शुद्धातम अनुनव जीहांजी, तेहीज ध्यान प्रमाण ॥ मुक्ति दाता एहठेजी, शीवपुरनु परियाण ॥ नविक० ॥ ८ ॥ क्षपक श्रेणीये शुद्धातमाजी, अनुनवे गुण पर्याय ॥ एकत्व नाव सर्व व्यक्तिनोजी, त्यां एकसमये अनुनव थाय ॥ नविक० ॥९॥ तीहां केवळ ज्ञान उपजेजी, केवळ दर्शन साथ ॥ चरण यथाख्यात मूळमांजी, लब्धि पांच तीहां हाथ ॥ नविक० ॥ १० ॥ शुद्धातम अनुनव जीहांजी, तेहीज ठे जैन नाव ॥ जैन धर्मते कीजीयेजी, चेतन मूळ स्वनाव ॥ नविक० ॥ ११ ॥ स्व समय धर्म पामीयेजी, पर समय करी त्याग ॥ पर समये अनुनव गयोजी, तीहां स्व समयनो लाग ॥ नविक० ॥ १२ ॥ स्व समय धर्म साधताजी, अनुनवे चेतन शुद्ध ॥ तेहने माहरी वंदनाजी, ज्ञान शीतळ जस वुद्ध ॥ ॥ नविक० ॥ १३ ॥

॥ कळश ॥

॥ नठयो नठयोरे मुज साहेव जगनो नठयो ॥ ए देशी ॥

नठयो नठयोरे उपगारी गुरु मुज नठयो ॥ हित वुद्धियें उपदेश कीधो, युक्तिये समजाव्यो ॥ शंका करवा

भेद करीने, भ्रम तिमिर गमाव्यो रे ॥ उपगारी गुरू मुज त्रुठ्यो ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ मधुर ध्वनीये उपदेश करता, वचन रसाळनी माळा ॥ श्रोता सुणतां तृप्त न थावे, बोध पामे तीहा बाळारे ॥ उपगारी० ॥ २ ॥ चेतन शुद्ध स्वरूप उपदेशी, तत्वनी रुचि करावे ॥ दृष्टांत हेतु युक्ति लगावी, चेतन गुण चारो चरावेरे ॥ उपगारी० ॥ ३ ॥ मिथ्यात्व मोह ठे अति अटारो, ससार अनत रखवाळो ॥ जीव अजीव सरखा करी मूके, तेने सद्गुरू मारे भालो रे ॥ उपगारी० ॥ ४ ॥ मिथ्यात्व मोहनो अत हुवो जब, चेतन समकित पामे ॥ ते गुण रत्न चिंतामणी सरखो, लहे अनुभव उपाधि तिहा वामेरे ॥ उपगारी० ॥ ५ ॥ ए पसाय सद्गुरूए कीधो, रत्न अमुलख दीधो ॥ ते बदलो वळे नहीं कबहु, उपगार अनतो कीधोरे ॥ उपगारी० ॥ ६ ॥ गुरू गुण गातां तृपा न भाजे, उलट अग न मावे ॥ वचन जोग थाके नहीं कबहु, मन गुरू गुणमा रमावेरे ॥ उपगारी० ॥ ॥ ७ ॥ रत्न चिंतामणी करता अधिका, गुरू उपगारी कहीए ॥ अनत जन्म मरण दु ख टाळे, तेनो पार शो वहीएरे ॥ उपगारी० ॥ ८ ॥ सद्गुरु सर्व खेत्रे नवी होवे, कोइक अवसर लाभे ॥ वचन जोगथी थाय परीक्षा, चेतन उलस्या थाय निरभेरे ॥ उपगारी० ॥ ९ ॥ निर्भय स्थानक ठे नहीं बीजु, एक सद्गुरूनु साचु ॥ वचन जूठ करीने जडए, बोधि बीज तीहा जाचुरे ॥ उपगारी० ॥ १० ॥ सदगुरू कल्प वृक्षथी अधिका, याचना अर्थने पूरे ॥ ते

माटे मागो अकर्म पद, कर्म जाळ सवि चुरे रे॥ उपगारी० ॥ ११ ॥ एथी अधिक अरथ नही दुजो, परम अरथने पाम्यो ॥ सदगुरू सग अति उपगारी, परमानंद पद जाम्यो रे ॥ उपगारी० ॥१२॥ गुरू उपदेश सुणी इहां दाख्यो, मंदमति मुज न्नारी ॥ गुरु कृपाथी रचना कीधी, वाळजीव उपगारी रे ॥ उपगारी० ॥ १३ ॥ नग्र विजापुर घरमां वसियां, गुरू न्नक्तिये रास रचायो॥ सुरचद मुजनाम न्नलेरु उद्योत शीतळ घट आयो रे ॥ उपगारी० ॥ १४ ॥ ओगणीसत सुम्ताळीम वर्षे, श्रावण कृष्ण पक्षायो ॥ गुरून्नक्ति रास पूरण त्रीजे,शुन्न योग लक्षायो रे॥उप०॥१५॥ गुरून्नक्तिये आ रास जे कोइ गाशे, सुणशे स्थिर उपयोगे ॥ न्नावार्थ अंतरमां लावे, तिहां शुद्ध परिणति होय न्नोगेरे॥उपगारी॥१६। मुज मनोरथ सफळ हुओ आज, न्नक्तिये पूरण रास कीधो ॥ ससार कार्यने अळगा मुकी, गुरून्नक्तिये चित्त लीधो रे॥ उपगारी ॥ १७ ॥ मुज अगे उलट अति झाझो, एक तान स्थिर ध्यान ॥ चित्त रमावुं प्रत्येक ढाळे, ज्ञान शीतळ करुं पान रे ॥ उपगारी० ॥ १८ ॥

॥ इति श्री गुरु न्नक्तिनो रास सपूर्ण ॥

॥ सर्व गाथा ॥ ३०५ ॥

शुद्धि पत्रक.

पानु	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
२	७	भाजेर	भाजेरे
५	१९	उाजेर	छाजेरे
६	१५	शरीग्मम	शरीरमम
१८	५	कषायोन	कषायोने
१८	८	अहशरीर	अहशरीरी
२०	११	कारण	कारणे
२०	१५	भर्योहे	भर्यो है
२४	३	ध्याव	ध्यावे
२५	२	आतमधाराने	आतमधारातें
२५	५	थयेलीने	थयेलीते
२६	१८	लोको	लोका
२७	७	रुप	रुपो
२९	१३	आवरणयोग	आवरणयोगे
३१	१	शात	शत
३२	९	ते सर्प	ते सर्व
३२	१५	जीनआगमए	जीनआगमेए
३४	८	सयोगछे	सयोगेछे
३६	५	कलपन	कल्पन
३६	७	पुत्रादिकने	पुत्रादिकते
३६	११	स्वजात नथी	स्वजाति नथी
३७	४	जाय	जाया
३७	९	माहेलीकोर	माहेलीकोरे
३७	१४	नय	नये
३७	१५	नय	नये
३७	१८	अनता	अनता
३८	१६	अन	अने
४०	२०	भेद कया	भेद कहेवा पडे
४१	८	नथिय	नथियय
४१	१४	सुभ	शुभव्यवहारे
४१	२०	सयोग	सयोगे
४२	२२	भावने	भावते
४३	९	जोग छे	जोगे छे
४३	१८	कर्णनी	कर्मनी
४६	६	उपाधिओग	उपाधिओगे
४६	२०	उपाधिना	उपाधिनो
४७	१०	साधुना	साधुनो
४७	१४	याग	योग
४८	५	लुगडानोककडो	लुगडानोकडो
४९	१	लेवा कल्पे नहीं	लेवो कल्पे नही
५२	२२	विस्तार	विस्तार
५५	१६	अगभिर	अगभीर
५६	११	सचय	सचय
५८	२३	तोड	तोडे
६१	२	सुभूमना	सुभूमनापिता
६४	८	सागरमा	सागरमां
६४	१५	पोत	पोते
६१	६	छद्वलक्षण	छद्व लक्षण
६५	१६	तेनोभोगी	तेनीभोगी
६७	१	भयमा जाय	भयमा जाय
६७	१३	दुष्ट	दुष्टा
६७	१७	तेम पशुने	पशु तेमने
७१	१४	विवेक	विवेके
७३	५	ए तेना बे भेद	तेना बे भेद
७३	१४	समकितिमोहनी	समकित मोहनी
७५	२२	सतांप	सतोष

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
७८	१८	कोर	कोरे
८१	४	पोत न थाय	पोते न थाय
८३	४	उपशंम	क्षयउपशम
८४	१०	अवनुभ	अनुभव
८५	४	स्पर्शीतबोध	स्पर्शीबोध
८५	१२	स्वखरुपे	स्वरुपे
९४	१३	अनुभव	अनुभव
९५	१४	तछतां	तेछतां
९९	४	जोगमोक्ष	जोगेमोक्ष
१००	१७	बीजाभेद	बीजोभेद
१००	१९	अमदेपक्ष	अभेदपक्ष
१०१	५	परिणति	परिणातिये
१०१	१०	अत्दाने	आत्माने
१०३	१	एघातिकर्मअ-घाती	एघातिअघाति-कर्म
१०३	७	रस	रसे
१०४	३	परभव	परभवे
१०४	१०	विच्छेउे	विच्छेदछे
१०४	१२	तेमोक्षसुख	त्समोक्षसुख
१०४	१३	मोक्षनां	मोक्षना
१०४	२१	जेपदने	जेपदतेने
१०६	२२	भणवु	भणवु
१०९	२	स्वरुप	स्वरुपे
११५	११	भाग	भागे
११६	१९	एद्रव्यउ	एद्रव्यनु
११७	२	नहीनही	नहीनहीअसत्य
१२२	३	नेपरिणमे	नपारेणमे
१२३	२०	नाखीभिन्नपदे	नोखीभिन्नपदे
१२६	६	पाप	पाप
१२६	२०	नसाध्यु	नसाध्यु
१२७	५	दुभेद	दुभेदे
१२७	१२	उपयोग	उपयोगे
१२८	२	सुभसता	सुभसताजी
१२९	७	मानियोर	मानियोरे
१३०	१	वर्त्तमाननोर	वर्त्तमाननोरे
१३०	६	मोटकोर	मोटकोरे
१३२	२१	फरसे	फरस
१३३	१	जाण	जाणंग
१३४	२	देखे अनुभवे	न देखे अनुभवे
१३४	१८	सांभलोर	सांभळोरे
१३४	१९	मील्योर	मील्योरे
१३४	२०	पूरवपरेर	पूरवपरेरे
१३४	२२	बीजोर	बीजोरे
१३५	३	टालीगर्व	टाळीमोटपगर्व
१३५	४	दीयेर	दीयेरे
१३५	६	लीयेर	लीयेरे
१३६	५	कह्योर	कह्योरे
१३६	१८	खपछेर	खपछेरे
१३७	११	जोग	जोगे
१३८	१२	करीयेर	करीयेरे
१३८	१३	कहीयेर	कहीयेरे
१४२	४	पांचभेद	पांचभेदे
१४२	७	तीहांसुख	तीहांसुखसात
१४२	११	पुछीनेर	पुछीनेरे
१४३	६	समोर	समोरे
१४३	२०	वधेर	वधेरे
१४६	१२	स्त्रीवेद	स्त्रीवेदे
१४८	१	कायारे	कायरे
१४९	१३	॥ १७ ॥	॥ १० ॥
१४९	१९	घाती	चारित्रघाती

ानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
०	१६	सुखआयुषकर्म	आयुपकर्म
१	९	सरीरनोरे	सरीरनारे
१	१४	नीजात्मनारे	नीजात्मानारे
१	२३	परिणमावीनेर	परिणमावीनेरे
३	१६	सपजेर	सपजेरे
३	१६	अतीशयव्रत	आतिशयवत
४	१९	सर्वलोकग्रह	सर्वलोकग्रहे
४	२०	पकडायरे	मनायरे
७	४	उदये कशु	उदय कशु
	१०	वीजां	वीजा
	९	काया	काय
	२१	अगे	अग
	९	कर्मनाम	नामकर्म
	९	रचनाकारणे ते कर	रचनाकरु ते कारणे
	२	नव	नय
	१२	छतिमर्याय	छतिपर्याये
	१३	नयज्ञान	नयज्ञाने
	२०	लहेरे	करीने लहेरे
	८	जो करेरे	जे करेरे
	१४	खपावोर	खपावोरे
	७	ठाणगेर	ठाणगेरे
	१५	द्रव्यभावे	द्रव्यभाव
	१६	भाव	भावे
	३	दिसरे	दसरे
	४	द्रव्य	द्रव्ये
	२	शासनरे	शासनेरे
	५	वलावीनेर	वलावीनेरे
	९	परिणम्योर	परिणम्योरे
	१४	कीजीयेर	कीजीयेरे

पानु	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
१७७	२०	पामीयेर	पामीयेरे
१७९	०	माद्दव	मद्दव
१८१	३	सितळनी	सीतळनीज
१८२	९	उपयोग	उपयोगे
१८४	१६	कर्मवज्न	कर्मवज्र
१८५	०	अमुभ	एसुभ
१८८	१९	पुन्यपाप	पुन्यपाप
१८५	०१	द्रव्यभावे	द्रव्यभाव
१८६	८	गुणगुणता	गुणगुणगत
१८७	१४	चउवीशे	चउवीश
१८८	४	अनतकारणे	अनतर कारण
१८९	१०	भवहारे	भवहारे
१८९	१३	निवारयाण	निवारणाय
१९०	१२	सिद्धा	सिद्ध
१९१	२	पुन्य	पुन्ये
१९०	१५	एकांता ६	एकांतम० ६॥
१९२	१७	पास ॥७	पास ॥म०॥ ७
१९३	२१	मुनिधर्म	मुत्तिधर्म
१९६	९	करेर	करेरे
१९६	२२	वाचछेर	वाचछेरे
१९७	१९	उपयोग	उपयोगे
१९८	३	पूजियेर	पूजियेरे
१९९	७	साथे	साथ
२००	५	निरजराकरीयेर	सकामनिरजरा-करीयेरे
२००	११	गुणीने	गुणीते
२०२	१९	चालीए	चालीयेए
२०४	१३	मथथ	मथम
२०६	३	मांहेरसाल	माहारसाळ
२०६	८	पर्याय	पर्याये
२०७	२१	वीसरे	वीसरो
२०८	१	गुणीपर्याय	गुणपर्याय

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
२१०	७	ससारमांहे	ससारमां ए
२११	३	पीधोर	पीधोरे
२११	५	छांडेर	छांडेरे
२११	९	सुणावेर	सुणावेरे
११२	१	विराजेर	विराजेरे
२१७	८	शब्दनय	शब्दनये
२१७	१२	पुरनाशीयो	दुरनाशीयो
२१८	१३	वश्योर	वश्योरे
२१९	२१	सुद्धजी	सुद्धिजी
२२०	६	ठरता	ठरताजी
२२१	१८	अन्यसदाय	अन्यमहाय
२२३	६	दानदेतो	दानदेता
२२३	६	निजलेतो	निजलेता
२२६	७	मोहनमेर	मोहनमेरे
२२६	८	गुरमेर	गुरुमेरे
२२७	१५	दीपतो	दीपता
२२७	१८	शत्रुविनाश	सर्वशत्रुविनाश
२२९	१२	भावे	भाव
२२९	२०	निरागी	निरोगी
२२९	२०	कहुतारा	कहुतारी
२३०	९	ठाम	ठाण
२३१	४	फलमुक्ति	विरतिफलमुक्ति
२३१	८	सत्ताभिन्न	सत्ताभिन्नभिन्न-करी
२३२	२४	निरजन	निरजनं
२३३	१०	ए ॥ ५ ॥	॥ ५ ॥ ए
२३४	१८	शीतळने	शीतळते
२३५	१०	निजातमे	निजातम
२३५	२२	साथे	साधे

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
२३७	१८	ज्ञानने	ज्ञाने
२३८	९	जाणी	नाणी
२३८	१३	मुणीजेर	मुणीजेरे
२३९	८	भेठ्ये	भेटे
२३९	११	जीनद्ररे	जीनेंद्ररे
२४०	२	विरचावेर	विरचावेरे
२४०	२३	जाणी	भणी
२४१	५	रत्नमयी	रत्नत्रयी
२४२	९	कोमल्लिनाथ	करे मल्लिनाथ
२४४	३	पूजीयेर	पूजीयेरे
२४६	६	क्षय आवे	क्षय पावे
२४७	१०	छलावु	चलावु
२५३	१४	दीविलेधेनहींजी	दीधेलेवेनहींजी
२५४	२	ए दशो	ए देशी
२५५	८	वीणसेरलाल	वीणसेरेलाल
२५५	९	लक्षण	लक्षणे
२५६	१४	वारमेरलाल	वारमेरेलाल
२५७	८	मेर०॥	मेरे०॥
२५७	१४	मुखजोइआ-वीयो	मुखजोवाआवी-यो
२५८	६	मेर०॥	मेरे०॥
२५८	११	वरसाये	वरसाछे
२५८	१४	सरज्याछे	सरस्याछे
२५८	१५	॥नेमि०॥१॥	॥राजुल०॥१॥
२५८	१७	॥नेमि०॥२॥	॥राजुल०॥२॥
२५८	१९	॥नेमि०॥३॥	॥राजुल०॥३॥
२५८	२१	॥नेमि०॥४॥	॥राजुल०॥४॥
२५८	२३	नेम	नेमि
२५८	२५	नेमनिरागी	नेमिनिरागी

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
२५९	१	जुए	जुवे
२५९	५	समजाव्या	समजाव्यां
२६०	९	एभगे	अभगे
२६०	११	श्रीश्रद्धा	श्रद्धा
२६०	१७	नीरागी	नारागी
२६१	१८	तुहीरुपीअरुपी	तुही रुपी नहीं अरुपी
२६३	४	फरसे	स्पर्से
२६४	२३	सहग	खडग
२६५	६	दाखींये	दाखीयो
२६६	२	चोथा	चोथे
२६६	२१	भेद्	भेदे
२६७	१५	लेजोर	लेजोरे
२६८	१७	वशरणायरो	वशरयणायरो
२६९	२१	देख	देखे
२७०	२	जावोर	जावोरे
२७०	३	धारोर	धारोरे
२७०	१४	करीयेर	करीयेरे
२७०	१६	जुए	जुवे
२७१	१४	पूर्वकर्मसबधी	पूरवकर्मसबधथी
२७२	१६	आवेर	आवेरे
२७२	१७	भावेर	भावेरे
२७५	१७	कीहांक्यां	कहेक्यां
२७८	३	भावेर	भावेरे
२८०	४	मिथ्यात्वछे	प्रमादछे
२८२	१५	सोहीरे	सोचरे
२८४	१८	वन०॥११॥	वने०॥११॥
२८७	१८	॥३७॥	गाथा ॥३७॥
२८९	२३	लघुता	लघुता
२९२	३	काळ	कार
२९४	४	जाण	भाण
२९५	१८	दाळनी	आ दाळनी
२९७	१	दरशन	दरशन
२९७	४	मसम	मसम
२९७	११	विघन	विघन
२९८	६	चेतनरे	चेतनरे
२९८	१८	ते वस्तुने	ते वस्तुते
२९८	२३	कर्मग्रये	कर्मग्रये
३००	१२	अटारारे	अटारोरे
३०१	१९	विसामोर	विसामोरे
३०२	३	उपशमरे	उपशमरे
३०२	७	उपशमरे	उपशमरे
३०२	८	एकदमरे	एकदमरे
३०३	५	सास्वादनकोइ	लहेसास्वादन
३०३	८	कपठ होवे	कपुर होवे
३०४	१	रतनरे	रतनरे
३०४	५	मणी०॥ ९ ॥	माणी०॥व०॥
३०४	२०	हण्यारे	हण्यांरे
३०५	२१	मत्र	मत्रे
३०६	११	आशाता	अशाता
३०६	१२	परभागे	परभाग
३०८	१६	पणे	पणो
३१०	१४	चेतनरे	चेतनरे
३१०	१५	रतन	रतन
३१०	१६	परवस्तुरे	परवस्तरे
३१२	२०	पेढी	पेटी
३१७	१	तेमची	तेमपी
३१७	४	नही	तही
३२०	१५	एहनेरे	एहनेरेलोल